

2237

V:72(83)21  
152F7.2



V:72(83)21 1301

152 F7.2

Nahar, Puran Chandra

Jalna inscriptions  
V. 2



A. 24.  
1301

◆◆◆◆◆

[illegible]







# JAINA INSCRIPTIONS.

*( Containing Index of Places, Glossary of Names of Acharyas, &c.:-)*

---

Collected & Compiled

BY

**Puran Chand Nahar, M.A., B.L., M.R.A.S.,**

Vakil, High Court, Calcutta; Member, Asiatic Society of Bengal; Bihar &  
Orissa Research Society; Bhandarkar Institute, Poona; Jain Swetambar  
Education Board, Bombay; &c. &c.

---

**PART II.**  
**( With Plates. )**

---

**1927.**

**Price Rs. 5/-**



V:72(Q3)x1  
152F7N.2

---

PRINTED BY  
Turantlal Mishra  
at the  
VISWAVINODE PRESS,  
48, Indian Mirror Street,  
Calcutta.

---

Published by the Compiler  
48, Indian Mirror Street,  
CALCUTTA,



# जैन लेख संग्रह ।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकायों से युक्त

---

## द्वितीय खंड ।

---

संग्रह कर्ता

पूरण चंद नाहर, एम० ए०, बी० एल०,  
वकील हाईकोर्ट, रयाल एसिआटिक सोसाइटी, एसियाटिक सोसाइटी  
बंगाल, रिसार्च सोसाइटी बिहार—उड़ीसा आदिके मेम्बर,  
विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

---

कलकत्ता ।

---

व्रीर सम्बत् २४५३

मूल्य—५५



V:72(Q3)xL  
152F7.2

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA  
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR  
LIBRARY.

Jangamwadi Math, VARANASI,

Acc. No. ....

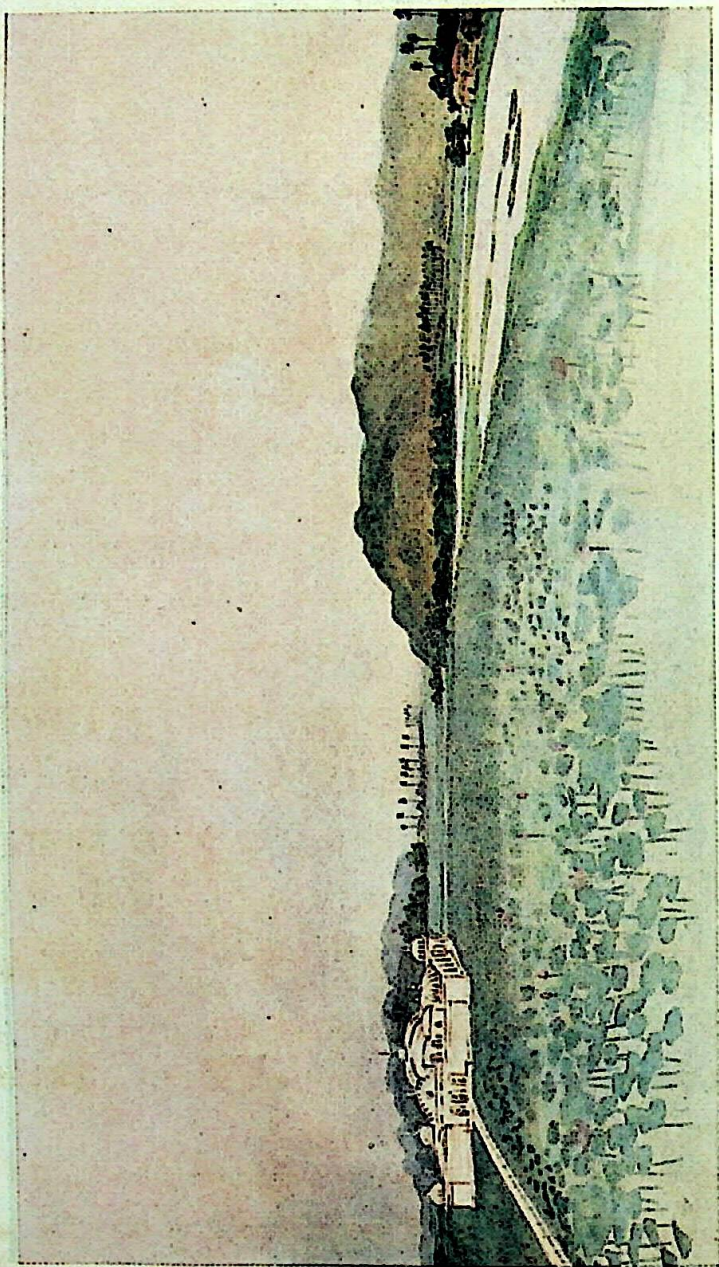
2227

1301









Jalmandira at Tirtha Pâwâpuri (North view).





आज बड़े हर्ष के साथ “जैनलेख संग्रह” का दूसरा खंड पाठकों के सम्मुख उपस्थित करना हूँ । इसका प्रथम खंड प्रकाशित होने के पश्चात् द्वितीय खंड शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा रहते हुए भी कई अनिवार्य कारणों से विलम्ब हुआ है । न तो प्रथम खंड में कोई विस्तृत भूमिका दी गई थी और न यहां ही लिख सके ।

जैनियों का खास करके हमारे मूर्तिपूजक श्वेताम्बर भाइयों का धर्मप्राण शताब्दियों तक बराबर आचार्यों के उपदेश से देवालय और मूर्तिप्रतिष्ठा की ओर कहां तक अग्रसर था और वर्तमान समय पर्यंत कहां तक है यह “लेख संग्रह” से अच्छो तरह ज्ञात हो सकता है । ऐतिहासिक दृष्टि से जिस प्रकार उपयोगी समझ कर प्रथम खंड प्रकाशित किया था यह खंड भी उसी इच्छा से विद्वानों की सेवा में उपस्थित करता हूँ ।

सन् १९१८ में प्रथम खंड प्रकाशित होनेपर प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्रद्धेय श्रीमान् राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझा जी ने पुस्तक भेजने पर उस संग्रह के उपयोगिता के विषय में जो कुछ अपना वक्तव्य प्रकट किये थे उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाता है । उक्त महोदय अजमेर से ता० २६-१०-१९१८ के पत्र में लिखते हैं कि :—

“आपके जैनलेख संग्रह को आदि से अंत तक पढ़ गया हूँ । आपका यह ग्रन्थ इतिहासवेत्ताओं तथा जैनसंसार के लिये रत्नाकर के समान है । अंत में दो हुईं तात्त्विकार्थें जी बड़े काम की बनी हैं उनसे जिन २ गणों के अनेक आचार्यों के निश्चित समय का पता लगता है, यदि इसके दूसरे जाग जी निकलेंगे तो जैन इतिहास के लिये बड़े ही काम के होंगे” ।

प्रथम खंड में साधारण सूची के अतिरिक्त “प्रतिष्ठास्थान”, “श्रावकों की ज्ञानि-गोत्रादि” और “आचार्यों के गच्छ और सम्भत्” की सूची दी गई थी । इस बार इन सभी के शिवाय राजा महाराजाओं के नाम, जो इन लेखों में पाये गये हैं, उनकी तालिका भी समय २ पर आवश्यक होती है समझ कर इस खंड में दी गई है ।

मैं प्रथम खंड की भूमिका में कह चुका हूँ कि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रह प्रकाशित हुआ है । जिस समय यह खंड छप रहा था उसी समय श्री राजगृह तीर्थ में श्वेताम्बर दिगम्बरों में मुकदमा छिड़ गया था पश्चात् केस आपस में तै हो चुका है अतएव इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है । परन्तु मुझे बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि दिगम्बरों लोग मुझे ऐसे कार्यमें उत्साहित करने के बदले स्वार्थवश उक्त मुकदमे में इजहार के समग मेरे जैनलेख संग्रह पर हर तरह से हैरान किये थे ।



हाल में वेलोग मुहई होकर श्री पावापुरी तीर्थ पर जो मुकदमा उपस्थित किये हैं उस में मेरा भी मुद्दालहों में नाम रख दिये हैं। मैं प्रथम से ही धार्मिक भगड़ों से अलग रहता था परन्तु जब सर पर चोभ पड़ा है तो उठाना ही पड़ेगा। दुःख इसी बात का है कि शासननायक वीर परमात्मा के परम शान्तिमय निर्वाणस्थान में मुकदमेवाजी से अशांति पैलाना अपने जैनधर्म पर धब्बा लगाना है। मैं इस समय इस संबंध में कुछ मतामत प्रकाश करना अनुचित समझता हूं। इसी वर्ष के अक्षयतृतीया के दिन मेवाड़ के अन्तर्गत श्री केशरियानाथजी तीर्थ में मंदिर के ध्वजादंड आरोपन के उपलक्ष्य में जो वीभत्स कांड हुआ है वह भी दूसरा दुःख का समाचार है। काल के प्रभाव से इस तरह प्रायः हमलोगों के सर्व धर्मस्थान और तीर्थों में अशांति देखने में आती है।

ई० सम्वत् १९६४।६५ से मुझे ऐतिहासिक दृष्टि से जैन लेखों के संग्रह करने की इच्छा हुई थी तबसे अद्यावधि संग्रह कर रहा हूं और उन सब लेखों को जैसे २ सुमीता समझता हूं प्रकाशित करता हूं। यद्यपि मैंने इस संग्रह-कार्य के लिये तन, मन और धन लगाने में श्रुति नहीं रक्खी है फिर भी बहुत सो भूलें रह गई हैं। राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझाजी मुझे प्रथम खंड के श्रुतियों पर अपना मन्तव्य सूचित किये थे जिस कारण मैं अन्तःकरण से उनका आभारी हूं और उस पर मैंने विशेष ध्यान रखने की चेष्टा की है। यह लेख संग्रह का कार्य बहुत कठिन और समय सापेक्ष है, कई जगह समय की अल्पता हेतु और कई जगह मेरे ही भ्रम से जो कुछ पाठ में अशुद्धियां रह गई हैं उनके लिये मैं पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूं तथा ऐसी २ श्रुतियां रहने पर भी विद्वानों की तथा अनुसंधितसूत्रज्ञों को उस ओर दृष्टि आकर्षित करने की इच्छा से इन लेखों को प्रकाशित करने का साहस किया हूं।

प्रथम खंड में १००० लेखों का संग्रह प्रकाशित हुआ था। उनमें जो कुछ नंबर छूट गये थे वे पुस्तक के अंत में दे दिया था। इस खंड में १००१ से २१११ तक याने ११११ लेख प्रकाशित किये जाते हैं। इस चार भी भ्रमवश २ नंबर छूट गये हैं। नं० ११८७ पुस्तक के अंत में छप गया है और नं० १६६० यहां दिया जाता है।

श्वेताम्बरों के प्रसिद्ध स्थान जेसलमेर दुर्ग ( जेसलमेर ) के मंदिर के लेखों को संग्रह करने की अभिलाषा बहुत दिनों से थी। यहां भी क्षेत्रस्पर्शना हो गई है और निकटवर्त्ती "लोद्रपुर" ( लोद्रवा ) नामक प्राचीन स्थान भी दर्शन किया है। आगामो खंड में वहां के लेखों को प्रकाशित करने की इच्छा रही।

नं० ४८ इण्डियन मिरर प्रोट,  
कलकत्ता।

सं० १९८४-६० सं० १९२७

निवेदक

पूरण चंद नाहर।

[ 1690 ] \*

संवत् १९७१ वर्षे आगरा वास्तव्य . . . . . कल्याण सागर सूरिः . . . . . ।

\* यह लेख पढ़ने के पास 'फतुहा' के दिगम्बर जैन मंदिर में श्वेत पाषाण की खंडित श्वेताम्बर मूर्ति के चरण चौकी पर है।





# सूचीपत्र ।



स्थान	पत्रांक	स्थान	पत्रांक
<b>कलकत्ता ।</b>			
श्री आदिनाथजी का देरासर ( कुमारसिंह हाल )	१,२५८	कानपुरवालों का मंदिर	२११
हीरालालजी गुलाबसिंहजी का देरासर	२	लाला कालिकादासजी का मंदिर	२१२
लामचंदजी सेठ का घर-देरासर	२	श्री चंद्रप्रभुजी का मंदिर	२१३
इंडियन म्यूजियम	३	” पार्श्वनाथजी का मंदिर	२१३
		” सुभस्वामीजी का मंदिर	२१४
<b>अजिमगंज - मुर्शिदाबाद ।</b>		<b>श्री प्राज्ञापुरी तीर्थ ।</b>	
श्री नेमिनाथजी का मंदिर	३	श्री गांव मंदिर	१५८, २६५
<b>सैतीया - बीरभूम ।</b>		” जल मंदिर	२६३
श्री आदिनाथजी का मंदिर	५	” समोसरण	२६४
		महतात्र त्रिवि का मंदिर	२६४
<b>रंगपुर - उत्तर बंग ।</b>		<b>श्री राजग्रह तीर्थ ।</b>	
श्री चंद्रप्रभुस्वामी का मंदिर	५	श्री गांव मंदिर	२१५
<b>श्री सम्मेश्वर शिखर तीर्थ ।</b>		” वैभार निरि	२१६
टोंक पर के चरणों पर	२०५	” सोन भंडार	२१६
श्री जल मंदिर	१५८, २०७	” मणियार मठ	२१६
<b>मधुवन ।</b>		<b>श्री दत्तीकुंड तीर्थ ।</b>	
श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर	१५६	श्री जैन मंदिर	१६०
जगतसेठजी का मंदिर	२०८	<b>सठवाड़ ।</b>	
प्रतापसिंहजी का मंदिर	२०९	श्री जैन मंदिर	१६१



स्थान	पन्नांक	स्थान	पन्नांक
<b>पटना ।</b>		<b>रायसाह्य का घर-देरासर</b> ... १३८	
शहर मंदिर ...	२२१	लाला खेमचंदजी का घर-देरासर ...	१३६
दिगम्बरी मंदिर ...	२२१	हीरालालजी चुन्निलालजी का घर-देरासर ...	१३६
म्यज़ियम ...	२२१	श्री श्रीमंदिरस्वामीजी का मंदिर ...	१४१
<b>बनारस ।</b>		„ वासुपूज्यजी का मंदिर ( सहादतगंज ) ...	१४२
शिखरचंदजी का मंदिर ...	२२२	„ पार्श्वनाथजी का मंदिर ( „ „ ) ...	१४२
<b>चंड्रावती ।</b>		„ ऋषभदेवजी का मंदिर ( „ „ ) ...	१४३
श्री जैन मंदिर ...	१५५	„ शांतिनाथजी का मंदिर ( „ „ ) ...	१४३
<b>अयोध्या ।</b>		„ दादाजी का मंदिर ...	१४५
श्री अजितनारायणजी का मंदिर ...	१४६	<b>देहली ।</b>	
„ समोसरणजी ...	१४८	लाला हजारीमलजी का देरासर ...	२२५
<b>मथुरा ।</b>		चौरेखाने का मंदिर ...	२२५
श्री जैन मंदिर ...	१५०	<b>मथुरा ।</b>	
<b>फैजाबाद ।</b>		श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	६५
श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	१५३	<b>आगरा ।</b>	
<b>लखनऊ ।</b>		श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	६७
श्री शांतिनाथजी का मंदिर ( बोहरनटोला ) ...	११५	„ श्रीमंदिरस्वामीजी का मंदिर ...	१०५
„ ऋषभदेवजी का मंदिर ( बोहरनटोला ) ...	१२१	„ सूर्यप्रभस्वामीजी का मंदिर ...	१०८
„ महावीरस्वामी का मंदिर ( बोहरनटोला ) ...	१२४	„ गौडीपार्श्वनाथजी का मंदिर ...	१०८
„ आदिनाथजी का मंदिर ( चूड़ीवाली गली ) ...	१२७	„ वासुपूज्यजी का मंदिर ...	११०
„ महावीरस्वामी का मंदिर ( सुंघीटोला ) ...	१२८	„ केशरियानाथजी का मंदिर ...	१११
„ चिन्तामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ( „ „ ) ...	१३१	„ नेमनाथजी का मंदिर ...	१११
„ संभवनाथजी का मंदिर ( फूलवाली गली ) ...	१३६	„ शांतिनाथजी का मंदिर ...	११२
लाला माणिकचन्दजी का घर-देरासर ...	१३८	„ महावीरस्वामी का मंदिर ...	११४



स्थान	पत्रांक	स्थान	पत्रांक
<b>श्वालिथर - लस्कर ।</b>			
श्री पंचायतो मंदिर ...	७२	„ जैन उपासरा ...	६७
„ पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	७८	„ चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	६७
„ शांतिनाथजी का मंदिर ...	८३	„ श्रीमंदिरस्वामीजी का मंदिर ...	६८
<b>मुरार - लस्कर ।</b>		<b>मोरखानो - बीकानेर ।</b>	
श्री जैन मंदिर ...	८४	श्री देवी मंदिर ...	६६
<b>श्वालियर दुर्ग ।</b>		<b>चुरू - बीकानेर ।</b>	
श्री जैन मंदिर ...	८५	श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	७१
<b>सुहानीय - श्वालियर ।</b>		<b>नागौर ।</b>	
श्री जैन मंदिर ...	८४	श्री ऋषभदेवजी का मंदिर ...	४४
<b>जयपुर ।</b>		„ आदिनाथजी का मंदिर ...	६०
श्री सुपार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२५	„ सुमतिनाथजी का मंदिर ...	६१
„ सुमतिनाथजी का मंदिर ...	३३	„ शांतिनाथजी का मंदिर ...	६२
„ आदिनाथजी का मंदिर ...	३८	<b>सूरपुरा - नागौर ।</b>	
„ पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	४१	श्री माताजी का मंदिर ...	१६५
<b>चंदन चौक ।</b>		<b>उसतरां - नागौर ।</b>	
श्री जैन मंदिर ...	१६२	श्री जैन मंदिर ...	१६५
<b>आम्बेर ।</b>		<b>रत्नपुर - मारवाड़ ।</b>	
श्री चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर ...	४३	श्री जैन मंदिर ...	१६३
<b>अलवर ।</b>		<b>गांधाणी - मारवाड़ ।</b>	
श्री जैन मंदिर ...	४४	श्री जैन मंदिर ...	१६४
<b>बीकानेर ।</b>		<b>जोधपुर - मारवाड़ ।</b>	
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	६३	राजवैद्य भट्टारक श्री उदयचंद्रजी का देरासर ...	२२६
		<b>नगर - मारवाड़ ।</b>	
		श्री जैन मंदिर ...	१६६



स्थान	पत्रांक	स्थान	पत्रांक
<b>जसोल - मारवाड़ ।</b>		<b>करेड़ा - मेवाड़ ।</b>	
श्री जैन मंदिर ...	२२६	श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२३२
<b>नाकोड़ा - मारवाड़ ।</b>		„ बावन जिनालय ...	२३५
श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	२२७	<b>नागदा - मेवाड़ ।</b>	
<b>बाड़मेर - मारवाड़ ।</b>		श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	२४३
श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२२८	<b>देखवाड़ा - मेवाड़ ।</b>	
<b>घाणेश्वर - मारवाड़ ।</b>		श्री पार्श्वनाथजी का बड़ा मंदिर ...	२४४
श्री महावीरस्वामी का मंदिर ...	१६७	„ नया मंदिर ...	२५०
<b>खारची - मारवाड़ ।</b>		„ ऋषभदेवजी का मंदिर ...	२५२
श्री जैन मंदिर ...	२८३	„ पार्श्वनाथजी का बस्ती ...	२५४
<b>खंडप - मारवाड़ ।</b>		„ तपागच्छ का उपासरा ...	२५४
श्री जैन मंदिर ...	२८४	„ खंडहर उपासरा ...	२५७
<b>मांकलेश्वर - मारवाड़ ।</b>		शिलालेख ...	२५७
श्री जैन मंदिर ...	२८४	<b>गुडक्षी - मेवाड़ ।</b>	
<b>नगर - खेड़गढ़ ।</b>		श्री जैन मंदिर ...	२८३
श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	१६७	<b>आबू रोड ।</b>	
<b>उदयपुर - मेवाड़ ।</b>		श्री आदिनाथजी का मंदिर ( धर्मशाला ) ...	२५६
श्री शीतलनाथस्वामी का मंदिर ...	६	<b>श्री आबू तीर्थ ।</b>	
„ वासुपूज्यजी का मंदिर ...	२१	श्री आदिनाथजी का मंदिर ( देखवाड़ा ) ...	२५६
„ गौड़ीपार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२२	„ शांतिनाथजी का मंदिर ( अचलगढ़ ) ...	२६०
„ पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२२८	„ ऋषभदेवजी का मंदिर ( „ ) ...	२६१
„ ऋषभदेवजी का मंदिर, हाथीपोल ...	२२६	<b>पिंडवाड़ा - सिरौही ।</b>	
„ ऋषभदेवजी का मंदिर, कसैरी गली ...	२२६	श्री महावीरजी का मंदिर ...	१७०
„ ऋषभदेवजी का मंदिर, सेठोंकी हवेली के पास ...	२३०	<b>उथमण - सिरौही ।</b>	
		श्री जैन मंदिर ...	२७६



स्थान	पत्रांक	स्थान	पत्रांक
रोहेड़ा - सिरौही ।	...	श्री तारंगा तीर्थ ।	...
श्री जैन मंदिर ...	२७६	श्री अजितनाथ स्वामी का मंदिर ...	१७१
नारज - सिरौही ।	...	श्री शत्रुंजय तीर्थ ।	...
श्री जैन मंदिर ...	२७८	दिगम्बर मंदिर ...	१७६
गुड़ा - सिरौही ।	...	पाखीताना ।	...
श्री जैन मंदिर ...	२७८	श्री सुमतिनाथजी का मंदिर ...	१७४
बिवरी - सिरौही ।	...	तखाजा - काठियावाड़ ।	...
श्री जैन मंदिर ...	२७८	जैन मूर्ति पर ...	१८८
पाडीव - सिरौही ।	...	शिलालेख ...	१८८
श्री जैन मंदिर ...	२७६	सिहोर - काठियावाड़ ।	...
मरिया - सिरौही ।	...	श्री सुपाश्वरनाथजी का मंदिर ...	१७४
श्री जैन मंदिर ...	२७६	घोघ - काठियावाड़ ।	...
निंबज - सिरौही ।	...	श्री सुविधिनाथजी का मंदिर ...	१८१
श्री जैन मंदिर ...	२७६	चोरवाड़ - जुनागढ़ ।	...
बुड़वाख - सिरौही ।	...	श्री जैन मंदिर ...	१८०
श्री जैन मंदिर ...	२८०	शोयाखबेट - काठियावाड़ ।	...
अँजार ।	...	श्री जैन मंदिर ...	१८३
श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	१६८	जामनगर - काठियावाड़	...
खीमत - पाखणपुर ।	...	श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	१८५
श्री जैन मंदिर ...	१७१	„ आदीश्वरजी का मंदिर ...	१८७
डीसा ।	...	मांगरोल - काठियावाड़ ।	...
श्री आदीश्वरजी का मंदिर ...	२८०	श्री जैन मूर्ति पर ...	१८६
„ महाबोर स्वामी का मंदिर ...	२८१		



स्थान	पत्रांक	स्थान	पत्रांक
बेरावल - काठियावाड़ ।		घस्देरासर ( गाम देवी )	२०४
श्री जैन मंदिर	१८६	सिरपुर - सी० बी० ।	
शिलालेख	१८६	श्री जैन मंदिर	२०४
ऊना - काठियावाड़ ।		शिलालेख	२०४
श्री जैन मंदिर	२००	रायपुर - सी० बी० ।	
गाणेश - गुजरात ।		श्री जैन मंदिर ( सदर बजार )	२०४
श्री जैन मंदिर	१६२	हैदराबाद - दक्षिण ।	
प्रज्ञासपाटण - गुजरात ।		श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ( बेगम बजार )	२६६
श्री बावन जिनालय मंदिर	१६३	„ पार्श्वनाथजी का मंदिर ( कारवान साहुकासी )	२६८
खंजात - गुजरात ।		„ पार्श्वनाथजी का मंदिर ( रेसीडेन्सी बजार )	२६६
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर	१६५	„ पार्श्वनाथजी का मंदिर ( चार कथान )	२६६
पोसिना - जरुथल ।		मझास ।	
श्री जैन मंदिर	१६६	श्री चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर ( शूला बजार )	२७१
बस्वई ।		„ चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर ( साहुकार पेठ )	२७२
श्री आदिनाथजी का मंदिर	२७३	„ जैन मंदिर ( „ „ )	२७३
		दादाजी का वंगला	२७३







# प्रतिष्ठा स्थान ।



		लेखांक			लेखांक
अंकवरावाद	...	... १४५५	इंदलपुर	...	... १३६१
अचलगढ़ महादुर्ग	...	... २०२७	इंद्रिय	...	... १२७७
अजीमगंज	...	... १८११	उदईज	...	... २०१०
अजुपुर	...	... १७१७	उग्रसेनपुर	...	... १४५६
अणहिलपुर ( पत्तन )	१७८६, १७८८, १८८०, १८८३		उज्जयंत	...	... १७८१
अमदावाद	...	... १२५४	उथमण	...	... २०७०
अयोध्या	१६४७, १६४८, १६४९, १६५१, १६५३, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, १६७६		उदयपुर ( मेदपाट )	१०२८, ११०६, १११५, १११६, १८६८	
अर्गलपुर	...	१४५४, १४७८, १४६६	उन्नतपुर	...	१७१७, १७६६
अर्बुदगिरि	...	... २०२५	उस	...	... १०६३
अलवर	...	... १४६४	कईउलि	...	... १६१५
अलावलपुर	...	... १५७४	कच्छ-मांडवी	...	... १८१२
अष्टापद	...	... १८०८	कछोली	...	... १०५३
अहमदाबाद ( गूर्जरदेश )	१०३०, १३०८, १४७५, १५४०, १६३५, १७६५, १८८०		करहेटक ( करेड़ा )	...	... १६५७
आगरा	१४४६, १४५२, १४५३, १४५७, १४६७, १४६६, १५०१, १५२०		कर्कौरा	...	... १११७
आगरा दुर्ग	१५८०, १५८१, १५८३, १५८४, १५८५		कंथरावी	...	... १६२७
आगोया	...	... १०६२	कंपिलपुर	...	१६११, १६३०
आजुलि	...	... १५६०	काशी	१६६२, १६६४, १६६५, १६८२	
आनंदपुर	१५३१, १५३२, १६४६, १६६७, १६६८, १६७३		कोठारा	...	... १४८६
आवरण	...	... १७६६	कुण्णिगिरि	...	... १०८४
आलपुर	...	... १०२८	कुतबपुर	...	... १५८६
			कुमरगिरि	...	... १२१४
			कूकरवाड़ा	...	... १३८७



प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
कृष्णगढ	... ११६७	जयनगर	... ११७६, १२२७, १२२८
खत्रोकुराड ( पत्रोकुराड )	... १८४७	जयपुर ( जयनगर )	१६४७, १६४८, १६५०, १६५१, १६५३, १६५४, १६५५, १६५६
खिरहाल्	... ११६५	जाबू	... १७५७, १७७४
खोमसा	... १२७८	जालोर महादुग	... ११००
खीमंत	... १७२३	जावर	... १३८६
गंधार	... १००४	जीणंधारा	... १५६६
गाणउलि	... १७८८	जूहाख्द	... १२८१
गिरनार	... १८०८	जैनगर	... १२०५
गिरिपुर	... १०८६	ज्यायपुर	... ११०४
गुंडलि	... १५५१	भाड़उलि	... १६०२
गोपगिरि	... १४२८	टिंवानक	... १७७७
गोपाचल	... १२३२	टौवाची	... १२६८
गोपाचल दुर्ग	... १४२६, १४२७	डूंगरपुर	... २०२६
गोपाचलगढ दुर्ग	... १४२६	तारंगा दुर्ग	... १७२४
घनौध	... १७७१, १७७३	दिल्ली	... १७६६
चक्रवर्त्तिनगर ( गूर्जरदेश )	... १७६३	दीवर्वादि ( दीव )	१७४३, १७६२, १७६३, १७६४
चंकिनी	... १५४४	देउलवाड़ा ( मेवाड़ )	... २००६
चंदेरा	... १२०६	देकावाड़ा	... १३२३
चंद्रावती	... १६८१, १६८६	देलवाड़ा	... १६६२
चंपापुर	... १८१०	देवकापाटण	... १७८७
चारकवांण	... २०५२	देवकुलपाटक ( पुर )	१११२, ११५८, ११६४, २००८
चारकवांण	... २०५३	देवड़ा	... २०२५
चित्रकूट	... १७८६, १६५५	दौलत्ती बाद	... २०४८
चित्रकूट दुर्ग	... १४१६	द्वीप चन्दिर	... १७६०, १७६७
चोरवाटक ( जुनागढ़ )	... १७६६	धवलकक्षा	... १७८३
जहतपुर	... १४३७	धार नगर	... ११६६
जयतलकोट	... १२७३		



( ए )

प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
नगर ( मास्वाड )	१७१३, १७१४	बिहार	१६६७
नटोपद्र	१६४६	मोलुग्राम	२०७३
जवाछ	१३०७	मेव	१५७०
नवोननगर	१७८२	मकल्लावादा ( मधुदावादा )	१०१८, १७०३, १८१०, १८११, १८१२, १८१३, १८१४, १८२६
नव्यनगर ( हल्लार देश )	१७८१	मद्रास ( शूला )	२०६६
नंदाणि	१६६४	मद्रासस पत्तन ( साहकार पेठ )	२०७०
नागपुर	१२७४, १६७६	मधुमतो	१७७६
नागोर	१४१७	मधुवन	१८२७
नारदपुरी	१८६१	मलारणा	१४८५
नासणुलो	१६३३	महिसाणा	११२७, १५६५
नेवोआए मगम	१३०२	मंगलपुर	१७६६
पत्तन	१०१६, ११०२, १३५४, १४०५, १५३६, १६१०, १६६०, १७१३, १७१४, १७६१, १८८८, २०६१, २१०६	मंडप	१४७२
पत्तन नगर	१६०६, १६१३, २०११	मंडप दुगो	१३१४
पाटण	१४६७	मंडासा	१०१५
प्रादलितनगर	१६७१	मंडोवर	१३५०
फालणपुर	११६०, १२६१, २०७४	मामुलक	१२३३
पावापुरी	१८०८, २०३६, २०३७	मारवीआ	१२१२
पूर्वाचलगिरि	१६६४	मालपुर	११३२
पीरोजपुर	१३४६	मांगलो	१७८७
पेधापुर	१७३०	मांडल ( गुर्जर देश )	१८०८
बडली	११८१	मांडलि	१५०५, १६२४
बालूवर	१०१७, १०१८, १०१६, १८२१, १८२४	मांही	१०६७
बोकाणे	१२०५, १३४६, १३५०, १४४१, १६४६	मिरजापुर	१६५६
बलदउठ	१६०४	मुरारि	१४२५
बलासर	१७३५	मूंडहटा	१५७२
बंगलादसति	१६७६	मेड़ता	११६७, १३२८, १४२५



प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
मेड़ता नगर	... १६२८	बद्धमान	... १३१३
मेड़णा	... १२२१	वाडिज	... १६५८
मोखोयाणा	... २०५४	वाणारसो	... १५६२
योगिनीपुर	... १४८३	वाराणसी	१६३८, १६८१
रणासण	... ११७५	वाराही	... २०८५
रत्नपुर	... ११३०	विक्रमनगर	... १३५१
रत्नपुर ( अयोध्या )	१६६२, १६६३, १६६४, १६६५, १६६६	विक्रमपुर	... १३५२
रत्नपुर ( मारवाड़ )	... १७०६, १७०८	विद्यापुर	... १७२७, १७६७
रंगपुर	... १०१७, १०१८	विश्वलनगर	... ११७०
राजगृह	... १८५८	वोचावेड़ा	... १३४५
राजनगर	१०१४, १५१६, १७५०, १८४०, २०४२	वीरमग्राम	... १६१२
राजपुर ( सी० पो० )	... २०७७, २०७८	वीरमपुर	... १७१५, १८८५
रामगढ दुर्ग	... १८६६	वीरवाडा	... १३२७
रालज	... १२२२	वोवलापुर	... १३०१
रेवत	... १८११	वीसनगर	... १३१६, १७२४
रेवत	... १७६३	वीसलनगर	... १०२६
लक्षणपुर	१५२६, १५३५, १५३१, १५३३, १५३५	व्यवहार गिरि	... १८४८, १८४६, १८५०, १८५१, १८५२, १८५३
लखनऊ	१५२५, १५२६, १५२७, १५२८, १५३२, १५८६	शाल्मलीयपुर	... १३६०
लूद्राड़ा	... ६२८२	शिखरगिरि	... १८२७, १८३६
लोद्राद्र	... १०१२	शूलाग्राम	... २०६४
चटपद्र	... २०८८	श्रागर	... १६३८
चड़नगर	... १७३४	सपवाराही	... १८६४
चड़ली	... १११६, १८४३	सखारि	... १७५६
बड़ेचा	... १८६४	सत्यपुर	... ११२८
चणद्र	... ११८८	समेतशैल	... १८१३
चनरिया	... २०६५	सम्मेतगिरि	... १८१४, १८१६
हरदुद्र	... १४१२	सम्मेतशिखर	... १८०८, १८११



प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
सवाई जयनगर ( जंनगर )	... ११७८, १२१६, १४४१	सोरोही	... १२८३, १३३६, १४६५
सर्हाजगपुर	... १७७८	सीहा	... १४७७
सहभाला	... ११६३, १७५३	सुजाउलपुर	... ११७३
साकर	... ११६८	सुद्रोयाणा	... १२६६
साचुरा	... १७२६	सुरमाणपुर	... १७०७
सावलन	... ११६५	सोजात	... १३२०
साहगञ्ज	... १४६६	स्तम्भतीर्थ ( खंभात )	... ११६६, १२१५, १७५६, १७६३, १७६४, १६४२
सांतपुर	... १३६८	स्तम्भतीर्थ बंदिर	... १७६६, १८००
सिद्धक्षेत्र	... १४८६	स्वातंत्र्य नगर ( वाग्वरदेश )	... १७६५
सिद्धपुर	... १३३६, १४४४	शिराद्र	... २०६७
सिंहपानांय	... १४२६	हालावाड़ा	... २०६४
सिंहुद्रड़ा	... १७७६	हावल ग्राम	... २१०६
साणुरा	... १०६१	हुगली	... १८४७
सातापुर	... १०११	हैदराबाद ( दक्षिण )	... २०६१
सोपोर	... १८२६		
साकंज	... १७५१		

## राजाओं की सूची ।

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१६३३	अकबर, सुरत्राण		१७८२	१७१३	अकबर, पातिसाहि		१७६७
१६५२	अकबर, पातिसाहि		१७६६	१४६१	कुंभकण, राणा	मेवाड़	२००६
१६६१	" "		१७६४	१४६४	कुंभकण, भूपति	देवकुलपाटक	१६५८
१६७०	अकबर, सुरत्राण		१६२८	१६६३	जगत्सिंह, राणा	उदयपुर	१०२८



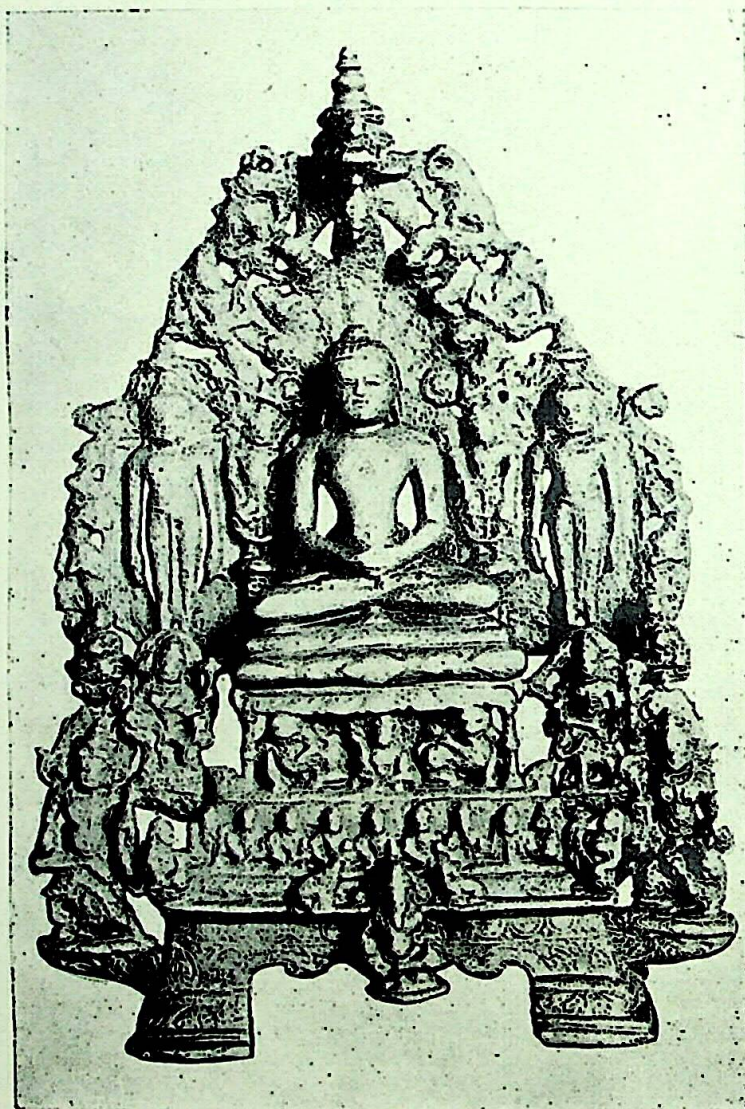
संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१८०१	जगतसिंह, महाराणा	उदयपुर	१११५	११५०	महीपाल	"	१४२६
१५६६	जगमाल, महाराजाधिराज	अचलगढ	२०२७	११५०	मूलदेव	गोपांचल	१४२६
१५४८	जशसिंह, राजा		२०३६	११५०	मंगलराज	"	१४२६
१६७८	जसवंतसिंहजी, जाम,	नवानगर	१७८१	१२७२	रणसिंह, मिहरराज	टिंवान	१७७३
१६७१	जहांगीर, पातिसाह	आगरा दुर्ग १५८०-८१-८२		१७६८	राघव, राजा	देवकुलपाट रु	२००८
१६७१	" "	आगरा १५८३-८४		१६६७	लक्ष्मराज, जाम	नवानगर	१७८१
१६७१	जहांगीर, पातिसाह सवाई सुरत्राण	१५७८-७९		१०३४	वज्रदाम, महाराजाधिराज		१४३१
१६७१	" "	उग्रसेनपुर	१४५६	११५०	वज्रदाम	"	१४२६
१६७४	जहांगीर साह,		१४६०	१२११	वस्तुपाल, महामात्य	अणहिलपुर	१७८८
१४६७	डूंगरसिंह, महाराजाधिराज	गोपांचल	१४२७	१५६२	वीकाजी, महाराजा राई	बोकानेर	१३५०
१५१०	" "	गोपगिरि	१४२८	१६३३	शत्रुसह्य, जाम	नवीननगर	१७८१
१५१०	डूंगरसिंहदेव, राजाधिराज	गोपांचल	१२३२	१६७६	शत्रुसह्य, जाम,	नवानगर	१७८१
१५२५	डूंगरसिंह, रावधर सायर	अर्बुदगिरि	२०२५	१६७१	शाहजहां		१५२७
१६६६	तेजसिजी, राउल	घोरमपुर	१७१५	१८६३	सहादतअलि, नवाब	लखनऊ	१५२५
११५०	त्रैलोक्यमल	"	१४२६	१६८६	साहजांह, पादशाह		१७६५
११५०	देवपाल	गोपांचल	१४२६	१६८८	साहिजां, पातिसाह सवाई	अर्गलपुर	१४५४
११५०	पद्मपाल	"	१४२६	१६६८	साहजांह, पातिसाह		१६६७
१३६२	पृथ्वीचंद्र, महाराजाधिराज	चित्रकुट	१६५५	१८५६	सुरतसिंह, महाराज	बोकानेर	१३४६
१५४६	भीमसिंह, रावल	मण्डासा	१०१५	११५०	सूर्यपाल	"	१४२६
११५०	भुवनपाल	"	१४२६	१५२६	सोमदास, राउल	डूंगरपुर नगर	२०२६
१५५२	मल्लसिंहदेव, महाराजाधिराज,	गोपांचल	१४२६	१६६६	हठीसिंहजो, महाराज	रामगढ दुर्ग	१८६६











METAL IMAGE OF SHRI ADINATH  
Dated, V. S. 1077, ( A. D. 1020. )



# JAIN INSCRIPTIONS.

## जैन लेख संग्रह ।

दूसरा खण्ड ।

### कलकत्ता ।

श्रीआदिनाथजी का देरासर ।

कुमारसिंह हाल—न० ४६, इण्डियन मिरर स्ट्रीट ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1001 ] \*

( १ ) पञ्जक सुत अंब

( २ ) देवेन ॥ सं १०९९

[ 386 ] x

( १ ) ब्रह्माल सत्क सं

\* चित्र देखो । लेख पश्चात् भागमें खुदा हुआ है । यह प्राचीन मूर्ति भारतके उत्तर पश्चिम प्रान्त से प्राप्त हुई है । दोनों तर्फ कायोत्सर्ग की खड़ी और मध्यमें पद्मासनकी बैठी मूर्तियाँ हैं । सिंहासनके नीचे नवग्रह और उसके नीचे वृषभ युगल है, इस कारण मूल मूर्ति श्रीआदिनाथजी की और यक्ष यक्षिणी आदियों के साथ बहुत मनोह्र और प्राचीन है ।

x यह लेख प्रथम खण्डमें छपा था, पुनः जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी का यह संशोधित पाठ है । इसमें भी दोनों तर्फ कायोत्सर्गकी और मध्यमें पद्मासनकी मूर्ति है और गुजरात प्रान्तसे मिली है ।



- ( १ ) पंकः श्रिया वे सुन  
 ( ३ ) स्तु पुन्नक श्राद्धः सी  
 ( ४ ) लगल सूरि जक्तश्चन्द्र कु  
 ( ५ ) ले कारयामासः ॥  
 ( ६ ) संवतु  
 ( ७ ) १०७२

[ 1002 ]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीअजित बिंब का० सा० नानू बुदिजाकेन प्र०  
 श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[ 1003 ]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगढे संताने चाम्रदेव सूरिणां । महणं गणि नामाद्या चेद्धी सर्व देवा  
 गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्य शुजवारया । चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं ॥

हीराबालजी गुलाबसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[ 1004 ]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमालझातीय दोसी मूंगर जार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन जार्या  
 सोही सुत वीका युतेन आ० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगढे  
 श्रीअमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुभं जवतु ॥ श्रीः ॥

साजचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटैल रोड ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1005 ]

संवत् १६२३ ज्येष्ठ शुक्ल ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । ज  
 श्रीजिनरंगसूरि राज्ये ।



( ३ )

[ 1006 ]

संवत् १७२७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ रवौ खरतरगङ्गीय महोपाध्याय रामविनयगणिना प्र० पार्श्वबिम्बं ।

स्फटिक के बिम्ब पर ।

[ 1007 ]

संवत् १७७७ मा । सु० १३ प्र । ख । श्रीजिनचन्द्र सूरिजिः ।

रौप्य के चरण पर ।

[ 1008 ]

जंगम युग प्रधान जट्टारक श्रीजिनदत्त सूरीश्वराणां पाडुके । श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां पाडुके । वीर संवत् २४४७ वि० १९७९ आषाढ शुक्ल १ चन्द्रे रांका गोत्रीय लाजचन्द्र शेठेन आत्मकढ्याणार्थ इमे पाडुके निर्मापिते, श्री वृ० ख० ग० ज० युग० जट्टारक श्रीजिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये श्रीमद्दिङ्मण्णलाचार्य श्रीनेमिचन्द्रसूरि अन्तेवासि पं० श्रीहीराचन्द्रेण यतिना प्रतिष्ठापिते श्री शुचं भूयात् ।

इण्डियन म्युजियम—चौरङ्गी रोड ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1009 ] \*

संवत् १४५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ श्रीमूलसंघे प्रतिष्ठाचार्य श्रीपद्मनन्दि देवोपदेशेन श्रीजीमदेव । जार्या महदे । सुत गणपति जार्या करमू ॥ ..... प्रणमति ।

—०—  
अजिमगञ्ज—मुर्शिदाबाद ।

श्रीनेमनाथजीका मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1010 ]

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने सोमवारे उकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० बीशल जार्या

\* यह चौविशी हाल में यहां पर दिल्ली से आई है ।



जावखदे तत्पुत्र सा० कर्मा तद्गार्या कउतिगदे तत्पुत्र सा० सहसमह्व श्रावकेण सपरिवारेण  
आत्मश्रेयोर्थ श्रीचन्द्रप्रज्ञ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगढे श्रीजिनराजसूरि पढे  
श्रीजिनचन्द्रसूरिजिः ॥

[ 1011 ]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ४ सोमे श्रोत्रह्माणगढे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि विरूआ  
चार्या मुक्ति सुत हीरा चार्या हीरादे सुत जावड़ करूआच्यां स्वपित्रोः श्रेयोर्थ श्रीधर्मनाथ  
बिंबं पञ्चतीर्थी कारापितः प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरि पढे श्री विमल सूरिजिः ॥ सीतापुर  
वास्तव्यः ॥

[ 1012 ]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके उ० ज्ञातीय विद्याधर गोत्रे । सा० सूमण ।  
जा० सूमलदे । पु० वेला जा० बगू नाम्ना पु० सोमा युतयां स्वत्रातृ पुण्यार्थ श्रीआदिनाथ  
बिंबं का० प्र० बृहज्जढे घोक्मीयावटंके (?) श्रीधर्मचन्द्रसूरि पढे श्रीमलयचन्द्र सूरिजिः ।  
लोझाड ग्राम ॥

[ 1013 ]

॥ ए० ॥ संवत् १५२२ वर्षे आषाढ सुदि ८ उकेशिज्ञातीय रुवेयता गोत्रे । सा० केसराज  
चार्या रतनाकेन श्रेयसे श्रीसुमति बिंबं प्रतिष्ठितं धर्मघोषगढे श्रीसाधु ॥

[ 1014 ]

संवत् १५०६ व । ज्ये । गु० श्री राजनगरवास्तव्य । प्राग्वाटज्ञातीय बृहद्शाषायां सा०  
रुषजदास जा० ऊक्तु नाम्न्या श्रीनमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तषागढे । ज० । श्री ५  
श्रीविजयानन्दसूरिजिः ॥ आचार्य श्री ५ श्रीविजयराजसूरि परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु । ज ॥ १॥

पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1015 ] \*

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे जट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा सा० राज  
पापड़ीवाल सप्रणमति का० श्रीजीमसिंघ रावल । सहर मण्णासा ।



\* धरणेन्द्र पसावतो सहित श्रीपाश्वनाथजीकी श्वेत पाषाणकी २ मूर्तियां पर एकही तरहके २ लेख हैं ।



( ५ )

## सैंतीया ( वीरभूम )

श्री आदिनाथजी का मन्दिर ।

धातुकी पञ्चतीर्थी पर ।

[ 1016 ]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्रीजैसवंशे दो० वरूया जार्या मेघू पुत्र जईता  
सुश्रावकेण जा० जीवादे त्रातृ जटा सहितेन स्वश्रेयसे ॥ श्रीअंचलगहेश्वर । श्रीजयकेसरि  
सूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन श्री पत्तने ॥ छः ॥

## रङ्गपुर ( उत्तर बङ्ग )

श्रीचन्द्रप्रजस्वामी का मन्दिर—माहीगञ्ज ।

शिला लेख नं० १

[ 1017 ]\*

- ( १ ) अत्यद्भुतं सज्जनसिद्धिदायकं जव्यांगिना मो
- ( २ ) द्दकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चन्द्रप्रजं
- ( ३ ) नौमि जिनं सनातनं ॥ १ ॥ संवत् १७९३ मि । माघ वदि १ । र
- ( ४ ) वौ श्रीरङ्गपुरे । ज । श्रीजिन सौजागा सूरिजी विजयी ।
- ( ५ ) राज्ये वा । आनन्दवल्लभगणेरुपदेशात् श्रीमन्मुदावा
- ( ६ ) द बालूचर वास्तव्य हू । निहालचन्द तत्पुत्र बाबू इन्द्रच०
- ( ७ ) न्द्रेण श्रीचन्द्रप्रज जिनः प्रासादः कारापितः प्रतिष्ठापि
- ( ८ ) तश्च । विधिना ॥ सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम् ॥
- ( ९ ) श्रीरस्तुः ॥ १ ॥

\* यह शिलालेख श्याम वर्णके पत्थर पर लंबाई इञ्च-१४ चौड़ाई इञ्च-६ समामण्डप के दक्षिण तर्फ की दीवार पर लगा हुआ है ।



## शिला लेख नं० १

[ 1018 ] \*

- ( १ ) अत्यद्भुतं सज्जनसिद्धिदायकं ज्ञव्यांगिना  
 ( २ ) मोक्षकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चं  
 ( ३ ) द्रप्रज्ञं नौमि जिनं सनातनं ॥ १ ॥ संवत् १९  
 ( ४ ) ३२ शाके १९९९ मिति आषाढ़ सुदि ए चन्द्रवासरे  
 ( ५ ) रङ्गपुरे । ज । श्रीजिनहंस सूरीजी विजे राज्ये ॥ श्री  
 ( ६ ) हंसविलास गणि तत्शिष्य श्री कनकनिधान मुनि  
 ( ७ ) रुपदेशेन । श्रीमधुदावाद बालूचर वास्तव्य ॥  
 ( ८ ) दूगड़ इन्द्रचन्द्रजी जीर्णोद्धार कारापितं ॥ नाहटा मौ  
 ( ९ ) जीरामजी तत्पुत्र नाहटां गुलाबचन्द्रजी तत्पुत्र इन्द्र  
 ( १० ) चन्द्रजी मारफत श्री चन्द्रप्रज्ञ जिन प्रासादस्य सिषरं  
 ( ११ ) नवीन रचिता वेदका नवीन निजद्रव्यै कारापितं ॥ प्रति  
 ( १२ ) छितं विधिना सतां कढ्याण वृद्ध्यर्थम् ॥ १ ॥  
 ( १३ ) ॥ मिस्तरी षोलाराम सिलावट लालू मक्सूदका

मूल नायक की पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1019 ]

संवत् १८९३ वर्षे.....सुदि दिने.....श्रीचन्द्रप्रज्ञ विंमिदं प्रतिष्ठितं ज० श्रीजिनहर्ष सूरि  
 कारापितं.....शीलचन्द्रेन । बालूचर मध्ये ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1020 ]

संवत् १९३६ मिति आ०.....शुक्रवारे यु । प्र० श्री.....जी विजयराज्ये श्री शान्ति  
 जिन कारापितं आणन्दवल्लभजी तत् शिष्य.....प्रतिष्ठितं ।

\* यह मिर्जापुरी पत्थर पर खुदा हुआ न० १ के समान साइज का बायें तर्फ दीवार पर लगा हुआ है ।



( ३ )

[ 1021 ]

सं० १९३६.....सौजाग्यसूरिजी विजय राज्ये नाहटा मौजीरामजी तत्पुत्र गुलाबचन्दजी श्री आदिजिन कारापितं श्री आणन्द..... ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1022 ]

सं० १९२० मि० फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंहजी डुगड़ जार्या महताब कुँवर श्री श्रेयांस जिन बिंबं कारापितं ।

[ 1023 ]

सं० १९२० मिः फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंह जार्या महताब कुँवर श्री अग्निदत्त २२ जिन बिंबं का० ।

चौविशी पर ।

[ 1024 ]

संवत् १९०१ मित्ती आषाढ़ सुदि १३ कारितं चोरबेड़ीया सा० सांवल पतिना ॥ प्रतिष्ठितं उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिजिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1025 ]

सं० १५१३ व० ज्येष्ठ वदि ११ उके० झा० कोठारी गोत्रे सा० मफुणा जा० काउ पु० नेता झूंगर नेताकेन जा० नेतादे स० श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारि० प्र० श्रीसंडेर गढे श्री ईश्वर सूरिजिः

[ 1026 ]

संवत् १५५७ वर्षे पोष सुदि १५ प्राग्वाट झातीय सा० सायर जा० रत्नादे पु० सा० मालाकेन जा० हांसू पुत्र गोइन्दादि कुटुम्बयुतेन निज श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ श्रीः ॥



( ८ )

दादाजी का मन्दिर-माहीगञ्ज ।

पाषाण के चरण पर ।

[ 1027 ]

संवत् १८९९ रा वर्षे जेठ मासे शुक्ल पक्षे १० तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रकुलाधिप ।  
वृहत् श्री खरतरगढे जंगम युगप्रधान जट्टारक । श्री १०० श्री जिनदत्त सूरिजी श्री १००  
श्री जिनकुशल सूरिणां चरण स्थापितं । उ । श्री रत्नसुन्दरजी गणि उपदेशात् साह श्री झुगड़  
बुधसिंहजी तत्पुत्र । बाबू श्री प्रतापसिंहजी कारापितं ॥ श्रीसङ्ग हितार्थम् । जङ्गमयुगप्रधान  
जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजी विजय राज्ये श्रीरस्तु ॥ श्रीकल्याणमस्तुः ॥

उदयपुर ( मेवाड़ )

श्री शीतलानाथस्वामी का मन्दिर ।

[ 1028 ] \*

ॐ ॥ संवत् १६९३ वर्षे कार्तिक वदि ॥ सोमवासरे उदयपुर राणा श्री जगत्सिंह राज्ये  
तपागढे श्री जिन मन्दिरे श्री शीतलजिन बिंबं पित्तलमय परिकर कारितः आसपुर वास्तव्य  
वृक्षशाखा प्राग्वाट झातीय पं० कान्हा सुत पं० केसर जार्या केसर दे तत्सुत पं० दामोदर  
खकुटुम्बयुतैः ॥ जट्टारक श्री विजयदेव सूरिश्चर तत्पट्टप्रज्ञाकर आचार्य श्री विजयसिंह  
सूरिश्चर निदेशात् सकलसङ्गयुतैः पण्डित श्री मतिचन्द्र गणिजिः वासदेवः श्री सकलसङ्गस्य  
कल्याणं भूयात् ॥

धातु की चौविशी पर ।

[ 1029 ]

संवत् १४८९ वर्षे जे० व० ११ प्राग्वाट दो० सूरु जा० पोमी सुत दो० आसाकेन  
जा० रूपिणि सुत राजल माणिकलाल जोगादि कुटुम्बयुतेन खज्रात गोला खसुत सारङ्ग  
श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागढनायक जट्टारक प्रभु श्री सोमसुन्दर  
सूरिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥ वीसलनगर वास्तव्यः ॥

\* मूल विंव श्वेत पाषाण का प्राचीन है, लेख मालूम नहीं होता ; पश्चात् धातु की परकर बनी है उस पर यह लेख है ।



( ए )

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1030 ]

सं० १५१७ वर्षे पोष वदि ८ रवौ प्राग्वाट झा० सा० रूंगर जा० सुहासिणि पुत्र लषम सिंहेन जा० सोनाई पुत्र नगराजादि कुटुब युतेन खपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं । प्रतिष्ठितं तपागछे श्री रत्नशेखर सूरिजिः अहिमदाबाद वास्तव्यः ।

[ 1031 ]

सं० १५५७ वर्षे मार्गशिर सुदि ए शुक्रे श्री नाष्ठा वालगछे उस० कावू गोत्रे का० सोंगा जा० सोंगलदे पु० धूलाकेन चार्या पूजी सहितेन पूर्वज पूण्यार्थ श्री शीतलनाथ बिम्बं का० श्री महेन्द्र सूरिजिः ॥

पञ्चतीर्थी और मूर्तियों पर । \*

[ 1032 ] ×

१ सं० ७८ गे० पद्मा विनिगो बाज० लूगापति कारितं ।

[ 1033 ]

ॐ ॥ संवत् ११९६ माघ सुदि १२ गुरौ सहज मत्साम्बा श्री ऋषजनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रामदेव सूरिजिः ॥

[ 1034 ]

संवत् १२५८ जेष्ठ सुदि १० रवौ । श्रे० चाणूसीहेन निज कुटुम्ब सहितेन पार्श्वनाथः कारितः प्रतिष्ठितः श्री देवजद्र सूरिजिः ।

[ 1035 ]

सं० १२६२ फागुण सुदि १० रवौ श्रे० प्रवदेव सुत वीराणसदेव श्रेयोर्थ का० प्र० श्री जावदेव सूरिजिः ।

\* ये मूर्तियां श्री मन्दिर जी के प्राङ्गनके दाहिने कोठरी में रखी हुई हैं ।

× यह मूर्ति बहोत प्राचीन है परन्तु अक्षर घिस जाने के कारण स्पष्ट पढ़ा नहीं गया ।



( १० )

[ 1036 ]

१२.....आषाढ सुदि ८ उवएस वाधि सीद्देण पु० गामा माढ्हाज्यां पितृ श्रेयोर्थ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सर्वगुप्त सूरिजिः ।

[ 1037 ]

सं० १३२३ ज्येष्ठ सुदि १.....श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उद्योतन सूरिजिः ॥

[ 1038 ]

सं० १३२५ वर्षे फागुण सुदि ४ शुक्ले । श्रे० धामदेव पुत्र रणदेव धारण जा० आसन्नदे श्रे० राम श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1039 ]

सं० १३२८ वर्षे वैशाख शु० ६ षण्णेरक गढे श्री यशोज्ञ सूरि सन्ताने सा० सद्गणल जा० जगद्ध पु० मण्ण श्री आस सिंह जा० मीढ्हा.....काया बिम्बं कारितं प्र० श्री झाल्य सूरिजिः ।

[ 1040 ]

सं० १३२९ वैशाख वदि ९ शुक्ले कलु ऊदा जार्या ललतू श्रेयसे कर्मणेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं .... ।

[ 1041 ]

संवत् १३५२ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्री चैत्र गह्विय धर्कट वंशे नाहर गोत्रे सा० हापु सुत सा० विजयसीद्देन जातु धारसीह श्रेयसे ....माग्यकेन श्री वासपूज्य बिम्बं कारितं प्र० श्री गुणचन्द्र .... ।

[ 1042 ]

सं० १३७४ माघ व० १० गुरौ श्री श्रीमाल झा० श्रे० पुन पाल सुत सोमल पितृ पुन पाल श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री रामं (?) प्रायागढे प्रतिष्ठितं श्री शीलज्ज्ञ सूरिजिः ॥



( ११ )

[ 1043 ]

सं० १३७५ वर्षे फागुण सुदि.....श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारिता प्रतिष्ठितं श्री कक्क  
सूरिजिः ॥

[ 1044 ]

सं० १३७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ बुधे श्री माल झातीय पितामह श्रे० वीढ्ढण पितृ श्रे०  
सोमा पितृव्य साजण जातु माहा.....श्रेयोर्थ सुत राणा धरणिकान्यां श्री पार्श्वनाथ पञ्च-  
तीर्थी का० ।

[ 1045 ]

संवत् १३७७ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ श्री....दाहड़ वीरम श्री चन्द्रप्रज बिम्बं प्रतिष्ठितं ।

[ 1046 ]

सं० १३५१ मङ्गारुकीय गढे श्रे० पादा जा० जाइल पु० कर्म सीद्देन पित्रो श्रेयोर्थ श्री  
महावीरं श्री रत्नाकर सूरि पढे श्री सोमतिलक सूरिजिः ॥

[ 1047 ]

संवत् १३७७ वै० सुदि १ प्राग्वाड़ श्री अठाड़ा जार्या वाढहु....बिम्बं प्र० श्री भावदेव  
सूरि ।

[ 1048 ]

सं० १४०५ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीमाल झातीय पितृ षेता मातृ जगतल देवि  
तयो श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्र गढे श्री रतनागर सूरिजिः ॥

[ 1049 ]

सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ए रवौ सा०....कुटुम्ब श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं  
प्रतिष्ठितं जीरापल्लीयैः श्री रामचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1050 ]

सं० १४०७ वैशाख वदि ४ रवौ श्री माल झातीय पितामह उदयसीह पितृ लषणसीह  
श्रेयसे सुत षोषाकेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री गुणसागर सूरि शिष्य  
श्री गुणप्रज सूरिजिः ।



[ 1051 ]

सं० १४०९ वर्षे फागुण सुदि २ बुधे हुंवड़ झातीय जातृ पातल श्रेयसे ठ० वीरमेन  
श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री सर्वानन्द सूरि सहितैः श्री सर्वदेव सूरिजिः ॥

[ 1052 ]

सं० १४११ वर्षे माघ वदि ६ दिने नाहर गोत्रे सा० देवराज जा० रुपी पु० सा० लोला  
चार्या नादही.....पौत्रादि सहितै आत्मश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं श्री रुद्रपल्लीय  
ग० ज० श्री जिनहंस सूरि पदे श्री जिनराज सूरिजिः ॥

[ 1053 ]

सं० १४१२ वर्षे वैशाख सु० ११ बुधे प्राग्वाट झा० कबोली वास्तव्य श्रेष्ठि तिहुणा जा०  
वांद्णि पितृ श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री रत्नप्रज सूरिजिः ।

[ 1054 ]

सं० १४१३ फागु० सु० ७ सोमे प्रा० व्य० हरपाल चार्या आद्वहण दे पु० विजयपालेन  
पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री शालिजद्र सूरिजिः ॥

[ 1055 ]

सं० १४१३ फागुण सु० ए सोमे श्रीमाल व्य० जोहण जा० माद्वहण दे सुत आद्वहा  
पाद्वहान्यां पितृव्य आसपाल जातृछान्यां श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिम्बं कारितं श्री अजय  
चन्द्र सुरिणामुपदेशेन ।

[ 1056 ]

सं० १४३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने मंलि दलीय गोत्रे सा० सारङ्ग जा० सारू पु० सीधरण  
जा० सुहवदे पुत्र सा० मांज मैस परवतादि युतेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री  
खरतरगछे श्री जिनजद्र सूरि पदे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1057 ]

संवत् १४३७ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे । श्री कारंटगछे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उपकेश  
झा० श्रे० सोमा जा० सूमलदे पुत्र सोनाकेन पितृ मातृ श्रे० श्री आदिनाथ बिम्बं का० प्र०  
श्री सांवदेव सूरिजिः ।



( १३ )

[ 1058 ]

सं० १४५० वर्षे मगसिर वदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० षाषण जा० भीमसिरि तयो  
श्रियोर्थ सुत आदहा ऊदा देवाकेन श्री वासुपूज्य बिम्बं पञ्चती० का० प्र० श्री नागेन्द्रगहे  
श्री रत्नसंघ सूरि पढे श्री देवगुप्त सूरिजिः । जारा सलषा श्रेयोर्थ ॥ श्री ॥

[ 1059 ]

सं० १४५३ वर्षे वैशाख सुदि २ हुंवड़ झा० श्रे० देवड़ जा० चामल देवि पुत्र हापाकेन  
हापा जा० हलू पु० सु० पातल सुत जीला हुंवड़गही श्री सर्वानन्द सूरि प० श्री सिंहदत्त  
सूरिजिः ।

[ 1060 ]

सं० १४५५ विणचट गोत्रे सा० तीषण जा० तिहुणश्री पु० मोषाटन आत्मपूर्वजनिमित्तं  
चन्द्रप्रज्ञ बिम्बं का० प्र० धर्मघोष गहे श्री सर्वाणन्द सूरिजिः ।

[ 1061 ]

सं० १४५७ आषाढ सुदि ५ गुरौ प्रा० झा० व्यव० ठाहड़ चार्या मोखलो पुत्र त्रिभुवणा  
केन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं साधु पू० प० श्री धर्मतिलक सूरि उपदे० ....

[ 1062 ]

सं० १४६० वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ रवौ उकेश वंशे गाढ़ीया गोत्रे सा० देपाल पुत्र आना  
चार्या जीमिणि श्रेयोर्थ श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रति० उपकेश गहे श्री देवगुप्त  
सूरिजिः ॥

[ 1063 ]

सं० १४७२ वर्षे फाट्गुन वदि २ शुक्रे श्रीमाल संघे श्री पद्मनन्दि गुरु हुंवड़ ज्ञातीय  
व्य० पेथड़ चार्या हीरादे सु० छय सारग सायर बध गोत्रे श्री आदिनाथ बिम्बं ..... ।

[ 1064 ]

ॐ ॥ सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ शुक्रवारे वावेल गोत्रे नरवच पु० आदहा पादहा  
मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिम्बं कारापितं श्री धर्मघोष गहे श्री पद्मसिंह सूरिजिः ॥



( १४ )

[ 1065 ]

सं० १४५४ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्ले रनघणा गोत्रे हुंवड़ झातीय श्रे० वरजा जा० रुनी  
सु० सुप सूर ॥ पितृश्रेयर्थ श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिम्बं का० श्री सिंहदत्त ( रत्न ? )  
सूरिजिः ॥

[ 1066 ]

संवत् १४५७ वर्षे प्राग्वाट झातीय श्रे० नरदेव जार्या गांगी पुत्र श्रे० जाबटेन जा० कडू  
पुत्र .... पितृव्य चांपा श्रेयर्थ श्री चन्द्रप्रज बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1067 ]

सं० १४७६ प्राग्वाट व्य० कट्हा ऊमी सुत सूरिकेन जा० नीणू ज्ञा० चांपा सुत  
सादा पेथा पदमादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थु बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर  
सूरिजिः ॥

[ 1068 ]

सं० १४७७ वर्षे फा० सु० १० बुधे उप० झा० श्रे० कसूर जार्या कुसमीरदे सु० गेहा  
केन पित्रो श्रेय० श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० मड्डा० रत्नपुरीय ज० श्री धणचन्द्र सूरि  
प० श्री धर्मचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1069 ]

संवत् १४७९ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ प्राग्वाट झातीय श्रे० काला जार्या कीट्हाणदे  
सुत सरवणेन पितृमातृ श्रेयसे श्री चन्द्रप्रज स्वामि पंचतीर्थी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मडाहड़  
गहे श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1070 ]

सं० १४७९ वर्षे वैशाख वदि ५ उपकेश झा० राका गोत्रे सा० जूणा जा० तेजखदे पु०  
कानू रुट्हा जा० रयणीदे पु० केट्हा हापा शाट्हा तेजा सोजीकेन कारापितं नि० पुण्यार्थ  
आत्म श्रे० उपकेश गहे कुकदाचार्य सं० प्र० श्रीसिद्ध सूरिजिः ॥



[ 1071 ]

सं० १४७३ वर्षे द्वि वैशाख वदि ५ गुरौ श्री प्राग्वाट झा० व्य० खीमसी जा० सारू  
पुत्र व्य० जेसाकेन पुत्र वीकन आसाज्यां सहितेन श्री मुनिसुब्रत स्वामि बिंबं श्री अंचल  
गहनायक श्री जयकीर्त्ति सूरि गुरूणां उपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[ 1072 ]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ उपकेश झातीय सा० कून्ता जा० कुंवरदे पुत्र  
जम्हा जा० जावलदे पु० सायर सहितै श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० उपकेश गह सिद्धाचार्य  
सन्ताने मेदरथ श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1073 ]

सं० १४७४ वर्षे ज्ये० सु० ५ बुधे श्री नागेन्द्र गह उपकेश झा० सा० सादहा जा० सादहा  
पु० धांगा जा० सामी पितृमातृ श्रे० श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० पद्माणंद सूरिजिः ॥

[ 1074 ]

सं० १४७१ वर्षे वैशाख सु० ६ गुरौ व० धरणा जा० पूनादे सुत हीराकेन जा० हीरादे  
पुत्र श्री सुमतिनाथ बिंबं श्री सोमसुन्दर सूरि प्र० .... ।

[ 1075 ]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे ओसवंशे पंचाणेचा सा० वस्ता जार्या लीलादे पुत्र  
ऊमाकेन सपरिवारेण स्वपुण्यार्थ श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० खरतर ग० श्री जिनसागर  
सूरिजिः ॥

[ 1076 ]

सं० १४७२ वर्षे ज्ये० व० ११ प्राग्वाट सा० अरसी जा० आदहणदे सुत चाचाकेन  
जा० चाहणदे सुत तोला बाला सुहृन् राणा बांचादि युतेन स्वसुत कोसा श्रेयसे श्री नमि-  
नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1077 ]

सं० १४७५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे सांषुला गोत्रे सा० ठीहिल पु० चांगा जा० चापलदे  
पु० लाषाकेन जा० लषमादे पुण्यार्थ श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गह  
श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे ज० श्री विजयचन्द्र सूरिजिः ॥



[ 1078 ]

सं० १४९६ वर्षे फागुण वदि २ शुके हुंवड़ झातीय ठ० देपाल जा० सोहग पु० ठ०  
राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं निष्ठतिगहे श्री सूरिजिः ॥

[ 1079 ]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ गुरौ सुराणा गोत्रे सा० सोनपाल जा० तिहुणी पु०  
घिणराजेन गुणराज दशरथ सहसकिरण समन्वितेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं  
प्र० श्री धर्मघोष गहे ज० श्री पद्मशेषर सूरि प० ज० श्री विजयचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1080 ]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुके दहदहड़ा ..... श्री अरुनाथ बिंबं का० प्र० राम  
सेनीया वरफे (?) श्री धर्मचन्द्र सूरि पढे श्री मलयचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1081 ]

सं० १५०५ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे श्री संडेरगहे ऊ० झा० वासुत गोत्रे सा० गांगण  
पु० पैरु पु० बुलाकेन सा० गोगी पुत्र ठाड़ा कुंजा सहितेन स्वपुण्यार्थ श्री शान्तिनाथ बिंबं  
का० प्र० श्री ..... ।

[ 1082 ]

सं० १५०६ मा० सु० ७ दिने श्री उपकेशझातौ सिरहठ गोत्रे सा० सहदेव जा० सुहवदे  
पु० सालिगेन पित्रो निमित्तं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्री सर्व सूरिजिः ॥

[ 1083 ]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० उप० चिपड़ गोत्रे सा० रावा जा० जेठी पु० देमाकेन  
मातृपितृ पुण्या० आत्म श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० उपकेश गहे० प्रति० श्री कक्क  
सूरिजिः ।

[ 1084 ]

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ बुधे प्राग्वाट झातीय श्रे० सोमा जा० धरमिणि सुत  
मालाकेन लाला जा० गेलू राजू युतेन स्वश्रेयोर्थ श्री वर्द्धमान बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम  
सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥ कृष्णिगिरि वास्तव्य ॥



( १७ )

[ 1085 ]

सं० १५०८ वै० शु० ३ प्राग्वाट व्य० मेघा चार्वा हीरादे पुत्र व्य० आसा मोना चा०  
कैलू आदहा पुत्र शिखरादि कुटुम्ब युताच्यां स्वश्रेयोर्थे श्री युगादि वि० का० प्र० तपा  
श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[ 1086 ]

सं० १५१० वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे गिरिपुर वास्तव्य हुंवड् झाति डेनिकठ गोयद (?)  
जा० वारू सु० जाला जा० हीसू सु० आसाकेन जा० रूपी युतेन स्व० श्री सुविधिनाथ  
वि० का० श्री वृ० तपापक्षे श्री रत्नसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1087 ]

सं० १५११ वर्षे माह वदि ६ गूर दिने उप० झा० चलद (?) गोत्रे सा० ठाड़ा जा०  
सहवादे सा० जाड़ा जा० जसमादे सहितया स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंब का० प्र०  
श्री ज० रामसेनीया अटकरा० श्री मलयचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1088 ]

॥ सं० १५१३ व० चै० सु० ६ गुरौ उपकेश वं० ताल गो० सा० महिराज पु० सा०  
कादहा जा० कलसिरि सु० धना जा० धरण श्री पु० बोषा यु० श्री शितलनाथ विंब का०  
प्र० धर्मबोष ग० श्री साधुरत्न सूरिजिः ॥

[ 1089 ]

॥ सं० १५१३ पौष शुदि ७ जकेश वंशे विमल गोत्रे सं० नरसिंहांगज सा० जाऊणेन  
श्री कुंथु विंब का० प्र० ब्रह्माणी उदयप्रज सूरि तपा जटारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे हेम  
हंस सूरिजिः ॥

[ 1090 ]

॥ सं० १५१५ वर्षे जे० सुदि ५ उपकेश झा० जोजा उरा सा० वीदा जा० वारू पुत्र  
गांगा हुदाकेन पूर्वज निमित्तं श्री कुंथनाथ विंब का० प्र० श्री चैत्रगढे ज० श्री रामदेव  
सूरिजिः ॥



[ 1091 ]

सं० १५१९ वर्षे फा० शु० ११ शनौ सीणुरावासि प्राग्वाट व्य० चूरा जा० गजरी पुत्र  
सा० देवहाकेन जा० रूपिणि पुत्र गरु आदि कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री श्री विमलनाथ  
मूलनायक विंवालंकृत चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागळे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री  
लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[ 1092 ]

सं० १५२३ वर्षे माघ सु० ६ रवौ रेवती नक्षत्रे प्राग्वाट श्रे० घेघा जा० जमलू सुत श्रे०  
रीमी जार्या श्रे० सोमा जार्या बाळलदे पुत्रा दुलू नाम्ना स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंवां का०  
प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ आगीया ग्रामे ।

[ 1093 ]

सं० १५२५ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ उस वास्तव्य हूंबड् ज्ञातीय वररजा (?) गोत्रे  
षे० कर्मणजा जा० नानू सुत (?) कान्हा श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवां प्रति० श्री ज्ञान  
सागर सूरिजिः ॥

[ 1094 ]

सं० १५२७ वर्षे आषाढ सु० १३ रवौ ऊ० ज्ञातीय गूंदोचा गोत्रे सा० जांमा जा०  
मापुरि पु० मांमा जा० वाढ्ढणदे पु० मूना पाढ्ढा सहितेन सुता श्रेयसे श्री सुमतिनाथ  
विंवां का० प्र० श्री चैत्रगळे श्री सोमकीर्त्ति सूरि पट्टे श्री श्री चारुचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1095 ]

॥ संवत् १५२८ वर्षे ज्येष्ठ सु० शुक्रे उशवाल ज्ञा० ताहि गोत्रौ सा० मूलू जा० लूणादे  
द्वि० सुहागदे पु० सा० जाषर जा० नीली पु० रणधीर जगा हडी रहा धोपा श्रेयोर्थ श्री  
सुविधिनाथ विंवां का० प्र० खरतर गळे श्री जिनचन्द सूरिजिः ।

[ 1096 ]

संवत् १५३१ वर्षे फागुन सु० ८ शनौ उ० ज्ञा० ईटोडका गो० सा० गपो जा० मानू  
पु० माका षेढा रतना जाला ऊबू पु० जादा सहितेन आत्म श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवां  
का० प्रति० श्री चैत्रगळे श्री सोमकीर्त्ति सूरि पट्टे श्री श्री नारचन्द्र सूरिजिः ॥



[ 1097 ]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय सा० नाऊ जा० हांसी पुत्र सा० ठाकुरसी सा० वरसिंघ जातु सा० वीसकेन जा० सोजी पुत्र सा० जीणा सहितेन श्री अंचलगहेश श्री श्री श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री संघेन मांही ग्रामे ॥ श्री श्री ॥

[ 1098 ]

॥ सं० १५३५ वर्षे मार्ग वदि १२ साषुष्ठा गोत्रे साह पाट्टहा जा० रहणादे पु० सा० तेजा जा० तेजलदे पु० बलिराज वीसल लोला । माणिकादि युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्मघोषगहेश श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे श्री पद्माणंद सूरिजिः ॥

[ 1099 ]

सं० १५३६ वर्षे मार्गसिरि सुदि १० बुधवासरे श्री संमेर गहेश ऊ० तेखहरा गो० सा० ध्वना पु० काट्टह पूजा जा० खलतू पु० टोहा हीरा टोहा जा० वरजू पु० .... स्वश्रे० लाला निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं का० श्री जिण जड ( ? ) सूरि सं० श्री साखि सूरिजिः ॥

[ 1100 ]

सं० १५४२ वर्षे फा० व० २ दिने जालजर महाडुर्गे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० पोष जा० पोमादे पुत्र सा० जेसाकेन जा० जसमादे जातु लाषादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयोर्य श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० तप श्री सोमसुन्दर सन्ताने विजयमान श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्रियोस्तु ॥

[ 1101 ]

सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि २ उसवाल ज्ञाती कनोज गोत्रे सा० षेढा पु० सहसमल जा० सुहिलालदे पु० ठाकुरसि ठकुर युतेन आत्मश्रेयसे माट्टहण पितृपुण्यार्थ शीतलनाथ बिंबं का० ॥ प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1102 ]

सं० १५६६ वर्षे वै० व० १३ र० पत्तनवासि प्रा० दो० माणिक जा० रबकू सुत पासाकेन जा० ईडू सु० नाथा सोनपालादि कुटुम्बयुतेन श्रेयोर्य श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं तपागहेश श्री हेमविमल सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥



सं० १५६६ वर्षे फ० व० ६ गुरौ प्रा० सा० तोला जा० रुषमिणि पु० गांगाकेन जा० पीबू पु० लाला लोला लाषादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री कमलकलस सूरि पट्टे श्री नन्दकल्याण सूरिजिः ॥ श्रीः ॥ श्री चरणसुन्दर सूरिजिः ॥

[1104]

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शु० ३ दिने प्राग्वाट झातीय ज्यायपुर वा० सा० हापा जा० दानी पु० सुश्रावक सा० सरवण जा० मना ज्ञा० सा० सामन्त जा० कम्म पु० सा० सूरि सा० सीमा बेता प्रमुख समस्त परिवार युतैः निज पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्र० श्रीमत्तपा गढे श्री पूज्य श्री आनन्दविमल सूरि पट्टे सम्प्रति विजयमान राजा श्री विजयदान सूरिजिः ॥

[1105]

सं० १६६७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ लोढा गोत्रे प । साता हर्षमदे सु० कण्ठराकेन सुत वार दास प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागढे श्री विजयसेन सूरिणां निदेशात् उ० श्री सायविजय (?) गणिजिः ॥

[1106]

संवत् १६७६ वैशाख सुदि ७ उदयपुर वास्तव्य उसवाल झातीय वरफिया गोत्रे सा० पीथाकेन पुत्र पोषादि सहितेन विमलनाथ बिंबं का० प्र० त० जट्टारक श्री विजयदेव सूरिजिः । स्वाचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

[1107]

सं० १६७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे उकेस वंशे कांगरेचा गोत्रे सा० गोविन्द ज्ञार्या गारवदे पुत्र सा० समरथ श्री खरतरगढे श्री जिनकीर्त्ति सूरि श्री जिनसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।



( २१ )

[ 1108 ]

संवत् १६९४ वर्षे वैशाख ..... श्री अनन्तनाथ बिंब काण प्रण च तपगुहाधिराज  
जट्टारक श्री विजयदेव सूरिजिः ॥ स्वोपाध्याय श्री लावण्यविजय गणि काण जण .....

[ 1109 ]

सं० १७०३ सा० तेजसी कारिता श्री विमलनाथ बिंब ..... ।

[ 1110 ]

संवत् ..... जीवा पु० सीहड़ जार्या श्रीया देवि पु० राजापाल प्रजापाल श्री श्री आदि-  
नाथ बिंब काण प्रण .... श्री वर्द्धमान सूरिजिः ॥

[ 1111 ]\*

॥ सं० १४९३ श्री ज्ञानकीय गह्वे । सा० बाहड़ जा० प्रमी पु० पादहा लोलाच्यां  
अक्षप्रा (?) कारिता ॥

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर ।

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1112 ]

संवत् १५०६ व० ऊकेश सा० बहुराज सु० सा० हीरा जा० हेमादे हरसदे पु० सा०  
जगा जा० फडु .... श्रेयसे श्री शीतल बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरिजिः  
श्री देवकुलपाटक नगरे ।

[ 1113 ]

सं० १७४२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ गुरुवार सुराणा गोत्रे सा० चेतन पु० नारायण .... सु०  
लीला .... गोकुलदास .... श्री चन्द्रप्रज बिंब कारितं ।

\* यह मूर्ति देवी की है और बाहन छोड़ा है ।



श्री गौड़ीपार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

धातुकी मूर्तियों पर ।

[ 1114 ]

सं० १७०५ माघ सु० १३ सोम राणा श्री .....

[ 1115 ]

सं० १७०१ ज्ये० सु० ए उदेपुर महाराणा श्री जगतसिंहजी बापणा गोत्र साह श्री .... ।

[ 1116 ]

सं० १७०७ वर्षे शाके १६७३ .... जेठ सु० ए बुधे तपा श्री विजयदेव सूरि श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य पोरवाड़ जगदारी जीवनदास जार्या मटकू श्री पार्श्व बिंबं कारापितं ।

धातु की चौबीशी पर ।

[ 1117 ]

ॐ ॥ सं० १५३२ वर्षे पो० व० १ गुरौ कक्कैरा वासि उकेश व्य० जेसा जा० जसमादे सुत व्य० वस्ता जार्या बीऊलदे नाम्न्या पुत्र व्य० जीम गोपाल हरदास पौत्र कर्मसी नरसिंग यावर रूपा प्रमुख कुटुम्बयुतया निजश्रेयसे श्री शान्ति बिंबं का० प्र० तपागह श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिजिः । श्रेयः ॥

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1118 ]

ॐ सं० १५११ वर्षे वैशाख वदि ५ शनौ श्री मोढ़ झातीय मं० जीमा जार्या मञ्जु सुत मं० गोराकेन सुत जोला महिराज युतेन स्वपितुः श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विद्याधरगह्वे श्री विजयप्रज सूरिजिः ॥

[ 1119 ]

सं० १५४७ वर्षे पोष वदि १० बुधे ऊ० झातीय सा० कोला जार्या बीमाई पु० दीना



ज्ञा० लाडिकि नाम्न्या देवर सा० हेमा ज्ञा० फट्ट पु० धरणादि युतया स्वश्रेयसे श्री शान्ति  
नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयचन्द्र सूरि शिष्याण आ० श्री जयरत्न सूरि उपदेशेन  
वरुणी ग्रामे ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1120 ]

सं० १५३४ श्री मूलसंवे ज० श्री भूवनकीर्ति श्री ज० श्री ज्ञानचूषण हूं० दो० साषा  
ज्ञा० अमरा ज्ञातृ दो० हीरा ज्ञा० अरघू सु० जूठा जगिणि सु० माणिक ..... ।

जण्णार की धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1121 ]

सं० १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शुक्ले महं० हीरा श्रेया महं० सुत देवसिंहेन श्री पार्श्वनाथ  
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1122 ]

सं० १३६१ ज्येष्ठ सु० ए बुधे श्रे० आसपाल सुत अजयसिंह तन्नार्या श्री लहणदेवि  
तयोः सुत कान्हड़ पूनाज्यां पितृव्य लूणा श्रेयसे श्री शान्तिनाथ कारितः । प्र० श्री यशो  
जद्र सूरि शिष्यः श्री विबुधप्रज सूरिजिः ॥

[ 1123 ]

सं० १४३७ वर्षे द्वि ( ? ) वैशाख व० ११ सोमे ओश० व्य० नरा ज्ञा० मेघ्री पु० जीम  
सिंहेन पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्री रत्नाकर सूरि पदे श्री  
हेमतिलक सूरिजिः ।

[ 1124 ]

सं० १४४९ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० पितृ धीमा मातृ षेतलदे  
श्रेयोर्य सुत बाठाकेन श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री नागेन्द्र गछे श्री उदयदेव  
सूरिजिः ।



[ 1125 ]

सं० १४७७ ज्येष्ठ व० १ प्राग्वाट उ० उज्जलीकेन पित्रो उ० पूनसीह जा० पूमलदे ...  
श्री चन्द्रप्रज्ञ बिंब का० प्र० मलधारि श्री मुनिशेखर सूरिजिः ।

[ 1126 ]

सं० १५०१ माघ वदि ५ गुरौ प्राग्वाट व्य० धणसी जा० प्रीमलदे सुत व्य० लाषा  
जा० लाषणदे सुत व्य० भीमाकेन निज श्रेयसे श्री सुमति बिंब कारि० प्र० तपा श्री मुनि  
सुन्दर सूरिजिः ।

[ 1127 ]

सं० १५१६ वर्षे वै० व० १२ शुक्र उकेश ज्ञाती व्य० नारद जा० घरघति पुत्र बाघाकेन  
जा० वडहादे जा० पहिराजादि कुटुम्ब युनेन स्वपितु श्रेयोर्थ श्री विमलनाथ बिंब का० प्र०  
श्री सूरिजिः ॥ महिसाणो वास्तव्य ॥

[ 1128 ]

सं० १५२० वर्षे वैशाख सु० ३ सोमे उपकेश ज्ञा० मह० कालू जा० आधू पुत्र ३ जावड  
रतना करमसी स्वमातृनिमित्त श्री चन्द्र प्रज्ञ स्वामि बिंब करापितं उपकेश गह्वे श्री कक्क  
सूरिजिः सत्यपुर वास्तव्यः ॥

[ 1129 ]

सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ सु० ९ श्री श्री वंशे स० समधर जार्या जीविणि सुता वाढही  
पि० हेमा युतया पितृ मातृ श्रेयसे श्री अंचल गह्व श्री जयकेशरी सूरिणामुपदेशेन श्री  
सुविधिनाथ बिंब का० प्र० श्री संघेन ।

[ 1130 ]

सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण जा० माढहू पुत्र  
डगड़ा देवराज जा० देवलदे स्वपुण्यार्थ श्री श्री विमलनाथ बिंब का० प्र० मडाहड़ गह्व  
रत्नपुरीय ज० गुणचन्द्र सूरिजिः । उ० आणंदनंद सूरि तेन उपरिकेन ।



( १५ )

[ 1181 ]

संवत् १५६९ वर्षे आषाढ शुदि १ मेडतवाल गोत्र सा० इला जा० मीढहा पुत्र ताढहा  
जार्या तिलसिरि स्वपितृश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गढे  
श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1182 ]

सं० १६५१ माह सुदि १० श्री मूलसंधे ज० श्री प्रजचन्द्र देवा तत्पट्टे ज० श्री चन्द्र  
कीर्त्ति तदाम्नाये चंदवाड़ गोत्रे सं० चाहा पुत्र तेजपाल पुत्र केसै । सुरताण श्रीवंत नित्य  
प्रणमंति मालपुर वास्तव्य ॥



## जयपुर ।

श्री सुपार्श्वनाथजी का पञ्चायती बड़ा मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1183 ]

सं० १३३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ गुरौ व्य० महीधर सुत जांऊणेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ  
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सूरिजिः ।

[ 1184 ]

ॐ सं० १३४० वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ रवौ गूर्जर झातीय ठ० राजड़ सुत महं देव्हणेन  
पितृव्य वीरम श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चैत्रगह्विय श्री देवप्रज सूरि  
सन्ताने श्री अमरजद्र सूरि शिष्यैः श्री अजितदेव सूरिजिः ।

[ 1185 ]

सं० १३९० वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री काष्ठासंधे श्री लाडवा गण्गुगणे श्रीमत्



आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंवड़ झातीय व्य० बाहड़ जार्या लाही सु० व्य०  
पीमा जार्या राजूल देवि श्रेयर्थ सु० का० देवा जार्या राजूल देवि नित्यं प्रणमन्ति ।

[ 1136 ]

सं० १४३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे प्राग्वाट झातीय श्रेष्ठि गोहा जार्या ललतादि  
सुत मूजाकेन । पितृत्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रज सूरिणामुपदेशेन ।

[ 1137 ]

सं० १४३८ वर्षे पौष वदि ए सोमे श्री ब्रह्माण गछे श्री श्री सा० पितृ माषसी जा०  
मोषलदे प्र० सुत सोमखेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर  
सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1138 ]

सं० १४६५ वर्षे ..... आत्मार्थ श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ..... ।

[ 1139 ]

सं० १४६८ वर्षे ऊकेशवंशे नवलषा गोत्रे सा० साधर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ  
बिंबं कारितं प्रति० खरतर ग० । जिनचन्द्रेण ..... स्तव्य ।

[ 1140 ]

संवत् १४७८ वर्षे पोस सुदि १२ शुक्रे श्री हुंवड़ झातीय द्यावेमा गलनयोः पुत्रेण द्या०  
हापाकेन स्वत्रातृ द्यावड़ा मुलासी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री  
बृहत्तपागछे श्री रत्नसिंह सूरिजिः ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥ ॥

[ 1141 ]

सं० १४८४ माह सु० ११ गुरौ श्री संकरगछे ऊ० आ० संवादि गौष्ठिक सा० सुरतण  
पु० धर्मा जा० धर्मसिरि पु० वासखेन जा० कानू पु० नापा नादहा स० पित्रोः श्रेयसे श्री  
श्रेयंस तु० का० प्र० श्री शान्ति सूरिजिः शुभं ।



सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संमेरगढे उपकेश झा० साह काखू जार्या  
वाढही पुत्र कान्हा जार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्थ श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० प०  
श्री सांति सूरिजिः ।

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकापगढे उपकेश० लोलस गोत्रे साह कान्हा  
जार्या कर्म सिरि पुत्र आद जार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना जार्या अरपू आत्म श्रेयसे  
श्री आदिनाथ बिंबं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ।

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे बिरुत गोत्रे सा० माण्डा पु० अरजुण जार्या साण्ड  
पुत्र कान्हाकेन जा० झूदी .... पु० दफस्या श्री पद्मप्रजः का० प्र० श्री धर्मघोषगढे श्री  
महीतिलक सूरिजिः आ० विजयप्रज सूरि सहितैः ॥

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ ऊ० झा० जाजा उटाणा सा० कर्मा जा०  
सागू पु० बेता जइताबेण जा० राणी पु० पंचायण जयता जा० मूंतो पित्रोः श्रे० श्री शान्ति-  
नाथ बिंबं का० श्री चैत्रगढे प्र० श्री मुनितिलक सूरिजिः ।

सं० १५०१ वै० व० ५ प्रा० व्य० लाषा लाषणदे पु० सामन्तेन सिंगारदे पु० पाढ्हा  
रतना कीझादि युतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरिजिः ।

सं० १५०४ फागुण शुदि ११ जूंगटिया श्रीमाल सा० साधारण पुत्रेण सा० समुधरेण  
श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठितं श्री तपाजहारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पढे श्री हैमहंस  
सूरिजिः ॥



सं० १५०५ आषाढ सुदि ए श्री उप० सुचिंतित गोत्रे सा० सीढा जा० जाबटही पु०  
सा० सोलाकेन पुत्र पौत्र युतेन आत्म पु० .... श्री वन्द्यप्रज बिंब का० प्र० श्री उपकेशगहे  
श्री कक्क सूरिजिः ।

सं० १५०६ फा० ब० ए श्री उ० ग० श्री ककुदाचा० ..... गो० सा० समधर सु०  
श्रीपाल जा० परवाई पु० मुद .... जव ससदा रंगाच्यां पितु श्रे० श्री सम्भवनाथ बिंब कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ।

ॐ सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि ३ शुक्ले उपकेश ज्ञातीय जढरु गोत्रे संदणसीह  
चार्या दादाह वीसल जाती महिपाल पु० मगराज साधी आत्मपुण्यार्थ श्री विमलनाथ  
बिंब का० प्र० श्री वृहज्जे श्री सागर सूरिजिः ।

सं० १५०७ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ लोढा गोत्रे । श्रे० गुणा चार्या गुणश्री पुत्र श्रे०  
पूजा कचरौच्यां पितृव्य धन्ना पुण्यार्थ श्री धर्मनाथ बिं० का० प्र० खरतर श्री जिनजड  
सूरि श्री जिनसागर सूरि ।

सं० १५१० वर्षे चैत्र वदि ४ तिथौ शनौ हिंगड गोत्रे गौरन्द पुत्रेण सा० सिंधकेन निज  
श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंब कारितं प्रति० तपा० ज० श्री हेमहंस सूरिजिः ।

सं० १५११ माघ सुदि ७ बुधे श्री ओसवाल ज्ञाती आदित्यनाग गोत्रे सा० सिंघा पु०  
ज्येढहा जा० देवाही पु० दशरथेन त्रातृपितृश्रेयसे श्री अनन्तनाथ बिंब कारितं श्री उपकेश  
गहे श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ॥



( १६ )

[ 1154 ]

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे ओसवाल झातीय वछश गोत्रे सां धीना  
जां फाई पुं देवा पद्मा मना बाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थ श्री धर्मनाथ बिं कां  
प्रं श्री मलधार गछे ... सूरिजिः ।

[ 1155 ]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे श्री श्री मां श्रे० जइता जां लाबू तयो० पुं  
माधव निमित्तं लाबू आत्मश्रेयोऽर्थ श्री शान्तिनाथ बिं कां पिप्पल गं जं श्री विजयदेव  
सू० मुं प्रं श्री शालिज्ज सुरिजिः ।

[ 1156 ]

सं० १५१३ वर्षे वैशाख सुदि ४ बुधे जालह राजा० मंचूणा जां देऊ सुत पितृ पांचा  
मातृ तेजू श्रेयसे सुत गोयंदेन श्री नमिनाथ बिं कारितं पूनिम गछे श्री साधुसुन्दर सूरि  
उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[ 1157 ]

। सं० १५१३ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने मंत्रिदलीय झातीय मुंरुगोत्रे सां रतनसी  
चार्या बाकुं पुत्र सां देवराज चार्या रामाति पुत्र सां मेघराज युतेन स्वपुण्यार्थ श्री  
विमलनाथ बिं कारितं प्रं श्री खरतरगछ श्री जिनहर्ष सूरिजिः ॥

[ 1158 ]

सं० १५१० वर्षे विदि १ सोम दिन श्रीमाल वंशे जूनीवाल गोत्रे सां दासा पुत्र  
सां पिठराजकेन समस्तं परिवारेण आत्मश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिं कां श्री षरतर  
गछे श्री जिनप्रज सूरि अजिप्रतिष्ठितं श्री जिनतिलक सूरिजिः । शुभं जवतु ॥ ४ ॥

[ 1159 ]

• सं० १५१७ वर्षे आषाढ सु० २ रवौ श्री ओसवाल झां चाणावाल गछे पांमलेचा  
गोत्रे सां साङ्गल चार्या मेघादे पुं चापर चार्या जावलदे पुं मोहण हरता युतेन मातृ  
मेघू निमित्तं श्री पद्मप्रज बिं कारितं प्रं जं श्री वज्रेश्वर सूरिजिः ।



सं० १५३० वर्षे माघ वदि २ शु० पालणपुर वास्तव्य प्राग्वाट झातीय श्रे० नरसिंग  
जा० नामलदे पु० कांहा जा० सांवल पु० बीमा प्रभू माषी जा० सीचू श्रेयोर्य श्री नमिनाथ  
बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागळे ज० श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1161 ]

सं० १५३० वर्षे मा० व० १० बुधे प्राग्वाट सा० सिवा जा० संपूरी पुत्र सा० पाढहा  
जा० पाढहणदे सुत सा० नाथाकेन ज्ञातृ ठाकुरसी युतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिम्बं  
का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः धार नगरे ।

[ 1162 ]

सं० १५३३ वर्षे वै० सुदि ६ दिने श्रीमाल वंशे स० जईता पु० स० मारुण जा० लीलादे  
पु० बीमा जातड़ युतेन श्री सुपार्श्व बिंबं का० प्र० श्री खरतर गळे श्री जिनचन्द्र सूरि  
पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1163 ]

सं० १५३४ वर्षे कार्तिक शुदि १३ रवौ श्री श्रीमाल झा० गोत्रजा अम्बिका श्रेष्ठि चांद्रसाव  
जा० कमकु सुत वानर जा० ताकू सुत जागा जा० नाथी सहितेन स्वपूर्वजश्रेयसे श्री  
शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगळे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1164 ]

सं० १५३४ फा० शु० २ वासावासि प्राग्वाट व्य० आढहा जा० देसू पुत्र परवतेन जा०  
जरमी प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागळे  
श्री रत्नशेषर पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1165 ]

॥ सं० १५३७ फा० व० ८ बुधे ऊ० षांटड़ गो० म० पूना जा० अचू पु० राणाकेन जा०  
रयणादे पु० हरपति गुणवति तेज । हरपति जा० हमीरदे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन स्वश्रेयसे



श्री सुमति बिंब का० प्रतिष्ठितं जावरुहरा गच्छे श्री जावदेव सूरिजिः ॥ खिरहाव  
वास्तव्येन ॥

[ 1166 ]

संवत् १५४५ वर्षे माघ शु० १३ बु० लघुशाखा श्रीमाली वंशे मं० घोघल जा० अकार्द  
सुत मं० जीवा जा० रमाई पु० सहसकिरणेन जा० ललनादे वृद्ध जा० इसर काका सूरदास  
सहितेन मातु श्रेयसे श्री अंचलगच्छेश श्री सिद्धान्तसागर सूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ  
बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री स्तम्भतीर्थे ।

[ 1167 ]

सं० १५४६ वर्षे वैशाख सुदि ५ रवौ उपकेशज अचोवल० दढागोत्रे सा० साज जा०  
तेजसर पु० कुंभ कोन्हा सहिसा सीधरा अरष युतेन स्वपुण्यार्थ श्री नमिनाथ बिं० का०  
प्रे० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री मणिचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1168 ]

संवत् १५५७ वर्षे शाके १४२२ वैशाख सुदि ५ गुरौ चण्णाल्या गोत्रे सा० तेजा जा० रूपी  
पु० अचला जा० देमी आत्मश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारापितं श्री मलयधार गच्छपति  
श्री गुणवषान सूरिजिः ।

[ 1169 ]

सं० १५६२ व० माघ सु० १५ गु० उ० वौक० गोत्र० सा० जेसा जा० जिसमादे पुत्र  
राणा जा० पूणदे पु० अरुवाल तेजा आ० श्रे० श्रेयांस बिं० कारि० बोकड़ी० श्री मलयचन्द्र  
पट्टे मुणिचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1170 ]

संवत् १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे विश्वलनगरे प्राग्वाट झातीय श्रे० जीवा जार्या  
रंगी पुत्र रत्न श्रे० काहीआ ज्रातृ श्रीवन्त । केन जार्या श्री रत्नादे द्वि० दामिदे सुत  
षीमा जामादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छ  
जहारक श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ कल्याणमस्तु ॥



[ 1171 ]

संवत् १५७१ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० सा० धरमा ज्ञा० काज सु० सोता मांडण  
सु० रूपा सोता ज्ञा० सुहड़ादे सु० नरसिंघ आढहा नापा माला मारुण ज्ञार्या माणिकदे पु०  
गांगा मोका पदम रूपा ज्ञार्या हासू सु० सेटा नोमा सुकुटुम्बेन रूपा नापा निमित्त श्री  
शान्तिनाथ विं० का० प्र० श्री दैवरत्न सूरिजिः ॥

[ 1172 ]

सं० १५७७ वर्षे पोस वदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय प० काका ज्ञा० बाक सुत प०  
पहिराज ज्ञा० वरबागं आत्मश्रेयोर्थ श्री चन्द्रप्रज्ञ स्वामी विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः  
श्रीरस्तुः ॥

[ 1173 ]

सं० १६७७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १ दिने सुजाउलपुर वास्तव्य श्री० तिलका श्री सुविधिनाथ  
विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदेव सूरिजिः ।

धातु की चौवीशी पर ।

[ 1174 ]

सं० १५०७ वर्षे आषाढ सुदि १ सोमे उसिवाल ज्ञातीय सूरणा गौत्रे सा० लषणा  
ज्ञा० सषण श्री पु० सा० सकर्मण सा० सिवराजेन श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पद्व कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री राजगछे जट्टारक श्री पद्माणंद सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1175 ]

संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणासण वासि श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्मा  
ज्ञा० धर्मादे सुत जोजाकेन ज्ञा० जली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ  
चतुर्विंशतिः पद्वः कारितः प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिजिः । श्रीरस्तु ॥



धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1176 ]

संवत् १६०१ वर्षे श्री आदिकरण बोटा बा० रंजा श्री श्रीमाखी न्यात श्री धर्मनाथ श्री विजयदान सूरि ।

[ 1177 ]

संवत् १७४४ वर्षे फागुण सुदि १ तिथौ बुधवासरे तपागछाधिराज जटारक श्री विजय प्रज सूरि निदेशात् श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं बा० मुक्तिचन्द्र गणिजिः कारितः ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1178 ]

सं० १७५३ पौस सुदि ४ वृहस्पतिवासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदम् प्रतिष्ठितं बा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जैनगर वास्तव्य से० वषतमल तत् पुत्र सुषलाखेन श्रेयोर्थ । ७ ।

[ 1179 ]

सं० १७५६ माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ ५ गुरौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० श्रीमद् वृहत् खरतरगछे ज० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वय फोफलिया गोत्रीय अनन्दराम त० पूबचन्द तत् पुत्र बहादुरसिंह सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थ ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1180 ]

संवत् १४७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवासरे जाईलवाल पवित्र गोत्रे संघवी ठीहल पुत्र सं० जेजा जि० जस .... पु० बाहड सहितेन आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगछे श्री महीतिलक सूरिजिः ॥



[ 1181 ]

सं० १४९१ आषाढ वदि ९ श्री श्रीमालवंशे वडली वास्तव्य सं० सांका जा० कामलदे  
पुत्र सं० मना जा० रशदे पुत्राच्यां सं० समधर सं० सालिज अन्यो जा० राजू साधू सुत  
मिघा माणिक रत्ना प्रमुख कुकुम्ब सहिताच्यां श्री सुपार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री  
तपागढाधिराजैः श्री सोमसुन्दर सूरिजिः शुभं जवतु कढ्याणमस्तु ॥

[ 1182 ]

सं० १४९३ वैशाख सुदि ५ उप झा० आदित्यनाग गोत्रे । सा० पदमा पु० षेढा जा०  
पूजी पुत्र बीमाकेन श्री श्रेयांसनाथ विंबं का० श्री उपकेशगढे कुक० प्र० श्री सिद्ध  
सूरिजिः ॥

[ 1183 ]

सं० १५०६ वर्षे माह वदि ९ श्री कोरंटकीयगढे श्री नत्राचार्य सन्ताने । ऊ० ती०  
सुचन्ती गोत्रे जा० आजरमुण्या पु० हाता जा० हुती पु० मारुण जा० माणिक पु० षेतादि  
श्री वासपूज्य विंबं कारापितं प्र० श्री सांबदेव सूरिजिः ।

[ 1184 ]

सं० १५१३ ओसवाल मं० जारमल्ल जावलदे पुत्र रत्नाकेन जा० अपू जा० टीढहा  
शिवादि कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुन्दर सूरि  
श्री मुनिसुन्दर सूरि श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिजिः ।

[ 1185 ]

संव० १५१९ वर्षे चैत्र शु० १३ गु० प्राग्वाट झा० सा० लक्ष्मण जा० साधू पुत्र साह  
गोवळे जा० राजू युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्व विंबं का० प्र० तपागढेश श्री मुनिसुन्दर सूरि  
तत् पढे श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥

[ 1186 ]

सं० १५४९ फा० सु० ११ चौ० श्री मू० त्रिजुवनकीर्ति देवा० तत् पट्टान्व सा० पची ।  
जा० वरम्हा पु० सा० जनु । जा० चादंगदे पु० बहू जा० नूपा । त्रि० पु० सा० जेदा जा०  
दानसिरि व० पु० अजितू जा० नैना कके ( ? ) विजसी .... ।



सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री ब्रह्माण गढे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि  
मंड्या ज्ञार्या माणिक सुत सामल ज्ञार्या सारू सु० धर्मण धाराकेन स्वपित्र पूर्वज श्रेयोर्थ  
श्री धर्मनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्री विमल सूरि पढे श्री बुद्धिसागर सूरिजिः वण्ड  
वास्तव्यः ॥

[ 1189 ]

ॐ सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे ओसवाल ज्ञातौ तातहड़ गोत्रे सा० आढ  
जा० गोपाही पु० सुखलित । जा० सांगर दे स्वकुटुंबयुतेन श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति-  
ष्ठितं ककुदाचार्य सन्ताने उपकेश गढे ज० श्री देवगुप्ति सूरिजिः ।

[ 1190 ]

सं० १५६३ माह सु० १५ गुरु श्री संकेर गढे जसवाल पूगलिया गोत्रे स० काजा जा०  
रानू पु० नरवद जा० राणी पु० तिहुण करमा कुवाला सहसा प्र० आत्म पु० श्री मुनिसुत्रत-  
स्वामि बिंबं कारापितं प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ॥

[ 1191 ]

सं० १५६९ वर्षे वैशाख सुदि ६ दिने सूरणा गोत्रे सं० चांपा सन्ताने । सं० सवाहू  
सु० सं० गांडा जा० धणपालही पु० सं० सहसमल्ल ज्ञातृ आढा पु० सोमदम युतेन मातृ  
पुण्यार्थ श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री धर्मघोष गढे प्र० ज० श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः ॥

[ 1192 ]

सं० १५७४ वैशाख वदि ५ ओसवंशे वरहक्रिया गोत्रे सा० लाषा पुत्र सा० हर्षा ज्ञार्या  
हीरा दे पुत्र सा० टोरर आवकेण स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च अश्वत्र  
गढे आवकेण श्रेयोस्तु ॥



संवत् १५९७ वर्षे पोस वदि ५ सकरे सहूआला वास्तव्य प्राग्वाट वृद्ध शाखायां दो०  
वीरा जा० जाणा जा० जरमा दे तेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन  
साधु सूरिजिः ॥

[ 1194 ]

सं० १६१२ वर्षे फागुण शुदि २ तिथौ श्री ओसवाल वंशे सा० आढत जा० रेणमा  
सणो सा० चतुह धर्मते कारापितं श्री ठहितेरा गढे ज० श्री जावसागर सूरि त० श्री धर्म-  
मूर्ति सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री अनन्तनाथ ।

[ 1195 ]

॥ संवत् १६२४ वर्षे माहा शुदि ६ सोमे ओसवाल ज्ञातीय दोसी जामा संत दोसी  
पू० । ज । जार्या बाई मेलार्ई सुत वानरा श्री धर्मनाथ बिंबं कारापितं ॥ तपागढ श्री ७  
श्री द्वारा विजय सूरि प्रति० साबलटन नगरे ।

[ 1196 ]

सं० १६५३ वर्षे अलाई ४२ संवत् ॥ माघ सुदि १० दिने सोमवारे ज्जेश वंशे शंख-  
वाल गौत्रीय सा० रायपाल जार्या रूपा दे पुत्र सा० पूना जार्या पूना दे पुत्र मं० पाता मं०  
देहान्यां पुत्र जिणदास म० चांपा मूला दे मू । सामल सपरिकराज्यां श्री शांतिनाथ बिंबं  
कारितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत् खरतर गढाधीश्वर श्री अकबरसाहिप्रतिबोधक श्री जिन-  
माणिक्य सूरि पट्टाक्षकार युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1197 ]

सं० १७०३ वर्षे मार्गशिर्षे सित १ दिने मेडता नगरे वास्तव्य शंखवालेचा गोत्रे सा०  
मूंगर पुत्र सा० माईदासकेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागढाधिराज सुवि-  
हित चटारक श्री विजयदेव सूरि पट्टे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥ कृष्णगढ नगरे  
मुदपस जयचन्द्र(?) प्रतिष्ठायां ॥



( ३९ )

धातु की चौवीशी पर ।

[ 1198 ]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख वदि २ शुके प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मामल जा० कांई सु०  
पाता जा० वाळं सु० देवाकेन जा० देवलदे प्र० ज्ञातु सामंत जा० खानी सु० समधर जा०  
अजी सु० मांरुण जोजा राणा छि० ज्ञा० ऊदा जा० बाई पु० साईया जा० सहिज्यादि  
कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री संजवनाथ चतुर्विंशति पट्टः जीवितस्वामी पूर्णिमापदे श्री पुण्यरत्न  
सूरीणामुपदेशेन का० प्र० सुविधिना साकरग्रामे ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1199 ]

सं० १६३२ श्री संजवनाथ बिंब पास० ।

[ 1200 ]

सं० १७७४ माघ तिन २३२ वासा गुलालचन्द श्री सुमति बिंब कारितं ।

[ 1201 ]

सं० १८३१ वर्षे मार्गशिर वदि १ शनौ रोहिणी नक्षत्रे ज० श्री विजयधर्म सूरेश्वरराज्ये  
मुनि श्री रुद्रविजय गणि प्रतिष्ठितं पं० विद्याविजय गणि श्री वृषजनाथ बिंब कारापितं  
स्वश्रेयसे ।

[ 1202 ]

श्री कृष्णदेवजी मीती माग श्री सु० ३ सं० १९०६ ।

[ 1203 ]

श्री हंसराज श्रेयोर्थ श्री अजिनन्दन बिंब ।



( ३७ )

धातु के यंत्र पर ।

[ 1204 ]

संवत् १७४७ आश्विन शुक्ल १५ दिने तपागञ्जाधिराज श्री विजैजिनेन्द्र सूरिजिः  
प्रतिष्ठितं सिद्धचक्र यंत्रमिदं कारापितं पटणी बाहादुरसिंहेन स्वश्रेयसे पं० पुन्यविजै  
गणीनामुपदेशात् ॥

[ 1205 ]

संवत् १७५२ पोस सुदि ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं  
जैनगरमध्ये वा० लालचन्द्र गणिना वृहत् खरतरगङ्गे कारितं बीकानेर वास्तव्य जै० मधेन  
श्रेयोर्थ ॥ श्री ॥

श्री आदिनाथजी का ( नया ) मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1206 ]

संवत् १४७६ वर्षे माघ वदि ११ तिथौ श्री मालान्वये ढोर गोत्रे सा० तोड्हा तझार्या  
आ० माणी तत् पुत्र सा० महाराज श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगङ्गे  
ज० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ शुभं भवतु ॥

[ 1207 ]

सं० १४९९ फागुण वदि २ गुरौ श्री उपकेश झातो श्री धरकट गोत्रे सा० हरिराज  
प्रसिद्धनाम सा० बगुला पुत्रेण सा० लाषा श्रावकेन चार्या गजसीही पुत्र बलिराज युतेन  
श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहज्ज्जे श्री रत्नप्रज सूरिजिः ।

[ 1208 ]

॥ सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ ज० सा० लाषा जा० लषमादे सा० गुणराज धर्म



पुत्री श्रा० धारू नाम्न्या श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागङ्गनायक श्री सोमसुन्दर  
सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ सा० गुणराज सुत सा० कालू सुत सा० सदराज ॥

[ 1209 ]

सं० १५३१ वर्षे चैत्र वदि ८ बुधे चंदेरा वास्तव्य ओसवाल सा० दापा जा० हरपमदे  
सुत समराकेन जार्या शीतादे सु० वेला मेघराज हंसराज प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री  
अनंत बिंबं का० प्र० श्री परतरगढे ज० श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 1210 ]

सं० १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ रवौ उप० सीसोदिया गोत्रे सा० देवायत जार्या देवलदे पु०  
षेता जार्या षेतलदे पुत्र जाषर युतेन स्वपुण्यार्थ श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० संके-  
वालगढे श्री सालि सूरिजिः ।

[ 1211 ]

॥ सं० १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ९ शुके ज्जकेश झा० सिंघानिया गोत्रे सं० रेका सं० सा०  
कदा जार्या जदतदे पु० सा० कालू श्रीमल जिणदत्त । पारस युतेन आ० पु० श्री मुनिसुव्रत  
बिंबं का० श्री मेरुप्रज सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1212 ]

संवत् १५५९ वर्षे माघस ( मार्गशीर्ष ) शु० १५ सोमे श्री श्रीमल ज० वरसिंग जा०  
देमी० सु० हेमा सु० हराज सु० जयता पोमा सु० पांचाकेन आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ  
बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मनसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं मारबीआ ( ग्रामे ? ) ।

[ 1213 ]

॥ संवत् १५७० वर्षे माघ सुदि १३ भूमे श्री प्राग्वाट० सा शेवा जा० सहजलदे पुत्र  
हरषा रूपा हरषा जा० लामकि पुत्र मातृपितृव्रातृ भृ० श्रेयोर्थ श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं  
कारापितं । प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्रगढे जहा० श्री हेमसिंह सूरिजिः ।



[ 1214 ]

॥ संवत् १६१७ वर्षे फाट्पुन शुदि ७ बुधे कुमरगिरि वासि प्राग्वाट झातीय वृद्ध  
शाखायां अंबाई गोत्रे व्यवहाण खीमा जाण कनकादि पुत्र व्यण ठाकरसी जाण सोजागदे  
पुत्र देवर्ण परिवारयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ विंभं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपागळे  
श्री पूज्याराध्य श्री विजयदान सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री श्री श्री हीरविजय सूरिजिः आचं-  
डार्क नन्धात् श्रीः ॥

[ 1215 ]

संवत् १६३७ वर्षे माघ शुदि १३ सोमे श्रीस्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री श्रीमाल झातीय  
साण वस्ता जाण विमलादे सुत साण थावरवह्नी .... आ श्री शान्तिनाथ विंभं कारापितं  
श्रीमत्तपागळे जट्टारक श्री हीरविजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं शुभं जवतु ॥

धातु की चौवीशी पर ।

[ 1216 ]

संवत् १५६९ वर्षे वैशाख शुदि ९ शुक्रै श्री बायड़ा झातीय मण माण्यक जाण गोमति  
सण वेलाकेन जाण वनादे सुण लहूंआ लामण लहूंआ जाण लाबू सकुटुम्ब श्रेयोर्थ श्री  
आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारापितं श्री आगमगळे श्री सोमरत्न सूरि प्रतिष्ठितं विधिना  
श्रीरस्तु ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1217 ]

सं० १७१० ज्येष्ठ सुदि ६ साण कपूरचन्द । चन्द्रप्रज्ञ ज । तपागळे प्रतिष्ठितं ।

[ 1218 ]

सं० १७२७ वर्षे ॥ घाड़ । सावर । शेन । श्री कृष्णनाथ विंभं श्री तपागळे ।



( ४१ )

धातु के यंत्र पर ।

[ 1219 ]

संवत् १७५२ वर्षे ७ पोष सुदि ४ दिने सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र  
गणिना कारितं सवाई जयनगरमध्ये समस्त श्रीसंघेन वृहत् परतरगहे । शुभमस्तु ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर—श्रीमालोंका महद्वा ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1220 ]

सं० १४६५ वर्षे वैशाख सुदि ३ सापुठा गोत्रे सा० वेला जार्या स० वीरहणदे पु० साधु  
षिमराज पेमाज्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं ॥ प्र० श्री धर्मघोषगहे  
श्री सोमचन्द्र सूरि पढे श्रीमलचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1221 ]

सं० १५११ वर्षे माघ शु० ५ गुरू श्री श्रीमाल झातीय श्रे० मकुणसी जार्या नाऊ सुत  
कीयाकेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीब्रह्माणगहे  
श्री मुनिचन्द्र सूरिजिः मेहूणा वास्तव्य । श्री ।

[ 1222 ]

संवत् १५३० वर्षे पोष वदि ६ रवौ श्री श्रीमाल झा० मंत्रि समधर जा० श्रीयादे सुत  
षीकाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पिप्पलगहे श्री गुणदेव  
सूरि पढे श्री चन्द्रप्रज्ञ सूरिजिः राजजयामे ।

[ 1223 ]

सं० १५३१ वर्षे वै० शु० १० सोमे उसवंशे लोढा गोत्रे सा० चाहड़ जा० देव्ह सु०



नीव्हा जा० सोनी करमी सु० सा० हासकेन त्रातु सा० नाऊ सा० पेड हासा चार्या रतनी  
सु० सा० ठाकुर सा० ईलटला० ऊधादि प्रमुखयुतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंब का०  
प्रति० श्री वृहज्ज श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1224 ]

॥ संवत् १५५५ वर्षे फागुण सुदि ए बुधे सीधुरु गोत्रे ठधरि गरुपाल जा० गोरादे सुत  
वस्तुपाल त्रातु पोमदत्त वस्तपाल जा० वट्हादे पुत्र त्रैलोक्यचंद्र श्रेयार्थ श्री संजवनाथ  
बिंब कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगळे ज० श्री जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[ 1225 ]

संवत् १६२४ वर्षे वै० शुदि १ शुक्रवासरे तपगळे नायक ज० प्रज श्री हीरविजय सूरि  
मनराजो श्री पद्मप्रज बिंब प्रतिष्ठितं प्रतिष्ठापितं नागपर गहिलडा गोत्र सा० अमीपाल  
जा० अमूलकदे पु० कूअरपाल जा० कुरादे प्रतिष्ठितं शुजं जवति ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1226 ]

सं० १७७७ माघ शुक्ल १३ बुधे श्री पार्श्वनाथ जिन बिंब कारितं । प्र० वृ० त ख०  
श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1227 ]

संवत् १७५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्ष तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं  
ज० जिनअक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचन्द्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वये  
सीधरु गोत्रीय किसनचन्द्र तत्पुत्र उदयचंद्र सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयार्थ ॥

[ 1228 ]

सं० १९०२ वर्षे आश्विन मासे शुक्ले पक्षे पूर्णमासी तिथौ बुधे जयनगर वास्तव्य



श्रीमालवंशे फोफलिया गोत्रीय चुनीलाल तत् पुत्र हीराबालेन श्री सिद्धचक्र यंत्र कारितं  
चारित्र्यउदय उपदेशात् प्र० ज० खरतरगङ्गीय श्री जिननन्दीवर्द्धन सूरिभिः पूजकानां .....  
ती ज्ञयात् ।



## आम्बेर । \*

श्री चन्द्रप्रज्ञ स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1229 ]

सं० १३९० वर्षे पोष सुदि १२ सोमे श्री काष्ठासंधे ..... सुत ताहड़ श्रेयार्थ श्री  
सुमतिनाथ प्रतिष्ठितं ।

[ 1230 ]

सं० १५२५ वर्षे मार्गसिरि वदि १२ शुक्ले उपके० बावेळ गोत्रे सा० अह पुत्र लोला चार्पा  
छात्रिमदे .... स्वश्रेयसे पितृमातृपुण्यार्थ श्री चन्द्रप्रज्ञ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधार  
गढे, श्री गुणसुन्दर सूरिभिः ।

[ 1231 ]

॥ सं० १५४२ वर्षे फागु० व० २ दिने सीतारेचा गो० ओस० सा० सूरु जा० सूरमादे  
पु० परवत जा० सहजादे तथा परवत देलू समधर बीजा सहस जा० पगमलदे सहित जा०  
सहजा पुण्यार्थ श्री संचवनाथ बिंबं का० प्र० श्री नाणकीयगढे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥७॥



\* जयपुर शहरसे ५ मैल पर यह स्थान है और यहांका विशाल प्राचीन दुर्ग प्रसिद्ध है ।



## अलवर ।

पाषाण के मूर्ति पर ।

[ 1232 ] \*

- ( १ ) ॥ सिद्धि ॥ संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ दिने शुक्रवासरे श्री गोपाचल नगरे राजाधिराज श्री झूंगर-सिंह-देवराज्ये ऊकेश बिं ( वं ) शे ।
- ( २ ) [ पं ] चलउट गोत्रे ज्ञाणारी देवराज ज्ञार्या देवदहणदे तत्पुत्र जं० नाथा ज्ञार्या रूपार्ई स्वश्रेयोर्थ श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति-
- ( ३ ) छितं श्री षरतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री जिनसागर सूरिजिः ॥  
॥ श्रीरस्तु ॥ ठ ॥

## नागौर ।

श्री कृष्णदेवजी का बड़ा मंदिर—हीरावाडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1233 ]

- १ । ॐ संवत् सु० १०६६ फाल्गुन विदि २
- २ । मा मुखक व सतो पाहूरि सा-
- ३ । वकेणं सन्तरसुतेन नित्य-
- ४ । श्रेयोर्थ कारिताः ॥

[ 1234 ]

संवत् १३६१ वर्षे ..... सुदि २ सोमे श्रेष्ठि धणपाल ज्ञार्या पाहू पुत्रेण कुमारसिंह आवकेण आत्मश्रेयोर्थ श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ..... ।

\* यह लेख राय गौरीशङ्करजी बहादुर से मिला है उनके विचार से इस लेख का राजाधिराज झूंगरसिंह देव ग्वालियर का तंवर ( तोमर ) वंशी-राजा झूंगरसिंह ही हैं । इस मूर्ति की मूल प्रतिष्ठा ग्वालियर में हुई थी, यहां से किसी प्रकार अलवर पहुंची है ।



[ 1235 ]

संवत् १४३० वर्षे चैत्र सुदि १५ सोमे रावगणे वोवे (?) नेपाल जा० पूरी पु० सा० पेशा  
खपितृमातृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्री धर्मघोषगढे श्री मलयचन्द्र सूरि  
पढे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेषर सूरिनिः ॥

[ 1236 ]

संवत् १४५० वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपकेश झातीय केकडिया गोत्र ..... जा०  
रूदी ७ जेस जा० जसमादे पित्रोः श्रे० श्री चन्द्रप्रजस्वामि बिंबं का० रामसेनीय श्री  
धनदेव सूरि पढे श्री धर्मदेव सूरिनिः ॥

[ 1237 ]

संवत् १४५० वर्षे फाद्युण वदि १ शुक्रे उपकेशीय हट्टचायि जोमा० सा० पानात्मज  
सा० सजना जा० श्रीयादे पुत्र मन्त्रणवकेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्रति० श्री पद्मिगढे  
श्री शान्ति सूरिनिः ॥

[ 1238 ]

संवत् १४७३ वर्षे बैशाख वदि १ उपकेशवंशे श्रे० ठाडा पुत्र श्रे० केदहाकेन कुमरपाल  
देपालादियुतेन श्री शान्तिनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थ कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगढे श्री जिनवर्द्धन  
सूरिनिः ॥

[ 1239 ]

संवत् १४७४ वर्षे फाद्युण वदि २ सूरूणा गोत्रे से० हेमराज जा० हीमादे पुत्र सं०  
पेदहाकेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्मघोषगढे श्री मलयचन्द्र सूरि पढे  
श्री पद्मशेखर सूरिनिः ॥

[ 1240 ]

संवत् १४७५ वर्षे मागसिर वदि ४ दिने वंराहका गोत्रे सा० हुंगर पुत्रेण सा० शिखर  
केन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ प्रतिमा कारिता प्र० तपा श्री पूर्णचन्द्र सूरि पढे जह्दरक  
श्री हेमहंस सूरिनिः ॥



संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ चौमे प्राग्वाद् ज्ञातीय व० साढा श्री चादी पु० सहसा ज्ञा० सीतादे पु० पाट्हा स० आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति० पूर्णिमा पक्षे श्री सर्वानन्द सूरिजिः ॥

[ 1242 ]

संवत् १४७० वर्षे माह सुदि .... पक्षे श्री ओसवंशे कछग ज्ञातीय सा० अजीआ सुत सा० जेसा चार्या जासू पुत्र पोमासाणादिजिः अञ्चलगहेश श्री जयकीर्ति सूरिणामुपदेशेन श्री चन्द्रप्रज बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1243 ]

संवत् १४७३ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे उपकेश ज्ञातीय सा० टाहा ज्ञा० कर्मादे पुत्र मेघा ज्ञा० अणुपमदे सहितेनात्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० श्री अमरचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1244 ]

संवत् १४७३ वर्षे फाद्युन विदि १ दिनै श्रीवीर बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्र सूरिजिः उपकेशवंशे सा० बाहरु पुत्र पूजाकेन कारितम् ॥

[ 1245 ]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुध उपकेश वंशे लघुशाखा मण्ण सा० मन्दलिक चार्या फदकू सुत सा० कूंगरसी चार्या दट्हादे पुत्र सा० सोना जीवा यीनेन मातृपुण्यार्थ श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगहेश श्री जिनवर्द्धन सूरिः पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि तत् पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[ 1246 ]

संवत् १४७६ वर्षे फाद्युण सुदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातीय व्यव० शाखा ज्ञा० चांपू पुत्र ऊधरणकेन चार्या देपू सहितेन आत्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० बोकनियागहेश जट्टा० श्री धर्मतिलक सूरिजिः ॥



[ 1247 ]

संवत् १४९७ वर्षे फादगुण विदि २ फांफटिया गोत्रे सा० मोहण जार्या कुमरी पुत्र सा० मेहाकाहाच्यां स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगढे श्री पद्मशेखर सूरि पढे श्री विजयचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1248 ]

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने उपकेशवंशे करमदिया गोत्रे सा० वीढ्हा तत् पुत्र सा० धना पुत्र ज्ञाषा वाढ्हा बाढा प्रमुख परिवारेण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगढे श्रीमत् श्री जिनसागर सूरि शिरोमणिजिः ॥ शुभम् ॥

[ 1249 ]

संवत् १५०४ व्य० ( वर्षे ) गवढ्हो रत्नदे पुत्र लक्ष्मण जाढ्हणदे पुत्र नाथू जा० दोया ज्ञातृ चीढा युतया सृढ्ही नाम्ना कारितः श्री सुपार्श्वः । प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[ 1250 ]

संवत् १५०७ वर्षे कार्तिक सुदि ११ शुक्ले प्राग्वाट कोठा० लाषा जा० लाषणदे पुत्र को० परवत ..... जोला ऋहा नाना जुंगर युतेन श्री संजवनाथ बिंबं कारितं ढणस गढे श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1251 ]

सं० १५०७ वर्षे माह सुदि १३ शुक्ले षटवड गोत्रे सा० साढ्हा जार्या सोना पुत्र सा कुसमाकेन जा० कमलश्री पुत्र धानादियुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगढे पद्माणन्द सूरिजिः .... श्री हेमचन्द्र सूरिणामुपदेशेन ॥

[ 1252 ]

संवत् १५०९ वर्षे चैत्र सुदि १२ श्री काष्ठासंघे श्री मलयकीर्ति श्री राढ्ह जार्या चीढ्ह



पुत्र राजा जार्या सादही द्वितीय पुत्र णहराणी राजा सुता हरू पउमदरा रतल एतेषां प्रणमति ॥

[ 1253 ]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ उपकेश ज्ञातीय आईरी गोत्रे सा० लूणा पुत्र सा गिरिराज जा० सुगुणादे पु० सोनाकेन ठाकुर देवात् श्री चन्द्रप्रज्ञस्वामि बिंबं का० उपकेश गळे ककुदा० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1254 ]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ९ बुधे श्री ओसवंशे वृद्धशाखीय सा० हता जा० रंगादे पुत्र सा० माका श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं श्री साधु सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु श्री अमदाबाद वास्तव्य ॥

[ 1255 ]

संवत् १५०९ वर्षे मार्गशिर सुदि ९ दिने उपकेशवंशे साधुशाखायां सा० लखमण सुत सा० महिपाल सा० वीढहाख्यौ तत्र सा० महिपाल जार्या रूपी पुत्र ण० तेजा सा० वस्ताज्यां पुत्रादि परिवारयुताज्यां स्वश्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर श्री जिनराज सूरि पढे श्री जिनजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[ 1256 ]

संवत् १५०९ वर्षे माह सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० कूरसी पु० पासड़ जा० जइनखदे पु० पारस जा० पाढहणदे पु० पदा परवतयुतेन पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं उ० श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1257 ]

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीमान् जा० मुठीया गोत्रे सा० बिजंपाल पु० सोनाकेन आत्मश्रेयसे आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनतिषक सूरिजिः ॥



[ 1258 ]

संवत् १५१० वर्षे चैत्र सुदि १३ गुण प्राग्वाट सा० गोगन चार्या सङ्ग पुत्र सा० जेसाकेन  
जा० राणी च्चातृ जामा जा० हीरू प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंभं  
कारापितं प्रति० तपागहेश श्री रत्नसागर सूरिजिः ॥

[ 1259 ]

संवत् १५११ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ रवौ उपकेश ज्ञातीय शाह आसा जा० अहविदे पु०  
शाह ठाकुरसी जा० जानू खहितेन पितृ च्चातृ श्रेयोर्य श्री आदिनाथ विंभं कारापितं श्री  
कोरण्टगहे प्रति० श्री सावदेव सूरिजिः ॥

[ 1260 ]

संवत् १५१२ मार्ग० शुदि १५ चारै प्राग्वाट श्रेष्ठ गोधा जा० फसी सुत नरदे  
सहसी काटा जा० धीराकेन जा० तारू सुत खीमादिकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ  
विंभं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ।

[ 1261 ]

संवत् १५१२ माघ विदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा पुत्र सुहृदा  
जा० सोना पु० सादावहा हंसा पासादेवादितिः पित्रोः श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंभं कारितं  
प्रतिष्ठितं उपकेश गहे ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सूरिजिः ।

[ 1262 ]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ९ शनौ श्री श्रीमाख ज्ञातीय व्य० तरसी सुत काखा  
सुतवर्द्धमान सुत दो० बाझाकेन जा० कूअरि सुत सा० अरण प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वच्चातृ  
जयारामा तौ श्रेयोर्य श्री सुमतिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं तपागहे श्री श्री रत्नशेखर  
सूरिजिः ।



संवत् १५१२ वर्षे फाट्युन सुदि १२ श्री उपकेशगढे श्री कक्कुदाचार्य सन्ताने श्री उपकेश झातौ श्री आदित्यनाग गोत्रे सा० आसा जा० नीबू पुत्र ठानू जा० बाजलदे पितृ-मातृश्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ॥

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुके गूंदोचा गोत्रे सा० धीरा जार्या धारलदे पु० देता जा० सहजलदे पाढहा जा० पोमादे० स्वश्रेयोर्थ संजवनाथ बिंबं का० प्र० श्री चित्रा-बालगढे श्री मुनितिलक सूरि पढे श्री गुणाकर सूरिजिः ।

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ सुदि २ गुरू दिने उपकेश झातीये मण्णलेचा गोत्रे सा० बुहथ जा० वाहणदे पुत्र रणमल जार्या रतनादे पु० माहायुतेन श्री आत्मश्रेयसे श्री सुविधि-नाथ बिंबं कारिपितं प्रति० श्री वृहज्जे जानोरावटंके जट्टा० श्री हेमचन्द्र सूरि पढे श्री कमलप्रज सूरिजिः ॥

संवत् १५१३ पोस सुदि ९ उपकेश वंशे खोढा गोत्रे सा० चूणा पुत्रेण सा० साढहाकेन निज जार्या निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा जट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पढे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

संवत् १५१९ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उपकेश झातौ डूगरु गौत्र सा० सुइका जा० गुणपाल ही पु० नगराज जा०, नावलंदे पु० नानिगमूला सोढद वीरदे हमीरदे सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं श्री रूद्रपली गढे श्री देवसुन्दर सूरि पढे श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥



संवत् १५१९ वर्षे वैशाख विदि ११ तौबाची वासि प्राग्वाट झातीय ण० केसव जा० जोली सुत सा० लामणेन जा० मरगादे सुत जसवीर प्रमुखकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागह्याधिराज श्री श्री रत्नशेखर सूरि पढे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1269 ]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्री ब्रह्माणगढे श्री श्रीमाल झातीय श्रेष्ठि देवा जा० हरषू सुत चाम्पाकेन जार्यां जईती करणकुंजायुतेन पित्रो श्रेयसः श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरि पढे श्री विमल सूरिजिः ॥ सुडीयाणा वास्तव्य ।

[ 1270 ]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि १० उपकेशवंशे शुभगोत्रे सा० गूजरेण जा० गजटपे पुत्र पेदा अजाण्डू जा० कुसजगदे पाटेवाट ( ? ) सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगढे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1271 ]

संवत् १५२० वर्षे मार्गशीर्ष वदि १२ उपकेश० झातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शा० सांगण पुत्र स० सोनाकेन जार्यां लाठलदे पुत्र समस्त स० वृद्धपुत्र संसारचन्द्रनिमित्तं श्री चन्द्रप्रज स्वामि बिंबं का० प्र० उपकेश गढे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कवक सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1272 ]

संवत् १५२१ माघ सुदि १३ गुरौ प्रा० झातीय व्यव० नींबा पुत्र खीमा जार्या डूली पुत्र जांघा हेमा पाढडा सहितेन श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥



संवत् १५२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका चार्या ललतादे तयोः  
पुत्र धारा चार्या वीजलदे श्री अञ्जलगच्छे श्री श्री केशरि सूरिणामुपदेशेन निज श्रे० श्री  
शीतलप्रज विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ जयतलकोट वास्तव्यः ॥

[ 1274 ]

संवत् १५२४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ११ शुके उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा०  
सीधर पुत्र संसारचन्द्र चार्या सादाही पुत्र श्रीवन्त शिवरताच्यां मातृपुण्यार्थं श्री शीतलनाथ  
विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सुरिजिः ॥  
नागपुरे ॥ श्रीः ॥

[ 1275 ]

संवत् १५२५ वर्षे ज्येष्ठ विदि १ गुरौ उपकेश ज्ञातीय खावही गोत्रे साह भूणी जा०  
वृणादे पुत्री बाई कर्पूरी आत्मपुण्यार्थं श्री नेमिनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री कृष्णरुषि  
गच्छे तपा शाखायां जट्टारक श्री कमलचन्द्र सूरिजिः शुभम् श्रीरस्तु ॥

[ 1276 ]

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उप० ज्ञा० सा० आना जा० पूरी० पु० देपाकेन  
जा० देवलदे पु० वच्छा इषा नयणा युतेन श्री शीतलनाथ विं० कारापितं प्रति० मलाह०  
ज० श्री नयचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1277 ]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि १ सोमे झन्डीयवासि उपकेश मं० कान्हा चार्या उमी सुत  
मं० कुम्पाकेन जा० सावित्री सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रतस्वामि विं०  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ श्री ॥



संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ६ शुक्ले उप० गहिलना गो० सा० बेढा जा० दाहिमदे प्रभृति पुत्रादियुतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरि पढे श्री गुणशेखर सूरिजिः ॥ खीमसा वास्तव्य ॥

[ 1279 ]

संवत् १५२७ वर्षे प्राग्वत् सा० प्रथमा जा० पाटहणदे सुत सं० परवत जा० चाम्पू सुत सा० नीसलेन जा० नाई श्रेयर्थ सुत जगपालादि कुटुम्बयुतेन श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं प्रति० तपा लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1280 ]

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख विदि ६ चंडे उपकेश झातौ डूगड़ गोत्रे सा० सिखा जा० थली पुत्र धनपालेन जा० मारू पु० नागिन सोनपाल प्रमुख सहितेन स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ विंबं कारितं प्रति० श्री बृहन्नगछे श्री मेरुप्रज सूरिजिः ।

[ 1281 ]

संवत् १५२७ माघ सुदि ६ सोमे श्रीमाल झातीय पिण्डवेलापट (?) नामलदे सु० ताजा जा० राजलदे सु० कर्मसी तेजा सा० श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं श्री पूर्णिमापदीय श्री साधुसुन्दर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं । जूहारुद्र वास्तव्यः ॥ श्री ॥

[ 1282 ]

संवत् १५३० वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश झातीय सा० रणसिंह जा० तेजलदे पुत्र सा० क्रीताकेन जा० कुनिगदे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागङ्गनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ लूझावा वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥



संवत् १५३० वर्षे माघ सुदि ४ प्रा० झा० रादा जा० आघू पु० सिरौही वासी सा०  
मांरुणेन जा० माणिकदे पु० लषमादियुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं तपा श्री सोमसुंदर  
सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[ 1284 ]

सं० १५३० वर्षे फाट्गुण सुदि ७ बुधे श्रीमाल झातीय सा० राना जा० राजलदे जागेयर  
स्वश्रेयोर्थ श्री अंचलगहे श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[ 1285 ]

संवत् १५३१ वर्षे वैशाख सुदि १० शुके श्री उएसवंशे चाण्णालिया गोत्रे सा० नेमा  
जा० कीनी पुत्र सा० सोहिल चार्या माईठी पुत्र सा० पहिराज चार्या पाट्हाणदे पुत्र सा०  
रत्नपाल सुआवकेण पितृव्य शाह जोपाल प्रमुख कुटुम्ब सहितेन पितुः श्रेयसे श्री सुविधि-  
नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गहे श्री पुण्यनिधान सूरिजिः ॥ पहिराज  
पुण्यार्थ ॥

[ 1286 ]

संवत् १५३३ वर्षे चैत्र सुदि ४ शुके ओसवंशे बाबेल गोत्रे सा घेढहा पुत्र शा० खेता  
जा० खेतश्री पुत्र शा० देदाकेन स्वपिता श्रेयसे श्री अजिनन्दन नाथ बिंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गहे श्री गुणसुन्दर सूरि पढे श्री गुणाननिधान सूरिजिः ॥

[ 1287 ]

संवत् १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शित १० दिने सोमे उपकेशवंशे कटारीय गोत्रे जापचा  
चार्या पाट्हाणदे पुत्र सामरसिंह श्रीरकेण श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रति० श्री परतरगहे  
श्री जिनचन्द्र सूरि पढे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्रेयसे ॥



सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उप० कयण्णया गोत्रे सा० लषमण जार्या लषमादे पु० टिता साजा जा० कीढ्हणदे स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० जापनाण गहे श्री कमलचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1289 ]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ ऊकेश वंशे जहड गोत्रे सा० उगच पुत्र सा० खरहकेन जा० नीविणि पुत्र माला वला पासड सहितेन धर्मनाथ बिंबं निज श्रेयार्थ कारापितं श्री खरतरगहे जहा० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1290 ]

संवत् १५३४ वर्षे माह वदि ५ तिथौ सोमे उपकेश झाती धरावही गोत्रे लढण वीपां म० कान्हा जार्या हीमादे पुत्र सतपाक तिहुअणाज्यां पित्रोः पुण्यार्थ श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं श्री कन्हारसा तपागहे श्री पुण्यरत्न सूरि पढे श्री पुण्यवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1291 ]

सं० १५३४ मा० शु० १० डा० व्य० नरसिंह जार्या नमलदे पुत्र मेलाकेन जा० वीराणि सुत रातादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ पालणपुरे ॥

[ 1292 ]

संवत् १५३५ वर्षे आषाढ द्वितीया दिने उपकेश झातीय आचार गोत्रे लूणाउत शाखायां सा० जांजा पु० चउत्थ० जा० मयलहदे पु० मूलाकेन आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रज बिंबं कारितं ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1293 ]

संवत् १५४६ वर्षे आषाढ विदि २ ओसवाल झातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शाखायां सा०



सिंघा जा० सिंगारदे पु० वीजा ठाजू ताज्यां पुत्र पौत्र युताज्यां श्री चन्द्रप्रज बिंबं सा०  
सिंघा पुण्यार्थ कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1294 ]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ओसवाल झातीय म० साहेजा जा० केदही  
सु० गकुरसीकेन जार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री  
वृद्धतपापदे ज० श्री जिनसुन्दर सूरिजिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[ 1295 ]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे उपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह  
सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण जा० साखिगसुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र०  
हर्षपुरीय गढे जट्टारक श्री गुणसुन्दर सूरि पढे ॥ श्री ॥

[ 1296 ]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सफेरगढे ऊ० बढाळा गोत्रे सा० लूसा लीला  
पु० लाला हरा लोजा जार्या तारू पु० हराजजह (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं  
कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि .... ।

[ 1297 ]

संवत् १५५७ आषाढ सुदी १० बुधे श्री पद्धुवरु गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुँअरपाल  
पुत्र साधू .... वेत जा० देवल० पु० णए रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं  
प्र० वृद्धजच्छे ज० श्री मेरुप्रज सूरि पढे श्री मुनिदेव सूरिजिः ॥

[ 1298 ]

संवत् १५५७ वर्षे माह सुदि १० दिने शनिवारे उपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त  
जार्या जंगादे पुत्र सा० धणदत्त जार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल



नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पढे श्री जिनहंस सूरिजिः ॥  
कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[ 1299 ]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ उ० उच्छितवाखगोत्रे संघवी देवा जा० देवलदे सा०  
वीणा जा० वीढहणदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थ श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं  
प्र० श्री धर्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पढे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[ 1300 ]

संवत् १५६६ वर्षे फाट्गुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग  
जा० देऊ पु० करमा जा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थ नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० उपकेश  
गछे ज० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

[ 1301 ]

संवत् १५७१ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा जा० रद्दा पु० मं० करण  
जा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण जा० आहवदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद  
प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थ नागेन्द्रगछे सुगुरूणामुपदेशेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[ 1302 ]

संवत् १५७६ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल झ्वातीय मं० राजा जा० रमादे पुत्र  
खीमाकेन जा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्री मुनिसुव्रतस्वामी  
बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पढे जीमपल्लीय ज० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पढे श्री मुनिचन्द्र  
सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[ 1303 ]

ॐ संवत् १५७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ९ उ० सुराणा गोत्रे शा० हेमराज जा० स० हेमश्री



( ५० )

पुत्र शा० देवदत्तेन स्वपितृपुन्यार्थेन कारितं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष  
गङ्गे जट्टारक श्री पयाणंद सूरि पट्टे श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः ॥

[ 1804 ]

संवत् १५७६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० झा० टप गोत्रे छे० सदा जा० सक्तादे पु०  
थिरपाल जा० धेमलदे पु० सहसमल्ल हापा जगा सहितेन पितृ नि० श्री मुनिसुव्रत बिंबं  
कारितं प्र० श्री सण्फेरगङ्गे श्री शांतिसुन्दर ॥

[ 1805 ]

संवत् १५७७ वर्षे आषाढ सुदि ७ दिने आदित्यनागगोत्रे तेजाणी शाखायां शा०  
मुहना पु० हासा पुत्र सखारण दा० नरपाल सधारण चार्था सूहवदे पुत्र ४ श्री करणंगा  
समरथ अमीपाला सखारण स्वपुण्याय कारितं । श्री उपकेश गङ्गे जट्टा० श्री सिद्ध सूरिजिः  
श्री अजिनन्दन बिंबं प्रतिष्ठितं स्वपुत्रपौत्रीय श्रेये मातु ॥

[ 1806 ]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख विदि १३ सोमे श्री सण्फेरगङ्गे ऊ० जण्फारी गोत्रे ज० ईसर  
पु० वीसल जा० कीढूपत्ते निमित्तं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिजिः ॥

[ 1807 ]

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख विदि १० जौमे जवाठ वास्तव्य हूंबरु झातीय मंत्रीश्वर मोत्रे  
दोसी श्रीपाल चार्था सिरीआदे सुत दोसी रुढाकेन जा० राणी युतै श्री पद्मप्रज बिंबं तपा०  
श्री तेजरत्न सूरिजिः प्रति० ॥

[ 1808 ]

संवत् १६४३ वर्षे फाट्गुन सित ११ अहमदाबाद वास्तव्य बाई कौमकीसङ्गया प्राग्वाठ  
सेठि मूला जा० राजलदे पुत्री श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री विजयसेन सूरिजिः  
श्री तपागङ्गे ॥



( ५९ )

[ 1809 ]

संवत् १६९६ वर्षे मिगसिर सुदि १० रवौ उपकेश झातीय लघु शाखायां बुरा गोत्रे  
फुमण गोत्रे बाइ गेलमादि पुत्र ठाकुरसी टाईसिंघ श्री कुन्थुनाथ बिंब कारापितं श्री  
तपागढे गुरु श्री विजयदेव सूरि तत्पटे विजयशिव सूरिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1810 ]

संवत् १६९९ वर्षे वैशाख शुक्ल ९ दिने ..... श्री शांतिनाथ बिंब कारितं  
प्र० तपागढे श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

[ 1811 ]

संवत् १६९९ वर्षे फादगुन विदि २ तिथौ सा० पुरुषाकेन शीतल बिंब कारितं प्रतिष्ठितं  
..... गढे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

[ 1812 ]

संवत् १७१५ श्री श्रीमाल झातौ शाह आसा जार्या अणुपमदे पुत्र थिर पाखेन त्रातृ  
लूणसिंह .... निज जार्या ..... निमित्तं श्री पञ्चतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गढे श्री  
पद्मचन्द्र सूरि पढे श्री रत्नाकर सूरिजिः ॥

चौबीसी पर ।

[ 1813 ]

संवत् १५२० वर्षे पौष विदि ५ शुके श्रीमोढ झातीय मे० काण्हा जार्या काचू सु०  
भूराकेन जा० माई सु० अजनरामा सहितेन पितृत्रातृश्रेयसे स्वपूर्वजनिमित्तं श्री कुन्थुनाथ  
चतुर्विंशति पढः कारितः प्रति० श्री विद्याधरगच्छे श्री विजयप्रज सूरि पढे श्री हेमप्रज  
सूरिजिः ॥ वर्द्धमान नगरे ॥



संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ मंगलपडुर्गे प्राग्वाट सं० अजन जा० टबकू सुत सं० वस्ता जा० रामा पुत्र सं० चाहाकेन जा० जीविणि पुत्र संजाग आमादिकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री चन्द्रप्रज १४ पट्ट का० प्र० तपा पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—दफतरियों का महल्ला ।

[ 1815 ]

संवत् १५१३ माघ शुक्ल ७ बुधे श्री उसवाल झातौ लोढा गोत्रे सा० जूचर जा० सरू पु० हंरू जा० सहमई पु० जरहूकेन पितृ श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री रुद्रपट्टीय गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥

[ 1816 ]

संवत् १५१७ वर्षे आषाढ सुदी १ गुरौ उपकेश झातीय तावथजा जार्था आहलदे पुत्र नीवा जा० मानू सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं अश्वलगछे श्री जयकेसर सूरिजिः ॥

[ 1817 ]

संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ दिने उपकेशवंशे बोथरागोत्रे शा० जेसा पु० आहा सुआवकेण जा० सुहागदे पुत्र देव्हा मानी वाकि युतेन माता लखी पुण्यार्थ श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1818 ]

संवत् १५३४ वर्षे मिंगसिर वदि ५ उपकेश झातीय नाहर गोत्रे शा० चाहम जार्था हरखू पुत्र बीजाकेन जा० बीजलदे पुत्र कैशवयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्मघोषगछे श्री धर्मसुन्दर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥



संवत् १५३४ वर्षे प्राग्वाट झा० श्रे० सोमा जा० देऊसु जोटाकेन जा० वानरि त्रातृ  
जोजा प्रमुखकुटुम्बेन युतेन श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० तपापद्मे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥  
वीसनगरे ॥

[ 1320 ]

संवत् १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने सोजात वास्तव्य उपकेश झातीय शा० जाणा  
जा० जावलदे पु० आशाकेन जा० की३ सुत वापा वीदा प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रेयर्थ श्री  
वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

[ 1321 ]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमवार पुष्य नक्षत्रे नाहर गोत्रे सं० पटा तत् पुत्र  
से० पासा जार्या पालजदे तत् पुत्र सं० लाखणाख्येन तद् जार्या ज्ञाषणदे तत् पुत्र सं०  
नानिग सं० खीमसिंह --- सहितेनात्मश्रेयसे बिंबं कारितं श्री शान्तिनाथस्य श्री धर्मघोष  
गढे जह्दारक श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितः ज्ञद्रं जवतात् ॥

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1322 ]

संवत् १५७७ वर्षे पौष विदि ५ शुके प्राग्वाट श्रे० हरराज जा० अमरी पु० समधरेण  
जा० नाई प्रमुखकुटुम्बसहितेन स्वश्रेयसे श्री कुन्धुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश  
गढे सिद्धाचार्य सन्ताने श्री देवयुत सूरि पडे श्री सिद्ध सूरिजिः ॥



( ६२ )

चौवीसी पर ।

[ 1823 ]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री वायरु झातीय मं० माहव जा० हलू सु० म(हा)देवदास जा० जीवि सु० सिंहराज त्रातृ हरदास काही आसुरा पञ्चायण अमीपाल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरुपदेशेन प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावामा वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—( घोसावतों की पोल )

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1824 ]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र विदि ६ जौमे श्री बृहज्ज्जीय श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री हीरज्ज् सूरिजिः प्रतिष्ठितं । श्रे० शुजंकर जार्या देवइ तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन जार्या पूनदेवि पुत्र श्रीवह नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थ श्री वीरजिन बिंबं कारितं ॥

[ 1825 ]

संवत् १५०३ वर्षे माहू गोत्रे सा० जाखर जरमी आविकायाः पुण्यार्थ मा० खडाकेन जीवा खीदा जीदा जादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थ श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनज्ज् सूरिजिः ॥ श्रीखरतरगछे ॥

[ 1826 ]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख विदि ५ ओसवाल झातौ सूरणा गोत्रे सा० सखर सहस्र वीरेण जार्या जोजी पु० कीमा वरता रंगू रत्नू युक्तेन स्वजार्या पुण्यार्थ श्री धर्मनाथ बिंबं कारितः प्रति० श्री धर्मघोषगच्छे श्री पद्मानन्द सूरिजिः ॥



( ६३ )

[ 1827 ]

संवत् १५४५ वर्षे ज्येष्ठ विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्राग्गुं झाति साग रत्ना जाग  
माघ पुग साग जीमाकेन जाग हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री  
श्री श्री सूरिजिः ॥ श्रिये ॥

[ 1828 ]

संवत् १५६६ वर्षे फादगुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगढे उसज गोत्रे कोग तुहथ जाग  
चाहिणदे पुत्र वीवावणा वधा दोहावणी पुण्यार्थ श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रग श्री शांति  
सूरिजिः ॥ मेरुता नगरे ॥

चौबीसी पर ।

[ 1829 ]

संवत् १४९० वर्षे फादगुण शुक्ल ए जाइलंवाल गोत्रे साग शिखर पुत्राज्यां शाग संग्राम  
सिंह धनाज्यां निज मातृ सादहीं श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पदं कारितः  
प्रतिष्ठितं । तपा जट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पदे जट्टारक श्री हेमहंस सूरिजिः ॥



बीकानेर ।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

आसानियों का महद्वा—बांठियों के उपासरे के पास ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1830 ]

संवत् १४९६ फागुण वदि ६ बुधे ऊकेश झातीय साग जगसी जाग ऊवकू पुत्र्या आग



रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा खजर्तुनिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री  
कोरंटगढे श्री कक्क सूरि पढे श्री सावदेव सूरिः ॥

[ 1331 ]

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जइता जार्या वरजू पु० बुवा सा०  
आत्मश्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं श्री मुनिप्रज सूरिजिः ॥

[ 1332 ]

सं० १५०० वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे ओसवाल झातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना जार्या  
अमरी पु० तोलूकेन खपूर्वज रीजा पुण्यार्थ श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1333 ]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे मालू शाषायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन  
पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माला पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथ  
बिंबं कारितं श्री खरतरगढे श्री जिनराज सूरि पढे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 1334 ]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगढे ककुदाचार्य संताने जाडगोत्रे सा०  
साधा सा० सारंग जा० तब्ही पु० भीमधर जा० जेठी पु० भेता भेनायुतेन आत्मश्रेयसे श्री  
संजवनाथ बिंबं का० प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1335 ]

संवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० जादा पुत्र सा० धणदत्त  
तथा ठकण पुत्र सा० वळराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल बिंबं मातृ अपू पुण्यार्थ कारितं  
प्र० खरतर श्री जितचन्द्र सूरिजिः ।



( ६५ )

[ 1336 ]

सं० १५१० वर्षे माघ सु० ५ बुधे ज्ञकेश शुक्ल गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूनड़ जार्या  
फती पुत्र सा० करमणेत जार्या कर्मादे धर्म पुत्र सा० समरा जार्या सहजलदे सुत तेजादि  
कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थकर विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः । श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

[ 1337 ]

सं० १५३२ फा० सुदि .... श्री ..... संजवनाथ विंबं श्री संकेरगढे जट्टारक श्री ..... ।

[ 1338 ]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश वांज गोत्रे । सा० वडा जा० वोरिणि  
पु० सा० सच्चू जा० लषमादे मातृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ विंबं कारापितं श्री  
मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिजिः ॥

[ 1339 ]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ ओसवाल धामी गोत्रे सा० प्रदमा जार्या प्रेमलदे  
पु० जोला जा० जावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंबं कारापितं प्र०  
ज्ञानकीय गढे श्री धनेश्वर सूरिजिः ॥ सोरो ..... ।

[ 1340 ]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तश्ट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुरपतिना जा० गरखदे  
पु० सहसा पुनि जार्या रासारदे पुत्र करमसी पहराज युतेन श्री कुंथुनाथ विंबं निज पुण्यार्थ  
कारितं प्र० नमदाल गढे श्री देवगुप्त सूरिजिः ।

[ 1341 ]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ज्ञकेश .... रा गोत्रे सा० डूढहा पुण्यार्थ पुत्र सा०  
अषयराज तद् त्रातृ ली .... युतेन श्री नमिनाथ विंबं का० प्र० श्री खरतरगढे श्री जिनजद्र  
सूरि पढे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्री ॥



सं० १५३९ वर्षे वैशाख सुदि ४ शुके उ० ज्ञातीय प्राह्मचा गोत्रे व्य० चांदा जा० धर्मिणि पु० गांगा जा० म्यापुरि सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंब का० प्र० जावड़ गळे श्री जावदेव सूरिजिः ।

[ 1343 ]

संवत् १५४९ वैशाख सु० ५ बुधे काष्ठासंघे जट्टारक श्री ..... तस्यास्त्राये .....

[ 1344 ]

सं० १५५१ वर्षे फा० शु० ६ शनौ ओस० ज्ञानीय सा० मुंज जा० मुजादे पु० सा० परवत जा० अमरादे सा० पर्वत श्रंयोर्थ श्री विमलनाथ बिंब कारितं प्र० तपागळे श्री हेमविमल सूरि ।

[ 1345 ]

संवत् १५६१ वर्षे माह सुदि ५ दिने शुके हुंबड़ ज्ञातीय श्रे० विजपाल जा० हीरू सु० श्रे० पदमाकेन जा० चांपू सु० षोना जा० रषी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृत्तेन स्वश्रेयोर्थ श्री विमलनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपागळाधिगज श्री लक्ष्मीसागर सूरि तत्पट्टे श्री सुमनिसाधु सूरि तत् पट्टे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ वीचावेना वास्तव्य ॥

[ 1346 ]

सं० १५७७ वर्षे वैशाख वदि ७ श्री ओमवंशे ठंजलाणी गोत्रे । पीगेजपुर स्थाने । सा० धनूजार्या .... सुत सा० वीरम जार्या वीरमदे सुत दीपचंद उधरणादि कुटुम्बयुतेन श्री संचवनाथ बिंब कारितं । प्रतिष्ठितं ..... ,

[ 1347 ]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवारे श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरवेड्या शाखाया



सा० पासा पुत्र ऊदा जा० पञ्जमादे पु० कामा गयमल देवदत्त ऊदा पुण्यार्थ शान्तिनाथ  
बिंबं कारापितं उपपल सिद्ध सूरिभिः प्रति .... ।

[ 1348 ]

संवत् १६१७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह काजड़ गोत्र साह चापसी जार्या नारंगदे  
पु० श्री वासपु श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूरिभिः ।

जैन उपासरा का शिला लेख ।

[ 1349 ]

- ( १ ) पृथ्वी नल मांहे प्रगटः बड़ो नगर बीकाण ।
- ( २ ) सुरतसीह महागजजुः राज करै सुविहाण ॥ १ ॥
- ( ३ ) गुणी क्षमामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रधान ।
- ( ४ ) बाचक बिद्या हेमगणिः सुप्रत सुख संस्थान ॥ २ ॥
- ( ५ ) सय अढार गुणसठ में महिरवान महाराज ।
- ( ६ ) नठय बनाय उपासरो दियो सदा थित काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिलालेख ।

[ 1350 ]

॥ संवत् १५६१ वर्षे आषाढ़ सुदि ९ दिने वार रवि । श्री बीकानेर मध्ये महाराजा  
राई श्री श्री श्री बीकाजी विजयराज्ये । देहरो करायो श्री संघ ॥ संवत् १३७७ वर्षे श्री  
जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठितः ॥ श्री मंढोवर मूलनायक ॥ श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति



पहं ॥ नवलक्षक रासल पुत्र नवलक्षक राजपाल पुत्र श्री नवलक्षक साठ तेमिचंद्र सुश्रावकेण  
साह वीरम दुसाऊ देवचंद्र कान्हरु महं ॥ संवत् १५६१ वर्षे श्री श्री श्री चतुर्वीस इन्द्रजी  
रो परघो महं वठावते जरायो ठे ॥

चौवीस जिनमाता के पट्ट पर ।

[ 1851 ]

॥ संवत् १६०६ वर्षे फागुण वदि ७ दिने श्री वृहत् खरनरगछे । श्री जिनजद्र सूरि  
सन्ताने । श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे ॥ श्री जिनहंस सूरि तत् पट्टालंकार  
श्री जिनमाणिक्य सूरिजिः प्रतिष्ठिता श्री चतुर्विंशति श्री जिनमातृणां पट्टिका कारिता ।  
श्री विक्रमनगर संघेन ॥

चरण पर ।

[ 1852 ]

संवत् १६०५ वर्षे शाके १७७० प्रमिने माधव मासे शुक्ल पक्षे पौर्णिमास्यां तिथौ गुरुवार  
वृहत् खरतर गणाधीश्वर ज० । ज० । युग प्र० श्री १०० श्री हर्ष सूरि जित्पाडुके श्री संघेन  
कारापितं प्रतिष्ठितं च ज० । ज० । युग । प्र० । श्री जिनसौजाग्य सूरिजिः श्री विक्रमपुर  
वरे ॥ श्री ॥

श्रीमन्दिर स्वामी का मन्दिर—जांकासर ।

[ 1853 ]

सं० १५३७ वर्षे मार्ग सुदि १२ ऊकेश झातीय बांहुटिया गोत्रे साठ समुवर पुत्रेण  
साठ जालु ..... युतेन श्री पद्मप्रज विंबं कारितं तपा ज० श्री हिमसमुद्र सूरि पट्टे श्री  
हेमरत्न सूरिजिः ।

[ 1854 ]

सं० १५७९ वर्षे प्राग्वाट श्रेष्ठ गोगेन जा० राणी सुत वरसिंग जा० बीबू नाम्ना जा०



( ६६ )

अमा नरसिंह लोलादि कुटुम्बयुतया श्री संजव बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपागहे श्री इन्द्रनन्दि  
सूरिभिः पत्तने ॥ श्री ॥

कुंठ और नहर पर की शिलालेख ।

[ 1355 ]

॥ श्री नेमिनाथाय नमः ॥

श्री बीकानेर तथा पूरब बंगाला तथा कामरू देस आसाम का श्री संघ के पास  
प्रेरणा करके रुपया जेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बनाया सुश्रावक पुण्य प्रज्ञावक  
देवगुरुजक्तिकारक गुरुदेव को जक्त चोरडिया गोत्रे सीपानी चुन्निलाल रावतमलाणि  
सिरदारमल का पोता सिंधिया की गवाड़ में वसता मायसिंध मेघराज कोठारी चोपड़ा  
मकसुदाबाद अजिमगंजवाले का गुमास्ता और कुंड के ऊपर दारईकेलाव (?) बकतावर  
चंद सेठिया बनाया संवत् १९५४ शके १७९० प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे चाद्रवामासे शुक्ल  
पक्षे पंचम्यां तिथौ जौमवासरे ।



मोरखानो-बीकानेर ।

[ 1356 ] \*

१. ॥ ॐ ॥ श्री सुसाणं कुलदेव्यै नमः ॥ मूलाधारनिरोधबुद्धफणिनीकंदादिमंदानिले ।

( ५ ) नाक्रम्य ग्रहराज मंरु

\* यह स्थान " देशनोक " से दक्षिण-पूर्व कोण १२ मील पर है । यहां के देवी मंदिर में काले पाषाण पर यह लेख  
खुदा हुआ है और टेसिटोरी साहब ने अपने ई० सं० १८१६ की रिपोर्ट में छापी है । See J & P of the A. S. of Bengal  
Vol XIII. pp. 214-215.



१. लधिया प्राग्पश्चिमांतं गता । तत्राप्युज्ज्वलचंद्रमंडलगलत्पीयूषपानोद्धसत्कैव-  
ल्यानुजव्या सदास्तु जगदानं
२. दाय योगेश्वरी ॥ १ या देवेन्द्रनरेन्द्रवन्दितपदा या जडतादायिनी । या देवी किल  
कल्पवृक्षसमतां नृणां दधा-
४. लौ । या रूपं सुरचित्तहारि नितरां देहे सदा विव्रती । सा सूरणासवंश  
सौख्यजननी भूयात्प्रवृद्धिं क-
५. री ॥ २ तत्रैः किं किल किं सुमंत्रजपनैः किं जेषजैर्वा वरैः । किं देवेन्द्रनरेन्द्र-  
सेवनतया किं साधुभिः किं धनैः । ए-
६. का या भुवि सर्वकारणमयी ज्ञात्वेति ज्ञो ईश्वरी । तस्याध्यायत पादपंकजयुगं  
तद्भ्यानलीनाशयाः ॥ ३ ॥ श्री भूरिर्द्धम-
७. सूरि रसमयसमयांचोनिधेः पारदश्वा । विश्वेषां शश्वदाशा सुरतरुसदृशस्त्या-  
जितप्राणिर्हिंसां । सम्यग्दृष्टि ---
८. मनणु गुणगणां गोत्रदेवीं गरिष्ठां । कृत्वा सूरणावंशे जिनमतनिरतां यां चका-  
रात्मशक्त्या ॥ ४ तदूयात्रां महता महेन
९. विधिवद्विज्ञो विधायाखिले निर्गमे मार्गणचातकपृणगुणः सत्तारटंकठटः । जातः  
क्षेत्रफले ग्रहिर्मरुधरा धारा-
१०. धरः ख्यातिमान् संघेशः शिवराज इत्ययमहो चित्रं न गर्जिध्वजः ॥ ५ तत्पुत्रः  
सच्चरित्रे वचनरचनया भूमिराजः
११. समाजालंकारः स्फारसारो विहित निजहितो हेमराजो महौजाः । चंगप्रोत्तुंग-  
शृगं भुवि जवनमिदं देवयानोप-
१२. मानं । गोत्राधिष्ठातृदेव्याः प्रसूमरकिरणं कारयामास जक्त्या ॥ ६ संवत् १५७३  
वर्षे ज्येष्ठमासे सितपक्षे पूर्णिमा-



१३. त्यां शुक्रे ऽनुगधायां भीमकर्णे श्री सूरणवंशे सं० गोसल तत्पुत्र सं० शिवराज तत्पुत्र सं० हेमराज तन्नायां सं० हेमश्री त-
१४. त्पुत्र सं० धजा सं० काजा सं० नाट्टहा सं० नरदेव सं० पूजा नार्या प्रतापदे पुत्र सं० चाहड़ जा० पाटमदे पुत्र सं० रणधीर
१५. सं० नाथू सं० देवा सं० रणधीर पुत्र देवीदास सं० काजा नार्या कडतिगदे पुत्र सं० सहसमल्ल सं० रणमल
१६. सहसमल पुत्र मांरुण । रणमल पुत्र बेता भीमा । सं० नाट्टहा पुत्र सं० सीहमल्ल पुत्र पीथा सं० नरदेव पुत्र मोकला-
१७. दिसहितेन । सं० चाहकेन प्रतिष्ठा कारिता सपरिकरेण श्रीपद्मानंद सूरि तत्पट्टे ज० श्री नंदिवर्द्धन सूरिश्चरेज्यः ॥



## चुरू-बीकानेर ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1857 ]

संवत् १३०४ ..... गढे ..... कारितं श्री पार्श्वनाथ बिंबं ।

[ 1858 ]

॥ सं० १३०० ज्येष्ठ सु० १४ श्री जलसगढे श्रे० म ..... ला जा० मोषलदे पु० देहा कमा पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री ककुदाचार्य सं० श्री कक्क सूरिभिः ।



[ 1359 ]

सं० १४६९ वर्षे फा० वदि २ शनौ नागर झातीय अखियाण गोत्र श्रे० कर्मा जार्पा  
धाण सुत रूग त्रातृ सांगा श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० अंचलगह ना० श्री  
मेरुतुंग सूरजिः ॥

[ 1360 ]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० ओसवंशे नाहरे गोत्रे सा० हेमा जा० हेमसिरि पु०  
तेजपालह आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० धर्मघोषगहे .... ।

[ 1361 ]

सं० १५३० वर्षे फा० व० २ रवौ प्राग्वाट झा० साह करमा जा० कुनिगदे पु० सा०  
दोला जा० देवहा चोला त्रातृ जुणा स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णि० कठोली-  
वालगहे ज० श्री विद्यासागर सूरिणामुपदेशेन ।

[ 1362 ]

॥ सं० १५४५ वर्षे माह सु ३ गुरौ उपकेश झा० श्रेष्ठि गोत्रे साह आसा जा० ईसरदे  
पु० जईता जा० जीवादे पुत्र चाहा युतेन पित्रो श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं  
मडाहरउ गहे ..... ज० श्री कमलचंद्र सूरजिः ॥

गवालियर ( लस्कर ) ।

पंचायती मंदिर — सराफा बजार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1363 ]

ॐ सं० ११९० ज्येष्ठ सु० १२ देवम सुतया वीटिकया कारितेयं प्रतिमा ।



( ७३ )

[ 1364 ]

सं० १३४० वै० सुदि २ गुरौ श्रीमाल झातीय .... श्री प्रद्युम्न सूरिजिः ।

[ 1365 ]

संवत् १३७६ वर्षे वैशाख सु० ३ ..... प्रणमंति ।

[ 1366 ]

सं० १४९१ माघ सुदि ६ बुधे उप० वोहड़ वर्धमान गोत्रे सा० राणा जा० सूहवदे पु० महिषा मोकल श्रेयोर्थ श्री वासुपूज्य बिंब कारितं खरतरगहे श्री जिनचंद्र सूरि पदे श्री जिनसागर सूरि प्रति० ॥

[ 1367 ]

सं० १४९८ फागुण वदि १० चंमेजरिया गोत्रे । सा० धर्मा पुत्रेण जीणाचूणाज्यां निजपितृनिमित्तं श्रीपद्मप्रज बिंब कारितं प्र० तपागहे जट्टारक श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[ 1368 ]

संवत् १५०० वर्षे वैशाख सुदि ३ जाज श्रीमाल झातीय । श्रे० सादा जा० मनूं सुत माईया जा० अष्टू सुत देवराजेन पितानिमित्तं श्री शीतलनाथ पंचतीर्थी बिंब कारापितं प्रति० श्री ब्रह्माणगहे प्र० ज० श्री विमल सूरिजिः ।

[ 1369 ]

संवत् १५०१ वर्षे मा० सु० ५ श्री श्रीमाल झातीय मं० जांषर सुत जट्टसा जा० जामि पु० सायकरणा परनारायजिः पित्रो श्रे० चंद्रप्रज स्वामि बिंब प्र० श्री वृहत् सा .... गहे प्र० श्री मंगलचंद्र सूरिजिः ।

[ 1370 ]

सं० १५०५ वर्षे चै० सु० १३ शान्ति बिंब का० प्र० तपापदे श्री जयचंद्र सूरिजिः ।



[ 1871 ]

सं० १५०७ वैशाख सु० ए ळूका बेबिकाच्यां स्वश्रेयसे कारिता .... ।

[ 1872 ]

सं० १५०८ वर्षे माघ सु० १० शनौ ळूकेशवंशे माढू गोत्रे मं० ळूजरारज ळा० ळूमादे पुत्र सं० देवोकेन ळा० मं० सोनार संग्रामादि सहितेन सू(?) ळा० देवलदे श्रेयोर्य श्री अजित बिं ळा० प्र० श्री खरतरगळे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[ 1873 ]

सं० १५१२ माघ सु० १ बुधे श्री ओसवाल ळातौ सुहणाणी सुचिंती गो० सा० सारंग ळा० नयणी पु० श्रीमाखेन ळा० बीमी पु० श्रीवंत युतेन मातृश्रेयसे श्री आदिनाथ बिं कारितं उपकेशगळे ककुदाचार्य सं० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1874 ]

सं० १५१३ पोष सु० ७ ळूकेशवंशे वि --- क गोत्र सं० नरसिंहांगज सा० मार पुत्रेण सा० कीढ्हाकेन निजमातृपुण्यार्थ श्री नमि बिं बं का० प्र० ब्रह्माण तपागळे उदयप्रज सूरि जहारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पढे श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[ 1875 ]

सं० १५१३ वर्षे माह सु० २ ळूकेश बीथेपरिया गो० सा० बिथपाल ळार्या बेमथी ..... पु० ळाषू सेषू ळा० सोम श्री ..... माथी ..... प्ररपोध (?) आ० श्रेयसे श्री आदिनाथ बिं का० प्र० श्री वृहज्जे श्री सागरचंद्र सूरिजिः ।

[ 1876 ]

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे गूर्जर ळातीय दो० अमरसी ळा० रूपिणि सुत



ऊसाकेन जा० वइजीयुतेन पितुरादेशेन आत्मश्रेयसे जीवितस्वामी श्री धर्मनाथ बिंबं  
कारितं पूर्णिमापक्षे जीमपद्धीय जहारक श्री जयचंद्र सूरिणमुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[ 1377 ]

सं० १५५० वर्षे वैशाख सुदि ९ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय रुठड़ा (?) गोत्रे सा० वठराज  
पु० सा० जाटा जार्या गजवदे पु० सा० ठाजू जार्या हर्षमदे पु० सा० रत्नपाल सीधर समदा  
सायराज्यः स्वपितृणां श्रेयसे श्री श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्मघोषगढे श्री  
विजयचंद्र सूरि पढे श्री साधुरत्न सूरिजिः ॥

[ 1378 ]

॥ संवत् १५५१ वर्षे वैशाख वदि ७ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० देवसीय जार्या पादहणदे  
पुत्र सा० जामवेन जा० माकू सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री पद्मप्रज बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं  
श्री साधपूर्णिमापक्षे ५ । श्रीरामचंद्र सूरि पढे पूज्य । श्री पुज्य चंद्र सूरिणामुपदेशेन विधिना  
आचष्टे ।

[ 1379 ]

सं० १५५६ वर्षे वैशाख वदि ९ चौमवारे प्राग्वाट गोत्रे सा० जाटा जा० जइतो पुरषी  
माता जाटी पु० जहरवदास ..... जा० दुल्लादे सहितेन लाढि निमित्ते श्री धर्मनाथ बिंबं  
कारितं खरतरगढे प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्र सूरिजिः । शुभं भवतु ।

[ 1380 ]

सं० १५३१ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे श्री कोरंटगढे श्री मन्नवाय संताने उप० पोमालेचा  
गोत्रे सा० जगनाल जा० जासहदे पु० सा० सारंग जा० संसारदे पु० सा० मेहा नरसि  
सहितेन श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं प्र० श्री सांबदेव सूरिजिः ॥

[ 1381 ]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमवासरे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० हेमा जा० मानू पुत्र



सं० बरूया जा० काही .... पु० सं० वता जा० मजकूं पुत्र कूंगर आत्मश्रेयसे श्री विमलनाथ  
बिंबं कारितं साधुपूर्णिमापदे प्रतिष्ठितं श्री जयशेखर सूरिजिः ।

[ 1382 ]

सं० १५३४ वर्षे फागुण सुदि ए बुधवारे प्रा० झा० सा० मोकल जा० मोहणदे पु०  
मेहाके० जा० कुंती पु० रो० जा० लषमण आसर वीसन्न सहितेन आ० श्री वासुपूज्य बिंबं  
का० प्र० पू० द्वि० कछोली वा० ज० श्री विजयप्रज सूरिणा मुपदेशेन ।

[ 1383 ]

संवत् १५४९ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ सोमे आसवाल ज्ञातीय सा० मूला जा० माणिकदे सं०  
माणिक जा० गंगादे सु० जूनं च जा० लाठी बिंबं कारितं मूला श्रेयर्थ श्री वासुपूज्य बिंबं  
का० प्रतिष्ठितं । श्री संमेरगढे श्री सुमति सूरिजिः ॥

[ 1384 ]

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुगै उपकेश झा० जूरि गोत्रे सा० चांपा चउहथ चां०  
जा० चांपले पु० कान्हा जा० चंगी पु० देवा शिवा सुकुटुम्बयुतेन चउहथ श्रियर्थ श्री  
सुविधिनाथ बिंबं श्री धर्मघोषगढे ज० श्री श्रुतसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं । शुभं भवतु ॥

[ 1385 ]

सं० १५६७ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधे गूंदेचा गोत्रे जकेशवंशे सा० ठाकुर जार्या टहन  
पु० जधा सुत कचा वर्जु जा० १ जसा गुणा प्रमुख कुटुंबसहितैः श्री अंचलगढे जावसागर  
सूरिणा मुपदेशेन ।

[ 1386 ]

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे ज० झा० फूलपगर गोत्रे सा० दधीरथ पु० सा०  
धर्मा जा० १ पाबू सादही पाबू .... पु० जांजा जा० पूरी ..... पुत्र मोकल प्रमुख समस्त



कुटुम्बेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वडगढे श्री श्री चंद्रप्रज सूरिजिः ॥  
॥ श्री ॥ जावर वास्तव्य ॥

[ 1387 ]

सं० १५७९ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे कूकर वाड़ा वा० नागर झातीय श्रे० कान्हा जा०  
धनी सु० श्रे० हरपतिलदणकेन जा० लषमादे प्र० क० सुतेन नपा सीपा पदमा श्रे० श्री  
श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री वृहत्तपा प० श्री धनरत्न सूरि श्री सौजाग्यसागर सूरिजिः  
प्रतिष्ठितं ॥

[ 1388 ]

संवत् १६१७ वर्षे वैशाख शुदि ३ शुक्रे ज्जकेशवंशे गोठ १ गोत्रे सोप श्रीवह सोप जोला  
पुत्र सो० उदयकरण जार्या अठवोदे पुत्र सो० जसवीर । सो० नका सो० धवजी प्रमुख  
परिवारयुतैः श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं श्री वृहत्खरतरगढे श्री जिनसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं  
॥ श्रीः ॥

चौवीसी पर ।

[ 1389 ]

सं० १५११ वर्षे वैशाख सुदि १० श्री उपकेश झातीय बापणा गोत्रे सा० देहड़ पु०  
देहड़ा जार्या धाड़ पुत्र सा० लूला जीमा कान्हा स० जीमाकेन जा० वीराणि पुत्र श्रवणा  
मारू जाफू सहितेन श्री शांतिनाथ मूलनायक प्रभृति चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री  
उपकेशगढे ककुदाचार्य संताने प्र० श्रीसिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिजिः ॥ शुभं ॥

[ 1390 ]

सं० १५४१ वर्षे आषाढ सु० ३ शनौ उप० श्रेष्ठि गोत्रे सा० रामा जा० रत्नू पु० राजा  
भाजा शिवा राजा जा० टहकू पु० वना सांगा मांगा गीर्झ्या आसा सहदेव जार्या जटी  
सा० सांगाकेन जा० करमी द्वि० जा० रामति प्र० समस्तकुटुम्बसहितेन ज्ञातृ वना



निमित्तं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्टकं का० श्री मझूहड़ गछे रत्नपुरीय ज० श्री धर्मचंद्र  
सूरि पट्टे ज० श्री कमलचंद्र सूरिजिः ॥ शादमलीयपुरे ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1391 ]

सं० १६७५ वर्षे वै० सु० १५ दिने इंदलपुर वास्तव्य प्रा० वाद ( प्राग्वाट ) ज्ञातीय  
वाई वज्र का० श्री संजव बिं० प्र० श्री । विजयदेव सूरिजिः ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1392 ]

संवत् ११७७ फागुण सुदि ए सालिगदे लूण वति जा० कारिता ।

[ 1393 ]

सं० १३७६ माह वदि १ श्री बृहज्ज बा० श्री देवार्य स० ऊकेश झा० श्रे० आसचंद्र  
सा० श्रे० देदारिसीहेन पितृश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री अमरचंद्र सूरि शिष्यैः  
श्री धर्मघोष सूरिजिः ॥

[ 1394 ]

॥ सं० १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातौ म० सादहा सुत पितृ म०मूल  
मातृ मूनी सुत ठकुरसिंहेन पितृमातृश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री  
ब्रह्माणगछे श्रीवीर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1395 ]

सं० १४६७ वर्षे माह सुदि ६ षमेरकीयगछे ऊ० सा० अजा जा० कपूरदे सु० तिहुअणा



जा० माढहणदे पु० तेजाकेन पितृ घस्समेठी सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति विंबं का० प्रति० श्रीसुमति सूरिजिः ॥

[ 1396 ]

सं० १४७० वर्षे माघ सु० १२ गुरुवारे आदित्यनाग गोत्रे सा० सलपण पुत्र कम्मण जा० सांवत दीर तेजाकेन श्री शांतिनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीदेव सूरिजिः ॥ ० ॥

[ 1397 ]

सं० १४७९ माघ सुदि १० शनौ श्रीमाल ज्ञातीय सं० षेता संताने सं० ठाड़ा जा० नाऊ नाम्ना पु० कान्हा सोजा सहितया जर्तु श्रेयसे श्री श्रेयांस विंबं का० प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री विद्याशेखर सूरिणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

[ 1398 ]

संवत् १४९९ माघ सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातोय वीटवल व्य० पाता सुत वयरसी चार्या काही --- पितृमातृश्रेयोर्थं सुत मेलाकेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंबं कारापितं श्री नागेन्द्र गढे श्री गुणसागर सूरिः शिष्यैः प्रतिष्ठितं श्री श्री गुणसमुद्र सूरिजिः ॥ श्री सांतपुरे पितृव्य देवलवणीली ।

[ 1399 ]

सं० १५०४ वर्षे फागण शु० ११ गुरौ दिने नाहर गोत्रे सा० जाहड़ जा० जोलाही सा० राजा जा० लाबू --- पु० काफू सहितं निजपूण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंबं का० प्र० श्री धर्म० गढे श्री विजयचंद्र सूरिजिः ।

[ 1400 ]

सं० १५०७ ज्येष्ठ सुदि १ दिने ऊकेशवंशे सा० जोणसी चार्या कपूरदे धाविकया निज जर्तु जोणतीपुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंबं कारि० प्रति० खरतरगढाधिराज श्री जिनराज सूरि पढालङ्कार प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि राजैः ॥



ॐ ॥ सं० १५११ वर्षे माघ वदि ए गोहरिया गोत्रे सा० दातु पूरेण ..... श्री विमलनाथ  
बिंबं कारितं प्र० तपा जट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पढे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

सं० १५११ फा० शु० ए रवौ प्राग्वाट० सा० पेषा जार्या राजू सुत वीढाकेन जार्या  
कमा सुत दरपाल टाहा जरकीता जरमा कगतादि कुटुम्बयुतेन श्री संजवनाथ बिंबं स्वश्रेयसे  
कारितं प्रतिष्ठितं तपागञ्ज नायक जट्टारक श्री सोमसुंदर सूरि प्रांज श्री रत्नशेषर सूरिजिः ।

सं० १५१३ वर्षे मा० व० ५ प्राग्वाट व्य० तिहुणा जा० कर्मा पुत्र हासा जगिन्या व्य०  
दका पढ्या आ० मनी नाम्न्या श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर  
सूरिजिः ॥

संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० बुधे श्री कोरंटगच्छे उपकेश झा० काला पमार शाखायां  
सा० सोना जा० सहजलदे पु० सादाकेन त्रातृ चउड़ा जादा नेमा सादा पु० रणवीर वणवीर  
सहितेन स्वश्रेयसे श्री चंद्रप्रज बिंबं कारि० श्री ककक सूरि पढे श्रीपाद ..... ।

संवत् १५१८ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरु श्री श्रीमाल झातीय बजोला जार्या देमाइ सुत  
व्यव० कुरुपालेन जार्या कमलादे सुत व्यव० विद्याधर वीरपाल प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयार्थ  
श्री मुनिसुवत स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक जट्टारक श्री सूरसुंदर सूरिजिः ।  
श्रीपत्तन वास्तव्य शुभं जवतु ॥ श्री ॥

॥ संवत् १५१८ वर्षे माह सुदि १० दिने श्रीमालवंशे । पढहवड़ गोत्रे सा० मेया जार्या



( ७१ )

मेलाही पु० सा० वीरमेन जार्या बीमा पु० सा० समरा सहसू श्रे० श्री शान्तिनाथ विं० प्र०  
श्री वृहज्जे श्री रत्नाकर सूरि ५० श्री मुनिनिधान सूरि श्री मेरुप्रज सूरिजिः ॥

[ 1407 ]

सं० १५११ वर्षे वैशाख सु० १० सोमे ओसवाल झा० सा० ठाकुरसो जा० वीसलदे  
सुत सा० धनाकेन जार्या सोनाई पुत्र सा० हांसादियुतेन सुता बाबू श्रेयसे श्री शीतलनाथ  
बिंबं कारितं प्रति० श्री वृहत्तपापक्षे श्री उदयवह्मज सूरिजिः ।

[ 1408 ]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री संडेरगळे ओसवाल झा० राणु द्रायेच (?) गोत्रे  
केद्रादेन जणा आदहू पु० गोकाला डुदेदहू " जयनादर्पदयुतेन आत्मपुण्यार्थ श्री चंद्रप्रज  
स्वामि बिंबं का० प्र० श्री " सूरि संताने श्री शान्ति सूरिजिः ।

[ 1409 ]

सं० १५३३ माघ सुदि ५ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जयशेषर सूरिजिः ।

[ 1410 ]

सं० १५३६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ जौमे श्री १ माल झा० महाजन । सदा जा० सूइवदे  
सुत बीका आका महा० बीका जा० कपूर सुत तादहू कान्हा जनासहितेन मातृपितृश्रेयसे  
श्री विमलनाथ बिंबं का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरि० चांद्रसमीया असारि  
गोयं वासर ( ? ) वा० ।

[ 1411 ]

॥ सं० १५३६ वर्षे माघ सुदि ८ सोमे प्रा० । झाति सा० सरवण जा० सहजलदे सुत  
सा० सूरु पादहू सा० जोगा जार्या कमी सुत असल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ  
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं प्र० " सूरिजिः ॥ ठ ॥ श्री ॥



( ७२ )

[ 1412 ]

सं० १५५४ वर्षे वरदउद वास्तव्य ऊकेश झातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग जार्या  
जादही पुत्र सा० फेरू जार्या सूहवेदकेन जाराऊयुतेन श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री अंचलपद्मे श्री सिद्धान्तसागर सूरिजिः ।

[ 1413 ]

सं० १५५७ वर्षे वैशाख सु० ६ शुक्रे ऊकेशवंशे जणसाली गोत्रे ज० गुणराज पु० ज० सहदे  
पु० ज० हासा ज० राजी .... पु० ज० वसुपाल ज० लीला पु० ज० सालिग सुश्रावकेण ज०  
जीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयोर्थं स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंब का० प्रतिष्ठितं श्री ।

[ 1414 ]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख शु० ७ बुधे उपकेश झा० श्रे० सालिग सुत श्रे० नरवद ज०  
पेतू पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंब कारितं प्र० श्री बृहज्जच्छे बोकडिया  
बंदुकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पदे श्री मणिचंद्र सूरिजिः ॥

[ 1415 ]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा  
जा० संपूरी पु० सा० कालण सा० ऊदा सा० ठाला सा० कालण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र  
इत्यादिपरिवृत्ताज्यां सा० ऊदा० सा० टालाज्यां श्री सुविधिनाथ बिं० का० स्वपितृव्य  
दोदा श्री संसरी पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 1416 ]

सं० १५७१ वर्षे पोस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा ज०  
चांगू पु० दासा ज० करमा पु० कमा अषाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंब  
का० प्र० श्री संकेर गणे कवि श्री ईश्वर सूरिजिः ॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटडुर्गे ।



( ७३ )

धातु के यंत्र पर ।

[ 1417 ]

॥ संवत् १८५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्रं यंत्रमिदं । प्रतिष्ठितं वा । लावण्य कमल गणिना । कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्रे ज्ञानचंद्रेण श्रेयार्थं ॥ श्रीरस्तु ॥

[ 1418 ]

ॐ ॥ श्रीमन्वि गच्छे संगनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना ज्ञ०..... ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1419 ]

॥ सं० १३८१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु ..... श्री शान्तिनाथ बिंबं ।

[ 1420 ]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंधे .... ।

[ 1421 ]

सं० १४८३ वर्षे फा० सुदि ३ श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सादा ज्ञा० मटकू सुत श्रे० देवराज हरपति ज्ञातृयुत श्रे० वरसिंह ज्ञार्या कपूरादे सुत पर्वतेन ज्ञार्या वरण निज पितृमातृश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री तपागढ नायक श्री श्री श्री सोमसुंदर सूरिजिः ।

[ 1422 ]

॥ सं० १४९६ वर्षे वैशाख सु० ५ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० माका ज्ञा० शाणी



( ७४ )

गुप्तौ सालगगदा श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री मुनिसिंह सूरिणामुपदेशेन प्र० श्री  
शीखरत्न सूरिजिः ॥ शुभं ॥

[ 1423 ]

॥ सं० १९३६ वर्षे माह सुदि ५ ओसवालान्वय सूरणा गौत्रे स० नाट्टहा जा० नावलदे  
ज० । यग पङ्क्तु सनषन कारापित वासुपूज्य बि० धर्मघोष गच्छे श्री --- सूरि प्रतिष्ठितः ।

मुरार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1424 ]

सं० १४९६ वर्षे फा० व० २ हुंबड़ हातीय ज० चाकम जा० वाट्टहणदे सुत करमसी  
देवसीहाज्यां निज पितृश्रेयोर्य श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ मङ्गलं  
जवतु ॥ ठ ॥

चरण पर-दादावाड़ी ।

[ 1425 ]

सं० १९९१ शा० १७७६ माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां - ६ पूर्वं तु मरुदेशे मेरुतेति नाम  
नगरस्थोऽचूत् अधुना च मुरारि ठावण्यां वास्तव्य धाड़ीवाल गोत्रीय शंजुमल्ल सुजान-  
मल्लाज्यां युगप्रधान दादा श्री जिनदत्त सूरिणां श्री जिनकुशल सूरिणां च पादन्यासौ  
कारापितौ प्रतिष्ठितौ च वृ । ज । खरतरगङ्गीय श्री जिनकल्याण सूरिजिः उ० माणिक्यचंद  
तछिष्य पं० हुकुमचंद्रोपदेशात् ।



## ग्वालियर ( गोपाचल ) दुर्ग ।

शिलालेख । •

[ 1426 ] †

पहला पत्थर ।

( १ ) ॐ नमः पद्मनाथाय । हर्षोत्फुल्लविलोचनैर्दिशि दिशि प्रोज्जीयमानं जनैर्मेदिन्यां विततन्ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् । श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्री पद्मञ्जुभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्म्मलवपुः श्वेतानि रुद्रश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्यस्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः । दर्शयन्निव केशस्थ नवजीमूत कर्णिकाम् ॥ २ ॥ मुक्ताशैलहलेन हितिति

( २ ) लक्ष्मणशो राशिना निर्म्मतोऽयन्देवः पायाडुषायाः पतिरतिधवलखड्गकान्तिर्जगन्ति । मन्वानः सर्वथैव त्रिभुवनविदितं श्यामता पहवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुटतटमिलनीलकान्त्या बिजर्ति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न जवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्रेष्ठ

( ३ ) जगवान् । उषाकर्णोत्तंसीकरणसुजगं नीलनलिनं वहत्यद्याप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्दीर्घलघुकृतेन्द्रतनयो निःशेषजुमीभृतां वन्द्यः कण्ठपघातवंशतिलकः द्यौणीपतिर्लक्ष्मणः । यः कोदण्डधरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानुगाङ्गमेकः पृथुवत्पृथूनपि हठादुत्पाद्यपृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्भजधरोपमः हिति

( ४ ) पतिः श्रीवज्रदामाजवद् दुर्वारोर्जितबाहुदण्डविजिते गोपाद्रिदुर्गे युवा । निर्व्याजंपरिभूय वैरिनगराधोशप्रतापोदयं यद्दीरव्रतसूचकः समजवत् प्रोद्धोषणार्तिमिमः ॥ ६ ॥

• ग्वालियर किले के लेख डा: राजेन्द्रलाल मित्र के " इंडुपरियनस् " में छपे थे । वह पुस्तक अब दुष्प्राप्य होने के कारण

• जो यहाँ प्रकाशित किये गये ।

† Indo-Aryans, Vol. II pp. 370-373.



न तुलितः किल केनचिदप्यञ्जगति नृमिश्रतेति कुतूहलात् । तुलयतिस्म तुला  
पुरुषः स्वयं खमिह वर्ष्म विशुद्धहिरण्यैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्रधामा  
नृपोन्नव-

( ५ ) नमस्कृतराजनामा । यज्ञेश्वरैकप्रणति प्रजावान् महेश्वराणाम्प्रणतः सहस्रैः ॥ ८ ॥  
श्री कीर्तिराजो नृपतिस्ततोऽन्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः । धूलीवितानैः सममेव  
चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमञ्जुद् द्विषश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोस्य कथाश्रुतं नरपतेरेतेन  
शौर्याब्धिना धत्ते मालवञ्चूमिपस्य समरे सङ्ग्रामतीतोर्जितः यस्मिन् रङ्गमुपागते  
दिशि दिशि त्रासा-

( ६ ) त्कराग्रच्युतैर्ग्रामीणाः स्वग्रहाणि कुन्दनिकरैः सज्जादयाञ्चक्रिरे ॥ १० ॥ अद्भुतः  
सिंहपानीयनगरे येन कारितः । कीर्तिस्तम्भ इवाजाति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥  
तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्जुवनपाल इति प्रसिद्धः । श्री नन्ददण्ड-  
गदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरलंकृततनुर्मनुतुल्यकीर्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि नृपालां  
सर्वाम्पालयतः

( ७ ) प्रजोः । जुवन् त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमञ्जुजागत् ॥ १३ ॥ पत्नी देवव्रता तस्य  
हरेर्लक्ष्मीरिवाजवत् । तस्यां श्री देवपालोऽन्यस्तस्य नृपतेः । दानेन कर्णमजयत्  
पार्थ कोदण्डविद्यया । धर्मराजश्च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १४ ॥ सुनुस्तस्य  
विशुद्धबुद्धिविजयः पुण्यैः प्रजानामञ्जुन्मान्धातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपालः  
प्रभुः यत्स्वाम्येपि क-

( ८ ) रप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन्दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणं सान्द्रैश्चमूरेणुभिः ॥ १५ ॥  
॥ कृत्वान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशात्सङ्घापतिर्दक्षिणानुत्खिप्ताचलसन्निजानविरत-  
वाजिब्रजैः । उद्भूतान् पततः प ..... संप्रेक्ष्य रेणत्करान् नृयोप्युद्भटसेतुबन्धन-  
धिया त्रस्यन्ति ॥ १६ ॥ तस्येन्दुद्युतिसुन्दरेण यशसा नाके सुराणांगणे  
सौवर्ण्यत्रमशीलखंरुन-



- (९) जयादप्राप्नुवत्यः प्रियान् । नूनं शक्रपुरः सुरासुरवधूसङ्घाः श्रिये साम्प्रतं .....  
यन्ति ये प्रथमतः सर्वा वपुः संश्रिते ॥ केदृप्ता .... पादपां गावःकामडुघा .... कैश्चि-  
न्तितार्थप्रदाः । पूर्णाः कस्य मनोरथा इह न कैः .... मुना पूरिता वीरो यानि तदस्ति  
तद्गुणवतः कस्य दुमादीन्यपि । श्रुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षितारं प्राप्तोदयोपि  
यदसौ बतं नम्रजावः ।
- (१०) शोद्यापि .... तनुर्विपिनेष्यशो .... ॥ त्रमः कुसासचक्रे च साजः पुण्यार्जनेषु च ।  
काठिन्यं  
कुम्भेषु क .... शासविमर्दिनीम् ॥ असम्मतो .... पीमा साधुर्न निखिंशपरि .... तोपि  
इ .... लल्लयेन धनुर्न चासिं तथापि या वैरिगणं जिगाय । सद्य ....
- (११) .... पाधिष शिरोमणिं चि .... । लोकानुरागयशसापि .... प्रतापं विस्तारयां यदसि  
.... ॥ बलशानीव नारीणां हिमानीव नजःश्रियः । .... स विमृश्य नदीपूरचत्वरे  
सरूपदायुषः पूर्वधर्मे मतिं चक्रे जिघृक्षुरनयोः फलम् ॥ प्रजा .... त्वते
- (१२) न क्षिनितिलकभूतं न जवनं .... कारितमदः । .... मिव गिरा यस्य शिखरं  
समारूढसिंहो मृगमिव नृ .... मशितुम् ॥ .... सश्च .... वरशिखरस्पर्द्धिनो हिममण्ड  
.... त्यावतीयं शशिकरधवला वैजयन्ती पतन्ती । निर्व्रातं जाति श्रुतिच्छुरितनिज-  
तनोर्देवदेवस्य शम्भोः स्वर्गाङ्गमेव पिङ्गस्फुटवि-
- (१३) कटजटाजूटमध्यं विशन्ती ॥ तदेतद्ब्रह्माणं स इह जविता पङ्कजध्रुवः पुनर्वयं  
षोढासो वयमिह .... वियति .... । .... तदिदमुररीकृत्य सकलं ध्रुवं संसेवन्ते हरिपदन  
.... तममी ॥ .... कनकाचलः शुभविद्यावन्तः स्थितः श्रीपतिर्विब्राणोद्भिजसत्तमानुवधि-  
जावासो नृसिंहान्वितः । निर्माता स्वृतः समस्तविबुधैर्लब्धप्रतिष्ठैरयं प्राप्तोदध-  
धरातले सममहो कल्पं हरेः कल्पताम् । -- द्विजपुङ्गवेषु प्रतिष्ठितेष्वष्टषु पद्मपात्रः  
(१४) युवेव देवप्रतिकूलजावा .... बभूव ॥ तस्य ज्ञाता नृपतिरजवत् सूर्यपात्रस्य सनुः श्री



- गोपाह्वैः प्रकृतनिलयः श्री महीपालदेवः । यस्मिन्प्राप्यैव प्रथितयशसन्तावजूतां सनाथो  
 सोयं त्यागो हरिरविसुताज्ञावदुस्थोऽचिरेण । सृष्टिङ्कुर्वन्नमात्मानां विप्रा-
- (१५) णां स नृपस्थितिम् । प्रलयं विद्विषामासीद् ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः यत्र धामनिधौ राज्ञि  
 पालयत्यवनीतलम् ॥ .... मुद्गहन्ति शिरसः खलु राजहंसाः सृष्टास्त्वया पुनरिमाः  
 समयावसन्नाः । नाथ प्रजा सुमनसां प्रथमो .... सि त्वं सिद्धवीररसता-
- (१६) मरसोद्भवस्य ॥ लक्ष्मीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिह्नं पाणिद्वयं वहसि जूष जुवं विजृषि।  
 श्यामं वपुः प्रथयसि स्थितिहेतुरेकस्त्वं कोपि नीतिविजितो ..... सख्याल्लयस्य निश-  
 मर्थिजनस्य कायं रामश्रिया त्वमसि नाथ मु .... । सङ्कर्षणस्त्वमसि विद्विषदायुधन्त्वं  
 त्वं कोसि सच्चरितहालहलायुधस्य ॥ .... ख्यातारति .... रूपं तवातिश ....
- (१७) यत्रिस्यकारिदेव । त्वं मीनसिद्धपुरुषोत्तमसम्भवोसि कस्त्वं द्वितीशवरशंकर  
 सूदनस्य ॥ जूजृतसुता पतिरसि द्विषतां पुराणि जेत्ता त्वमीश .... म् । जूति  
 दधास्य मलचन्द्रविजृषिताङ्गः कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शङ्करस्य ॥ त्वं तेजसा शिखिन  
 मिद्धमधः करोषि शक्तिं दधासि .... । त्वन्तारकं रिपुबलं
- (१८) .... बलान्निहंसि कस्त्वं नवीनलनीलमलब्धजन्मा (?) ॥ त्वं वज्रजृत्त्वमसि प्रहजिदप्य-  
 शेषं जूमीभृतां विबुधबन्धगुरुप्रियोसि .... दुर्गाचरणोसि कोसि त्वं जीमसाहससहस्र-  
 विद्वोचनस्य । ख्यातं तवेश बहु पुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकावलिजिरासतमैः सुगुप्ता ॥  
 त्वामामनन्ति परमेश्वरबद्धसख्यं त्वं कोसि सद्गुणनिधानधरा-
- (१९) धिपस्थ । तेजोनिधिस्त्वमसि जूमिजृतः समग्राः क्रान्ताः करैः प्रयतमुग्रतरैस्तवेश ।  
 प्राप्तोदयः सततमर्थिजनस्य कोसि त्वं कटपचूधरसरोरुहबान्धवस्य ॥ आनन्ददोसि  
 जनतानं नोत्पलानामाप्यायिताखिलजनः करमार्दवेन । त्वं शश्वदीश्वरशिरस्तलवत्  
 पादस्त्वं कोसि मर्त्यजुवनेश निशाकरस्य ॥ त्वामंशमीश नि-
- (२०) गदन्ति मधुद्विषोमी श्यामाजिरामतनुरस्य मलप्रबोधः पुण्यं .... रतमिदं विहितं त्वयेव



त्वं कोसि सत्यधनसत्यवती सुतस्य । .... न्ति सुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तन्त्वयो-  
न्नतिममौ गमितः स्ववंशः । पूर्वे पवित्रवनके विहिताश्च कोसि वंशस्थलब्धपरता  
.... जगीरथस्य ॥ एतत्त्वया कृतमताङ्गमासुधिस्त्वं व्याप्ता महीह

- ( १ ) .. रीश मनोजैस्ते पुण्यावतारकरणक्षतदुर्दशास्वस्त्वं कोसि हन्त रिपुलाघव राघवस्त्वम् ।  
धर्मप्रसूस्त्वमसि सत्यधरस्त्वमेकस्त्वं वासुदेवचरणार्चनदत्तचित्तः । त्वं कोसि विप्र-  
जनसेवितशेषजूतिः संग्रामनिष्ठुर युधिष्ठिरपार्थिवस्य ॥ त्वं जूरिकुञ्जरबलो जुवनैक-  
मह्य .... जूषित तनुर्नृपपावनोसि । प्रच्छन्न

### दूसरा पत्थर । •

- ( १ ) .... : कस्त्वं कवीन्द्रकृतमाद .... कादरस्य । पक्वस्त्वमीश जुवि धर्मभृतां वरिष्ठः  
सस्वामिकारिगुणदर्पहरस्त्वमाजौ । त्वं सर्वराजपृतनाविजयाप्तकीर्तिस्त्वं कोसि  
सुन्दर पुरन्दरनन्दनस्य । दुर्योधनारिबलदर्पहृतखवेश यत्नः परार्जनयशः प्रसरे  
निरोद्धुम् । त्वं कोसि श्रूजमित .... कर्त्तन विकर्त्तनसम्भवस्य ।
- ( २ ) .... यस्त्वमसि कर्म गजीरतायास्त्वं पासि पार्थसमजूमिभृतः प्रविष्टान् । अन्तः  
स्थितस्तव हरिः सततं नरेश कस्त्वं विदीर्णरिपुजागरसागरस्य ॥ .... क्रमसमा-  
गतसत्त्ववृत्तिस्त्वं राजकुञ्जरशिरः प्रवितीर्णपादः । दीप्तिरिजास्करतिरस्कृति-  
सिंहिकाजूः कस्त्वं महीपतिमृगाङ्गमृगाधिपस्य । दानं ददासि विकटो वत वंश-  
शोभस्त्वं दन्तपाखिकरवा-
- ( ३ ) लहतारिदर्पः क्षोणीभृतो जयसि तुल्यतया नरेन्द्र त्वं कोसि वैरिबलदारण वारणस्य ॥  
सद्य श्रियस्त्वमसि मित्रकृतप्रमोदस्त्वं राजहंससमलंकृतपादमूलः । स्वामिन्नधः  
कृतजकोसि जनान्जिरामः कस्त्वं सिताद्यमुखपङ्कज पङ्कजस्य ॥ सत्पत्रजूषिततनुः  
सुविशुद्धकोश स्त्वं चन्द्रकीर्तिसमलंकृतकान्तमूर्तिः ख्यातं तवैव कविवर्ण ....  
व बुहिक ....



- ( ४ ) समरत्नैरवकैरवस्य ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि सश्वन्मङ्गल्यचूस्त्वमसि  
निर्मलताञ्जिरामः । कोसि प्रसीद बहु सद्गुणरत्नयोनिस्त्वं कञ्चपारिकुलचूषण  
चूषणस्य ॥ धात्रा परोपकरणाय विस्तृष्टकायः सञ्चायजन्मसमलंकृततुङ्गगोत्र ।  
ब्रूहि .... मवनीश्वरवन्दनीयस्त्वं कोसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य .... ॥ नत्वाशु  
शुद्धहृदय प्रथितो-
- ( ५ ) प्रमायस्त्वं जानुना दत्तवृषो न जकीकृताहस्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथं ते ॥  
नित्यं सन्निहिते कृपाणतमसा प्रायोजिचूयेत स त्वञ्चासाद् जुवनैकनाथ हरिणा-  
स्तस्योदरे प्राविशन् । मूर्तिस्ते च कलङ्किता सजरुतां धत्ते .... : शङ्खस्थैर्विदित  
स्तथापि नृपते राजा त्व....द्भुतः....विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यसिनस्तुतिरर्जुन-
- ( ६ ) स्याद्विहिते व्यङ्गायि पूर्वं किल तत्सम्यक् प्रणिजाति सम्प्रति पुनः श्रीमन्मही-  
पालवत् त्वामालोक्य सहस्रशो रिपुबलं निघ्नन्तमेकं रणे ॥ किं ब्रूमोपि .... स्त्वं  
नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपतेरनिसृणात्मप्रियाणां शृणु । कीर्त्तिर्त्राम्यति दिक्षु  
.... किं चित्रं जुवनैकमल्ल यदि
- ( ७ ) मन्दाकिनोपद्मचूलोकाडुद्धरता जगीरथनृपेणानायि निम्नां महीम् । आश्चर्यं  
पुनरेतदीश यदि ते निम्नान्महीमंरुलाहूर्द्ध कीर्त्ति....णीकमलचूलोकं त्वया प्रापिता ।  
चित्रं नात्र फल .... सर्वात्मना विद्धिषो विशिखैः समूर्छितस्याहवे । .... मध्ये
- ( ८ ) ज्ञताश्चर्यकृत् ॥ अत्यंबुधिजवद्गैमत्यादित्यजवन्महः । अतिसिंहजवत्शौर्यमतः  
कैनोपमीयते ॥ केयूरं बलचूपावजुजदण्डे विराजते किरीटमिव .... निधासि विजय-  
श्रियः । .... जुवनगुरोस्तोत्रमकृथास्तदेव
- ( ९ ) वैतालिकैरित्थमजिष्टुतेन संपूजितामर्त्यगुरुद्विजेन । विमुक्तकाराण्डसंयतेन विदीर्ण-  
चूताजयदक्षिणेन । तेनाजिषिक्तमात्रेण प्रतिजज्ञे द्यं स्वयम् । पद्मनाथस्य चूसिद्धिः  
कन्यायाः .... ॥ .... यशः शरीरम् ॥ स-



- (१०) सर्षिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान् विधायावनिदेवसुख्यान् । प्रवर्ति --- ब्रमतन्द्त्रितेन  
मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ श्री पद्मनाथस्य सलोकनाथ --- नैवेद्यपाका --- विद्या
- (११) सिनीवा " नादिर्यथार्हतः पादकुलस्य मूर्तिम् । स पद्मनाथस्य पुरः समग्राम-  
कटपयत्प्रेक्षणकायचूपः ॥ पापाणपद्धीं प्रविज्ज्य सम्यग् देवाय --- । सम्पाद-  
यामास तथा द्विजेभ्यः " ।
- (१२) गतो योगीश्वरांगोद्भवः ख्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपतेः सर्वत्र विश्वासजूः ।  
आधारो विनयस्य शीलजवनं जूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य क क वसतिः ---
- (१३) ह्रीपाले नटो विप्रास्तस्मिन् ग्रामे प्रतिष्ठिताः । तेषां नामानि लिख्यन्ते विसूरः  
शासनोदितः ॥ देवलब्धिः सुधीराख्यस्ततः अधरदीक्षितः ॥
- (१४) --- रामेश्वरो द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः । अष्टादशैते विप्राश्च --- द्विजः ।  
पादोनपदिका --- ऐकौसुरार्चकौ । द्वावर्द्धपदिनावेष विप्राणां संग्रहः कृतः ।  
---दक्षपदं नृपः । विधाय " कायस्य सूरये देवाय दत्तः सौवर्णो राज्ञा दत्तैः समाचितम् ।  
--- हरिणमणिमयं चूप—
- (१५) --- कं ददौ । रत्नैर्विचित्रं निष्कश्च निष्क ---: स चूपतिः ॥ प्रा—केयूरयुगलं  
रत्नैर्बहुजिराचितम् । कङ्कणानां चतुष्कश्च महार्द्धमणिचूषितम् । --- द्वितीय  
मणि --- स्य सौवर्णं केवलं यथा । कङ्कणानां चतुष्कश्च नीलपट्टयं तथा । ---  
लैः पञ्चजिर्युता । --- धारापात्रश्च कां ।
- (१६) --- चतुष्टयम् । सुवर्णाण्युत्रयं देवपरिवारविचूषणम् । --- परिहेमाब्जमातपत्रीकृतं  
विजोः ॥ निवेश्य ताम्रपट्टे च तन्मयेनैवम् --- । प्रतिमा नित्यं मणि --- राजती ---  
प्रतिमा --- का द्वितीया --- द्युती । राज --- मयी चान्या --- । ताः प्रयत्नेन  
तिस्रोपि पूज्यते ---वेश्मनि । तत्र ताम्रमयं देवं दीपार्थं मण्डिकाकृतम् ।



- (१७) ....क । ताम्रार्थपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीजुजा । सधूपदहनाः सप्त घण्टाश्च  
 .... । दत्ताः शङ्खाश्च सप्तैव ताम्रपात्रीचतुष्टयम् । स कांस्यजाजनं प्रादा-  
 न्नृपतिः ....चामरं दण्डं वृहच्चतुष्टयम् ताम्रमयं तास्ता .... । दत्ताश्च दशतन्मयाः ॥  
 ....देवोपकरणद्रव्याणां संग्रहः कृतः ।
- (१८) ....वापीकूपतडागादि .... नानावनेषु च । दशमासं तथा विंशत्यूर्ध्वं सर्वत्र मण्डले ।  
 ददौ राजा नि ....यते सर्वं प्रवर्तते । अयं देवालयो नाम ....स्फटिकामयः .... चारुद्वाजेन  
 मीमांसान्यायसंस्कृतबुद्धिना । कवीन्द्ररामपौत्रेण गोविन्दकविसूनुना । कविता  
 मणिकर्णेन सुजाषितसरस्वती । प्रशस्तिः
- (१९) ....लङ्केश्वरवान् द्वितीयां विज्रत्सुहृतां मणिकण्ठसूरैः । पञ्चासे चाश्विने मासे  
 कृष्णपक्षे नृपाज्ञया । रचिता मणिकर्णेन प्रशस्तिरियमुज्ज्वला ॥ अङ्कतोपि ११५०  
 ॥ आश्विनबहुलपञ्च ।
- (२०) -- खिळां महीम् । यस्य गीर्वाणमन्त्री च मन्त्री गौरो जव । प्रशस्तिरियमुत्की-  
 र्णा सद्गुणा पद्मशिद्धिपना ।
- (२१)

मूर्तियों के चरणचौकी पर ।

[ 1427 ] \*

श्री आदिनाथाय नमः ॥ संवत् १४९७ वर्षे वैशाख ... ९ शुक्ले पुनर्वसुनक्षत्रे  
 श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीकुंग ...संवर्त्तमानो श्रीकाञ्चीसंघे मायूरान्वयो  
 पुष्करगणजहारक श्रीगणकीर्तिदेव तत्पदे यत्यः कीर्त्तिदेवा प्रतिष्ठाचार्य श्रीपंडितरघूतेपं

\* श्री आदिनाथजी की बड़ी मूर्ति पर यह लेख है । Indo-Aryans, Vol. II, p. 382.



आज्ञाये अग्रोतवंशे मोक्षलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्रः साधु जोषा तस्य जार्या नाही ।  
पुत्र प्रथम साधुक्षेमसी द्वितीय साधुमहाराजा तृतीय असराज चतुर्थ धनपाल पञ्चम  
साधुपादका । साधुक्षेमसी जार्या नोरादेवी पुत्र ज्येष्ठ पुत्र जधाधि पतिकौल ॥ ज—जार्य, च  
ज्येष्ठ स्त्री सुरसुती पुत्र मल्लिदास द्वितीय जार्या साध्वीसरा पुत्र चन्द्रपाल । क्षेमसी पुत्र  
द्वितीय साधु श्रीजोजराजा जार्या देवस्य पुत्र पूर्णपाल ॥ एतेषां मध्ये श्री ॥ त्यादिजिनसंघा-  
धिपति काला सदा प्रणमति ॥

[ 1428 ] \*

- ( १ ) सिद्धि संवत् १५१० वर्षे माघसुदि ८ अष्टम्यां श्रीगोपगिरौ महाराजाधिराज रा
- ( २ ) जा श्रीडिंगरेन्द्रदेवराज्यप्र .... श्रीकार्त्तिसंघे मायूरान्वये जट्टारक श्री ।
- ( ३ ) क्षेमकीर्त्तिदेवस्तत्पदे श्रीक्षेमकीर्त्तिदेवास्तत्पदे श्रीविमलकीर्त्तिदेवाः ....
- ( ४ ) डिता .... सदास्नाये अग्रोतवंशे गर्गगोत्रेसा .... त
- ( ५ ) योः पुत्राः ये दशाय श्रीवंद जार्यां मालाहं । तस्य प्रवसाण्षेणार रा .... जीसा .... डु
- ( ६ ) तीयसा० हरिवंदजार्या जसोधर हितये .... एसी सा० सधा सा० तृती
- ( ७ ) य हेमा चतुर्थ सा० रतीपुत्र सा० सह सापं .... मु सा० धं....सा० सद्धापुत्र एसेवं...ए
- ( ८ ) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेषा तथा हरिचंद्र देवकी जार्या ....
- ( ९ ) दीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीर प्रतिमा प्रतिष्ठाप्य जूरिजक्त्या प्रणमंति ॥
- ( १० ) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य जक्त्या प्रतिष्ठापयतो महत्या । फलं बलं राज्य
- ( ११ ) मनन्त सौख्यं जवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्ति ॥ शुभं जवंतु सर्वेषां ॥

[ 1429 ]

- ( १ ) श्रीमज्ञोपाचलगढदूर्गे ॥ महाराजाधिराज श्री मल्लसिंह देवराज्ये प्रवर्त्तमाने ।  
संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ।



- (३) ए सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलत्कारगणै सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये । जग श्रीपति  
नन्दिदेव तत् पट्टालंकार श्री ।
- (३) शुभचंद्र देव । तत्पट्टे जग मणिचंद्र देव । तत्पट्टे पं मुनि --- गणि कचरदेव तदन्वये  
वारह जेणीवंशे साक्षम जार्या व --
- (४) शुभ पु ४ तेषां मध्ये अणंद जार्या उदैसिरि । पुत्र ६ लोहंगराम मुनिसिंघ अरजुन  
उधरण मद्धू नद्धू । मद्धू जार्या ।
- (५) पियौसिरि मुत्र पारसराम जार्या नव । दुती पुत्र रामसि जार्या नागसिरी । तृतीय पुत्र  
सिज । चतुर्थ पुत्र रोपणि ॥ सां मद्धू ।
- (६) -- तीर्थकरं विवं निर्मापितं प्रणमंति प्रीत्यर्थं ॥

## सुहानीय ।

पाषाण की मूर्तियों के चरणचौकों पर ।

[ 1430 ] \*

संवत् १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेन कजा खोदिता ।

[ 1431 ] †

संवत् १०३४ श्रीवज्रदाम महाराजाधिराज वइसाख वदि पांचमी • • •

\* Indo Aryans, Vol. II, p. 369.  
† Do. p. do.



६: ॥ सिद्धि । सन्तु १४९९ वर्षे वैशाख सुदि १५ दि - नमौ ... मंदावै वै र ... करा  
ब्रह्मभूता सर ... गत्या र ... आदि अखंड हा ... औस्व ... क...सुत ... रिता मुं ठेठ ... व ...

[ 1433 ] †

११६० कातिक सुदि १३ गुरु दिने रतन लिखितं राजन ताठ ... तधार दिवसम्मि  
पंथ ... चंद्राना पसावे आदेसू संवतु १५११ वर्षे चैत सुदी १० बुधे ।

## मथुरा ।

श्रीपार्श्वनाथजी का मंदिर—बीयामंडि ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1434 ]

॥ सं १३७५ । श्र० फूससीह जार्ग मावू पुत्री लषमिणि मातापितृ अयसे श्री  
शांतिनाथ का० प्र० ब्रह्माणेत्य श्रीमदनप्रज्ञ सूरि पढे श्रीविजयसेन सूरिजि : ॥

[ 1435 ]

ॐ सं० १३७० वर्षे माघसुदि ५ उत्त० सुचिंती गोत्रे सां० बीमा पुत्र सां० भूषा जौजा  
श्रीजिनजद्र सूरि शिष्य श्रीजगत्तिलक सूरिजि : । ... श्रीपद्मानंद सूरिजि : ॥

[ 1436 ]

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे उपकेश झा० व्य० जइता पु० जगपाल जा०  
पूजखदे पु० लौलाकेन पितृमोर्तु श्र० श्रीशांतिनाथ बिंवा का० प्र० बृहज्जे श्रीरामदेव  
सूरिजि : ।

\* Indo-Aryans, Vol. II, p. 381.

† किले पर "सास बहु" के मंदिर की मूर्त्ति पर यह लेख है ।



( ९६ )

[ 1437 ]

सं० १५३३ व० वै० सु० ६ प्राग्वाट श्रे० वस्ता जा० फडू सुतश्रे० सारंगेण जा० मरगादे  
पुत्र श्रे० वीकादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिम्बं का० प्र० तपागळे श्री रत्नशेखर  
सूरि पढे श्रीलक्ष्मीसागर सूरिजि : ॥ जज्ञतपुर ॥

[ 1438 ]

सं० १५३७ वर्षे फागुण - - श्रीमालझातीय टाकी गोत्रे स० ज्ञाविनो पुत्र श्रीज्ञाप्  
श्रावक श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगळे श्री जिनसागर सूरितत्प० श्री सुंदर  
सूरि पढे श्री हर्ष सूरिजि : ।

[ 1439 ]

सं० १५७९ वर्षे माघसुदि ६ शुक्ले वैशाख वदि ५ जसवंशे लाषाणी गांधी गोत्रे सा०  
तेजपाल पुत्र सा० कुररपाल जार्यासालिगदे पुत्र रायमल्लश्रावकेण स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ  
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगळे श्रावकेण श्री गुणनिधानसूरि उपदेशात् ।

धातुकी मूर्ति पर

[ 1440 ]

सं० १६०७ फाग० सु० १० क्षेमकीर्ति ..... ।

धातुके यंत्र पर ।

[ 1441 ]

सं० १७५२ पोषं सुदी ४ दिने । बृहस्पति वासरे श्रीसिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं  
सवाई जैनगर मध्ये वा० लालचंद्र गणिना कारितं वीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोप  
चंद तत्पुत्र जेठमल्लेन श्रेयोर्थं शुभं जवतु ॥



## आगरा ।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर—रोशन मोहल्ला ।

पंचतीर्थियों पर

[ 1442 ]

॥ संवत् १३७९ वर्षे वैशाख सुदी ६ बुधे श्रीमाल झातीय श्रे० अरसीह जा० पामना-  
पुत्र ... बाढ्हाकेन श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1443 ]

॥ संवत् १५२४ वर्षे मार्गशिर बदी ४ रवौ उपकेश झातीय खिंगा गोत्रे सा० पीघा जा०  
जदी...पु० सा० चेडन जा० सूहवादे पु० शेषा सरूजन अरजन अमरासहितेन खपु०  
श्रीकुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीउपकेशगढे ककुदाचार्यसन्ताने श्री सिद्ध सूरि पढे श्री कक्क  
सूरिजिः ॥

[ 1444 ]

॥ सं० १५३३ वर्षे पोस सुदि १५ सोमे सिद्धपुर वास्तव्य ओसवाल झातीय सा०  
नासण जा० वानू सु० बडाकेन जा० माई सुसूरा प्र० कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिम्बं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपागढे श्री ज्ञानसागर सूरि पढे श्री उदयसागर सूरिजिः ॥

[ 1445 ]

॥ संवत् १५३६ व० ज्येष्ठ वदि ४ जोमे श्रीश्रीमाली दोसा रगना उपरिसन प्रावर जा०  
हपारा सुत जैरवदासेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बि० का० प्रति० बृहत्तपा श्री उदयसागर-  
सूरिजिः ॥

[ 1446 ]

॥ संवत् १५७१ सा० लीबा जा० का० ... सं० गांडण रणधीर र... देवाति प्रणमन्ति



( ए७ )

[ 1447 ]

॥ संवत् १५९९ माघ सुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसंघे ज० श्री जिनचन्द्र तदाम्ना  
जसवाल इच्छा ... कुवेसल श्री हेमणे ....

[ 1448 ]

॥ संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ वदी १ ... श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री-  
वृहत् खरतरगढे ज० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[ 1449 ]

॥ स० १६३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य ज० मूल श्रीनवपद  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री (?) विजयसूरी.... ।

धातु की चौविशी पर ।

[ 1450 ]

॥ संवत् १५९४ वर्षे वैशाख सुदी दशमी शुक्र ओसवाल ज्ञातीय राका शाखायां वल्लह  
गोत्रे सं० रत्नापुत्र स० राजा पु० सं० नाथू ज० बद्धा पुत्र सं० चूहरु ज० हीसू पु० स०  
महाराज ज० संया पुत्र सोहिल लघुत्रातृ महपति ज० माणिकदे सु० नरहपाल ज०  
मल्लूही पु० धनपाल स० हेमराज ज० उदयरजी पु० संघागोराज त्रातृ सेन्यरत्न ज०  
श्रीपासी पु० संघराज समस्तकुटुम्बसहितेन सुश्रावकेन हेमराजेन श्री धर्मनाथ बिम्बं  
कारापितं श्रीउपकेश गढे ककुदाचार्यसन्ताने प्रतिष्ठितं ज० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1451 ]

ॐ सिद्धिः ॥ संवत् १६६७ ज्येष्ठ सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे अनुराधा नक्षत्रे । ओस-  
वाल ज्ञातीय अरडक सोनी गोत्रे साह पूना संताने सा० कान्हड़ ज० जामनी वहु पुत्र सा०



हीरानंदेन बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगढे श्री जिनवर्धन सूरि संताने .... श्री लब्धवर्द्धन शिष्येन ।

[ 1452 ]

श्रीमत्संवत् १६११ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री आगरावासी उंसवाल झातीय चोरनिया गोत्रे साह .... पुत्र सा० हीरानंद जार्या हीरादे पुत्र सा० जेठमल श्रीमदंचलगढे पूज्य श्रीमद्धर्ममूर्ति सूरि तत्पट्टे ....

पाषाण के चौविशी के चरण पर ।

[ 1453 ]

संवत् १७६१ ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवारः श्री सिंघाड़ो बाई ने बनाया । श्री आगरा वास्तव्य व्य० संघपति श्री श्री चंद्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

शिलालेख ।

[ 1454 ]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १५ श्री अर्गलपुरे जला-  
बूदीन पातिसाह श्री अकबर सुत जहांगीर सुत सवाई साहिजां विजयराज्ये .... राजद्वार  
शोजक सोनी .... श्री होरानंद .... श्री जहांगीरस्य गृहे .... कृतं । तत्र तस्य नंदनवनो-  
द्यानसमवाटिकायां .... निज धनस्य .... जार्या सोना सुत निहालचंद जार्या मृगां खोहंग  
पुत्र चिरं सहसमल्ल सना श्री गंगाजल वारि पूरपूरित निर्मल कूपः कारापितः ॥ आचं-  
द्रार्क यावत्तिष्ठतु ॥

[ 1455 ] \*

१। ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥ सत्पट्टोत्तुंगश्रृंगोदयं शिखरि शिखा जानु बिंबोपमाना  
जैनोपज्ञा : स

\* बड़े मंदिर के बगल में जो जड़ाई काम को नई वेदी और समामंडप बने हैं उसके दाहिने तर्फ उपर में यह शिलालेख लगाया हुआ है । इसकी लंबाई अंदाज २ फिट और चौड़ाई १॥ फिट है और मामूली पत्थर है । शिलालेख के निचे ४ यंत्र हैं ( १ ) २० का ( २ ) १५ का ( ३ ) ३४ का और ( ४ ) १७० का खुदा हुआ है ।

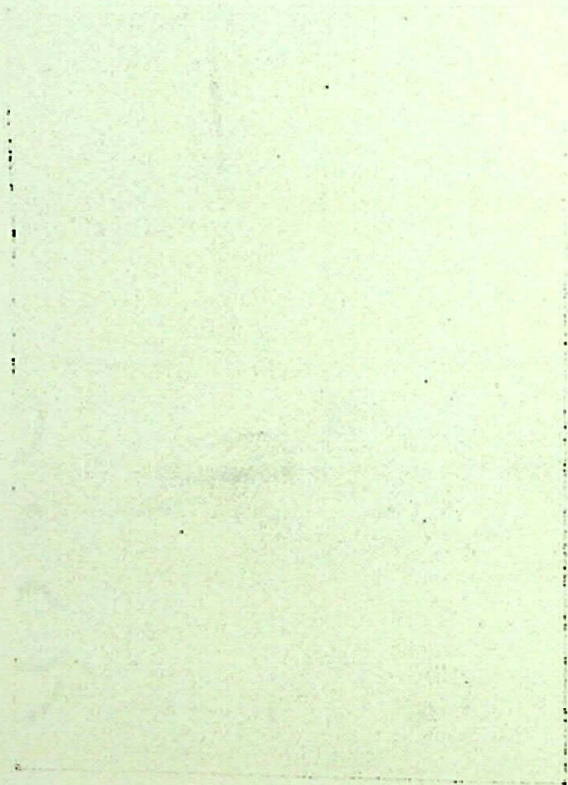


- १। मं चञ्चरित चित तपस्तेजसा तप्यमाना : नूनं नंदा सुरैरेते जुवि यशविमला राज  
राजीव हंसा ॥
- ३। श्रेयः श्री हीरनामा विजयपदयुता सूरिवंशावतंसाः १ चट्टारक श्री विजयेण युक्तः  
श्री
- ४। धर्म सूरि जगति प्रसिद्धः तत् प्राज्यराज्ये प्रगुणी कृतो यः श्री संघमानन्द विकास-  
हेतु २ श्री
- ५। हीरवंशे जुवि कीर्तिविश्रुतं यशोत्तरं यस्य समीक्ष्य मानवाः पश्यन्ति नेत्रैर्न सुधाकरं  
वरं श्री पा
- ६। ठकश्रेणिपुरन्दरप्रभुः ३ श्रीमेघनामा जुवि पाठक प्रभु प्रसह्य पापं दहतेस्म कामदः  
महादवं
- ७। वन्हिरिव स्फुरद्युतिः ज्वलत्प्रतापावलिं कीर्तिमंजुलं ४ तत्पदे विबुधार्चितो विजय-  
प्राक् श्री
- ८। मेरुनामा मुनी तद्धिष्यो मणिसदृशौ शुभमति माणिक्य ज्ञानू जयौ ताच्यां शिष्य  
कुशाग्रधीति कु
- ९। शलो जैनागमे यन्मति तद्वाक्यं श्रवणेन निर्मलधीयां निर्मापितोयं गृहं ५ श्री  
अकब्बरावादपुरे
- १०। श्रीसंघमेरुसदृशो धर्मे निर्मापय जिनजवनं करोति बहुजक्तिः वात्सल्यं ६ दिगष्टैक  
मिते
- ११। वर्षे माघशुक्ले चतुर्दशी बुधवारे च पुष्यर्क्षे स्थापितोयं जिनेश्वरान् ७ श्रेयः कट्याणं  
जयं
- १२। ॥ सवैया ३१ प्रथम वसंत सिरी सीतल जू देवहु की प्रतिमा नगन गुन दस दोय  
जरी है आग
- १३। रे सुजन साचे अठारैसै दस आठे माह सुदी दस च्यार बुद्ध पुष धरी है देहरा  
नवीन कीन्यौ संग



AGRA TEMPLE PRASHASTI  
Dated, V. S. 1818 ( A. D. 1761 )







- १४। जिनराय चिन्यौ कुशलविजय पुन्यास तपगह धरी है देख श्रीवह विचार सम्यक्  
गुन सुधार
- १५। जरम की रज टार पूजा जिन करी है १ कुंरुलिया चोमुष की प्रतिमा चतुर धरम  
विमल जिन नेम
- १६। मुनिसोवूत उर आनिकै करत जवानी पेम करत जवानी पेम नेम जिन संघ सुजा-  
नौ विमल लष
- १७। न वाराह धरम जिन व ( ज ) र पिठानौ मुनिसोवूत जिन कूर्म लषन लष होत  
सबै सुष प्रति
- १८। मा चारौं जान आन सुज धरीसु चौमुष २ ॥

११	१	८
४	७	६
५	१२	३

६	७	२
१	५	३
८	३	४

१५	४	५	१०
६	६	१६	३
१२	७	२	१३
१	१४	११	८

२५	८०	क्षि	१५	५०
२०	४५	प	३०	७५
क्षि	प	ऊँ	स्वा	हा
७०	३५	स्वा	६०	५
५५	१०	हा	६५	४०

[ 1456 ] \*

पातिसाहि श्री जहांगी ( १ ) ।

- १। ॥ ए० ॥ श्री सिद्धेय्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री विष्णुपुत्रो निखिल गुणयुतः पारगो वीत-  
रागः । पायाहः क्षीणकर्मा सुरशिखरि समः [ कव्य ]
- २। तीर्थप्रदाने ॥ श्री श्रेयान् धर्ममूर्तिर्जविकजनमनः पंकजे बिंबजानुः कल्याणां-  
जोधिचंद्रः सुरनरनिकरैः सेव्यमा
- ३। नः कृपालुः ॥ १ ॥ ऋषजप्रमुखाः सर्वे गौतमाद्या मुनीश्वराः । पापकर्म्म विनिर्मुक्ताः  
देमं कुर्वतु सर्वदा ॥ २ ॥ कुंर ।

\* यह लेख प्रफेसर बनारसीदासजी ने " जैन साहित्य संशोधक " बंड २ अंक १ पृ० २५-३४ में विस्तृत दिग्गणी के साथ  
प्रकाशित किया है ।

२६



- ४। पात्र स्वर्णपात्रौ । धर्मकृत्य परायणौ । स्ववंशकुजमार्तडौ । प्रशस्तिर्लिख्यते तयोः । ३ । श्रीमति हायने रम्ये चद्रर्षि रस
- ५। चूमिते । १६७१ षट् त्रिंशत्तिथौ शाके । १५३६ । विक्रमादित्यभूपतेः । ४ । राधमासे वसतर्तौ शुक्लायां तृतीया तिथौ । युक्ते तु
- ६। रोहिणी तेन । निर्दोषगुरुवासरे । ५ । श्रीमदंचलगुह्याख्ये सर्वगुह्यावतंसके । सिद्धान्ताख्यातमार्गेण । राजिते विश्वविस्तृते । ६ । उग्रसे
- ७। नपुरे रम्ये । निरातंके रमाश्रये प्रासादमंदिराकीर्णे । सद्ज्ञातौ ह्युपकेशके । लोढागोत्रे विवश्वांस्त्रिजगति सुयशा ब्रह्मवी
- ८। र्यादियुक्तः श्री श्रंगाख्यातनामा गुरुवचनयुतः कामदेवादि तुल्यः । जीवाजीवादि-तत्त्वे पररुचिरमतिर्लोकवर्गेषु यावज्जीवा
- ९। श्रंद्रार्कबिंबं परिकरभृतकैः सेवितस्त्वं मुदाहि । ८ । लोढा सन्तानविज्ञातो । धनराजो गुणान्वितः । द्वादशव्रतधारी च । शुभ ।
- १०। कर्मणि तत्परः । ९ । तत्पुत्रो विसराजश्च । दयावान् सुजनप्रियः । तुर्यव्रतधरः श्री मानचातुर्यादिगुणैर्युतः । १० । तत्पुत्रौ द्वा ।
- ११। वचूतां च सुरागावर्धिनां सदा । जेवू श्रीरंगगोत्रौ च । जिनाज्ञा पावनोच्छुक्तौ तौ जीण । सीह मल्लार्यौ । जेवूवात्मजौ बचूवतु
- १२। : । धर्मविदौ तु दक्षौ च । महापूज्यौ यशो धनौ । १२ । आसीच्छ्रीरंगजो नूनं । जिनपदार्चने रतः । मनीषी सुमना जव्यो राजपा-
- १३। ल उदारधीः । १३ । आर्या । धनदौ चर्षजदास । षेमार्यौ विविध सौख्य धनयुक्तौ । आस्तां प्राज्ञौ द्वौ च । तत्त्वज्ञौ तौ तु तत्पु
- १४। त्रौ । १४ । रेषाजिधस्तयोज्यैष्ठः । कटपट्टुरिव सर्वदः । राजमान्यः कुलाधारो । दयालुधर्मकर्मठः । १५ । रेषश्रीस्तत्प्रिया
- १५। जव्या । शीलालंकारधारिणी । पतिव्रता पती रक्ता । सुखशा रेवती निजा । १६ । श्री पद्मप्रज्जबिंबस्य नवीनस्य जिनास ।



- १६। ये । प्रतिष्ठा कारिता येन सत्श्राद्धगुणशालिना । १७। खलौ तुर्यवृतं यस्तु । श्रुत्वा  
कल्याणदेशनां । राजश्रीनन्दनः ।
- १७। श्रेष्ठ । आणंदश्रावकोपमः । १८। तत्सूनुः कुंरपासः किल विमलमतिः स्वर्णपासो  
द्वितीय । श्रातुर्यौदार्यधैर्यप्रभुः ।
- १८। खगुणनिधिर्जाग्यसौजाग्यशाली । तौ द्वौ रूपाजिरामौ विविधजिनवृषभ्यानकृत्यैक-  
निष्ठौ । त्यागैः कर्णावतारौ निज-
- १९। कुलतिलकौ वस्तुपालोपमाहौ । १९। श्रीजहांगीरचूपासमान्यौ धर्मधुरंधरौ । धनिनौ  
पुण्यकर्तारौ विख्यातौ त्रा-
- २०। तरौ जुवि । २०। याज्यामुसं नव क्षेत्रे । वित्तबीजमनुत्तरं । तौ धन्यौ कामदौ लोके ।  
लोढा गोत्रावतंसकौ । २१। अवा
- २१। प्य शासनं चारू । जहांगीरपतेर्ननुः कारयामास तुर्धर्म । कृत्यं सर्व सहोदरौ । २२ ।  
शाखापौषधपूर्वावै । यकाज्यां सा
- २२। विनिर्मिता । अधित्यका त्रिकं यत्र राजते चित्तरंजकं । २३। समेतशिखरे जव्ये  
शत्रुंजयेर्बुदाचले । अन्येष्वपि च तीर्थेषु । गि
- २३। रिनारिगिरौ तथा । २४। संघाधिपत्यमासाद्य । ताज्यां यात्रा कृता मुदा । महर्क्या  
सवसामग्र्या । शुद्धसम्यक्कहेतवे । २५। तुरंगा
- २४। णां शतं कांतं । पंचविंशति पूर्वकं । दत्तं तु तीर्थयात्रायां गजानां पंचविंशतिः । २६।  
अन्यदपि धनं । वित्तं । प्रत्तं संख्यातिगं खलु
- २५। अर्जयामासतुः कीर्त्ति । मित्थं तौ वसुधातले । २७। उत्तुंगं गगनालंबि । सच्चित्रं  
सध्वजं परं । नेत्रासेचनकं ताज्यां । युग्मं चैत्य
- २६। स्य कारितं । २८। अथ गद्यं श्रीअंचलगङ्गे । श्रीवीरादष्टचत्वारिंशत्तमे पदे । श्रीपावक  
गिरौ श्री सीमंधरजिनवचसा । श्रीचक्रे ( श्वरीद )
- २७। त्वराः । सिद्धांतोक्तमार्गप्ररूपकाः । श्री विधिपद्मगङ्गसंस्थापकाः । श्री आर्यरक्षित  
सूरय । १ । स्तत्तद्दे श्री जयसिंह सूरि २ श्रीधर्मघो



- ३० ष सूरि ३ श्रीमहेन्द्रसिंह सूरि ४ श्रीसिंहप्रज्ञसूरि ५ श्रीअजितसिंह सूरि ६ श्री देवेन्द्रसिंह सूरि ७ श्रीधर्मप्रज्ञ सूरि ८ श्री ( सिंहतिलक सू )
- ३१। रि ए श्रीमहेन्द्रप्रज्ञसूरि १० श्रीमेरुतुंगसूरि ११ श्रीजयकीर्ति सूरि १२ श्री जयकेशरि सूरि १३ श्री सिद्धांतसागर सूरि १४ ( श्री जावसा )
- ३०। गर सूरि १५ श्री गुणनिधान सूरि १६ श्रीधर्ममूर्ति सूरय १७ स्तत्पद्मे संप्रति विराज-  
मानाः श्रीजट्टारकपुरंदराः स .....
- ३१। णय : श्रीयुगप्रधानाः । पूज्य जट्टारक श्री ५ श्रीकल्याणसागरसूरय १८ स्तेषामुप-  
देशेन श्रीश्रेयांसजिनबिंबादीनां ...
- ३२। कुंरपालसोनपालाज्यां प्रतिष्ठा कारापिता । पुनः श्लोकाः । श्री श्रेयांसजिनेशस्य  
बिंबं स्थापितमुत्तमं । प्रतिष्ठितं .... गुरु
- ३३। णामुपदेशतः । १८। चत्वारिंशत् मानानि सार्धान्युपरि तत् द्रष्टे । प्रतिष्ठितानि बिंबानि  
जिनानां सौख्यकारिणां । ३० । ....
- ३४। तु लेजाते प्राज्य पुण्यप्रजावतः देवगुर्वोः सदाजक्तौ । शश्वतौ नंदतां चिरं । ३१।  
अथ तयोः परिवारः संघराजो पु .....
- ३५। .... ३२ । सूनवः स्वर्णपाल .... श्रतुर्जुज ... पुत्री युगलमुत्तमं । ३३ । प्रेमनस्य त्रयः  
पु ( त्राः .... )
- ३६। वेतसी तथा । नेतसी विद्यमानस्तु सखीलेन सुदर्शन । ३४। धीमतः संघराजस्य ।  
तेजस्विनो यशस्विनः । चत्वारस्तनुजन्मानः ..... मताः । ३५ । कुंरपालस्य स ....
- ३७। आर्या .... पत्नीतु स ... पतिप्रिया । ३६ । तदंगजास्ति गंजीरा जादो नाम्नी स ....  
दानी महाप्राज्ञो ज्येष्ठमहो गुणाश्रयः । ३७ ।
- ३८। संघश्रीसुखश्रीर्वा दुर्गश्रीप्रमुखैर्निजैः । वधूजनैर्युतौ जातां । रेषश्री नंदनौ सदा  
। ३८ । नूमंडलं सचारंगमिच्छकयुक्त संव .....





( १०५ )

श्री श्रीमंदिर स्वामी जी का मंदिर-रोशन महद्वारा ।

पषाण की मूर्ति पर ।

[ 1457 ] \*

- ( १ ) ॥ सं० १६६० ज्यैष्ठ सुदि १५ गुरौ ॥ ओसवा
- ( २ ) ल झाति श्रृंगार । अरडक सोनी गोत्रे
- ( ३ ) सा० हीरानंद पुत्र सा निहालचंद
- ( ४ ) न श्री पार्श्वनाथ कारितः सर्परूपाकार
- ( ५ ) श्री खरतरगढे श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री
- ( ६ ) जिनचन्द्र सूरिणा । श्री आगरा नगरे

धातुकी मूर्तियों पर ।

[ 1458 ]

॥ सं० १५३४ वर्षे माघ सुदी ५ श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री जिनवरदेवाः तत्  
शिष्य मुनिरत्नकीर्त्ति उपदेशात् खल्लेखवालान्वये पहाड्या गोत्रे सा० तेजा चार्या रोहिणी  
पुत्रौ सा० पूना पाटहा नित्यं प्रणमन्ति ॥

[ 1459 ]

॥ सं० १६४१ श्री सुपार्श्वनाथ बि० का० प्र० श्री हीरविजय सूरिजिः ॥

[ 1460 ]

॥ संवत् १६७४ वर्षे माघ वदी १ दिने गुरुवारे पुष्यनक्षत्रे साह श्रीजहांगीर विजय-  
मानराज्ये ओसवालझातीय नाहर गोत्रे । सं० हीरा तत्पुत्र स० अमरसी जा० अन्तरङ्गदे  
तत्पुत्र सा० साझूला जा० सोजागदे युतेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं  
जहांगीर महातपाविरूद्धधारक जट्टारक श्री ५ श्री विजयदेवसूरिजिः ॥ शुभं भवतु ॥

\* यह केवल श्री पारश्वनाथ स्वामी की श्वेत पषाण की कायोत्सर्ग-मुद्रा की मनोह मूर्ति के चरणचौकी पर खुदा हुआ है ।



( १०६ )

पंचतीर्थियों पर

[ 1461 ]

॥ संवत् १५०० वर्षे वै० शु० ५ उपकेशज्ञातीय सा० नानिग जा० मट्टहाड सुत सा०  
लाखा जा० लाखणदे सुत सा० चाहडेन मातृ हासा सिधराज जा० चापलदेवी सुत वसुपा-  
लादिकुटुम्बयुतेन पितृ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रजबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागुहनाथक श्री श्री  
मुनिसुन्दर सूरिजिः ॥

[ 1462 ]

॥ संवत् १५३६ वर्षे आषाढ सुदी नवम्यां तिथौ उप० वीरोलिया गोत्रे सा० मूमा  
जा० केव्ही पु० दशरथ नाम सा० दशरथ जा० दत्तसिरी पु० जिणदत्त श्री संजवनाथ  
बिम्बं का० प्र० श्री पट्टीवालगच्छेश ज० श्री ऊजोअण सूरिजिः ॥

[ 1463 ]

संवत् १५५९ वर्षे महा सुदी १० श्रीमालवंशे वहकटा गोत्रे सा० तेजा पुत्र सा०  
मोगाकेन पुत्रादियुतेन आ० अमरसहितेन श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री खरतरगढे  
श्री जिनहंस सूरिजिः ॥ श्रेयसे ॥

[ 1464 ]

॥ संवत् १५७७ वर्षे ज्येष्ठ वदी० सोमे श्री अलवर वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय वृद्धशा-  
खायां आयत्रिण्यगोत्रे चोरवेडिया शाखायां सं० साहणपाल जा० सहलाखदे पु० सं०  
रत्नदास जा० सूरमदे श्रेयोऽर्थ श्री उकेशगढे कुकदाचार्यसन्ताने श्री सुमतिनाथ कारापितं  
बिम्बं प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

चौविशी पर ।

[ 1465 ]

॥ संवत् १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ प्रा० ज्ञातीय सं० पूजा जा० कर्मादे पुत्र स० नरजम जा०



नायकदे पुत्र स० खीमाकेन जा० हरषमदे पुत्र परवत गुणराज प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री  
आदिनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० लक्ष्मीसागर सूरिभिः सीरोही नगरे

धातु के यंत्र

[ 1466 ]

॥ सं० १६०४ वर्षे शाके १४७० प्रवर्त्तमाने आश्विनमासे वदिपक्षे १४ दिने रविवासरे  
दीपालिकादिने श्री श्रीमालगोत्रीय साह श्री जयपालसुत साह सोरंगकेन सुखशांति श्री  
हर्षरत्न सङ्गुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ यंत्रं कारापितं प्रतिष्ठितम् शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ ठ ॥

[ 1467 ]

॥ संवत् १७०५ वर्षे माघशुक्ल ५ गुरौ श्री गूर्जरदेशीय पाटण वास्तव्य श्री खरतरगढीय  
कावलीया गोत्रे सेठ वेलजी पुत्र सेठ हेमचन्द्रेण स्वात्मार्ये श्री सिद्धचक्र नवपदगुह्यकर्म  
हयार्थं कारापितं श्री आगरा नगरमध्ये श्रीतपागढीय पं० कुशलविजय गणि उपदेशात्  
॥ ह्रीं ॥

[ 1468 ]

॥ सं० १७०७ वर्षे आश्विन शुक्ल १० चौमे झुगरु गोत्रीय सा० कपूरचन्द्र पुत्र सिताव  
सिंह गृहे तरसन्नित(?) सुखदे नाम्नी स्वात्मार्ये श्री सिद्धचक्रयंत्रं कारितं  
जहारक श्री विजयदेव सूरेश्वरराज्ये पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् कृतम् ॥ श्रीः ॥

[ 1469 ]

सं० १७३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढ़ा गोत्रे प्रतापसिंहस्थ जार्या मूलो श्री नवपद  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री धरणेन्द्रविजय सूरिराज्ये तपा ।





( १०० )

श्री सूर्यप्रजस्वामी जी का मंदिर-मोती कटरा

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1470 ]

॥ संवत् १५३३ मार्ग सुदि ६ शुके ओसवाल झातीय बड़गोत्रे सा० जीमदे जा०  
रूढही पुत्र सा० जोजा जा० जेठी नाम्न्या पुत्र सा० महीपति मेघादि कुटुम्बयुतया  
स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीसूरिजिः ॥

[ 1471 ]

॥ संवत् १५४६ वर्षे पौष वदी ५ सोमे राजाधिराज श्री श्री श्री नाजिनरेश्वरराज्ञी श्री  
श्री श्री मरुदेवी तनया पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री आदिनाथदेवस्थ बिम्बं सुप्रतिष्ठितम् ॥

[ 1472 ]

॥ सं १५९७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्री मंरुपे श्रीमाल झातीय सं ऊदा जा० हर्ष  
सा० खीमा जा पूंजी पु० सा० जेगसी जा० माऊ पु० सा० गोढहा जा० सापा पु० मेघा  
पु० काणी लघुज्रातृ सं० राजा जार्या सागू पु० सं० जावडेन जा० धनाई जीवादे सुहागदे  
सत्तादे धनाई पुत्र सं० हीरा जा० रमाई सं० लालादिकुटुम्बयुतेन बिम्बं कारापितं निज  
श्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपागळे श्री सोमसुन्दर सूरिसन्ताने लक्ष्मी  
सागर सूरिपदे श्री सुमतिसाधु सूरिजिः ॥

चौवीसी पर ।

[ 1473 ]

॥ सं० १५१३ वर्षे वैशाखमासे ऊकेश झातीय से० पेथड जा० प्रथमसिरी पुत्र सं०  
हैमाकेन जार्या हीमादे द्वितीया लाठि पुत्र देढहा राणा पासादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोऽर्थ श्री-  
कुन्थुनाथादि चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री अञ्जलगणेश श्री जयकेशरी सूरिजिः प्रतिष्ठितः  
॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥



( १०९ )

श्री गोड़ीपार्श्वनाथजी का मंदिर — मोती कटरा ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1474 ]

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदी ११ सूरणा गोत्रे सा० धन्ना जा० धानी पुत्र सा० फलहूकेन  
आत्मपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गढे श्री पद्मशेखर सूरि पढे श्री  
पद्माणक सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1475 ]

॥ सं० १५२० वर्षे वैशाख शुदी १२ बुधे श्री श्रीमाली ज्ञातीय श्रे० हीरा जा० जीविणि  
सु० कान्हाकेन जा० पदमाई सु० रत्नायुतेन त्रातृ हांसा मना निमित्तं श्री अरनाथ बिम्बं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ अहमदाबाद वास्तव्य ॥

[ 1476 ]

॥ संवत् १५३६ वर्षे कार्तिक शु० १५ गूजर श्रीमाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे स० धन्ना जा०  
धारलदे यु० सा० माडा पुत्र देवाराजादि श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितम् ॥ प्रतिष्ठितम् ॥  
श्री सूरिजिः ॥

[ 1477 ]

॥ संवत् १५५४ वर्षे मा० व० २ सीहा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० अमा जार्या  
लखमादे पुत्र व्य० माढहण जा० माढहणदे सुत नरवद प्रमुखसमस्तकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयार्थं  
श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपापद्मे श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

[ 1478 ]

॥ उं ॥ सं० १९४० वर्षे वैशाखसुदी ५ श्रृगुवारे अर्गलपुरे ओसबाल वंशोज्ज्वे ज्ञातौ  
वैद मोता गोत्रे साह० हंसराज चन्द्रपालस्प कारितं नेमनाथस्प बिम्बं प्रतिष्ठितम् ॥ कमला  
गढे श्री सिद्ध सूरिजिः ॥ उपकेश गढे ॥ ॥ श्री ॥ श्रेयम् ॥



( ११० )

चौवीसी पर ।

[ 1479 ]

॥ संवत् १५०५ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री उपकेश झातीय आदित्यनाग गोत्रे सा० गङ्गा  
पु० सा० धणसीह जा० वणश्री पु० सा० साधू जा० मोहणश्री पु० श्रीवंत सोनपाल  
जिखू षटैः पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारागितः । श्री उपकेशगङ्गे श्री  
ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितः । जह्दारक श्री सिद्ध सूरिः तत्पद्माङ्ककारहार जह्दारक श्री कक्क  
सूरिजिः ॥ वः ॥

[ 1480 ]

॥ सं० १५११ वर्षे माघे शुदी ५ गुरु श्री श्रीमाल झातीय व्यवहृता सुत व्यव  
कर्मसीह जार्या कस्सीरदे सुत सायरकेन जार्या मेथूसहितेन पितृमातृव्यात्मश्रेयसे श्री कुंथु  
नाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री पूर्णिमापद्मे जह्दारक श्री राजतिलक सूरिणामुपदेशेन  
प्रतिष्ठितम् ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर — मोती कटरा ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[ 1481 ]

॥ संवत् १४९६ वर्षे वैशाख सु० १२ गुरु डाहखा गोत्रे सं० घेदहा पुत्र सं० दया  
डीडा पुत्र सं० जादा सादा जार्या रू० डोडानिमित्तं श्री सुविधिनाथ विम्बं कारितं  
प्रतिष्ठितम् तपागङ्गे जहा ( रक ) श्री पूर्णचंद सूरि पदे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

चौवीसी पर ।

[ 1482 ]

॥ उं ॥ सं० १५०१ वर्षे ... व० ६ बुधे लोढ़ा गोत्रे सा० हरिचन्दसन्ताने । सा० गोगा  
पु० सं० गोरा । पुत्र । सं० आसपाल तत्पुत्रेण सं० लाखाकेन । ज्ञातृ सं० वस्तुपाल तेजपाल



पूतपाल । पुत्र सोनपाल पासवार । सं । हंसवीर प्रातृ पुत्र । कुमरपाल पर्वतादियुनेन  
 नजमाता मूर्णी पुण्यार्थ श्री संजवनाथ त्रिम्बं चतुर्विंशत देवपदे । का० प्र० तपागळे  
 श्री पूर्णचन्द्र सूरि पदे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

धातु के यन्त्र पर

[ 1463 ]

॥ ॐ ॥ स्वस्ति संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदी ५ गुरुवासरे श्रीमत् योगिनीपुरे राज्य  
 श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे जट्टारक श्री श्री हेमकीर्त्तिदेवान्स्तत्पदे जट्टारक  
 श्री हेमकीर्त्तिदेवाँस्तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्रदेवान् श्री महेन्द्रकीर्त्तिदेवान् श्री जिनचन्द्र  
 देवान् जिनचन्द्र शिक्षिणी वार्ड सहजाई एतेन श्री कलिकुण्डयंत्रस्वकर्मक्षयार्थ कारापितं  
 ॥ शुभं चवतु ॥

श्री केशरिधानाथजी का मंदिर - मोतीकटरा ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[ 1484 ]

संवत् १५०१ वर्षे सुदी ६ शुके उकेशवंशे घांघ गोत्रे सा० बीतर जा० लखमई पुत्र सा०  
 सांगा आसा० सिया हीरा तन्मध्ये सांगाकेन जा० सिंगारदे पु० राजसी रामंसी युतेन श्री  
 शान्तिनाथ त्रिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गळे श्री गुणसागर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर  
 सूरिजिः ॥

श्री नेमनाथजी का मंदिर - हींगमंडो ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1485 ]

॥ संवत् १५१५ वर्षे मलारणावासी मुहरख गोत्रे श्रीमाल झातीय सा० धौधू जा०  
 देवू पु० मडमथेन जा० मादही प्रातृ हरिगण जा० पूरा पुत्र० सरजन प्रमुखकुटुम्बयुतेन  
 स्वधेयसे श्री सुमतिनाथ त्रिम्बं का० प्र० तपागळे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥



( ११२ )

[ 1486 ]

॥ संवत् १९११ शा० १९०६ प्र० माघ शु० ९ गुरुवारे अडचलगछे कच्छ देशे कोठारा  
वास्तव्य उसवाल शा० गांधी मोहता गोत्र श्री केशवजी नायकेन श्री सिद्धदेवे श्री  
नेमिनाथ जिन बिम्बं कारापितं प्र० ज० श्रीरत्नशेखर सूरिजिः ॥

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर - नमकमंडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1487 ]

॥ सं० १४०५ वर्षे फा० सु ए शुके श्री ज्ञानकीय गछे उसज गोत्रे उ० ज्ञातीय सा०  
शिवा ज्ञा० कांजं पुत्र केदहा ज्ञा० कीदहणदे सन्ततिवृद्ध्यर्थं पितृमातृनिमित्तं श्री कुंभनाथ  
बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री शान्ति सूरिजिः ॥ शुभं भवतु ॥

[ 1488 ]

॥ संवत् १४१५ माघ वदि ९ सोमे श्री संडेरगछे श्री उपकेशज्ञाति सा० महीपाल ज्ञा०  
मदहणदे पु० वैला ज्ञा० सहजादे पु० सरवणनैक (?) ज्ञातृ कसामलस्य श्रेयसे श्री आदि  
नाथ पञ्चतीर्थी कारिता । प्र० श्री ईश्वर सूरिजिः ॥

[ 1489 ]

॥ सं० १४५३ ... शु० ३ शनौ श्रीमाल माधलपुरा गोत्रे सा० केला पुत्रेण सा० तोलाकेन  
नरपाल श्री पाखेल्यादि पुत्रयुतेन श्री धर्मनाथ बिम्बं कारितं प्र० तपागछे श्री पूर्णचन्द्र  
सूरिपदे श्री हेमहंस सूरिजिः

[ 1490 ]

॥ सं० १४५९ वर्षे वै० शु० ३ शनौ उपकेश गछे धेधड ज्ञा० केली प्रा० चूपणा ज्ञा०  
खेमी पु० सीगकेन (?) पितृमातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बि० का० प्र० श्री श्रीमाले  
श्री रामदेव सूरिजिः ॥



( ११३ )

[ 1401 ]

॥ सं० १४०५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ असवाल खांटड गोत्रे सा० जाहजू जा० अहवदे पु०  
पूना पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ विम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गढे श्री मलयचन्द्र सूरि पदे  
श्री पद्मशेखर सूरिजिः ॥

[ 1402 ]

॥ सं० १५०३ मार्ग सुदि ५ उ० झा० उदितवाल गोत्र सा० मेघा पुत्र सा० खेताकेन  
जा० हर्षमदे सह पूर्वपुरषमेलानिमित्तं शान्तिनाथ विम्बं का० प्र० श्री धर्मघोषगढे श्री  
महोदितलक सूरिजिः ॥

[ 1403 ]

॥ सं० १५०९ वर्षे ज्येष्ठ वंशे सा० पेथड़ जा० बीथाही पु० खेसा सरवण सांजण कै  
श्री अंचलगहेश श्री जयकेशरी सूरि उपदेशेन श्री विमलनाथ विम्बं स्वश्रेयसे कारितं प्र० ॥

[ 1404 ]

॥ सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ उपकेश सुचिन्ति गोत्रे सा० नरपति पु० सा०  
सादहा पु० फमण जा० केदहाही पु० सुधारण जा० संसारदे युतेन पित्रोः श्रेयसे श्री आदि  
नाथ विम्बं कारापितं उपकेश० ककुदाचार्य प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[ 1405 ]

॥ सं० १५१४ वर्षे मागसिर वदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय महं केदहा जार्या कीदहण  
पुत्र मुरजणकेन जा० राणी सहितेन श्री कुन्धुनाथ विम्बं का० प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणीयगढे  
ज० श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1406 ]

॥ संवत् १५५४ वर्षे माह वदि ९ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय गृङ्गारसंघवी सिद्धराज सुभाव  
केन जार्या ठणकू पुत्र सा० कूपा जार्या रम्मदे मुख्यकुटुम्बसहितेन श्री सुपार्श्वनाथ विम्बं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥



( ११४ )

श्री दादावाडी - साहगंज ।

श्री महावीरस्वामी के वेदी पर ।

[ 1497 ]

संवत् १९७५ मिति वैशाख सुदि ३ सोमवारे डुलीचन्द के पुत्र प्यारेलाल चोरडिया  
की बहूने वेदी बनाई ॥

चरणों पर ।

[ 1498 ]

॥ सं० १९४४ मिति आषाढ़ सुदि १० श्री गोतमस्वामीजी प्रतिष्ठित । पंच संवेगी श्री  
रणधीर विजय कारापितं ।

[ 1499 ]

श्री अर्गलपुरे साहगंजे प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १७७९ मिति ज्येष्ठ सुदि १५ स्वरतरंग  
श्री १०० श्री जिनकुशल सूरिजी के पाडुके संवत् १९६४ मिति जेठ सुदी २ गुरुवार  
प्रतिष्ठा समय विद्यमान श्री तपागह उपाध्याय श्री वीरविजयजी ॥

[ 1500 ]

॥ सकल जहारक पुरन्दर जहारक श्री १०० श्री हीरविजय सूरिश्चरकस्य चरण  
प्रतिष्ठापितं तपागहे ।

[ 1501 ]

॥ संवत् १९६४ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ३ दिने गुरुवारे श्री आगरा नगरे सकलसंघेन श्री  
झोंकागहे श्रीमद् आचार्य खेमकरणस्य पाडुका श्री तपागह्वीय श्रीमद् वीरविजयेन  
प्रतिष्ठा कारिता ॥



## लखनउ ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर - बोहरन टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1502 ]

सं० १३०६ वर्षे वैशाख सु० १३ सा० करमण जा० ... छसिरि पु० गोसाकेन मातृपितृ  
श्रेयोर्थ श्री विं० का० प्र० च धर्मप्रज्ञ सूरि ... ।

[ 1503 ]

संवत् १४०२ वर्षे फा० सु० ३ उकेस वंशीय सा० जेसिंग सुत सामल जाया सह-  
जलदे सुत सा० जसा जा० जासलदे ब्रातृ देवर जाया आ० संगई स्वश्रेयोर्थ श्री अजित  
नाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गह्वे श्री जिनजड सूरिजिः ॥

[ 1504 ]

सं० १५१२ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके श्रीमाली ज्ञातीय मं० अर्जुन जा० स्वसु पु०  
टोइ आमाइ ... हदाकेन जा० लखी सहितेन निजश्रेयसे श्री अजितनाथ विं० का०  
उकेशगह्वे श्री सिद्धाचार्य संताने श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितमिति ।

[ 1505 ]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञाती श्रे० ठाकुरसी सुत श्रे०  
पंगाकेन जाया होमी सु० धना वना मिखा राजी युतेन श्री शीतलनाथादि पंचतीर्थी  
आगमगह्वे श्री हेमरत्न सूरिणामुपदेशात् कारिता प्रतिष्ठिता च माइलि वास्तव्य ।

[ 1506 ]

सं० १५२७ वर्षे माघ वदि ७ रवौ उप० ज्ञा० मं० कृपा जा० सोषल पुत्र रूपा जाया  
रत्न सुत जिंदा बुणा मिखा आत्मश्रेयसे श्री शान्तिनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री



( ११६ )

जिरायपल्लीय गळे जहारक श्री साखिजड सूरि पडे श्री ज० श्री उदयचंद्र सूरिनिः  
प्रतिष्ठितं श्री ॥ १४ ॥

[ 1507 ]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे सा० जचू नार्या सवीराई । पुत्र अका श्री  
विजयदान सूरिनिः प्रतिष्ठितं ।

[ 1508 ]

संवत् १६१६ वर्षे वैशाख शुदि १० रवौ श्रीमालो झातोय सा० सता श्रेयोर्थ श्री  
वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिनिः ।

[ 1509 ]

सं० १६१६ वर्षे वै० शु० १० रवौ श्रे० ककुश्रेयोर्थ श्री संजवनाथ बिंबं कारितं तपा  
गळे प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिनिः ।

[ 1510 ]

संवत् १६९८ व० फागुण सुदि ए ..... ।

मूर्तियों पर ।

[ 1511 ]

॥ सं १९९४ मा० शु० १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं कारितं च उस वंशे ठाजेड  
गोत्रे । लाला जीवनदास पुत्रेण दुर्गाप्रसादेन कारितं जहारक श्री शांतिसागर  
सूरिनिः प्रतिष्ठितं विजयगळे ।

[ 1512 ]

॥ सं० १७९४ मा० शु० १३ सुमतिजिन बिंबं का० उस वंशे वैद मुहता बालचंद  
तझार्या महतावो बीबी प्र । विजयगळे श्री शांतिसागर सूरिनिः श्रेयोर्थ ।



( ११७ )

[ 1513 ]

सं० १९१४ मा० शु० १३ गुरौ मुनिसुव्रत जिन विं० कारितं उस वंशे ठाजेड़ गोत्रे  
साखा हरप्रसाद तत् पुत्र जीवनदास चार्या नन्ही बीबी श्रेयोर्थं ज० श्री शांतिसागर  
सूरिजिः प्रतिष्ठितं विजय गछे ।

[ 1514 ]

सं० १९१४ मा० शु० १३ गुरौ सुमतिनाथ जिन विं० वैद मुद्गता गोत्रे साखा धर्मचंद्र  
पुत्र शिषरचंद्र तद् जा० सांवन बीबी श्रेयोर्थं । ज० श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिजिः  
प्रनि० विजय गछे

[ 1515 ]

॥ सं० १९१४ मा० शु० १३ महावीर जिन । वैद धर्मचंद्रजी विजय गछे ज० शांति-  
सागर सूरिजिः ।

[ 1516 ]

सं० १९१४ मा० शु० १३ श्री सुमति जिन विं० का० उस वंशे मालकस गोत्रीय धर्म  
चंद्र तत् पुत्री मंगल बीबी प्र० । विजयगछे ज० । श्री शांतिसागर सूरिजिः श्रेयोर्थे  
प्रतिष्ठितं हीरा बीबी ।

[ 1517 ]

सं० १९१४ मा० शु० १३ संजव जिन । मालकस गो० धर्मचंद्र तत् पुत्र हीरा बीबी  
। प्र० । शांतिसागर सूरिजिः विजयगछे ।

[ 1518 ]

सं० १९१४ मा० शु० १३ गुरौ श्री धर्मनाथ विं० का० उस वंशे सुचिति गोत्रे सा०  
नौवतराय पु० रेवा प्रसादेन कारितं प्र० विजयगछे शांतिसागर सूरिजिः ।



( ११८ )

[ 1519 ]

सं १७९३ माघ सुदि १० बुधवारे राजनगरे उंसवाल झाति वृद्ध शा० सा० वीरचंद  
रूपा श्रेयोर्थ शांतिनाथ बिंब जरावी प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं तपागढे ।

[ 1520 ]

शाहजहां विजय राज्ये । श्री विक्रमार्क समयातीत संवत् १६७१ वर्षे शाके १५३६  
प्रवर्तमाने आगरा वास्तव्य उंसवाल झातीय लोढा गोत्रे अग्रणी वंशे सं० शषजदास  
तत्पुत्र सं० श्री कुरपाल सोनपाल संघाधिराज्यां श्री अनंतनाथ बिंब प्रतिष्ठितं श्रीमदंचल  
गढे पूज्य श्री ५० श्री धर्ममूर्ति सूरि पदाम्बुज हंस श्री श्री कल्याणसागर सूरीणा  
मुदेशेन ।

श्याम पाषाणके मूर्तियों पर

[ 1521 ]

॥ सं० १७७९ फा० सु० ए शनौ उंस वंशे लोढा गोत्रे हरषचंद्रस्य ... श्री सुपार्श्व  
बिंब ... ।

[ 1522 ]

॥ सं० १७७९ फा० सु० ए शनौ उंस वंशे मयाचंदजी तत्पुत्र धनसुख ... ।

[ 1523 ]

सं० १७७९ फा० सु० ए शनौ श्रीमाल षाड़ड़ मन्नुलाल ... ।

[ 1524 ]

॥ सं १७७९ फा० सु० ए शनौ चोरडिया गोत्रे दयाचंद ..... ।

श्वेत पाषाणके चरणों पर ।

[ 1525 ]

सं १७६३ मि० माघ सु० ५ दिने श्री अतीत चौविंसी जगवान जी की उंसवाल वंशी



नाहटा गोत्रे राजा बलराज बाबू विशेश्वरदास बाबू जैरुनाथ बाबू वैजनाथ बाबू जगन्नाथ बाबू लठमणदास ने चरण जराया बृहत्खरतर गढे जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रेयोर्थ शासन देवी अस्य मंदिरस्य रक्षां कुर्वतु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री लखनउ नगरमध्ये नवाब साहब सहादतअलि विजय राज्ये ।

[ 1526 ]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने वर्तमान चौविशी २४ जगवान जी के उसवाल वंशे काकरिया गोत्रे खुंसासराय । बखतावरसिंह । गोकलचंद । माणकचंद । स्वरूपचंद । रतनचंद । ताराचंद । सपरिवारेण चरण वनवाया श्री बृहत्खरतर गढे जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

[ 1527 ]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने अनागतचौविशी उसवाल वंशे नाहटा गोत्रे राजा बलराज तत्पुत्र बाबू जगन्नाथस्य चार्या स्वरूपने इदं चरणं काराषितं श्रेयोर्थ श्री बृहत्खरतर गढे जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

[ 1528 ]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने २० विहरमान ४ शास्वतानि जगवानजी के उसवाल वंशे कांकरिया गोत्रे जेठमल गुजरमल बहादुरसिंह स्वरूपचंद सपरिवारेण चरण वनवाया श्री बृहत्खरतर गढे ज० श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

सहस्रकूट पर ।

[ 1529 ]

॥ सं० १९१० वर्षे शके १९७५ प्रवर्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूटेश्वरानि प्रनिष्ठितानि बृहत्खरतर जट्टारक गढे श्री जिनहर्ष सूरिणां पट्टप्रजाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्षणपुर वास्तव्य प्रवहावत गो० । श्री जेठमल तत्पुत्र कालकादास तत्पुत्र बलदेवदासेन श्रेयोर्थमानंदपुरे



( १२० )

[ 1530 ]

॥ १९१० वर्षे शाके १९९५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंशानि प्रतिष्ठितानि बृहत्स्वरतर जट्टारक गढे श्री जिनहर्ष सूरिणां षट्प्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्षणपुर वास्तव्य चो० । गो० । श्री हंसराज तन्नायर् सोना विधि तथा श्रेयोर्थमानंदपुरे ॥ पं० । प्र० । कनकविजय मुण्युपदेशात् ।

[ 1531 ]

॥ सं १९१० वर्षे शाके १९९५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंशानि प्रतिष्ठितानि बृहत्स्वरतर जट्टारक गढे श्री जिनहर्ष सूरिणां षट्प्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्षणपुर वास्तव्य ठा० । गो० । सा० जमेदचंद तत्पुत्र हरप्रसाद रामप्रसाद तत्पुत्र जीवनदास धनपतराय तत्पुत्र छूर्गाप्रसादेन सपरिकरैः श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

[ 1532 ]

॥ सं० १९१० शाके १९९५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंशानि प्रतिष्ठितानि बृहत्स्वरतर जट्टारक गढे श्री जिनहर्ष सूरिणां षट्प्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लखनउ समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

[ 1533 ]

संवत् १९१३ शाके १९९७ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां परमार्द्धत श्रीमत् शांति जिन मोक्ष कल्याणक पाडुका लक्षणपुर वास्तव्य समस्त श्री संघेन कारितं प्र० च बृहत्स्वरतर गच्छीय जं । यु । प्र । श्री जिनचंद्र सूरि पङ्कजभृन् श्री जिन जयशेखर सूरिजिः ।

श्वेतपाषाण के पंचमुष्ठिलोच के ज्ञाव पर ।

[ 1534 ]

संवत् १९१३ शाके १९९७ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां दीक्षा कल्याणक पाडुका उस वंशे महता गोत्रे ।



## श्री ऋषभदेवजी का मंदिर - बोहरनटोला ।

शिक्षालेख । ७

[ 1535 ]

॥ ६० ॥ ॐ नमः सिद्धं । संवत् १९१४ माघ शुक्ल १३ गुरौ ॥ श्लोकाः ॥ विजयगङ्गाधिपो  
 सूरि । विहरन् सन् महीतलं ॥ शान्तिं सूरिति नामेन । संप्राप्तो लक्ष्मणपुरे ॥ १ ॥ जगवान्  
 देशनारब्धः । जिनचक्तिप्रमुष्टिका ॥ कादंबनीव संजाता । जठरानां बोधहेतवे ॥ २ ॥  
 तथा तस्योपदेशेन । श्री संयो जक्तिवत्तु ॥ कारयतिस्म जिनं चैत्यं । ऋषभस्वामिमंदिरं  
 ॥ ३ ॥ सूरिस्तु विचरन् चूम्यां । स्वशिष्यं स्थापितं मुदा ॥ धर्मचंद्राजिधानं च । संस्थिति  
 धर्महेतवे ॥ ४ ॥ तत्रैव धर्मं दितैतिस्म । शिष्यान् पाठयति सदा ॥ स्वशिष्यं गुणचंद्राहं ।  
 गुरुजक्तिपरायणं ॥ ५ ॥ मंदिरोपरि चूम्यां च । विद्वारं जमरिकायुनं ॥ मंदिरं कारयेत्  
 संघः । जातः सधर्मवत्सलः ॥ ६ ॥ माघमासे शुक्लपक्षे । त्रयोदश्यां गुरौ दिने ॥ जटारक  
 शान्तिं सूरिः । प्रतिष्ठां चक्रिरे मुदा ॥ ७ ॥ तस्मिन् जिनमंदिरे । श्री चतुर्मुख विमानां  
 चतुर्णां मध्ये । श्रीआदिजिनस्य विंशं । उत्सवंशे वरुद्ध्या गोत्रे लाला बाटेलाल पुत्रेण स्वरूप-  
 चंद्रेण कारितं । तथा द्वितीयं श्री वसुज्ज्य जिनविंशं । फूमणा गोत्री लाला सीतागम  
 तद्वार्या जांडिया गोत्री तथा कारितं । तृतीयं श्री शान्तिनाथ जिनविंशं । श्री शान्तिसागर  
 सूरि शिष्येण । ऋषिणा धर्मचंद्रेण कारितं । चतुर्थं श्री महावीर स्वामि जिनविंशं ।  
 सुविंशं गोत्रे । लाला पेरानीमल्ल पुत्रेण गोविंदरायेण रूपचंद्र पुत्र सङ्गिनेन कारितं ।  
 श्री विजयगङ्गाधीश्वर सार्वभौम जंगमयुगप्रधान जटारक श्री जिनचंद्रसागर सूरि  
 पट्टप्रज्ञासंकार श्री पूज्य श्री शान्तिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । ऋषिणा चतुर्जनेनाथ ।  
 गोकुलचंद्रेण संयुता ॥ इयं कृति लिखिताज्यां । गुरुजक्तिपरायणौ ॥ १ ॥ श्रीरस्तुः ॥  
 श्रीः ॥ पञ्चावनी लब्धवर प्रसादात् । यो मेदपादाधिपतिं स्वरूपं । राणापदे संस्थितं शत्रु  
 सिंह रोगात् प्रमुच्येत स शान्ति सूरिः ॥ २ ॥

\* इस लेखके अन्तमें चार यंत्र हैं, दाहिने २० का और बाये १५ का है, उनके निचे दाहिने ६ खाने का और बाये ११ खाने का यंत्र है, इनके जोड़ मिलते नहीं हैं ।



( १२२ )

१०	२	८
४	७	६
६	११	३

७	२	१०
६	६	४
३	११	५

३१	३०	३५	२२	२१	२६	६७	६६	७१	६६	५३	४०	२७	१४	१	१२०	१०७	२४	८१	६०
३६	३२	२६	२७	२३	१६	७२	६६	६४	६७	६५	५२	३६	२६	१३	११	११६	१०६	६३	८०
२६	३४	३३	२०	२५	२४	६५	७०	६६	७६	७७	६४	५१	३८	२५	१२	१०	११८	१०५	६०
७६	८५	८०	४०	३६	४४	४३	३	८	१०३	६०	८८	७५	६२	४६	३६	२३	२१	८	११६
८२	७७	७३	४५	४१	३७	६	५	१	११५	१०२	८६	८७	७४	६१	४८	३५	३३	२०	७
७४	७६	७८	३८	४३	४२	२	७	६	६	११४	१०१	६६	८६	७३	६०	४७	३४	३२	१६
१३	१२	१७	५८	५७	६२	६६	४८	५२	१८	५	११३	१००	६८	८५	७२	५६	४६	४४	३१
१८	१४	१०	६३	५६	५५	५४	५०	४६	३०	१७	४	११२	११०	६७	८४	७१	५८	४५	४३
११	१६	१५	५६	६१	६०	४७	५२	५१	४२	२६	१६	३	१११	१०६	६६	८३	७०	५७	५५
									५४	४१	२८	१५	२	१२१	१०८	६५	८२	६६	५६

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1536 ]

सं० १५७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ साधु साखायां जेजड़िया बंशे सा० वत्सा पुत्र सा०  
सहमसी पुत्र सा० वर्धमान सा० रीडा श्री पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा कृता श्री साधु वचनात् ।

पंचतार्थियों पर ।

[ 1537 ]

सं० १५०५ वर्षे मार्गशिर वदि २ बुधे सामलिया गोत्रे सा० जोला पु० सा० काकज



( १२३ )

ब्राह्म उसीह ... जिः पितुः पु० श्री आदिनाथ विं० का० प्र० बृहन्ने श्री महेन्द्र सूरिजिः  
॥ श्री शुभं ॥

[ 1538 ]

सं० १५११ वर्षे माघ वदि ५ उंसवाल झाती जाइलवाल गोत्रे जोजा पुत्र धडिया  
पु० मोहण पुत्र षेताकेन स्वचार्या श्रेयोर्थ श्री शान्तिनाथ विं० श्री धर्मघोष गढे ज० श्री  
महीतिलक सूरिजिः ॥

चौबीशी पर ।

[ 1539 ]

सं० १५१० माघ शुदि ५ दिने पत्तन वासी श्रीमाली श्रे० ठाकरसी ज्ञा० धारी सुत  
श्रे० गोधा साका ज्ञाणा जगिन्या श्रे० नरसिंग ज्ञार्या वैरामति नाम्न्या श्री वासुपूज्य  
चतुर्विंशति पदः का० प्र० श्री सोमसुंदर सूरि पद्वे श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥ श्री श्री  
तपगढे ॥

[ 1540 ]

सं० १६१६ वर्षे शाके १४०९ प्रवर्तमाने वैशाख सुदि १० दिने रवौ अहमदाबाद  
वास्तव्य उकेस वंशीय सा० आंढा० ज्ञा० अनरा तत्पुत्र सा० राकर ज्ञा० संपू तत्पुत्र सा०  
मैलाख्येन ज्ञा० मेलादे पुत्र पुत्री परिवारयुतेन आत्मश्रेयोर्थ श्री अजितनाथ विं० कारितं  
तपगढे जद्वारक श्री आनंदविमल सूरि तत्पद्वे विजयदान सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

पाषाण के चरण पर ।

[ 1541 ]

सं० १६१४ । चूरा वंशे पहलावत गोत्रे लालु तत् पुत्र किसनचंद कारितं ।



( १२४ )

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - बोहरनटोला ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1542 ]

॥ सं० १ए ... श्री वर्द्धमान जिन विंभं उंसवंशे बहुरा गोत्रे लाला कीर्त्तिचंद तन्नाया  
धुलीया बिबि तयो पुत्र मोतीचंदेन कारितं बृहत् विजय गढे ज० श्री सार्वज्ञौम श्री  
पूज्य श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रनाकर जं । यु । प्र । शान्तिनागर सूरिजिः ।

मूर्त्ति पर ।

[ 1543 ]

सं० १ए ... श्री पार्श्वजिन विंभं उंसवंशे बड़ड़िया गोत्रे लाला दयाचंद तत्पुत्र ठोट  
मखेन तत्पुत्र सरूपचंदेन सहितैः कारितं प्र० विजय गढे ..... सूरिजिः ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1544 ]

सं० १५१० वर्षे माघ वदी ८ रवौ सं० फाला जा० लखी सा० हर्षा जा० बारा सा०  
राजा जा० माजी सं० वसा जा० बाली सं० जोगा श्री शान्तिनाथ विंभं तपा श्री हेमविमल  
सूरि । चंकिनी ग्रामे ।

श्री पद्मप्रज स्वामीजी का मंदिर - चूडिवाली गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1545 ]

सं० । १३९९ ज० श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ  
विंभं प्रतिष्ठितं कारितं च सा० केसव पुत्र रत्न सा० जेहडु सुआवकेन पुण्यार्थ ।



( ११५ )

[ 1546 ]

सं० १४९१ वर्षे माह शुदि ५ बुधदिने गादहिया गोत्रे सा० सितराज सुत सा० सहजाकेन माता पदमाहीनिमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेस गढे प्र० श्री सिद्ध सूरिजिः ।

[ 1547 ]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ ओसवाल ज्ञातीय अजमेरा गोत्रे सा० सुरजन जा० सहजलदे पु० सा० सहजाकेन आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिं० का० प्रतिष्ठितं श्री धर्म-  
धाव गढे ज० श्री विजयचंद्र सूरिजिः ।

[ 1548 ]

सं० १५०८ वर्षे वैशाख वदि ४ शनौ श्री संडेर गढे पद्मनेवी गोष्ठीगानान्वये सा० कुरपाल पु० धांधा जा० वारू पु० जुणाकेन जा० कोन्ना पुत्र स्वश्रेयसे श्री शिवलनाथ बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिजिः ।

[ 1549 ]

सं० १५१० वर्षे वै० व० ५ प्रा० सा० " जा० राजू पुत्र सा० सरमाकेन जा० चांपू पुत्रेन स्वश्रेयसे श्री सुविधि बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1550 ]

॥ सं० १५११ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ श्री उकेस वंशे दोसी गोत्रे मं० डूडा पु० सा० नरचंद्र जा० सीतू तत्पुत्रेण सा० धाराकेन जार्या मणकार्झ पुत्र उदयसिंहयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरिजिः

[ 1551 ]

सं० १५१६ वैशाख वदि ११ शुके श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ मांडण मातृपुक्तं श्रेयोर्थं सुत सांगाकेन श्री संजवनाथ बिंबं कारितं श्री ब्रह्माण गढे श्री मुनिचंद्र सूरि गढे प्रतिष्ठितं श्री वीर सूरिजिः गुंडलि वास्तव्यः ॥



( १२६ )

[ 1552 ]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री ज्ञानकीय गढे उप० किलासीया गोत्रे श्रे० रेलण  
जा० मादहणदे पुत्र कर्मा जा० कर्मादे पु० घडसीसहितेन कर्मा पद्मा छाज्यां आत्म-  
पुण्यार्थ श्री आदिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेन सूरि पढे श्री धनेश्वर  
सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1553 ]

॥ संवत् १६१७ वर्षे माघ वदि १ गुरौ मं० आना जार्या अवलादे पु० मं० नीवाकेत  
आतु मं० कान्हार्ई सा० वस्था आजीवा जार्या जइवंत तत् पुत्र मं० कर्मसी राजमी ने  
तया कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथ विंभं का० प्र० श्री तपामहे श्री दानविजय  
सूरिजिः श्री हीरविजय सूरि प्रमुखैः परिवारपरिवृतैः ॥

[ 1554 ]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ शुदि ३ शुके उत्सवाख झा० सा० लेषा जा० खपमादे पु० सा०  
राउलकेन जा० रत्नादे पु० सा० कोदहा जा० शादहणदे पु० सा० गांगा सकुटुंबयुतेन  
स्वपुण्य श्री कुंथुनाथ विंभं का० प्र० संडेरक गढे श्री शांति सूरिजिः ॥

[ 1555 ]

सं० १५३६ वर्षे वै० ए चंडे ... जाईलेवा गोत्रे सा० पानल जा० वाचा पु० वीजा जा०  
मदना नाथी पु० ठाजू स्वपितृ श्रे० श्री चंद्रप्रज विंभं कारितं प्र० श्री पत्नीवाख गढे श्री  
नन्न सूरि पढे ज० उद्योतन सूरिजिः ।

[ 1556 ]

संवत् १५६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ शुके काकरेचा गो० पूर्व सा० डोटा पु० चुंडा पु०  
षेता जा० जाउ तत्पुत्र कान्हा जा० कस्मीरदे सकुटुबेन श्रे० वि० श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ  
विंभं का० प्र० श्री यशोव्रज सूरि संताने श्री शांति सूरिजिः ॥ श्री ॥



( ११७ )

[ 1557 ]

सं० १७७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा तिथौ गुरुवारे मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जिन  
पंचतीर्थी जिनैः प्रतिष्ठितं श्री बृहत् परम जट्टारक श्री जिनसुख सूरि वराणां उपाध्याय  
श्री क्षेत्रराम गणिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥ कारितं चैतत् गणधर चौपड़ा गोत्रे शाह श्री लाख  
चंदजी पुत्ररत्न श्री कपूरचंदजीकेन स्वपुन्यविवृष्ट्यर्थं ॥ शुभं जवतु ॥ श्री आदि जिन  
विंबं ॥ श्री नेमिनाथ जिन विंबं ॥ श्री शांति जिन विंबं ॥ श्री महावीरस्वामी विंबं ॥

श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा पर

[ 1558 ]

संवत् १७७५ शके १५९१ वैशाख सुदि ५ आदित्यवारे .... ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर - चुडीवाली गली ।

मूर्ति पर ।

[ 1559 ]

सं० १९१४ माघ शुदी ३ चंद्रप्रज विंबं कारितं । माखकोस गो० परमसुख करमचंद  
प्रति० । विजय गहे ज० । श्री शांतिसागर सूरिजिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1560 ]

॥ सं० १५१४ वर्षे मार्ग सु० दसमी ऊकंस चउथ गोत्रे शा । बेडा जा० । देउ सुत  
म । बिमा । जा० धत्ती लाषाकेन जा० अमरी पुत्र नाथू प्रमुखकुटुंबयुतेन निजपितृव्य  
भेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं । प्र० । तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः श्रीरस्तुः ॥

[ 1561 ]

सं० १५७७ वर्षे माघ शु० ५ बुधे प्राम० । झा० । श्रे० कइषा जा० वानू सु० मूठा गला  
रागा खवरद जा० जीविणी विरु मानू सु० धावर तेजा सहिजादि कुटुंबयुतेन पितृमातृ



( १२० )

श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंब का० । प्र० । श्री पार्श्वचंद्र सूरिजिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर ।

[ 1562 ]

सं० १०६१ वर्षे आश्विन शु० १५ । गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाल पटणाय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला वखतावरसिंहजी श्रेयार्थं तगागह्वीय जं । यु । प्र । ज । श्री १०० श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरिजिः विजयराज्ये वाणारस्यां ।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - सुंधि टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1563 ]

सं० १४३९ वर्षे पोष वदि ए .... ।

[ 1564 ]

॥ सं० १४०२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रौ श्रीमाली ज्ञातीय फोफलिया नरसिंघ जा० नामलदे सुत बाछा पितामह पितृश्रेयसे माता वर्डजलदे युतेन सुतेन योगकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे नीमपल्ली श्री पासचंद्र सूरि पदे श्री जयचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[ 1565 ]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ए रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० सरवण जा० वारू पु० श्रे० गोवल जा० हूसी पु० सहस्राकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंब कारितं पूर्णिमापक्षे श्री गुणसमुद्र सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ ८ ॥ महिसाणा स्थाने ॥ श्री ॥



( १२९ )

[ 1566 ]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ श्री श्रीमाख सां० सामख जा० लाखणदे सुत देवा जा० मेघू नाम्ण्या देवडा कुटुंबसहितया अंचन्न गहे श्री जयकेशर सूरिणामुप-  
देशेन स्वश्रेयोर्थ श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंधेन ॥

[ 1567 ]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके श्री श्रीमाख ज्ञातीय सा० जांडा जा० जासू सुत सा० सामंत जार्या काईसु अदाकेन ज्ञातृ वहा पाशवीर प्रभृतिकुटुंबयुतेन मातृपितृ  
श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं पूर्णिमा । श्री पुण्यरत्न सूरिणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[ 1568 ]

सं० १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० जेसा जार्या पोईणी सुत राजाकेन जार्या राजलदे ज्ञातृ सौर्यद जा० मारू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्री श्री श्री  
सुमति बिंबं का० प्र० कनकरत्न सूरिजिः ।

[ 1569 ]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धन्ना जा० रांनू सुत सं० वेळा जा० जीविणी सुत सं० समधर संग्रामाज्यां स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं । तपागहे श्री लक्ष्मी-  
सागर सूरिजिः । जीर्णधारा वासिनः ॥ श्रीरस्तु ॥

[ 1570 ]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट व्य० देवसी जार्या देव्हणदे पुत्र विंजाकेन जा० वींजलदे पुत्र सांडादिकुटुंबयुतेन श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपाश्री  
रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । श्री जेवग्रामे ॥

[ 1571 ]

सं० १५२० वर्षे वैशाख वदि ६ सोमदिने । उपकेश ज्ञातौ बखही गोत्रे रांका सा० गोयंद पु० साक्षिग जा० बालहदे पु० दोढू नाम्ना जा० ललतादे पुत्रादियुतेन पित्रोः



( १३० )

पुण्यार्थ स्वश्रेयसे च श्री नमिनाथ बिंब का० प्र० उपकेश गङ्गीय श्री ककुदा० सं०  
श्री देवशुत सूरिजिः ।

[ 1572 ]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० नरसिंग जा० संजु सुत वभूया-  
केन जार्या रही प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं  
तपागङ्गनायक श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । मूंडहटा वास्तव्यः ॥

[ 1573 ]

सं० १५५४ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सं० मेहा जा० सरूपदे पु०  
सं० रिणमलेन जा० रत्नादे पु० लाया दासा जिणदास पंचायणकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे  
श्री सुमतिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचल गङ्ग श्री सिद्धांतसागर सूरिजिः ॥

[ 1574 ]

सं० १५७१ वर्षे फागुण शुदि ३ शुक्रे उत्सवाख ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे साह सहदे  
पुत्र साह नयणाकेन कलत्रपुत्रादिपरिवारगुणेन पुण्यार्थ श्री मुनिसुत्रन स्वामि बिंब  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गङ्गे ककुदाचार्य संताने जट्टारक श्री श्री सिंह सूरिजिः ॥  
अस्मावल्लपुरे ॥ श्रीरस्तु ॥

[ 1575 ]

सं० १७०१ वर्षे मार्ग शिर कृष्णैकादश्यां रूढा वाई नाम्ना कारितं श्री नमिनाथ बिंब  
प्रतिष्ठितं तपागङ्गे श्री विजयदेव सूरि पट्टे प्रजाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ।

[ 1576 ]

सं० ... ७१ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे उत्सवाख ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे सं० सोहिल तत्पुत्र  
संघवी सिंघराज तस्य पुण्यार्थ सं० सिद्धपालेन श्री शान्तिनाथ बिंब कारापितं श्री जगन्नाथ  
गङ्गे श्री सिद्ध सूरि प्रतिष्ठितं । पूजक श्रेयसे ॥ श्री ॥



संवत् १५७१ वर्षे चैत्र वदि ७ गुरो श्री वायड् ज्ञातीय सं० नरसिंघ जा० चमकू सुत  
समधर द्वितीया जा० हीरू नाम्न्या देकावडा वास्तव्यः सुत सं० धनराज नगराज संधादि  
स्वकुटुंबयुतया स्वश्रेयसे श्री अजिनंदन स्वाम्यादि चतुर्विंशति पट्ट श्री आगम गण्डे श्री  
अमररत्न सूरि तत्पट्टे सोमरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर - सुंधिदोला ।

मूलनायकजी के चरणचौकी पर ।

[ 1578 ] \*

- ( १ ) ॥ श्री विक्रम समयात् सं० १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ॥ श्रीमत्दीराब्धि  
लोलक—
- ( २ ) ह्योन्नडिंडीरपिंडप्रसरसरसशारदशशांककिरणसुयुक्तिमौक्तिकहारनिकरधवल्लय—
- ( ३ ) शोजिः पूरितदिङ्मंडलसकलधर्मकर्मनीतिप्रवृत्तिकरणप्राप्ताशेषशुवनप्र—
- ( ४ ) सिद्धिनानाशास्त्रोत्पन्नप्रवल्लुब्धिप्राग्जारजावितांतःकरणश्रवणतिगजपतिव्रतपति—
- ( ५ ) प्रणतपादारविंदद्वंद्वप्रथिततनुभ्रवज्जव्यञ्जुजादंडचंडप्रचंडकोदंडखंडितानेकका—
- ( ६ ) विन्यतमकुशितारिप्रकरतरवशीकृताखिलखंरूपालमौलिसंधृतनिर्देशाधिशेषधर्म—
- ( ७ ) शर्माधिकावाससत्कीर्त्तिनिःशेषसार्वभौमशाङ्खसमस्तमनुजाधिपत्यपववीपौ—

\* दिल्ली सम्राट जहांगीर के समय ये मूर्तियाँ की प्रतिष्ठा हुई थी, उस समय पातिसाह को कई लोगोंने कह दिया कि खेवड़ोनि ( जैनी लोगोंने ) मूर्तियाँ बनवाई हैं और हज़ूरके नामको अपने पुतोंके ( मूर्तियोंके ) पैरों के निचे लिख दिया है । फिर क्या था । पातिसाहके क्रोधका पार न रहा । श्री संघने पातिसाह का क्रोध शांति तथा राज्यके तर्फसे सर्व प्रकार अनिष्ट दूर करनेको ये मूर्तियों ( नं० १५७८ - १५८४ ) के मस्तक पर पातिसाह का नाम खुदवा दिया था ऐसा प्रवाद है ।



( १३१ )

- ( ८ ) लोमीपरिरंजमुनाशीरविजयराज्ये । उसवाल झातीय लोढा गोत्रे आंगाणी संघवी  
 ( ९ ) रेषा तद्धार्या आ० रेषश्री तत्पुत्र श्री कुरपालसोनपालाख्याः । तेषां प्रागुक्तमासीयुत  
 ( १० ) प्रतिष्ठाया ॥ स्तन्नाम्ना प्रतिमा ह्य प्रतिष्ठा गतः संघेशैः स्वपितृणाम् धर्मं चिंतामणि  
 ( ११ ) पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं । अंचलगहेश श्री धर्ममूर्ति सूरि पट्टालंकार पूज्य  
 ( १२ ) श्री ५ कट्याणसागर सूरिणामुपदेशेन ॥

( मस्तकपर ) पातिसाह सवाई श्री जहांगीर सुरत्राण

[ 1579 ]

- ( १ ) संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उसवाल झाती-  
 ( २ ) य लोढा गोत्रे आंगाणी सं० कृषजदास तद्धार्या आ०  
 ( ३ ) रेषश्री तत्पुत्रप्रवरैः श्री कुरपाल सोनपाल सं-  
 ( ४ ) घाघिपैः सुत सं० संघराज रूपचंद चतुर्जुज धन-  
 ( ५ ) पालादिगुतैः श्री अंचल गहेश पूज्य श्री ५ श्री धर्ममूर्ति  
 ( ६ ) सूरि पट्टे श्री कट्याणसागर सूरिणामुपदेशेन  
 ( ७ ) विद्यमान श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥  
 ( मस्तकपर ) पातिसाह श्री जहांगीर विजय राज्ये ।

[ 1580 ]

- ( १ ) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृपविक्रमादित्य संवत्सर समयातीत संवत् १६७१ वर्षे  
 ( २ ) शके १५३६ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीमदागरा दुर्ग वास्तव्योपदेश  
 ( ३ ) झातीय लोढा गोत्रे गावंशे साह जठमल तत्पुत्र सा० राजपाल तद्धार्या आ० रा  
 ( ४ ) जश्री तत्पुत्र श्री विमलाद्यादि संघकारक सं० कृषजदास तद्धार्योजयकुमा-  
 ( ५ ) रानंददायिनी रेषश्री तत्पुत्राच्यां श्री शत्रुंजय समेतगिरि संघ महन्महन्निर्वा-  
 ( ६ ) ह प्राप्तसत्कीर्त्तिच्यां श्री कुरपाल सोनपाल संघाधिपाच्यां ॥ सुत सं० संघराज  
 रूपचंद पौत्र



- ( ७ ) सं० जूधरदास सूरदास सिवदास पदमश्री । प्रपौत्र साधारणादि परिवारयु  
 ( ८ ) ताज्यां श्री अंचल गढे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि पट्टांजोज्ञास्वराणां पूज्य श्री ५  
 ( ९ ) श्री कल्याणसागर सूरिणामुपदेशेन श्री संजवनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं जयैः  
 पूज्यमानं चिरं नंद्यादिति श्रेयस्तु ॥  
 ( मस्तक पर ) पातिसाह श्री ५ श्री जहांगीर विजयराज्ये

[ 1531 ]

- ( १ ) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृप विक्रमादित्य समयात् संवत् १६७१ वर्षे शा-  
 ( २ ) के १५३६ प्रवर्त्तमाने श्री आगरादुर्ग वास्तव्य उपकेश झा-  
 ( ३ ) तीय छोढा गोत्रे सा० राजपाल तझार्या आ० राजश्री त-  
 ( ४ ) त्पुत्र संघपतिपदोपार्जनक्षम सं० ऋषजदास तझा-  
 ( ५ ) र्या आ० रेषश्री तत्पुत्राज्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिगज्यां श्री अंचल-  
 ( ६ ) गढे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि पट्टे श्री ५ कल्याणसागर सूरिणामुपदे-  
 ( ७ ) शेन श्री अजिनंदन स्वामि बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ पूज्यमानं चिरं नंद्यात्  
 ( मस्तकपर ) पातिसाह अकबर जलालुद्दीन सुरत्राणात्मज पातिसाह श्री जहांगीर  
 विजयराज्ये

[ 1532 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उसवाल झा-  
 ( २ ) तीय छोढा गोत्रे आंगाणी वंशे सं० ऋषजदास त-  
 ( ३ ) झार्या आ० रेषश्री तत्पुत्राज्यां सं० श्री कुंरपाल सं० सोन-  
 ( ४ ) पाल संघाधिपैः तत्पुत्र सं० संघराज सं० रूपचंद चतुरश्रुज  
 ( ५ ) धनपालादिसहितैः श्रीमदंचलगढे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि तत्प-  
 ( ६ ) ट्टे श्री कल्याणसागर सूरिरुपदेशेन विद्यमान श्री ऋषजानन जिन  
 ( ७ ) बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री रस्तु ॥  
 ( मस्तकपर ) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये



( १३४ )

[ 1583 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे श्री आ-  
( २ ) गरा वास्तव्योपकेश झातीय खोढा गोत्रे गावंशे सं० कृष्णदास  
( ३ ) जार्या रेषश्री तत्पुत्र संघाधिप सं० श्री कुंरपाल सं० श्री सोनपा-  
( ४ ) ल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद चतुरश्रुज धनपालादियुतैः  
( ५ ) श्रीमदंचल गह्वे पूज्य श्री ५ श्री धर्ममूर्ति सूरि तत्पट्टे पूज्य  
( ६ ) श्री ५ कट्याणसागर सूरिणामुपदेशेन विहरमान श्री ईश्वर  
( ७ ) जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं सं० श्रीकान्हू ... ।

( मस्तकपर ) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[ 1584 ]

- ( १ ) ॥ श्रीमत्संवत् १६७१ वैशाख शुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे आगरा वा-  
( २ ) स्तव्योसवाल झाती खोढा गोत्रे गावंशे सा० राजपाल जार्या राजश्री  
( ३ ) तत्पुत्र सं० कृष्णदास जा० रेषश्री तत्सुत संघाधिप सं० कुंरपाल सं०  
( ४ ) श्री सोनपाल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद सं० चतुर्श्रुज सं० धन-  
( ५ ) पाल पौत्र सुधरदास युतैः श्री अंचल गह्वे पूज्य श्री  
( ६ ) ५ श्री धर्म सूरि पट्टालंकार श्री कट्याणसागर सूरिणामुपदेशेन  
( ७ ) श्री पद्मानन जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री ॥

( मस्तकपर ) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[ 1585 ]

- ( १ ) ॥ ई० ॥ स्वस्ति श्री संवत् १६६० वर्षे ॥ ज्येष्ठ शुदि १५ तिथौ गुरुवासरे  
( २ ) अनुराधा नक्षत्रे उसवाल झातीय अगड़कठोली गोत्रे सा० कूना  
( ३ ) ॥ संताने सा० कान्हू । जा० जामनी ... पुत्र सा० पहीराज ...  
( ४ ) जा० इंद्राणी । जा० सोनो पुत्र सा० निहालचंद । तेन श्री चंद्रानन शास्त्रत जि  
( ५ ) न बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री खरतरगह्वे श्री जिनवर्द्धन सूरि संताने



( १३५ )

( ६ ) श्री जिनसिंह सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥ श्री आगरा नगरे ॥ शुभं जवतु ॥

[ 1586 ]

सं० १००० मा० शु० ५ श्री वर्द्धमान जिन बिंबं कारितं उसवंशे चोरडिया गोत्रे हरी-  
मल ज्ञार्थी ननी तथा । प्र । वृ । ज । खरतर ग । श्री जिनाक्षय सूरि पङ्कजप्रबोध स्वपितृ-  
सम श्री जिनचंद्र सूरिजिः कारितं पूजकयोः श्रेयोर्थ । लखनउ नगरे ।

पंचतीर्थियों पर

[ 1587 ]

सं० १५१५ वर्षे माह व० ६ बुधे श्री उपस वंशे सा० जिणदास जा० मूढही पु० सा०  
लाषा जा० लाषणदे पु० सा० काहा जा० लषमादे पुत्र सा० बाबा सुश्रावकेण पुहती पुत्र  
नरपाल पितृव्य सा० पूंजा सा० सामंत सा० नासण प्रमुख समस्तकुटुंबसहितेन श्री अंचल  
गह गुरु श्री जयकेशरी सूरिणां उपदेशेन मातुः श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं  
श्री संघेन ॥

[ 1588 ]

सं० १५१७ व० माघ शिति १ ओस बावली गोत्रे सा० ईसर जा० गोपालदे पु० धीरा  
जा० दमहलदे पु० जावड़ासा निज त्रातृ श्रेयोर्थे श्री नेमिनाथ बिंबं का० तपापक्षे श्री  
जयशेषर सूरि पढे प्र० कमलवज्र सूरिजिः ॥ शुभं ॥

[ 1589 ]

॥ सं० १५३५ वर्षे माघ व० ९ शनौ झा० व्य० समा जा० गुरा सुत धना जा० रूपाई  
नाम्ना पितृ व्य० जाणा त्रातृ धर्मा कर्मादि कुटुंबयुतया स्वश्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ बिंबं का०  
प्र० तपागच्छेश श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । कुतवपुर वास्तव्य ॥ श्रीः ॥

चौबीशी पर

[ 1590 ]

सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ रवौ आजुनि वास्तव्य श्री श्रीमाखी मं० सिंधा जार्थी



( १३६ )

वीरु सुत अर्जुन सहिदे वरदे पुत्री आजु नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री कृष्णनाथ चतुर्विंशति पदः  
कारितः प्रतिष्ठितो वृद्ध तपापदे जट्टा० श्री ज्ञानसागर सूरजिः ॥

[ 1591 ]

। संवत् १५५३ वर्षे फाद्युन शुदि तृतीया ३ तिथौ बुधे ॥ श्री पटोलिया गोत्रे । सा०  
पोल । तत्पुत्र पेता । तत्पुत्र रूवा । तत्पुत्र गर्इपास । तत्पुत्र मोहण । तत्पुत्र एडा पुत्रौ छौ ।  
चांपा पाहा । चांपा स्वनिजपुण्यार्थ । स्वयशसे च । श्री चतुर्विंशति पदं कारितवान्  
प्रतिष्ठितः श्री राजगह्वीय श्री पुण्यवर्द्धन सूरजिः ॥ श्रेयसे ॥

श्री संजवनाथजी कां मंदिर - फूलवाली गली ।

श्याम पाषाण के मूर्तियों पर ।

[ 1592 ]

सं० १७७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री गौड़ी पार्श्वनाथ विंबं का० । उस वंशे सखसेचा  
गोत्रे महताव .... ।

[ 1593 ]

सं० १७७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रानन शास्वतजिन विंबं कारितं उस वंशे  
कुचेरा गोत्रे वसंतलालस्य जार्या .... ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1594 ]

श्री मूलसंधे वधेरवालान्वये वांजा मेला प्रणमति ।

[ 1595 ]

सं १७७७ माघ सु० १३ बु । उ । वंशे डागा गोत्रे सेढमल तन्नार्या गिलहरी तान्या  
श्री पार्श्वनाथ जिन विंबं का० । वृ० ज । खर । ग । श्री जिनचंद्र सूरजिः ।



( १३७ )

[ 1596 ]

सं० १९९१ शाके १७७६ । मा । शु । पक्षे ६ । बुधे श्री महावीरजी जिन वि० प्र० श्री  
शांतिसागर सूरिजिः का० सुचिंती गोत्रे रूपचंद तत्पुत्र धर्मचंद्र श्रेयार्थ ।

[ 1597 ]

सं० १९९१ शाके १७७६ । मा । शु० ६ बुधे श्री महावीर जिन वि० प्र० श्री शांति-  
सागर सूरिजिः का० सुचिंती गोत्रे बाबू रूपचंद तद्भार्या मनि विवि श्रेयार्थ ।

[ 1598 ]

सं० १९९४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अजित जिन विं० उ० वंशे सुचिंती गोत्रे लाला  
रूपचंद पुत्र धर्मचंद तद्भार्या गुलाबों विवि श्रेयार्थ ज० श्रीशांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठित ॥

[ 1599 ]

सं० १९९४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री महावीर जिन विं० उ० वंशे सूरगणा गोत्रे लाला  
खैरातीमल पुत्र रूपचंद तद्भार्या ठोटीविवि का० प्र० श्रीशांतिसागर सूरिजिः विजयगढे ।

[ 1600 ]

सं० १९९४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन विं० उ० वंशे चोरडिया गोत्रे  
ला । रजूमल तत्पुत्र इंद्रचंद्रेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः विजय गढे ।

[ 1601 ]

सं० १९९४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन विं० उ० वंशे सुचिंती गोत्रे लाला  
रूपचंद पुत्र धर्मचंदेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः विजय गढे ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1602 ]

सं० १३१३ का० शु० ६ प्राग्वाट ज्ञानीय श्रे० बोचा चार्या सहज मचनथी (?) पूर्वज



( १३० )

श्रेयोर्थं सुत सांगणैः श्री शान्तिनाथ विंशं कारापितं ।

[ 1603 ]

॥ संवत् १५४४ वर्षे आषाढ़ वदि ७ गुरौ उपकेश झातौ हुंडोयूरा गोत्रे सं० गांगा पु० पदमसी पु० पासा जा० मोहणदेव्या पु० पाट्टा श्रीवंतसहितया स्वपुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंशं का० प्र० उपकेश गळे श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 1604 ]

संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ दिने ऊ० झा० बलदत्त ग्रामवासि व्य० वेल जा० सारू पु० व्य० येसाकेन जा० कीट्टु सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री शान्तिनाथ विंशं का० प्रतिष्ठितं तपागळे श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ श्रीरस्तु ।

[ 1605 ]

संवत् १५५७ वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ श्री श्रीमाल झा० श्रे० मोकल जा० वरजू पु० पांचा जा० जासू पु० बहासहितेन स्वपूर्वजश्रेयोर्थं शीतलनाथ विंशं का० नागेंद्र गळे जा० श्री कमलचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि प्रतिष्ठितः ॥

[ 1606 ]

... श्री नागपुरीय गळे श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टावतंसैः श्री हेमरत्न सूरिजिः ॥ शुभं ॥

साक्षा माणिकचंदजी और राय साहब का देरासर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1607 ]

सं० १५९० मि० फा० कृष्ण २ बुध सा । प्र । जा० महताब कुंवर श्री अधिष्ठायक जिन विंशं का० श्री अमृतचंद्र सूरिजिः ।

[ 1608 ]

सं० १५९४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री कृष्णदेव जिन विंशं कारितं ओस वंशे चोरडिया



( १३९ )

गोत्रे लाला प्रतापचंद्र तत्पुत्र शिखरचंद्रेण । प्रतिष्ठितं । ज० श्री शांतिसागर सूरिजिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1609 ]

सं० १५१७ आषाढ़ सुदि १० बुधे श्री वीर वंशे ॥ सं० पोपा जा० करण पुत्र सं० नरसिंघ सुश्रावकेण जा० लघु त्रातृ जयसिंघ राजा पुत्र सं० वरदे कान्हा पौत्र सं० पदमसी सहितेन निज श्रेयार्थ श्री अंचलगहेश श्री जयकेशर सूरिणां उपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्र० संघेन पत्तन नगरे ।

[ 1610 ]

॥ संवत् १५६३ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ गुरौ पत्तन वास्तव्य । मोढ झातीय श्रे० जीवा जा० होरू पुत्र श्रे० अमराकेन जा० पुद्गुति सुत हांसादिकुटुंबयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री तपागहनायक । श्री निगमार्विजाविका । परमगुरु । श्री श्री श्री इन्द्रनंदि सूरिजिः ॥

लाला खेमचंदजी का देरासर ।

[ 1611 ]

सं० १६०४ माघ शुक्ल ९ बुधे श्यो । वज्रजातीय गोत्रे लाला रोसनलाल तत्पुत्र सोत्राचंद्रेण जा० नति बिंब तथा श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पांचाल देशे कंषिपुर प्र० श्रीमद् जहारक ... सूरिजिः ।

लाला हीरालालजी चुन्निलालजी का देरासर ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1612 ]

संवत् १७१५ वर्षे चैत वदि १ सुत दलसुख जगमल । श्री कृष्णदेवजी ... ।



( १४० )

सूरि और पंचतीर्थियों पर ।

[ 1613 ]

सं० १७०५ व० वै० व० १ उवकेश झा० सा० कान्हूजी सुत वीरचंद नास्त्र श्री  
विमलनाथ कारि० प्रति० त० श्री विजयदेव सूरिनिः । जय ।

[ 1614 ]

सं० १७१० व० जै० सु० ६ मि० प्राग्वाट लघुशापायां श्री ठय० सं० मनजीकेन  
सुगार्थ बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं तपा विजयराज सूरिनिः ।

[ 1615 ]

सं० १७१४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री सुविधिनाथ जिन बिंबं श्रीमाल जांडिया कन्है-  
यालाव तझार्या फूनु श्रेयोर्थे ज० श्री शांतिसागर सूरिनिः प्रति० विजय गछे ।

[ 1616 ]

सं० १७१४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अनंतनाथ जिन बिंबं श्रीमाल टांक गोत्रे हुस-  
मतरायजी तत्पुत्र हजारीमखेन कारितं प्र० श्री विजय गछे ज० श्री शांतिसागर सूरिनिः ।

[ 1617 ]

सं० १७१४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री आदिनाथ बिंबं .... निहालचंदेण कारितं प्रतिष्ठितं  
विजय गछे श्री शांतिसागर सूरिनिः श्रेयोर्थे ।

[ 1618 ]

सं० १७१४ माघ शुदि १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्रीमाल पारड़ गोत्रे षड़चंद [?]   
तत्पुत्र श्री कपूरचंद्रेण कारितं । प्र० ज० श्री पूज्य शांतिसागर सूरिनिः । विजय गछे

[ 1619 ]

सं० १७१७ चैत्र व० १० गुरौ श्री ओएस व० मिठडीआ सो० जावड़ ज० जसमादे



( १४१ )

पुं० सो० गुणराज सुश्रावकेण जा० मेघार्ई पु० पूनां महिपाल त्रातृ हरषा श्री राजसिंह  
राज सोनपात्रसहितेन श्री अंचल गछे श्री जयकेशरि सूरि उ० पत्निपुण्यार्थ श्री कुंथु-  
नाथ बिंबं कारितं । प्र० श्रीसंघेन चिरं संदत्तु ।

[ 1620 ]

॥ उं सं० १५५० वर्षे आ० सुदि ५ बुधे सूरणा गोत्रे सं० शिवराज पु० सं० हेमराज  
चार्या हेमसिरि पुत्र संघवी नाट्टा जा० नारिगदे संघवी सिंहमल्ल आर्या संघवीणि चापश्री  
पुत्र पृथ्वीमल्ल प्रमुखपुत्रपौत्रसहितैः श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं । पितृमातृपुन्यार्थ ।  
आत्मश्रेयसे श्री धर्मघोष गछे श्री पद्मानंद सूरि पट्टे श्री नंदिवर्द्धन सूरि प्रतिष्ठितं ।

चौबीसी और पाषाण के चरणों पर ।

[ 1621 ]

॥ उं संवत् १५३० वर्षे जेठ सुदि १ मंगलवारे उपकेश ज्ञातीय सोनी गोत्री स०  
तिणाया पुत्र सा० संसारचंद्र पुण्यार्थ श्री चतुर्विंशति कारापितं । प्र । रुद्रपट्टीय गछे  
जहारक श्री जिनदत्त सूरि पट्टे ज० श्री देवसुंदर सूरिजिः ॥

[ 1622 ]

॥ सं० १९१४ व० ज्ये । द्वि । ति । चं । श्री जिनकुशल सूरि पादौ ज । श्री जिन-  
महेंद्र सूरिजिः का । श्री गो । कन्हैयालालेन मुद्रार्थ ।

[ 1623 ]

सं० १९१४ मा० शु० १३ गुरौ श्री गौनमस्वामी पाडुका कारिता ओ० वं० नाहर गोत्रे  
लाला चंगामल पुत्र जवाहिरलालेन प्रतिष्ठितं । श्री विजय गछे श्री जिनचंद्रसागर सूरि  
पट्टोदयाद्रिदिनमणि पूज्य श्री शान्तिसागर सूरिजिः ॥

श्रीमंदिर स्वामीजी का मंदिर - सहादतगंज ।

[ 1624 ]

॥ संवत् १५१० वर्षे माघ सूदि ७ शुके श्री मोढ झा० सं० गोरा जा० राज सुत जोषा  
३६



( १४२ )

महिराज .... त्रातृ नागानिमित्तं श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० श्री विद्याधर गढे ज० श्री हेमप्रज सूरिजिः ॥ मांडलि वास्तव्यः ॥ १ ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर - सहादतगंज ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1625 ]

सं० १५७६ वर्षे वैशा० सुदि ६ सोमे झूगड़ गोत्रे सा० बीढहा जा० पूना पु० ४ सा० मेहा जा० रेडाही सा० कामी जा० झूला सा० पूला जा० मूलाही सा० उदा० जा० पीमाही सा० सधारण श्री सुविधिनाथ विंबं कारितं रडुल गढे श्री सूरि प्रतिष्ठितं ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर - सहादतगंज ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1626 ]

॥ संवत् ११७७..... ।

पचतीर्थियों पर ।

[ 1627 ]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्री श्रीमालझातीय श्रेष्ठि राउल जार्या खाठी सुत जोगा जार्या रूपी जसमादे सुत करमण काढहा करमण जार्या रानादेसहितेन श्री शांतिनाथ विंबं कारापितं श्री .... गढे शांति सूरि पट्टेश सर्वदेव सूरिजिः । कंधरावी वास्तव्यः ॥

[ 1628 ]

संवत् १६७० वर्षे वैशाख शित पंचम्यां तिथौ सोमे मेड़तानगर वास्तव्य समदड़ीया गोत्रीय । उकेश झातीय वृद्धशाषीय सा० माना जा० मनरमदे सुत रामसिंह नाम्ना त्रातृ रामसिंह प्रमखकुंडवयुतेन श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्र० तथा गढे श्री अकबर मुराणा



( १४३ )

दत्तबहुमान ज० श्री हीरविजय सूरि पट्टाक्षंकार श्री अकबरठत्रते (?) परिषत्प्राप्तवाद-  
जयकार ज० श्री विजयसेन सूरिजिः ॥

श्री कृष्णदेवजी का मंदिर - सहादतगंज ।

मूर्तियों पर ।

[ 1629 ]

सं० १००० मा । सु । ५ । श्री आदि जिन विंभं कारितं उस वंशे, पहलावत गो ।  
सदानंद पुत्र गुलाबराय जार्या जूनाख्या का० प्र । वृ । ज । खरतर । ग । श्री जिनाक्षय  
सूरि तत् पंङ्कजभृंगैः श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[ 1630 ]

सं० १६१७ फागुण शीत २ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांप्पि-  
लपुर प्रतिष्ठितं । श्रीमद्भट्टाक बृहत् खरतर गह्वाधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित  
श्री जिनचंद्र सूरि पदकजलयलीन विनेय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिजिः उस वंशे पहलावत  
गोत्रे लालाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र लाला श्री सदानंदजी तत्पुत्र लाला गुलाबरायजी  
तत्तार्या जून्नु विवि तेन कारितं महता प्रमोदेन ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1631 ]

सं० १५१० वर्षे माघ वदि २ बुधे जदेजरा झा० सा० कमलसी जा० तेजू सुत सा०  
खेताकेन जा० वीरणिश्रेयोर्थ पुत्र गोविंदादियुनेन श्री संनवनाथ विंभं का० प्रतिष्ठितं  
श्री संडेर गह्वे श्री शांति सूरिजिः ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर - सहादतगंज ।

चौकी पर ।

[ 1632 ]

॥ संवत् १९२३ का मिति जेष्ठ सूदि १० म्यां श्रीमाल वंशे ठाटेसाजन फूसपाणां गोत्रे



( १४४ )

लाला विसनचंद जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवीप्रसाद तद् त्रातृवधुः ननकु ॥  
श्रेयार्थ ॥ १ ॥

पंचतीर्थियों पर

[ 1633 ]

संवत् १५३३ वर्षे माह सुदि ६ नासण्णली वासि मं० जलाकेन जार्या जावलदे सुत  
मांडण जा० जेअरि प्रमुखकुटुंबयुतेन त्रातृ बलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंव कारितं  
प्रतिष्ठितं तपागणेश श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरजिः ॥ श्रीः ॥

[ 1634 ]

सं० १५५० वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री उंसवाल झातौ कठउतिया गोत्रे । सं०  
पदमसी जा० पदमलदे पु० पासा जा० मोहणदे । पु० पाट्हा श्रीवंत तत्र सा० पाट्हाकेन  
खजार्या इंद्रादेपुण्यार्थ श्री श्रेयांस विंव कारितं । प्रतिष्ठितं । ककुदाचार्य संताने उपकेश  
गढे जट्टारक श्री देवगुप्त सूरजिः ॥

[ 1635 ]

सं० १६०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्री अहमदाबाद वास्तव्य उंसवाल झातीय वृद्ध-  
शाषायां श्री शांतिदास जा० वाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ विंव  
प्रतिष्ठितं श्री तपा गढे ज० श्री विजयदेव सूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री  
मुनिसागर गणजिः श्रेयोस्तु ॥

चौवासी पर ।

[ 1636 ]

सं० १६१९ वर्षे वैशाख वदि ५ शु० श्री मूलसंधे सरस्वती गढे वज्रात्कारगणे श्री  
कुंदकुंदाचार्यान्वये ज० श्री सकलकीर्ति देवास्त० ज० श्री जुवनकीर्ति देवास्त० ज० श्री  
ज्ञानभूषण देवास्त० ज० श्री विजयकीर्ति देवास्त० ज० श्री शुजचंद्र देवास्तस्पष्टे



चट्टारक श्री सुमतिकीर्ति गुरुपदेशात् हुंवड़ ज्ञातीय वजीयाणा गोत्रे सा० धारा जा० राणी  
सु० दादा जा० हरपमदे सुत० सा० जगा जा० जगमादे त्रा० जयवंत जा० जीवादे त्रा०  
जेसा जा० काऊआ सुत बचूआ युतैः श्री मुनिसुव्रत तीर्थकरदेव नित्यं प्रणमंति ॥

श्री दादाजी का मंदिर — जौहरीबाग ।

श्वेत पाषाण के चरणों पर ।

[ 1637 ]

संवत् १९१३ शालिवाहन शाके १९९० प्रवर्त्तमाने तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ॥ ५ ॥  
शुक्रवासरे जं । यु । प्र । चट्टारक श्री जिनकुशल सूरि पाडुकां लक्षणपुर वास्तव्य श्रीसंघेन  
कारितं बृहत् चट्टारक खरतर गङ्गीय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरि पट्टालंकृत श्री जिनजय-  
शेखर सूरिजिः॥ श्रेयोस्तु ॥ श्री ॥



## अयोध्या ।

यह बहुत प्राचीन नगरी है । प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी का च्यवन, जन्म,  
और दीक्षा ये तीन कट्याणक यहां हुए । दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथजी का च्यवन,  
जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कट्याणक और चतुर्थ तीर्थंकर श्री अजिनन्दनजी  
का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कट्याणक और पांचवें तीर्थंकर श्री सुमति-  
नाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कट्याणक तथा चौदहवें तीर्थंकर  
श्री अनन्तनाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कट्याणक इसी नगरी में  
हुए, श्री महावीर स्वामी के नवमें गणधर श्री अचलप्राता इसी अयोध्या के रहने वाले थे।  
रघुकुलतिलक श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी आदि जी इसी नगरी में पैदा हुए थे ।



( १४६ )

श्री अजितनाथजी का मंदिर — महल्ला कटड़ा ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1638 ]

मूलनायकजी ।

संवत् १७७१ माघ सुदि ३ वृहत् खरतर गच्छे श्री जिनल्लान्न सूरि शिष्य पाठक श्री हीरधर्मगण्युपदेशेन श्रीमाल टांक जांवतराय सुनन चुन्निलालेन सुत बहादुरसिंहयुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं । श्री बाराणस्यां प्रतिष्ठितं । श्री जिनहर्ष सूरिणा श्री खरतर गछे ।

[ 1639 ]

सं० १७७७ मि० फा० सु० ५ इदं श्री कृष्णदेवजी आदिनाथ बिंबं कारितं श्री उसवाल वंशज ताराचंद लखमीचंद प्रतिष्ठितं वृहद् जट्टारक श्री जिनचंद सूरिजिः ।

[ 1640 ]

सं० १७७७ मि० फा० सु० ५ इदं श्री महावीर बिंबं कारापितं सेठ सराचंद प्र० जट्टारक जिनचंद्र सूरिजिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1641 ]

सं० १४७७ वर्षे मार्ग० वदि ४ गुरौ उपकेश झातौ सुचिंती गोत्रे साह जिस्कु जार्या जय-तादे पु० सा० नान्हा जोजाकेन मातृपितृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं ज० श्री श्री श्री सर्व सूरिजिः ॥

[ 1642 ]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाख सुदि १० उ० सुचिंती गोत्रे सा० जेसा जार्या जस्मादे पु० मीडा जार्या हर्ष आत्मपुण्यार्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं । को० श्री नन्ह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥



( १४७ )

[ 1643 ]

सं० १५७५ वर्षे फा० व० ४ दिने प्रा० सा० आढ्या जार्या आढ्यादे पुत्र सा० विसा-  
केन जा० विढ्यादे पुत्रीपुत्र जयवंतप्रमुखयुतेन श्री संजवनाथ बिंब का० प्र० तपा गळे  
श्री जयकट्याण सूरिजिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1644 ]

सं० १७६६ फा० व० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेंद्र सूरिणा । फो०  
गो० सेवाराम ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1645 ]

श्री । संवत् १९०९ आ० सु० ३ श्री सिद्धचक्र यंत्र का० गांधी गुलावचंद्रस्य जार्या  
कली नाम्ना प्र० श्री जिनमहेंद्र सूरिणा श्री बृहत् खरतर गळे ।

[ 1646 ]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल द्वितीया तिथौ श्री सिद्धचक्र यंत्र  
प्र० ज० श्री महेंद्र सूरिजिः का० गो० नाहटा उसवाल लठमणदास तद् जार्या मुन्नि  
बिबि तत्पुत्र हजारीमल श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

पाषाण के चरण पर ।

[ 1647 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयपुर वास्तव्य ओसवाल सैठ  
हुकुमचंदजेन उदयचंदेन अयोध्यायां श्री मरुदेव १ विजया २ सिद्धार्था ४ सुमंगला ५  
सुयशा १४ गर्जरत्नानां परमेष्ठिनां चरणन्यासाः कारिताः प्र० श्री जिनहर्ष सूरिणा ।



( १४७ )

समवसरणजी के चरणों पर ।

[ 1648 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां बृहत् खरतर चट्टारक गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जय-  
नगर वासिना ओसवाल जातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन अयोध्यायां श्री  
अजित सर्वज्ञस्य पादन्यासः कारितः । प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा ॥

[ 1649 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां श्री जिनलाल सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन  
अयोध्यायां श्री वृषजनाथानां पादन्यासः कारितः ओसवाल । मिरगा जाति सामंतसिंहेन  
बड़ेर गोत्रीयेन बीकानेरस्थ पदार्थमद्वेन । प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1650 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन ओसवाल जातौ  
सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन जयनगरस्थेन । अवधौ सर्वज्ञाजिनंदन पादाः  
कारिताः । प्र । जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1651 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासिना  
ओसवाल जातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन । अयोध्यायां श्री सुमति सर्वज्ञ  
पादाः कारिताः प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1652 ]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां श्री बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्योपाध्याय  
श्री हीरधर्मोपदेशेन अवधौ सर्वज्ञानंत पादन्यासः कारितः सेठ उदयचंद प्र । श्री जिन-  
हर्ष सूरिणा ॥ १४ ॥



( १४ए. )

[ 1653 ]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री अजिताजिनंदन सुमत्यनंतनाथानां चरणन्यासः कारितः जयनगर वासिना । ओसवाल सेठ गोत्रीय हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन प्रतिष्ठितः खरतर जट्टारक गणेश श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1654 ]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतरगणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्य पाठक होरधर्मोपदेशेन । अयोध्यायां श्री नाजि १ जितशत्रु २ संवर ४ मेघ ५ सिंहसेन १४ जानामार्हतां क्रमन्यासः कारितः जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1655 ]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाल सूरि शिष्योपाध्याय हीरधर्मोपदेशेन जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन । अयोध्यायां १ । ४ । ५ । १४ । जिनादयो गणधराणां श्री सिंहसेन । वज्रनाज । चमरगणि । यशसां पादाः कारिताः । प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

दादाजी के चरण पर ।

[ 1656 ]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां पितामहानां श्री जिनकुशल सूरीणामयोध्यायां चरणन्यासः प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर जट्टारक श्री जिनलाल सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन कारिताः । जयनगर वासिना अधुना मिरजापुरस्थेन सेठ हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन श्रेयोर्ध ।

यक्ष और देवियों के पात्राण की मूर्तियों पर ।

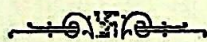
[ 1657 ]

॥ श्री गोमुख यक्ष मूर्तिः ॥ १ ॥ ॥ सं० १९३९ फादगुन कृष्ण ७ गुरौ प्रतिष्ठितं ।



जं । यु । प्र । वृहत्तरतर जटारकेंदु श्री जिनमुक्ति सूरि जिनामादेशात्मंडाचार्य श्री  
विवेककीर्ति गणिना कारितं । श्री संघस्य श्रेयोर्थमयोध्यायाम् ॥ शुभम् ॥ १ ॥

नोट- ऐसेही लेख और ( १ ) ॥ श्री महायक्षमूर्तिः ॥ १ ॥ ( १ ) ॥ श्री यक्षनायक  
मूर्तिः ॥ ४ ॥ ( ३ ) ॥ श्री तुंबुरुयक्षमूर्तिः ॥ ५ ॥ ( ४ ) ॥ श्री पातालयक्षमूर्तिः ॥ १४ ॥  
( ५ ) ॥ श्री अजितवला देवी ॥ २ ॥ ( ६ ) ॥ श्री कालिदेवीमूर्तिः ॥ ४ ॥ ( ७ ) ॥ श्री  
अंकुशदेवी मूर्तिः ॥ १४ ये सात मूर्तियों पर हैं ।



## नवराई ।

नवराई फैजाबाद से १० मैल और सोहावल स्टेशन से अंदाज ३ मैल पर एक ठोटा  
गांव है । यही प्राचीन तीर्थ 'रत्नपुरा' है । यहां १५ वें तीर्थकर श्री धर्मनाथस्वामी का  
व्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुवे हैं ।

पंचतीर्थियों पर

[ 1658 ]

संवत् १५१२ वर्षे माह शुदि ५ सोमे वाडिज वास्तव्य जावसार जयसिंह जा० फादी  
पु० पोचा जा० जासी पु० लीवा सरवण लाहू उमाबु पोचाकेन । श्री सुविधिनाथ त्रिवं  
कारापितं श्री त्रिवंदणीक गढे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिनिः ।

[ 1659 ]

सं० १५६७ वर्षे वैशाख सु० १० बु० श्री उपकेश झातौ सं० साहिल सु० सं० हासा  
जा० ठाजी नाम्ना स्वपुण्यार्थ श्री पार्श्वनाथ त्रिवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गढे  
ककुदाचार्य सं० जा० श्री सिद्ध सूरिनिः



( १५१ )

[ 1660 ]

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ सोमे श्री पत्तने उसवाल झातीय सा० अमरसी  
सुत आणंद । जा० वीरु सुत काहाना सारंगधर बिंबं श्री पद्मप्रजनाथ । प्रतिष्ठितं ।  
तथा गङ्गे श्री विजयदान सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1661 ]

॥ संवत् १६४४ वर्षे फागुण शुदि २ दिने उसवाल झातीय बंज गोत्रीय साह कटारू  
चार्या दुलादे सुत सा० तारू चार्या जीवादे सुत सा० टटना प्री (?) संघनाम चिंतामणि  
श्री श्रेयांसनाथ बिंबं तपागढाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

पाषाण के चरणों पर ।

[ 1662 ]

संवत् १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथानां पादाः कारिताः वरढीया  
ब्रूलचंदज वेणीप्रसाद प्र । बृहत् खरतरगणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्य पाठक हीर-  
धर्मोपदेशेन । ओसवालेन । काशीस्थेन प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[ 1663 ]

संवत् १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मार्हतापादाः कारिताः बृहत् खरतर  
गणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन वरढीया ब्रूलचंदज वेणीप्रसादेन  
ज । श्री जिनहर्ष सूरिणा बृहत् खरतरगणेशेन ।

[ 1664 ]

सं । १७७७ रा धराकायां बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्य पाठक हीर-  
धर्मोपदेशेन काशीस्थ वरढीया ब्रूलचंदज । वेणीप्रसादेन श्री धर्मपरमेष्ठिनां पादाः  
कारिताः श्री रत्नपुरे प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश ।

[ 1665 ]

सं । १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्म सर्वज्ञानां पादाः कारिताः ओसवंशे



( १५३ )

वरहीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन श्री काशीस्थेन बृहत् खरतर गणनाथ श्री जिनलाल  
सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश ।

[ 1666 ]\*

सं० १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथायः गणधर श्रीमद् अरिष्टारूपाणां  
पादाः कारिताः ओसवाल वंशे वरहीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन बृहत् खरतर गणेश श्री  
जिनलाल सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन । प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा । बृहत् खरतर  
गणेशेन ।

[ 1667 ]

सं० १७१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ । श्री गौतम स्वामी जी  
पादन्यासौ । प्र । ज । श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः । का । गा० श्री अग्रमल्ल पुत्र ठोटण-  
लालेन आणंदपुरे ॥ श्री ॥

[ 1668 ]

सं० १७१० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे श्री जिनकुशल  
सूरिणां पादन्यासौ प्रतिष्ठितः ज । श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः का । गां । श्री वेणीप्रसा-  
दांगज ठोटणलालेन आणन्दपुरे ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1669 ]

सं । १६६७ का .... अजिनंदन ... । जं । यु । प्र । जट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[ 1670 ]

सं । १६७५ वैशाख सुदि १३ शुके श्री बृहत् खरतर संघेन कारितं श्री अजितनाथ  
बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिजिः युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि शिष्यैः ।

\* किन्नर यक्ष और कंदर्पा देवी मूर्तियों पर भी ऐसे ही लेख हैं ।



( १५३ )

[ 1671 ]

॥ सं० १७९३ शाके १७५७ प्र० माघ सुदि १० बुध वासरे श्री पादलिप्त नयरे श्री अजिनंदन विंबं कारितं श्री वृहत् खरतर गढे ज० जं० यु० श्रीमहेंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1672 ]

सं० १७९३ माघ सुदि १० बुध वासरे श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं वृहत्खरतर गढे प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० ज० श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः ।

[ 1673 ]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ श्री पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठितं ज० श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः कारितं वमा (?) गोत्रीय श्री हुकुमचंद तत्पुत्र अजरमल्ल तज्जार्या बुध तथा श्रेयोर्थमाणंदपुरे ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[ 1674 ]

सं० १९२० मि० फा० कृष्ण २ बुधे झूगड़ प्रतापसिंह जार्या महताब कुंवर का० विहर-मान अजित जिन २० विंबं श्री अमृतचंद्र सूरि राज्ये वा० ज्ञानश्रेंद्र गणिना ।



## फैजाबाद ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर । महल्ला - पालखीखाना ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1675 ]

उं सं० १४६१ वर्षे जे३ सुदि १० शुके प्रा० श्रेष्ठि लाबा जा० देवल पु० जेसा ब्रातृव्य पीचनाज्यां स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रज विंबं का० प्रति० पिप्पल गढे श्री वीरप्रज सूरिजिः ॥



( १५४ )

[ 1676 ]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमाल झातीय श्री एलहर गोत्रे शा० दया-  
संताने सा० पूनात्मज म० मिच्चाकेन त्रातृ डोडाप्रभृतिपरिवारयुतेन श्री वासुपूज्य विंवं  
कारितं श्री बृहद् गढे श्री मुनीश्वर सूरि पढे प्र० रत्नप्रज्ञ सूरिनिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1677 ]

सं० १६६४ वर्षे राय पालक० मु० पा० प्र० तप ..... ।

पट्ट पर ।

[ 1678 ]

सं १६७२ चाद्र सुदि ११ श्री चंद्रप्रज्ञ जिन विंवं ॥ वीरदास प्रणमति । ठः ठः ॥

पाषाण के चरणों पर ।

[ 1679 ]

सं० १७७९ फागुण शुदि ४ वार शनि अयोध्या नगरे बंगलावसति वास्तव्य उस वंशे  
नखत गोत्रीय जोरामल तत्पुत्र बषतावरसिंघ तत्पुत्र कनईयालालादिसहितेन श्री जिन-  
कुशल सूरि पाडुका कारितं । प्रतिष्ठितं बृहत् जट्टारक खरतर गढीय श्री जिनचंद्र सूरिनिः  
कारक पूजकानां जूयसि वृद्धितरां जूयात् ॥

[ 1680 ]

सं० १७७९ मि । फा । सु० ४ श्री जिनकुशल पादौ । प्र । श्री जिनचंद्र सूरिनिः ।





( १५५ )

## चंद्रावती ।

यह तीर्थ बनारस से ७ कोस पर गंगा के किनारे अवस्थित है । आठवें तीर्थकर चंद्रप्रज्ञस्वामी का इसी चंद्रावती नगरी में च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुए हैं ।

पाषाण के चरण पर ।

[ 1681 ]

श्री वाराणसी नगरीस्थित समस्त श्री संघेन श्री चंद्रावत्यां नगर्यां श्री चंद्रप्रज्ञ सुनाम ८ म जगनाथानां चरण न्यासः समस्त सर्व सूरिभिः प्रतिष्ठितं । संवत् १८६० मिति आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे ११ वार शुक्रवार शुभं ।

पाषाण की यक्ष मूर्ति पर ।

[ 1682 ] \*

संवत् १९१३ फाट्गुण शुक्ल सप्तम्यां विजय यक्ष मूर्ति प्रतिष्ठितं । जटारक । युगप्रधान श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारिता च काशीस्थ श्री श्वेताम्बर श्री संघेन ।

[ 1683 ]

संवत् १८८८ माघ शुदि ५ सोमे श्री जिनकुशल सूरि चरण कमलं कारितं श्री-मालान्वये फोफलिया गोत्रीय वषटमह्य पुत्र दिलसुखरायेण प्र । वृ । ज । खरतर ग । श्रीजिन-चंद्र सूरिभिः श्री जिनाक्षय सूरि पदस्थैः ।

शिलालेख ।

[ 1684 ]

श्री दादाजी महाराज के मंदिरजी का जीरणउद्धार । लक्ष्मीचंद राखेचा की लड़की गेटी बिबि की तरफ से बनाया । जादो सुदि ४ शुक्रवार संवत् १९५१ ।

\* ज्वाला देवी की मूर्ति पर भी इसी प्रकार का लेख है ।



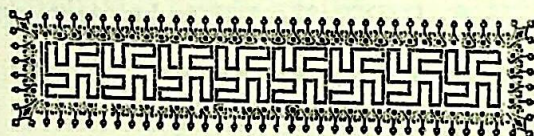
( १५६ )

[ 1685 ]

श्री संवत् १७९१ शाके १७५७ माघ शुक्ल १५ जौमवार पूज्यनक्षत्रे आयुष्यमाण योगे  
चोरडिया गोत्रोत्पन्न लाखा मन्नुलाखजी बुधसिंहेन निर्मिता विश्रामस्थान ।

[ 1686 ]

॥ सं। १७९४ वर्षे शा १७५९ माघ शुक्ला ४ चतुर्थ्या चंद्रवासरे श्रीमालान्वये फोफलिया  
गोत्रे सा । श्री पुसवषतरायजी तत्सुतौ दिक्षसुखराय .... चाजिधानौ श्री चंद्रप्रज  
कल्याणकन्यां चंद्रावती पूर्वा धर्मशाला कारापिता संघार्थ ।



## श्री सम्भेदशिखर तीर्थ ।

मधुवन - जैन श्वेताम्बर मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1687 ]

सं० १११० आषाढ़ सुदि ए सोमे श्री षंडेरक गढौ .... प्रतिमा कारिता वसु .... ।

[ 1688 ]

संवत् ११३५ वैशाख सुदि ३ बुधे तंगकीय सोहि सुन पोत आवकेण स्वश्रेयार्थ श्री  
पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता । .... श्री पूर्णचन्द्र सूरिणा ।

[ 1689 ]

संवत् ११४१ वैशाख सुदि ४ श्री वापदीय गढे श्री जीवदेव सूरि पितृश्रेयार्थ सूरि  
श्रेयार्थ श्री० टाणाकेन कारितं ।



( १५९ )

[ 1691 ]

संवत् १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० बुधे श्री श्रीमाल झातीय श्रेष्ठ कर्मसी चार्या मटकू सुत गुणीआकेन स्वकुलश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री बृहत्तपापदे श्री ज्ञानकलश सूरि पढे श्री विजय तिलक सूरिजिः ।

[ 1692 ]

सं० १५५३ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके उकेश वंशे सा० पनरबद चार्या मानू पुत्र साह वदा सुश्रावकेण चार्या धनाई पुत्र कुंरपाल सोनपाल प्रमुखसहितेन श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयार्थं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गहनायक श्री जिनसमुद्र सूरिजि ।

[ 1693 ]

संवत् १५९० वर्षे माह वदि १३ बुध दिने सुराणा गोत्रे । सं० केसव पुत्र सं० समरथ चार्या सं० सोमलदे पु० सं० पृथीमल्ल महाराज कर्मसी धर्मसी युनेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं मातृपितृपुण्यार्थं आत्मश्रेयसे प्रतिष्ठितम् । श्री धर्मघोष गहे जटारक श्री श्री नंदिवर्द्धन सूरिजिः ॥

चौबीसी पर ।

[ 1694 ]

सं० १५९९ वैशाख शु० ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीय पुत्र लूणदे श्रेयार्थं चतुर्विंशति पदः कारिताः । श्री मोढ गहे बप्पजट्टि संताने जिनजडाचार्यैः प्रतिष्ठितः ।

[ 1695 ]

सं० १५०९ प्रा० सा० पादहणसी जा० जोटू सुत सा० राजाकेन जा० मंदोअरि सुत सीहा करुआदिकुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ सपरिकर चतुर्विंशति पदः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजि ॥ ठ ॥ श्री ॥



( १५७ )

## जलमंदिर ।

पंचतीर्थ पर ।

[ 1696 ]

सं० १५११ पोष वदि ६ गु० मंत्रीअर गोत्रे श्री हुंबड़ झाति गारुडिया जा० पूजू सु०  
समेत जा० सहनल दे सु० समधर सोमा श्रेयोर्थ जा० पाढ्हण नाढ्हा एतैः श्री आदिनाथ  
बिंबं कारितं वृद्धतपा ज० श्री रत्नसिंह सूरिजिः प्रति० ॥



## श्री पावापुरी तीर्थ ।

मंदिर प्रशस्ति ।

शिलालेख ।

[ 1697 ]

- ( १ ) ॥ ए ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९७ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री  
साहिजांइ सकलनूर  
( २ ) मंरुलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितमजिनाधिराज श्री वीरवर्द्धमान  
स्वामी  
( ३ ) निर्वाण कल्याणिक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीरजिनचैत्यनिवेशः । श्री  
( ४ ) कृषन जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्ती श्री जरत महाराज सकलमंत्रिमंडलश्रेष्ठ  
मंत्रि श्रीदलसन्तानीय म-











- ( ५ ) हतिआण झातिशृङ्गार चौपड़ा गोत्रीय संधनायक संधवी तुलसीदास चार्या निहा-  
लो पुत्र सं० संग्राम ।
- ( ६ ) लघुत्रातु गोवर्द्धन तेजपाल चौजराज । रोहदीय गोत्रीय सं० परमाणंद सपरिवार  
महधा गोत्रीय विशेष धर्म ।
- ( ७ ) कम्मोद्यम विधायक ठ० डुलीचंद काझड़ा गोत्रीय सं० मदनस्वामीदास मनोहर  
कुशला सुंदरदास रोहदिया ।
- ( ८ ) मथुरादास नारायणदासः गिरिधर सन्तादास प्रसादी । वार्त्तिदिया गो० भूजरमल्ल  
बूदड़मल्ल मोहनदास ।
- ( ९ ) माणिकचन्द बूदमल्ल जेठमल्ल ठ० जगन नूरीचन्द । नान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल  
मलूकचन्द सजा-
- ( १० ) चन्द । संधेला गोत्रीय ठ० सिंचू कीर्त्तिपाल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंध ।  
काझड़ा गो० दयाल-
- ( ११ ) दास जोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किलू । काणा गोत्रीय ठ० राजपाल  
रामचन्द ॥
- ( १२ ) महधा गो० कीर्त्तिसिंध रो० ठबोचन्द । जाजीयाण गो० सं० नथमल्ल नंदलाल  
नान्हरा गोत्रीय ।
- ( १३ ) ठ० सुन्दरदास नागरमल्ल कमलदास ॥ रो० सुन्दर सूरति मूरति सबल कृती प्रताप  
पाहड़िया ।
- ( १४ ) गो० हेमराज चूपति । काणा गो० मोहन सुखमल्ल ठ० गढ़मल्ल जा० हरदास पुर-  
सोत्तम । मीणवा-
- ( १५ ) ए गो० बिहारीदास बिंडु । मह० मेदनी जगवान गरीबदास साहरेणपुरीय जीवण  
वजागरा गो० ।
- ( १६ ) मलूकचन्द जूज गो० सचल बन्दी संती । चो० गो० नरसिंह हीरा घरमू उत्तम  
वर्द्धमान प्रमुख श्री ।



- ( १७ ) बिहार वास्तव्य महतीयाण श्री संघेन कारितः तत् प्रतिष्ठा च श्री बृहत् खरतर गङ्गाधीश्वर युगप्रधान श्री ।
- ( १८ ) जिनसिंह सूरि पट्टप्रचाकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरि विजयमान गुरुराजानामा- देशेन कृत ।
- ( १९ ) पूर्वदेश विहारे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री समयराजोपाध्याय शिष्य वा० अजयसुन्दर ग-
- ( २० ) णि विनेय श्री कमललाजोपाध्यायैः शिष्य पं० लब्धकीर्त्ति गणि पं० राजहंस गणि देवविजय ग-
- ( २१ ) णि थिरकुमार चरणकुमार मेघकुमार जीवराज सांकर जसवन्त महाजलादि शिष्य सन्ततिः सपरिवार्यै । श्रीः ।



## क्षत्रियकुण्ड । \*

पंचतीर्थी पर ।

[ 1698 ]

संवत् १९५३ वर्षे माह सुदि ५ दिने । बारडेचा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा जा० हीरुप्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंभं कारितं प्र० श्री कोरंट गढे श्री नन्न सूरिजिः ॥



\* ' लछवाड़ ' ग्रामसे १ कोस दक्षिण में छोटे पहाड़ पर यह स्थान है । श्वेताम्बर सम्प्रदाय वाले २५ वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के च्यवन, जन्म और दीक्षा ये ३ कल्याणक इसी स्थान में मानते हैं । वहां के लोग इसको ' जलम थान ' कहकर पुकारते हैं । पहाड़ के तलहटी में २ छोटे मन्दिर हैं । उन में श्री वीर प्रभु की श्याम वर्ण के पाषाण की मूर्तियां हैं । पहाड़ पर मन्दिर में भी श्याम पाषाण की मूर्ति है और मन्दिर के पास ही एक प्राचीन कुण्ड का चिह्न वर्तमान है ।



( १६१ )

## लछवाड़ ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1699 ]

॥ सं० १९२० मि० फादगुन कृ० २ बुधे मारू गो० केसरीचंद जार्या किसन विवि  
वीर जिन विंभं का । जं । यु । ज । श्री जिनहंस सूरि राज्ये उ । सं । ग । च । प्रति० ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1700 ]

सं० १५१३ । वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंवाड़ ज्ञातीय फडो शिवराज सुन महीया श्रेयसे  
प्रातृ हीयकेन प्रातृज कुरुया युनेन श्री शांतिनाथ विंभं कारितं प्रति० बृहत्तपा पक्षे  
श्री श्री रत्नसिंह सूरिजिः ॥

[ 1701 ]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रतापसिंह झूगड़ गोत्रे जार्या महताव कुंवर श्री सुमति  
जिन पंचतीर्थी का० ज० । सद्गलान्न गणिनां श्री जिनहंस सूरि राज्ये ।

यंत्र पर ।

[ 1702 ]

सं० १९३३ ज्येष्ठ शुक्ल १२ शनिवासरे श्री नवपद यंत्र कारितं ओस वंशे झूगड़ गोत्रे  
श्री प्रतापसिंह तत्पुत्र रायबहादुर धनपत्सिंहेन कारितं प्रतिष्ठितं विजयगढे ज० श्री शांति-  
सागर सूरिजिः ।

[ 1703 ]

सं० १९३३ का ज्येष्ठ शुक्ल १२ द्वादश्यां शनिवासरे नवपद यंत्र.....का० मकसूदा-  
वाद वास्तव्य उस वंशे झूगड़ गोत्रे बाबू प्रताप सिंह तत्पुत्र राय बहादुर खड्गीपतसिंह  
रायबहादुर धनपतसिंह ने कारितं विजय गढे श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥



## चन्दनचौक ।

मन्दिर का शिला लेख ।

[ 1704 ]

- |                                       |  |
|---------------------------------------|--|
| १ । ॐ ॥ संवत् १३४४ वर्षे आ-           | २ । षाढ़ सुदि पूर्णिमायां देव श्री ने- |
| ३ । मिनाथ चैत्ये श्री कल्याण ....     | ४ । यस्य पूजार्थं श्रेष्ठ सिरधर । त-   |
| ५ । त्पुत्र श्रेष्ठ गांगदेवेन वीस.... | ६ । ल प्रीय उमाणं एश्वर्य श्री नेमि    |
| ७ । नाथ देवस्य चांडागारे निक्षि-      | ८ । सं वृद्ध फल जोगेन सम्प्रति द्र-    |
| ए । ....३३ प्रदत्तं पूजार्थं आचंद्र-  | १० । कालं यावत् शुभं जवतु श्री ॥       |

मूर्ति के चरण चौकी पर ।

[ 1705 ]

- १ । गुणदेव जार्याजस्तसिरि साब्दू-
- २ । पुत्र दशरा पूना लूणावी ... कम-
- ३ । रेवता हरपति कर्मद राणा क-
- ४ । र्मट पुत्र खीमसीह तथा धीर-
- ५ । देव सुत अरसीह तत्पुत्र वस्तु-
- ६ । पाल तेजःपाल प्रभृति सकल-
- ७ । कुटुंब सामस्त्येन श्रेष्ठ गांग-
- ८ । देवेन कारितानि ।





( १६३ )

## रत्नपुर - मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[ 1706 ]

- १ । सं० १३४३ वर्षे माह सुदि १० शनौ रत्नपु-
- २ । रे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री उसिवाल ज्ञातीय व्यवसी-
- ३ । ह गह सुतयासी पुत्राक्षि सरोराज हसिकया व्यव महि-
- ४ । लण चार्यया महणदेव्या स्वात्म श्रेयसे कारितं श्री आ-
- ५ । दिनाथ बिंबस्य नेत्रक निमित्तं श्री पार्श्वनाथ देव जांडा-
- ६ । गारे क्षिप्त वीसल प्रिय डम्म २० तथा सं० १३४६ माह सुदि
- ७ । १५ पूर्णिमायां कल्याणिक पंचकनिमित्तं क्षिप्तं ड १० उ
- ८ । जयं ड ३० अमीषां डम्माणां व्याजे शतं मासं प्रति ड २०
- ९ । विंशति डम्मा पूम्बाणां व्याजेन नवकं करणीयं दश डम्मा-
- १० । णां व्याजेन कल्याणिकानि करणीयानि शुचं जवतु ।

मूर्तियों पर ।

[ 1707 ]

- |                                  |                           |
|----------------------------------|---------------------------|
| १ । देव श्री शान्तिनाथ           | २ । दीसावाल न्याती सुरमा- |
| ३ । णपुर वास्त ( व्य ) साधु रत्न | ४ । सुत सा० हापु ऊलगे     |

[ 1708 ]

- १ । उं ॥ सं० ॥ १३३० फागुण सुदि १० गुरौ । अद्येह रत्नपुर श्री बंडेर गह्वे श्री
- २ । ....महं मदन पुत्रमहं डूंगरसीहेन
- ३ । .....श्रे



४। योर्थ श्री जिनैन्द्रस्य विंबं--कारितं ॥ प्र०

५। श्री यशोजज्ञ सूरि संताने श्री सुमति सूरिभिः ॥ शुभं चवतु ॥

## गांधाणी ( मारवाड़ ) ।

प्राचीन जैन मंदिर ।

धातु की मूर्ति पर

[ 1709 ] \*

- ( १ ) ॐ ॥ नवसु शतेश्वदानां । सप्ततं ( त्रिं ) शतधिकेश्वतीतेषु । श्रीवृद्धांगजीभ्यां ।  
ज्येष्ठार्याभ्यां
- ( २ ) परमजत्तया ॥ नाजेय जिनस्यैषा ॥ प्रतिमा ष्वाढार्द्धमास निष्यन्ता श्रीम-
- ( ३ ) तोरण कलिता । मोक्षार्थ कारिता ताभ्यां ॥ ज्येष्ठार्यपदं प्राप्तौ । द्वावपि
- ( ४ ) जिनधर्मवृद्धौ ख्यातौ । उद्योतन सूरस्तौ । शिष्यौ श्रीवृद्धवृक्षदेवौ ॥
- ( ५ ) सं० ए३७ अषाढार्द्धं ॥

\* गांव 'गांधाणी' जोधपुर से उत्तर दिशा में ६ कोस पर है । वहां तालाब पर एक प्राचीन जैन मंदिर में यह सर्वधातु की श्री आदिनाथजी की मूर्ति है और उसके पृष्ठ पर यह लेख खुदा हुआ है । जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी की कृपा से मुझे यह लेख का छापा और अक्षरान्तर प्राप्त हुआ है । उन्होंने इस लेख पर निम्न लिखित नोट्स लिखे हैं ।

पंक्ति— १। “ज्येष्ठार्य” यह पदवी वाचक शब्द ज्ञात होता है; जो पंक्ति ३ में के “ज्येष्ठार्य पदं प्राप्तौ” इस वाक्य से स्पष्ट है ।

” — २। “अषाढार्द्ध” पद से अषाढ सुदि १ और यदि १५ का भी ज्ञान हो सकता है; परन्तु यहां प्रतिपदा का सम्भव अधिक है, क्योंकि शुभ कार्य में अमावस्या वर्जित है ।

” — ४। “उद्योतन सूरः” — पट्टावली में इनके स्वर्णवास का संवत् ११४ मिलता है परन्तु उन के पट्टाधिकारी होनेका संवत् देखने में नहीं आया । लेख से जाना जाता है कि उद्योतन सूरि संवत् १३७ में आचार्य पद पा चुके थे । इनके समय पर्यंत गच्छ सेव नहीं था इसी लिये लेखमें गच्छ का उल्लेख नहीं है । ऐतिहासिक दृष्टिसे यह लेख बड़े महत्त्व का है ।



( १६५ )

## सूरपुरा - नागौर ।

माताजी के मंदिर के स्तम्भ पर ।

शिला लेख ।

[ 1710 ]

- ( १ ) संवत् १११५ पोस व-
- ( ३ ) ..... पुत्र्या धाहुरु जा-
- ( ५ ) हडाजिधानया आत्म श्रे-

- ( १ ) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
- ( ४ ) रिया देवधरमात्रा सू
- ( ६ ) योर्थ स्तंजद्वयं दत्तं ॥

[ 1711 ]

- ( १ ) संवत् ११३६ पोस व-
- ( ३ ) ..... पुत्र्या धाहुरु जा-
- ( ५ ) हडाजिधानया आत्म श्रे-
- ( ७ ) मूदये ऊ १० ॥ सर्व शु-

- ( १ ) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
- ( ४ ) रिया देवधरमात्रा सू-
- ( ६ ) योर्थ स्तंजद्वयं दत्तं ॥
- ( ७ ) ऊं ॥



## उसतरां - नागौर ।

शिला लेख ।

[ 1712 ]

- ( १ ) संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय बाहणा गोत्रे ।
- ( २ ) .....
- ( ३ ) संजवनाथ ..... तपागढ श्री श्री हीरविजय सूरि ।



( १६६ )

## नगर - मारवाड ।

मूर्तियों के चरणचाकी पर ।

दाहिने तर्फ ।

[ 1713 ] \*

- १ । ॥ जें ॥ संवत् ११९१ वर्षे आषाढ सुदि ७ रवौ श्री नारदमुनि विनिवेशोते श्री नगर-  
वरमहास्थाने सं० ए०
- २ । ७२ वर्षे अतिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय  
महाप्रसाद विनष्टायां ।
- ३ । श्रीराजुलदेवी मूर्त्ते पश्चात् श्रीमत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट उ० चंडपात्मज उ० श्रीचंड-  
प्रसादांगज उ० श्री सो ।
- ४ । सतनुज उ० श्री आसाराजनन्दनेन उ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसंभूतेन महामात्य श्री  
वस्तुपालेन स्वचार्या म-
- ५ । हं श्री स ..... पुण्यार्थमिहैव श्री जयानित्य देवपत्न्या श्री राजलदेव्या मूर्त्तिरियं कारिता  
॥ शुभमस्तु ॥

बायें तर्फ ।

[ 1714 ]

- १ । ॥ जें ॥ संवत् ११९१ वर्षे आषाढ सुदि ७ रवौ श्री नारद मुनि विनिवेशीते श्री नगर  
वर महास्थाने सं० ए० ७२ वर्षे अ-
- २ । ति वर्षाकालवशादतिपुराणं तथा च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद  
पतन विनष्टायां श्री रत्नादेवी मूर्त्ते
- ३ । पश्चात् श्री मत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट उ० श्री चण्डपात्मज उ० श्री चण्डप्रसादाङ्गज  
उ० श्री सोमतनुज उ० श्री आसाराजनन्द-

\* श्री भीड़मंजन महादेव के मंदिर में सूर्य के मूर्ति के दोनों तर्फ स्त्री मूर्तियों के चरणचाकी पर यह लेख है ।



- ४। नेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसम्भूतेन महामात्य श्री वस्तुपात्रेन स्वचार्या मय्याः ठ०  
कन्हड पुण्याः ठ० संपू कुक्षिजवा  
५। याः महं श्री ललिता देव्या पुण्यार्थमिहैव श्री जयादित्य देवपत्न्या श्री रत्ना देवी  
मूर्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ ठ ॥

## नगर - खेडगढ़ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर । \*

[ 1715 ]

- १। उं सं० १६६६ वर्षे । जाडपदे शुक्रवारे । श्री द्वितीया दिने । शुक्रवारे । वीरमपुर वरे  
। श्री शान्तिनाथ प्रासाद  
२। चूमि यह । श्री खरतर गढे । युगप्रधान श्री जिनवन्द्य सूरि । विजयराज्ये । आचार्य  
श्री जिनसिंह सूरि यौवराज्ये । श्री  
३। राजल श्री तेजसिजी विजयराज्ये । कारितं श्री संघेन ॥ लिखितं वा० श्री गुणरत्न  
गणिना विनेयेन रत्नविशालगणिना  
४। सूत्रधार । चांपा पुत्र । रत्ना । पुत्र । जोधा दामा । पुत्र मन्ना । घन्ना । वर योगेन  
कृतं । चार्या सोमा किल पाणा । वल्ली । मेघ । श्री रस्तु ।

## घाणेराम मारवाड़ ।

महावीर स्वामीका मन्दिर । †

[ 1716 ]

सं० १२१३ जाडपद सुदि ४ मङ्गल दिने श्री दण्डनायक तैजल देव राज्ये श्रीवंश

\* यह लेख मन्दिर के भूमिग्रह का है ।

† यह मन्दिर "घाणेराम" से १॥ कोस पहाड़ पर है ।



ज्ञातीय राउत महणसिंह जक्तिवसहुज वादमध्यात् । श्री महावीर देव विंबं प्रति डाम ४  
 पालसुणे दत्ताः यस्य जूमि तदा फलं ॥ सेण रायपाल सुत रावजिकु महाजन कुरुपाल  
 विना पिय सारिवहिं ॥

—३३(५)३३—

## अभार ।

श्री पार्श्वनाथजी का सन्दिह ।

प्रशस्ति ।

[ 1717 ]

- १ । ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय । ५ श्री ह .... र्वे गणेशाय ....
- २ । श्री मेह मुनीन्द्र गुरुज्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री पार्श्वनाथांघ्रिं तुष्टि
- ३ । हेतु स्मृतौ सतां । यौ विश्वत्रय विख्यातौ तावजिष्टप्रदौ मम ॥ १ ॥
- ४ । श्री मद्रिकमतः संवत् । मुनिवाजीरसेन्दुके । १६७७ । वर्षे वैशाख मा
- ५ । सेंडुवृद्धिपक्षेऽर्कचूदिने ॥ २ ॥ अक्षयायां तृतीयायां रोहिणीस्थे .... वां
- ६ । जवे एवं सर्व शुभेयस्ते । जीर्णः प्रसाद उद्धृतः ॥ ३ ॥ श्री मत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य कल्या
- ७ । ए फलहेतवे । श्रीमत्यात्मज पुर्या च धुर्यायां तीर्थ संसदि ॥ ४ ॥ श्री श्री-
- ८ । मालीकुम्भोद्भेदि । चान्द्रेण सितकीर्तिना । दोसी श्री श्री जीवराजः सुते-
- ९ । न गुणशालिना ॥ ५ ॥ सद्धर्मचारिणा हर्षाद्युन्नतपुरवासिना । श्रीम-
- १० । कुंभरजी नाम्ना सद्भव्यस्य व्ययेन च ॥ ६ ॥ साहारमन्त्रीसंघस्य
- ११ । गुरुदेव प्रसादतः । जाता कार्यस्य संसिद्धिः । पुण्येः किं किं न सि-
- १२ । ऋति ॥ ७ ॥ श्रीमत्तपागणाधीश श्री हीरविजय प्रजोः । पट्टे श्री विजय
- १३ । : सेन । सूरि परमजाग्यवान् ॥ ८ ॥ तत्पट्टेऽनविराजति । सुगुणै श्री
- १४ । विजयदेव सूरिन्द्रे । निष्कलोयं पुण्यः । आसादवरश्चरंजीयात् ॥ ९ ॥ तस्य द



( १६९ )

१५ । द्विष्ट दिग्जागे । सङ्गरचनान्विते । स्तूये श्री कृपजस्वामी पाडुकेऽत्र महाद्भू-  
 १६ । ते ॥ १० ॥ पूजनीयाः शुजाः ग्लान्याः । गुरुणां तत्र पाडुकाः कारिता मदनाख्येन । दो-  
 १७ । सीना चालयान्विता ॥ ११ ॥ धर्मशास्त्रा विशाला च शास्त्रारकेन निर्मिता । साहाय्या-  
 १८ । द्धरसंघस्य दोसीसंज्ञस्य तुष्टये ॥ १२ ॥ पण्डितगणमौखीमणेः । तार्किकसिद्धान्त-  
 १९ । शब्दशास्त्रार्थः । श्रीमत्कल्याणकुशलं । सुगुणेश्वरप्रसादेन ॥ १३ ॥ तद्विषयस्य सुबु-  
 २० । ष्ठिदुषः सुयतेर्दयाकुशलनाम्नः । महतोद्यमेन कृत्यं । सिद्धं श्री जगवतः कृ-  
 २१ । पया ॥ १४ ॥ रम्यो जीर्णोद्धारो । श्रीपार्श्वनाथान्वितोऽर्थ्यमानश्च । आचन्द्रार्कं राजत् जी-  
 २२ । याज्जनसुखकरो नित्यं ॥ १५ ॥ संवत् १६७७ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री अजपु-  
 २३ । रे महार्तीर्थे जीर्णोद्धारो जातः श्रीमत्तपागच्छेश चट्टारक प्रभु ज० श्री ५  
 २४ । श्री विजयदेव सूरि विजयराज्ये । पं० श्री मेहमुनीन्द्र गणि शिष्य पं० श्री  
 २५ । कल्याणकुशल गणि पं० । श्री दयाकुशल गणि शिष्येन । प्र-  
 २६ । शस्तिरिथं लिखिता गणि चक्रिकुशलेन ॥ श्री रस्तु ॥ श्रीः ॥

पाषाण की मूर्तियों पर । \*

[ 1718 ]

१ । सं० १३४३ वर्षे माघ वदि २ शनौ श्रीमाखीय हरिपाखेन  
 २ । .... सूरिजिः ।

[ 1719 ]

१ । सं० १३४६ वर्षे वै० सुदि २ बुधे दीशावाल ज्ञातीय महं० लाषण सुन धी-  
 २ । रमन सुन । वासल श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेन्द्र सूरिजिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1720 ]

सं० १५०० वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ श्री .... पदेशेन हुंबड़ ज्ञातीय ठ० अर्जुन

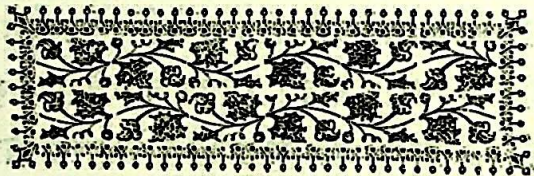
\* ये मूर्तियां खण्डित हैं, लेख चरणचौकी पर हैं ।



मारुतयो युत धीधा जुष्टा सुत नेमिनाथ प्रथमति ।

[ 1721 ]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल झातीय मं० वाठा जार्या गोमती तथा  
आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रज स्वाम्यादि पञ्चतीर्थी श्री आगम गढे श्री हेमरत्न सूरिषामुप-  
देशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ।



## पिंडवाड़ा-सीरोही ।

श्री महावीरजीका मन्दिर ।

शिला लेख

[ 1722 ]

- ( १ ) नीरागगन्धादिजात्रेन सर्वज्ञानविनायकं । ज्ञात्वा जगवतां जापं जिनानमिव पावनं ॥
- ( २ ) ओणयेयक यशोदेव देव .... । .... रिदे जैनं कारितं युग्ममुत्तमं ॥
- ( ३ ) जयशतपरम्परार्जित गुरुकर्मराजो .... कारापितां परदर्शनाय शुद्धं सज्ज्ञानचरण-  
लाजाय ॥

संवत् ७(९?)४४ ।

उं साक्षात्पिता महान व विश्वरूपविनायिना । शिदिपना गोपगार्गेन कृतमेतज्जित-  
द्वयम् ॥





( १७१ )

## स्वीमंत-पालणपुर ।

जैन मंदिर ।

मूर्त्तिकी चरणचौकी पर ।

[ 1723 ]

- १ । ॐ ॥ सं० १२१५ वैशाख वदि ४ शुक्ले स्वीमंत स्थाने प्राग्वाट वं  
 २ । शीय श्रेष्ठ आसदेव जार्यया दमति आविकया स्वपुत्र जसचन्द्र देवय  
 ३ । तत् पुत्र पूना अजयडबड़ प्रति समस्तमानुषसमेतया आ-  
 ४ । त्मश्रेयसे श्री महावीर जिनयुगलं कारितं सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।



## श्री तारंगा तीर्थ ।

श्रीअजितनाथ स्वामीजी का मंदिर ।

सहस्रकूट के चरण पर ।

[ 1724 ]

श्री शाश्वता परमेश्वर ४ श्री चौबीस तीर्थंकर २४ श्री बीस विहरमाण २० श्री  
 गणघरना १४५२ सर्वमखिने संख्या पनरसो जोड़ावि ठई सहि । सं० १७९३ वर्षे माघ  
 सुदि ९ शुक्ले श्री तारंगाजी दुर्गे । श्री श्री विजयजिनेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं तपा गछे ।  
 सा० करमचन्द्र मोतीचन्द सुत पनाचन्द करापितं । बीसनगर वास्तव्य ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1725 ]

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १० शनौ उकेस वंशे साहु गोत्रे सा० तुंणा जा० जूपादे



( १७२ )

पु० सा० सातलकेन जा० संसारदे पुत्र सा० हेमादियुतेन श्री कुंथु विंब का० प्र० खरतर गहे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

[ 1726 ]

सं० १५१० वर्षे ज्यैष्ठ शुदि ६ बुधे श्री कोरंट गहे । उपकेश मडाहड वा० सा० श्रवण जा० राजं पु० साहवा जा० सांपू पु० जांजण सहितेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थ श्री चंद्रप्रज विंब कारितं । प्रति० श्री सांवदेव सूरिजिः

[ 1727 ]

सं० १५२४ वर्षे वै० । सु० ३ त्रिथापुर वासि श्री श्रीमालि झा० म० लषमीधर जा० जासू पु० म० जूगकेन जा० डीरू छि० जसमादे प्रमु० पुत्रादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्री धर्मर्ननाथ विंब कारितं प्रतिष्ठितं । श्री विंबदनीय गहे श्री कक्क सूरिजिः ।

[ 1728 ]

सं० १५३२ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ दिने श्री श्रीमाल झातीय श्रे० अर्जन जा० हवकू पु० सहिजाकेन जा० मानू सु० जूग जावा स्वस्वपुर्वनिमित्तं कुटुंब० श्री सुमति नाथ विंब का० प्र० पूणिमापक्षे जहा० श्री गुणतिलक सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 1729 ]

॥ सं० १५३० वर्षे माघ वदि १ श्री श्रीमाल झातीय श्रे० चुंडा जा० चांपलदे सुत वीसा धरणा वीसा जा० माणिकदे पितृमातृश्रेयसे श्री शीतलनाथ विंब कारितं पिप्पल गहे ज० श्री गुणप्रज सूरि पं० श्री तिलकप्रज सूरि प्रतिष्ठितं ॥ साचुरा ॥ ७३ ॥

[ 1730 ]

सं० १५०० वर्षे वैशाख सुदि १२ शुके प्राग्वाट झातीय महं धना सुत महं जीवा जार्या जसमादे सुत गोगा जार्या रूपाई श्रेयोर्थ श्री धर्मर्ननाथ विंब कारितं प्र० श्री तपा गहे हेमविमल सूरिजिः पेथापुर ।



( १७३ )

चौविशी पर ।

[ 1731 ]

सं० १४८९ वर्षे आषाढ शुक्ल ५ दिने प्रग्वाट ज्ञातीय मंत्रि बाहड़ सुत सिंघा जा० पूजस सुत ठरुआकेन जा० कपूरीयुतेन निजश्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ मूखनायक चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री तपागढाधिप श्री सोमसुन्दर सूरजिः ।

[ 1732 ]

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि राणा संताने श्रे० रत्ना जा० धरण सुत पूर्णसिंहेन जार्या देमाई सहितेन तथा ज्ञातृ हरिदास स्वपुत्र पासवीर युतेन श्री अजितनाथ त्रिबं चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्र० श्री साधुपूर्णिमापके ज० श्री रामचन्द्र सूरि पट्टे शिष्य पूज्य श्री श्री पूर्णचन्द्र सूरिणामुपदेशेन विधिना नारु श्रावकैः ॥

[ 1733 ]

सं० १५०८ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने उपकेश ज्ञा० डागलिक गोत्रे । सा० धिना जा० वारू पुत्र संघवी पासवीरेण जा० संपूरदे सहितेन स्वश्रेयसे श्री संजवादि तीर्थकृच्चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री कोरंटगढे श्रीनन्नाचार्यसंताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री सावदेव सूरजिः ॥ श्रीः ॥

नन्दीश्वरछीप की देहरी पर ।

[ 1734 ]

सं० १८८० महा सुदि ५ शुक्ले श्री विजयजिनेन्द्र सूरजि नन्दीश्वरछीप त्रिबं प्रवेश प्रतिष्ठित श्रीमत्तपागढे श्री गाम वड़नगर दो० पानचन्द जयचन्द स्थापित ।





( १७४ )

## सिहोर-काठियावाड़ ।

श्री सुरेश्वरनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1735 ]

सं० १४०० वर्षे वैशाख सुदि १२ शुके प्राग्वाट झा० मं० रत्ता जा० रजाई पु० सं० सहस्सकिरण जार्या धरण सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंथुनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरजिः । बलासर वास्तव्य ॥

[ 1736 ]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल झातीय व० तयरा जा० बाबू सुत नाणा वड़ीय गोवल जा० हांसू सु० वीरा जा० बांऊसदे सुत लालु काणहु वानर एतै जिनपितृमातृ श्रेयार्थ श्री श्रेयांसनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गढे ज० .... ।

[ 1737 ]

सं० १५३६ वर्षे पोष वदि .... गुरू श्री श्रीमाल झा० श्रे० टोइया जा० लखा सुत पर्वत ज्रातृ कमि श्रेयार्थ जीवितस्वामी श्री नमिनाथ विंभं कारितं श्री आगमगढे श्री श्री सिंघदत्त सूरजिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।



## पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—माधोलालजी की धर्मशाला ।

धातु की सूर्तियों पर ।

[ 1738 ]

संवत् १५९५ वर्षे माह शुदि १२ शुके आणंदविमल सूरि बा० चन्दा जा० माहवजी श्रीवजदेव (?) .... ॥



( १७५ )

[ 1739 ]

संवत् १६०० [गो] स वदि ५ सोम० श्रीमालहातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नाथुजी-  
केन धर्मनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1740 ]

संवत् १६१६ वर्षे फाट्गुण सुदि ७ सोम ठस० झा० व्य० श्री सुमतिनाथ विं०  
हीरविजय सूरिः ॥

[ 1741 ]

संवत् १६७० वर्षे माघ सुदि २ दिने ठ । इन्द्राणीता (?) श्री श्री आदि विं० का० प्र०  
तपागळे श्री विजयसेन सूरिजिः ॥

[ 1742 ]

संवत् १६७७ वै० शु० ५ शु० स ॥

[ 1743 ]

संवत् १७०२ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्ले श्री अञ्जलगढाधिराज पूज्य जटारक श्री  
कल्याणसागर सूरेश्वराणामुपदेशेन श्री दीव वंदिर वास्तव्य प्राग्वाट हातीय नाग गोत्रे मंत्रि  
विमल सन्ताने मं० कमलसी पुत्र मं० जीवा पुत्र मं० प्रेमजी सं० प्रागजी मं० आणंदजी  
पुत्र केशवर्ज। प्रमुखपरिवारयुतेन स्वपितृ मं० जीवा श्रेयोऽर्थ श्री आदिनाथ विं० कारितं  
प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन ।

[ 1744 ]

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी जार्या बाई मनरंगदेकेन मुनि-  
सुवत विं० का० प्र० श्री विजयसेन सूरि ।

[ 1745 ]

सं० १७९८ वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० खिमचंद्र जार्या विश्व श्री अनन्त विं० प्र०  
श्री विजयरुद्धि सूरि ।



( १७६ )

[ 1746 ]

संवत् १७४० ॥ फाल्गुण सुदि २ ॥ वासरे उदिने श्री पार्श्वनाथ विंबं प्र० बाई स्त्रीमी  
जरावती ॥

[ 1747 ]

दो० बाघा श्री जीराजलाज श्री पार्श्वनाथ ।

[ 1748 ]

बा० हीराई श्री शान्तिनाथ ॥ श्री हीरविजयसूरि प्र० ॥

[ 1749 ]

संवत् १७५३ वर्षे माघ विदि ५ शुक्ले श्री चन्द्रप्रज विंबं कारापितं श्रीमालि वंशे  
शा० अनोपचन्द तस्य जार्या बाई नाथो अंचल गळे ॥

श्री सिद्धचक्र यन्त्र पर ।

[ 1750 ]

संवत् १७५४ ना वर्षे माघ विदि ५ चन्द्रे श्री तपागळे बाई छूली तस्या पुत्री बाई  
जवळ श्री सिद्धचक्र करापितं पं० पवाविजैः (?) प्रतिष्ठितं श्री राजनगर मध्ये ।

चौबीसी पर ।

[ 1751 ]

संवत् १७५३ वर्षे वैशाख विदि ९ रवौ श्री सीरूज वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० बाळा  
जा० मानूं सुत श्रेष्ठ समधरेण जा० जासी जा० धर्मादे सुता लाली प्रमुखकुटुम्बयुतेन  
स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पदः कारितः प्रतिष्ठितः श्री तपागळे श्री रत्नशेखर  
सूरि पदे गठनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[ 1752 ]

सं० १४३९ ( ? ) ॥ प्राग्वाट ज्ञातीय शा० हाळा जार्या दानू सुत शा० ठीगिरेण



( १७७ )

श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागळे श्री देवचन्द्र सूरिजिः ।

[ 1753 ]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ सुदि १० शुके श्री प्रग्वाट झातीय श्रे० पींचा जार्पा लाखणदे  
तयोः पुत्रैः श्रे० वीरम भीटा चीगाख्यैः मातृपितृश्रेयोऽर्थ श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं  
प्र० तपागळे वृद्धशाखायां श्री जिनरत्नसूरिजिः । श्री सहूआला वास्तव्य ।

[ 1754 ]

सं० १५१२ वर्षे प्राग्वाट झातीय श्रे० आसपाल जा० पचू पुत्र धना जा० चमकू पुत्र  
माधवेन जा० वाढ्ही ज्रातृ देवराज जा० रामकी देपालादियुतेन श्री सुमति बिंबं कारितं  
प्र० तपागळेश श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचन्द्र सूरिशिष्य श्री श्री  
रत्नशेखर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1755 ]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे ज्ञेश वंशे लुंकड गोत्रे शा० गुजर पु० शा० देव-  
राज पु० आसा पु० शा० समधरेण स्वमातृ चाई पुण्यार्थ श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति०  
श्री खरतरगळे श्री विवेकरत्न सूरिजिः ।

[ 1756 ]

सं० १५१८ वर्षे वैशाख सुदि १३ सखारि वासि प्रा० सा० जावड़ जा० वारू सुत हर-  
वासेन जा० गोमती ज्रातृ देवा जा० धर्मिणियुतेन श्रेयोऽर्थ श्री सुमति बिंबं का० प्र० तपा  
श्री रत्नशेखर सूरि पढे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 1757 ]

सं० १५१९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरु श्री श्रीमाल झातीय व्यव० गहगा जार्पा वाढ्ही  
आत्मश्रेयोऽर्थ जीवतस्वामी श्री अजितनाथ मुख्य पंचतीर्थी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा  
पढे श्री मुनितिलक सूरि पढे श्री राजतिलक सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ जाबू वास्तव्य ।



( १७० )

[ 1758 ]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० गोपाल जा० सखी सु० पोमाकेन जा० जमकू श्रेयोऽर्थ श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापदे ज० श्री सागर-  
तिलक सूरि पदे ज० श्री गुणतिलक सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[ 1759 ]

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ७ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय शा० राजा जा० राजवदे सु०  
स० शाह गिरूया जार्या राजार्ह तथा सु० पासा जीवायुतया स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ  
बिंबं श्री आगम गङ्गे श्री जयानन्द सूरि पदे श्री देवरत्न सूरि गुरुपदेशेन कारितं  
प्रतिष्ठापितं च ॥ शुभं भवतु ॥ श्री स्तम्भतीर्थ ॥ ७४ ॥

[ 1760 ]

सं० १५४० वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय म० देवसी जा० देवहणदे  
पुत्र सहिजाकेन जा० धनी पुत्र गंगदास सचू हांसा ज्ञातृ कीपा प्रमुखकुटुम्बयुतेन पितृ-  
निमित्तं स्वश्रेयसे च श्री कुन्धुनाथ बिंबं श्री पूर्णिमापदे श्री सौजाग्यरत्न सूरिणामुपदेशेन  
का० प्र० विधिना श्री लीवासी ग्रामे ॥

[ 1761 ]

सं० १५५२ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय प० सधा जा० अमकू सु० प०  
मूलाकेन जा० हांसी सु० हर्षा लषा सहितेन स्वश्रेयोऽर्थ श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपापदे ज० श्री उदयसागर सूरिजिः ॥ श्री पत्तने ॥

[ 1762 ]

सं० १६३७ वर्षे माघ वदि ९ शनौ श्री दीव वास्तवश श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखा-  
मण्डन श्रे० काषा जा० कामलदे सुत कक्की जार्या हर्षादे सुत सचवीर जार्या सहिजलदे  
सुत हीरजी जार्या हीरादे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं तपागङ्गे श्री हीरबिजयसूरिजिः  
प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥



( १७६ )

[ 1763 ]

सं० १६५१ वर्षे मार्गशीर्षे वदि ४ गुरौ दो० वेधराजकेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ  
विंभं कारितं प्रतिष्ठितं च तपापक्षे श्री हीरविजयसूरिश्वरैः चार्या मोखादे सुत धनजी  
प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री दीवचन्द्रिदर वास्तव्येन ॥ श्री रस्तु ॥

[ 1764 ]

सं० १६५६ वर्षे फाट्गुण वदि २ गुरौ दीवचन्द्रिदर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय बाई  
मनाईकया निजश्रेयसे श्री सम्जवनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिगज परम-  
गुरु श्री ६ विजयसेन सूरिजिः परिकरसहितैः ।



## शत्रुंजय तीर्थ ।

दिगम्बर मन्दिर ।

श्री शान्तिनाथजी की मूर्ति पर ।

[ 1765 ] \*

सं० १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ५ बुधे शाके १५५१ वर्त्तमाने श्री मूलसंघे सरस्वतीगङ्गे  
बलात्कारकगणे श्री कुंदकुंदान्वये जट्टारक श्री सकलकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे ज० श्री जुवन-  
कीर्त्ति देवास्तत् पट्टे ज० श्री ज्ञानभूषण देवास्तत्पट्टे ज० श्री विजयकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे ज०  
श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे ज० श्री सुमतिकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे ज० श्री गुणकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे  
ज० श्री वादिभूषण देवास्तत्पट्टे ज० श्री रामकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे ज० श्री पद्मनन्दि गुरुपदे-  
शात् पादशाह श्री साहजाह विजयराज्ये श्री गुर्जरदेशे श्री अहमदाबाद वास्तव्य हुंभड़  
ज्ञातीय बृहन्नालीय वाग्बर देश स्थातरीय नगर नौतनजप्रसादोद्धारणभारजाज (?) सं०  
जौजा ज० सं० लकु सं० संवस्ता ज० सं० रनादे तयोः सुत ब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालनेन

\* यह लेख " जैन मित्र " माघ बदी २ वीर सं० २४४७ के अङ्क से मिला है ।



पवित्रीकृतनिजांग सप्तक्षेत्रारोपितस्वकीयवित्त सं० छटकणा जा० सं० ललतादे तयोः  
 सुत जिनकुलकमलविकाशनैकसूर्यावतारः दातृगुणेन नृपतिश्रेयांससमः श्री जिनबिंबं  
 प्रतिष्ठातीर्थयात्रादिधर्मकर्मकरणैत्सुकचित्त संघपति श्री रत्नसो जा० सि० रुपादे  
 द्वि० जा० सं० मोहणदे तृतीय जा० सं० नवरंगदे द्वितीय सुत संघवी श्री रामजी जा०  
 सं० केशरदे तयोः सुत संघवी मूंगरसी जा० सं० जाऊसदे द्वितीय सुत संघवी शुद्धमती  
 जा० सं० मसतादे एतेषां महासिद्धक्षेत्र श्री सेतुंजय रत्नगिरौ श्री जिनप्रासाद श्री  
 शांतिनाथ बिंबं कारयित्वा नित्यं प्रणमति । शुभं भवतु ।



## चोरवाड़-जुनागढ ।

जैन मन्दिर ।

शिला लेख ।

[ 1766 ]

- १ । सुरमण्यविशाल नगर श्री चोरवाडके रुचिरचिंतामणि पार्श्वनाथ विजोश्च पद-  
 रजस्य तत् सुत व.
- २ । सी । सायर तनयौ । आंबाख्यस्तत्र चादिमो गुणवान् । द्वितीयो मनाजिधानो जिन-  
 धर्म रतः कृपावासः ॥ २ ॥ आं
- ३ । बाख्यस्य तनुजः सुविवेकः समरसिंह इत्याह्वः । देवगुरुजक्तिपरमः तत् सूनु चैत्र-  
 पालाख्यः ॥ ३ ॥ श्री
- ४ । सं० १५२६ वर्षे वैशाख सुदि तृतीया गुरौ । श्री मंगलपुर वास्तव्यः । श्री उसवाल  
 द्वितीय सोनी साय-
- ५ । रजनदे सुत सोनी आंबा जार्या बाई सहित सुत सोनी समरसी जार्या मनाई अपर  
 जार्या सलबाई



- ६। त० सोनी जयपात्र चार्या मृगाई ॥ ततः ॥ सोनी सायर चार्या बाई वाकू सुत सोनी मना चार्या बाई
- ७। बरजू सुत सोनी श्रीवंत सोनी जयवंतौ । सपरिजनसहितेन ॥ सोनी समरासिंह चार्या बाई पाही-
- ८। सहितेन ॥ एतै श्री चारवाड पुरे चर (?) ॥ निजजुजोपार्जितधनकृतार्थहेतोः ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वना-
- ९। य चैत्यं कारापितं ॥ श्री वृद्धतपागळे जट्टारक श्री जयचन्द्र सूरि पट्टावतंस ॥ जट्टा श्री जिन-
- १०। सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री जयसुन्दर गणि शिष्य महोपाध्याय श्री संवेगसुन्दर गुरूपदेशेन ॥ प्र-
- ११। तिष्ठितं चेति कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥



## घोघा-काठियावाड़ ।

श्री सुविधिनाथजी का मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1767 ]

॥ जे सं० ११६१ माघ ११ श्री नागेंद्रकुले श्री विजय तुंगसूरि.... ।

[ 1768 ]

सं० १५०३ धर्मप्रज्ञ सूरि त० पट्टे श्री धर्मशेखर सूरिजिः शुभं भवतु आराधकस्य ।

[ 1769 ]

सं० १५१७ वर्षे महा सुदि ५ शुके श्रेष्ठि नरपाल जा० कहुई तेषां सुता सामल हेमा-



( १७२ )

रोका बीमा स्वचार्या पितृमातृश्रेयर्थ श्री कुंयुनाथ विंबं का० प्र० श्री आगम गेहे श्री  
आनन्दप्रज्ञ सूरिजिः आबरणि वास्तव्य ।

[ 1870 ]

सं० १५३६ वर्षे आषाढ सुदि ६ श्री ओसवाल झाती सा० पाखा चार्या वरुषू सुत  
गोविन्द चा० गंगादे नाम्ना आत्मश्रेयसे श्री कुंयुनाथ विंबं कारितं प्र० बृहत्तपा पक्षे ज०  
जिनरत्न सूरिजिः

[ 1771 ]

सं० १५५५ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ घनौघ वास्तव्य श्री उंसवाल झा० सा० गोगन  
चा० गुरदे सुत हांसाकेन चा० कस्तुराई सहितेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ विंबं का० श्री  
बृहत्तपा गेहे ज० श्री धर्मरत्न सूरिजिः ।

[ 1772 ]

सं० १५५५ वर्षे वै० सु० ३ शनौ श्री श्रीमाल झा० मनोरद चा० मांकी सु० वाहराज  
चा० जीविनी सु० देवदासेन चा० दगा सु० पासा करन धर्मदास सूरदास युनेन श्री  
विमलनाथ विंबं कारितं श्री अंचलगहे श्री सिद्धांतसागर सूरि गुरूपदेशात् ।

[ 1773 ]

सं० १५५७ वर्षे पोष वदि ६ रवौ घनौघ वासी श्री श्रीमाल झा० सा० माईया चा०  
जीवी सुत कानाकेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंबं का० प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे श्री लक्ष्मी-  
सागर सूरिजिः । श्रेयो भवतु पूजकस्य ।

[ 1774 ]

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ११ शुके श्री श्रीवंशे मं० माईया सुत मं० मूखा चा० रमा  
सुश्राविकया सुत मं० धवा मेघा रामा सहितया निजश्रेयार्थ श्री सुमतिनाथ विंबं का०  
प्र० धर्मवल्लभ सूरिजिः श्री जांबू ग्रामे ।



( १७३ )

चौविंशो पर ।

[ 1775 ]

सं० १५१२ वर्षे फा० शु० शनौ श्री श्रीमाख ज्ञानीय मं० कहा चार्या राजुख सुत सिंह-  
राज मं० विरुपाकेन पितृमातृव्रातृश्रेयोर्थ श्री कुंयुनाथ चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री  
न० गुणसुंदर सूरिजिः ।

[ 1776 ]

सं० १५२४ वर्षे आ० सुदि १० शुके श्री श्रीवंशे मं० सांगन जा० सोहागदे पुत्र मं०  
वीरभवल जा० गुरी पु० खेतसी जन्मनाम्ना जूठाकेन मं० चार्या जयतल्लदे व्रातृ काला  
चड्या चारपुत्र जोजा देवसी धीरा प्रमुखसमस्तकुटुम्बसहितेन तत्पितृश्रेयोर्थ श्री अंचल-  
गणेश्वर श्री जयकेसरी सूरिणामुपदेशेन श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री श्री-  
संघेन श्री सिहुंझड़ा ग्रामे ।



## शीयालबेट-काठियावाड़ ।

जैन मंदिर ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1777 ]

- १। तें संवत् १२७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ अयेइ
- २। टिंथानके मिहरराज श्री रणसिंह प्रतिपत्तौ समस्तसंघेन श्री महावी-
- ३। र बिंघं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्रगङ्गीय श्री शान्तिप्रज्ञ सूरि शिष्येः श्री हरिप्रज्ञ  
सूरिजिः ॥



( १७४ )

[ 1778 ] \*

६० ॥ सं० १३०० वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे श्री सहजिगपुर वास्तव्य पद्धी० ज्ञातीय  
ठ० देदा जार्या कफूदेवी कुक्षिसंभूत परी० महीपाल महीचन्द्र तत् सुन रतनपाल विजय-  
पालैर्निजपूर्वज ठ० शंकर जार्या लक्ष्मी कुक्षिसंभूतस्य संघपति मूधगदेवस्य निजपरि-  
वार सहितस्य योग्यं देवकुलिकासहितं श्री मल्लिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्र-  
गढीय श्री हरिप्रज सूरिशिष्यैः श्री यशोज्ञ सूरिभिः ॥ ६१ ॥ मंगलमस्तु ॥ ६१ ॥

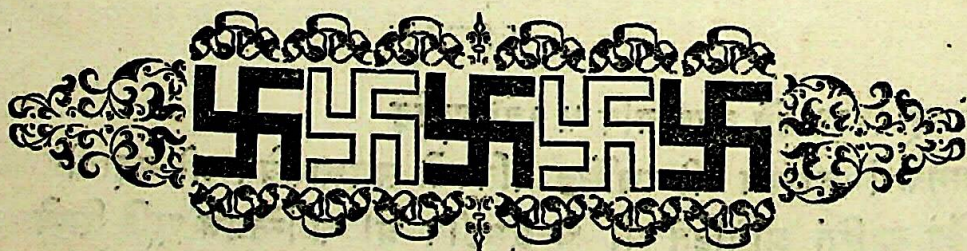
[ 1779 ] \*

सं० १३१५ फाट्गुण वदि ९ शनौ अनुगधा नक्षत्रे अयेह श्री मधुमत्यां श्री महावीर  
देवचैत्ये प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि आमदेव सुन श्री सपाल सुन गंधि चिवाकेन आत्मनः  
श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव बिंबं कारितं चन्द्रगढे श्री यशोज्ञ सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[ 1780 ] \*

सं० १३२० माघ सुदि ..... गुरौ प्राग्वाट ज्ञात ..... प्र व्य० वीरदत्त सुत व्य० जाला  
जार्या माठिकया स्वश्रेयोर्थं रांकागढीय श्री महीचन्द्र सूरिभिः महावीर चैत्ये श्री कृष्णदेव  
बिंबं कारितं ।

\* वहां के गोरखमण्डी में भोयरे के पास पड़े हुए मूर्तियों पर ये लेख हैं ।









[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri



# जामनगर-काठियावाड़ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर-वर्द्धमान सेठवाला ।

शिला लेख

[ 1781 ]

( शिरोजाग ) जाम श्री लक्ष्मराजराज्ये ॥

- १ । ॥ ए०० ॥ श्री मत्तार्थजिनः प्रमोदकरणः कल्याणकंदांबुदो । वि.
- २ । ब्रह्माधिहरः सुरासुरनरैः संस्तूयमानक्रमः ॥ सत्पांको जविनां म.
- ३ । नारेयतरुव्यूहे वसंतोपमः । कारुण्यावसथः कलाधरमुखो नी-
- ४ । लब्धविः पातु वः ॥ १ ॥ क्रीडां करोत्यविरतं । कमलाविभ्रास । स्थानं
- ५ । विचार्य कमनीयमनंतशोजं । श्री उज्जयंतनिकटे विकटाधिना.
- ६ । ये । ह्याह्वारदेश अवनि प्रमदाललामे ॥ २ ॥ उत्तुंगतोरणमनोहर-
- ७ । वीतराग । प्रासादपंक्तिरचनारुचिरीकृतोर्वी । नंद्यान्नवीनग-
- ८ । री क्तिसुन्दरीणां वक्त्रः(ः)स्थले ललति साङ्गि ललन्तिकेव ॥ ३ ॥ सौराष्ट्रना-
- ९ । यः प्रणतिं विधत्ते । कलाधिपो यस्य जयाद्विजेति । अर्द्धासनं यलति मालवेशो
- १० । जीव्याद्यशोजितस्वकुलावतंसः ॥ ४ ॥ श्रीवीरपट्टक्रमसंगतोऽभूत् जाग्या-
- ११ । धिकः श्रीविजयेन्दुसूरिः । श्रीमंधरैः प्रस्तुतसाधुमार्गश्चक्रेश्वरोदत्तवरप्रसा-
- १२ । दः ॥ ५ ॥ सम्यक्त्वमार्गो हि यशोधनाहो । दृढीकृतो यत् सपरिष्ठदोऽपि ।
- १३ । संस्थापित श्रीविधिपद्मगठः । संघैश्चतुर्धा परिसेव्यमानः ॥ ६ ॥ पट्टे तदीये ज-
- १४ । यसिंहसूरिः । श्री धर्मघोषोऽथ महेंद्रसिंहः । सिंहप्रजश्चाजितसिंहसूरि ।
- १५ । देवेंद्रसिंहः कविचक्रवर्त्ती ॥ ७ ॥ धर्मप्रजः सिंहविशेषकाहः । श्री मा-

\* जामनगर का सेठ वर्द्धमान शाहका बनाया हुआ प्रसिद्ध मन्दिर का यह लेख वहां के पण्डित हीरालालजी हंस-राजजी ने अपने " जैनधर्मो नो प्राचीन इतिहास " नामक पुस्तक के २ य भाग के पृष्ठ १७७-१७९ में अक्षरान्तर छपवाया था, आचार्य महाराज मुनि जिनविजयजी ने अपने " प्राचीन जैन लेख संग्रह " के २ य भागमें पृष्ठ २६६ से २६८ में प्रकाशित किया है, परन्तु मूल शिलालेख की प्रत्येक पंक्तियां दोनों स्पष्ट नहीं है इस कारण यहां पुनः प्रकाशित किया गया ।



- १६ । नू महेन्द्रप्रजसूरिरार्यः ॥ श्रीमेरुतुंगोऽमितशक्तिमांश्च । कीर्त्यद्भुतः श्री ज-  
 १७ । यकीर्त्ति सूरिः ॥ ८ ॥ वादिद्विषौघे जयकेसरीशः । सिद्धांतसिंधुर्धुवि जा-  
 १८ । वसिंधुः । सूरेश्वरश्रीगुणशेवधिश्च । श्री धर्ममूर्त्तिर्मधुदीपमूर्त्तिः ॥ ९ ॥  
 १९ । यस्यांघ्रिपंकज निरंतरमुप्रसन्नात् । सम्यक्फलं तिसमनोरथवृक्षमालाः ॥ श्री-  
 २० । धर्ममूर्त्तिपदपद्ममनोज्ञहंसः । कल्याणसागरगुरुर्ज्ञायताऋरिज्यां ॥ १० ॥  
 २१ । पंचाणुव्रतपालकः स करुणः कद्वपद्रुमाजः सतां । गंजीरादिगुणोज्ज्वलः शु-  
 २२ । जवतां श्रीजैनधर्मे मतिः । द्वे काव्ये समतादरः क्षितितले श्री लसवशे विभुः  
 २३ । श्रीमद्वालणगोत्रजो वरतरोऽचूत् साहि सींहाजिधः ॥ ११ ॥ तदीय पुत्रो हरपालना-  
 २४ । मा देवाच्चनंदोऽय स पर्वतोऽचूत् । बहुस्ततः श्रीअमराचु सिंहो । जाग्याधिकः कोटि-  
 २५ । कलाप्रवीणः ॥ १२ ॥ श्रीमतोऽमरसिंहस्य । पुत्रामुक्ताफलोपमाः । वर्द्धमानचांपसिंह  
 २६ । पद्मसिंहा अमीत्रयः ॥ १३ ॥ साहि श्री वर्द्धमानस्य । नंदनाश्रंदनोपमाः । वीराहो  
 २७ । विजपालाख्यो नामो हि जगद्वस्तथा ॥ १४ ॥ मंत्रीश पद्मसिंहस्य । पुत्रारत्नोपमा  
 स्रयः ।  
 २८ । श्रीश्रीपालकुंरपाल । रणमद्व्या वरा इमे ॥ १५ ॥ श्रीश्रीपालांगजो जीया । नारायणो  
 मनोः  
 २९ । हरः । तदंगजः कामरूमः कृष्णदासो महोदयः ॥ १६ ॥ साहि श्रीकुंरपालस्य । वर्त्तते  
 ऽन्व-  
 ३० । यदीपकौ । सुशीलस्थावराख्यश्च । बाघजिज्ञाग्यसुन्दरः ॥ १७ ॥ स्वपरिकरयुताज्यामं-  
 मात्य-  
 ३१ । शिरोरत्नाज्यां साहि श्रीवर्द्धमानपद्मसिंहाज्यां हृद्वारदेशे नव्यनगरे जाम श्रीशत्रु-  
 शब्दात्मज  
 ३२ । श्री जसवन्तजी विजयिराज्ये श्री अंचलगणेश श्री कल्याणसागर सूरेश्वराणामुप-  
 देशेनात्र श्री शां-  
 ३३ । तिनाथप्रासादादिपुण्यकृत्यं श्रीशांतिनाथप्रभृत्येकाधिकपंचशत्प्रतिमाप्रतिष्ठायुगं कारा-



३४ । पितं चाद्या सं० १६७६ वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे द्वितीया सं० १६७७ वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवासरे

३५ । सं० १६७७ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ गुरुवासरे उपाध्याय श्रीविनयसागरगणेशः शिष्य सौजायसागरैः

( अधो जाग )

३६ । रत्नेखीयं प्रशस्तिः ॥ मनमोहनसागरप्रासाद

( वाम जाग )

३७ । मंत्रीश्वर श्रीवर्द्धमान पद्मसिंहाज्यां ससलक्षरूप्यमुद्रिकाव्ययीकृतानवदेत्रेषु साहि श्रीचांपसिंहस्य पुत्रैः श्रीअमयाजिधः । तदंगजौ शुद्धमती । रामजीमाबुजावपि १७ ॥

श्री आदीश्वरजी का मन्दिर ।

[ 1782 ]

१ । ॐ श्री गौतमस्वामीनि लब्धि ॥ ज-  
२ । हीरविजय सूरेश्वर चरण पादु  
५ । गुरु श्रीमत्तपागढाधिराज सकल-  
७ । जय सूरिराज्ये तथा जाम श्री शत्रशत्रु  
९ । पदेशेन नवीननगर सकल संघ मु-  
११ । रं बध्वा प्रासादः कारितः ॥ ततो अक-  
१३ । डवकरणान्तरं जट्टारक श्री श्री  
१५ । कर जट्टारक श्री ५ श्री विजय से-  
१७ । श्री श्रीमाखी ज्ञातीय । जणसाली  
१९ । जणसाली आणन्द सुत जीवरा-  
२१ । बयुताज्यामेक त्रिंशत् सहस्र  
२३ । पि तथैव कारितं । सांप्रतं विज-

२ । द्वारक चक्रवर्ति जट्टारक श्री  
४ । काज्यो नमः ॥ सं० १६३३ वर्षे परम  
६ । जट्टारकपुरंदर जट्टारक श्री हीरवि-  
७ । राज्ये प । श्रीरविसागर गणि विशिष्यो  
१० । खसंधेन स्वश्रेयसे नवीनशिख-  
१२ । वर सुरत्राण प्रेषित मुग्गलैरुप-  
१४ । हीरविजय सूरि पटोदयाद्रिदिन-  
१६ । न सूरिराज्ये ॥ सं० १६५१ वर्षे  
१७ । आणन्द जणसाली अबजीज्यां  
२० । ज मेघराज प्रमुखसकलकुटुं-  
२२ । ३१००० रूप्य मुद्राव्ययेन पुनर-  
२४ । यमान आचार्य श्री श्री श्री ३ श्री



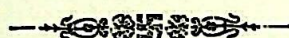
२५। विजयदेव सूरेश्वर प्रसादात् ।

२६। चिरं तिष्ठतु । शिवमस्तु सकल सं-

२७। घस्य ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ आदिनाथ

२८। आवां कृतः । प्रासादनामविजयचूषणः

प्रासादः



## तालाजा-काठियावाड ।

पाषाण के चरणचौकी पर ।

[1783] \*

ॐ सं० १३०२ वैशाख सु० ३ धवलकक्का वास्तव्य ठ० पदमसीह सुत ठ० जाला ठ० मदन जयता तेन ॥ ठ० मदन जार्या ठ० लष्मा देवी श्रेयोर्थ सुत ठ० पादहणेन श्री महा-वीर बिंबं पट्टकं च प्रतिष्ठितं आचार्य श्री माणिक्य सूरिजिः ।

[1784]

- १। सं० १११९ वर्षे दण्ड श्री धांध प्रभृति पञ्चकुलजन श्री मुनिसुव्रतस्वामी देवा
- २। .... णि .... पा विशेषपूजाप्रत्ययमण्डपिकायां प्रतिवर्षी हो
- ३। .... ड ( १ ) ४ चतुर्विंशतिद्रुमाः । ड० खवमादेश । बहुजिर्वसु
- ४। [धा युक्ता] राजजिः सगरादिजिः । यस्य यस्य यदा जूमि तस्य तस्य
- ५। तदा फलं ॥ १ ॥ तथा समस्तप्रमदाकुलाय अ .... पूर्णिमादि
- ६। .... (रके ) ४ चत्वारि द्रुमाश्च ॥ पञ्चकुलसमक्षे देवद....
- ७। .... ड ४ पर्जाम्—ड ३४ रक्षपटा
- ८। —मठाय



\* यह लेख तलाजा से पूर्व में हजुरापीर की कबर से मिली हुई मूर्तिरहित पाषाण की चरण चौकी पर है और भावनगर वास्टुन लाइब्रेरी के म्युजियम में सुरक्षित है ।



( १७९ )

## माङ्गरोल-काठियावाड ।

पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1785 ] \*

- १ । उं ॥ सं० १२५३ वर्षे आषाढ़ सुदि ४ शनौ ठ० चाविगड महं वडराजे(न आ)त्म-  
श्रेयोर्य श्री मुनिसुव्रतस्वामि प्रतिमा  
२ । कारिता प्रतिष्ठिता च श्री देवचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥



## वेरावल-काठियावाड ।

शिला लेख ।

[ 1786 ] †

- १ । ..... हन्निवन्नाति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ श्रे(?) प्रपा(सा) दक्षीष्ट संसिद्धयै  
मुखं चन्द्रप्रभं ....  
२ । ..... ह्य पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ ॥ मन्ये वेधा विधायैतद्विविधित्सुः  
पुनरीह .... दे  
३ । ..... रेन्द्रैन्नत्रयमंत्रैर्नयन्नलदमीः स्थिरीकृता ॥ ५ ॥ तन्निःशेषमहीपाक्षमौलीः  
घृष्टांश्चि  
४ । सौ नृपः । तेनोत्खातासुन्मूखो मूलराजः स उच्यते ॥ ७ ॥ एकैकाधिकचूपाखा  
सम ....  
५ । .... सत्रजखुराहतं । अतुल्यत्युगं पर्वत्रममजीजनत् ॥ ९ ॥ पौरुषेण प्रज्ञापेन  
पुण्येन ...

\* यह लेख रावली मसजीद के पास खुदाई में निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है ।

† यह लेख वहां के फौजदारी उतारे में रखा हुआ है ।



- ६ । ..... र न्यूनविक्रमः । श्री नीमन्नूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्ययं ॥ ११ ॥  
जावाहारायनम्राणि यो वसङ्गम(वज्रजम)
- ७ । .... न्निदि संघे गणेश्वराः । बभ्रूबुः कुंदकुंदाख्या साक्षात्कृतजगत्रयाः ॥ १३ ॥ येषां  
माकाशगामित्वं त्य ।
- ८ । ..... शत(पं)चकमुज्ज्वलं । रमयित्वाथ जन्मांतियेऽन्यन्नियमपूर्वकं ॥ १४ ॥ कालेऽ-  
स्मिन् चारते क्षेत्रे जाता
- ९ । .... रीणा तत्त्व वर्त्मनि तेषां चारित्रिणो वंशे चूरयः सूरयोऽजवन् ॥ १५ ॥ सद्दृष्टेषा-  
पि निर्दोषाः सकलापंकः
- १० । प्रजा यस्या रुरोह तत । श्रीकीर्त्तिं प्राप्य सत्कीर्त्तिं सूरिं चूरिगुणं ततः ॥ १६ ॥ यदीयं  
देशनावारिं सम्यग् वि(श्रो)
- ११ । ..... कश्चिन्नकूटाच्च चालसः श्रीमन्नेमिजिनाधिशः तीर्थयात्रानिमित्ततः ॥ १७ ॥  
अणहिल्लपुरं रम्यमाजगा
- १२ । .... नीडाय ददौ नृपः । विरुदं मण्डलाचार्यः सन्नत्रं ससुखासनं ॥ १८ ॥ श्रीमुखवसंति-  
काख्यं जिनचवनं तत्र
- १३ । .... संज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचन्दोयस्ततो नूत् स गणीश्वरः ॥ १९ ॥ चारु  
कीर्त्तियशः कीर्त्तिश्च
- १४ । ..... युक्तो को रत्नत्रयवानपि । यथावद्विदितात्मा साक्षत् हेमकीर्त्तिस्ततो गणि  
॥ २० ॥ उदेतिस्म लसद्ज्योति
- १५ । .... लेपिवासिते हेमसूरिणा वस्तू प्रायरणं येन वशे .... लेयिनं ॥ २१ ॥ .....  
पू ....
- १६ । ..... कीर्त्तिर्यत्कीर्त्तिर्नर्त्तको व .... । त्रिभुवनरा .... वासुकिं नूपुरशशितिलक-  
निषव्या ॥ २२ ॥ ते
- १७ । .... ति ॥ २३ ॥ समुद्धृतसमुन्नतश्रीर्णजीर्णजिनालयः । यः कृता रत्ननिर्वाहेसमुत्साह  
शिरोमणि



- १८ । .... शयैरवगण्यते ॥ ३४ ॥ वादिनो यत्पद छन्दनखचन्द्रेषु बिंबिताः । कुर्वते विगत  
श्रीकाः कञ्चक
- १९ । ... दं तीर्थभूतमनादिकं ॥ ३६ ॥ सातायाः स्थापना यत्र सामेशः पक्षपातकृत् । प्रजो-  
ल्लोलोक्थ
- २० । .... तदुद्धृततेन जातोद्धारमनेकशः ॥ ३७ ॥ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजजुजमुद्धृत्य सक
- २१ । .... षतो मंडलगणि ललितकीर्त्ति सुकीर्त्तिः । चतुरधिकविंशति जसध्वजपटपट्टहंसूक ॥
- २२ । .... मेतदीय सज्जोष्टिकानामपि गह्वकानां ॥ ४१ ॥ यस्य स्तानपयोनुल्लिप्तमखिलं जुष्टं  
द्वी
- २३ । .... चन्द्रप्रज्ञः स प्रजुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद्विग्व्यससां शासनं ॥ ४२ ॥ जिन  
पतिगृह
- २४ । .... चाणवर्णिवर्यो व्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैरुपेतैः ॥ ४३ ॥ श्रीमद्विक्रम चूपस्य  
वर्षाणां द्वादशे
- २५ । .... क कीर्त्ति लघुबंधुः । चक्रे प्रशस्तिः मनघो गणि .... प्रवरकीर्त्तिरिमां ॥ ४५ ॥  
सं० १२ ....

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[ 1787 ]

- १ । ॥ ६ ए० ॥ संवत् १८९६ वर्षे शाके १९४१ प्रवर्त-
- २ । माने माघ मासे शुक्लपक्षे अष्टमी तिथौ शनिवा-
- ३ । सरे श्री देवका पाटण नगरे श्री चन्द्रप्रज्ञ जि-
- ४ । न जीर्णोद्धार समस्त संघेन कारापितं जट्टार-
- ५ । क श्री श्री विजयजिणेन्द्र सूरि उपदेशात् श्री
- ६ । मांगलोर वास्तव्य शाण नानजी जयकरण
- ७ । सुत मकनजी ॥ ८ ॥ सुन्दरजीकेन जीर्णोद्धार-



- ८ । र प्रतिष्ठा कारापितं जट्टारकं श्री श्री विजय.  
९ । जिणेन्द्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागळे.  
१० । जब लग मेरु अडग है तब लग शशि ओ-  
११ । र सूर । जिहां लग ए पट्टक सदा रहजो स्थि-  
१२ । र जरपूर १ लि । वजीर ज्योति लोकाविजयेन ।



## गाणेशर-गुजरात ।

जैन मन्दिर ।

शिखा लेख ।

[ 1788 ]

- १ । ॥ ए० ॥ स्वस्ति सं० १२११ वर्षे वैशाख सुदि १४ गुरौ श्रीमदणहिलपुर वास्तव्य  
प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० (चं)  
२ । डप्रसादांगज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आशाराज तनुजन्म ठ० श्री कुमारदेवी-  
कुक्षिसमुद्भूत ठ० लूणि(ग)  
३ । महं० श्रीमालदेवयोरनुजमहं० श्री तेजःपाळाग्रज महामात्य श्री वस्तुपाळात्मज महं०  
श्री जयतसिंह ( स्तम्भ )  
४ । तीर्थमुद्राव्यापारं सं ३९ वर्ष पूर्व व्यावृण्वति महामात्य श्री वस्तुपाल महं० श्री  
तेजःपाळाज्यां समस्तमहातीर्थेषु  
५ । तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽजिनवधर्मस्थानानि जीर्णोद्धारश्च कारिताः  
तथा सचिवेश्वर श्री वस्तु-  
६ । पाक्षेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणडिग्रामे प्रपा श्रीगाणेश्वरदेवमण्डपः पुरतस्तोरणं  
(अपर)तः प्रतोलीद्वाराखंडं(क)



- ७। त प्राकारश्च कारितः ॥ ७ ॥ गांजीर्ये जलधिर्वल्लिर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः सौन्दर्ये  
पुरुषव्रते रघुपति र्वाचस्पतिर्वा ....
- ८। ये । लोकेऽस्मिन्नुपमानतामुपगताः सर्वे पुनः सम्प्रति प्राप्तास्तेऽप्युपमेयतां तदधिके श्री  
वस्तुपाले सति ॥ १ ॥ विद(धति)
- ९। विदग्धमतयस्तुल्यौ कौटिह्यवस्तुपालौ ये । ते कुर्वते न कस्मात्कूपाकूपारयोः समतां  
॥ २ ॥ वदनं वस्तुपाल(स्य)
- १०। कमलं को न मन्यते । यत् सूर्यालोकने स्मेरं ज्वति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥ श्री वस्तुपाल  
सम्प्रति परं महति कर्म(कुर्व)
- ११। ता ज्वता । निर्वृतिरर्थिजने च प्रत्यर्थिजने च संघटिता ॥ ४ ॥ तस्मै स्वस्ति चिरं  
चुलुक्यतिलकामालाय ....
- १२। क्रान्तक्रतुकर्मनिर्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति । राधे येन विना विना च शिविना  
ि.... य ना ि ....
- १३। द्वासित सम्मटाः स्वसदनं गच्छन्ति सन्तः सदा ॥ ५ ॥ महामाल्य श्री वस्तुपालस्य  
प्र(शस्तिरियं) ....



## प्रभास पाटण - गुजरात ।

बावनजिनालय मन्दिर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1789 ]

- १। उ० हीरा देवि पितृ० वीरदेव मातृ सक्तं संघ० पेशक संघ० कूशुरा संघ० पदमेख  
महं० वि(कम)सी वयजलदेवि महं० आढ्हणसीह महं० महणसीह वयव० लापव  
सो० महिपाल मातृ सक्त



- १ । उ० रत्न उ० लूणी ॥ उ० ॥ बीमसीह श्रे० डोकर न० धडलसीह उ० धांध श्रे०  
आमुल नागल श्रे० नागसूर राजल सा० वस्तुपाल धांधलदेवि उ० बरदेव उ० महतू  
३ । फो० रिणसीह उ० महणा बड़हरा अरसीह राजपाल श्रे० रतना जा० रामसीह मातू  
लक्ष्मी करुमसी दो० लूणा उ० पाता श्रीयादेवी सूहव उ० षतसीह उ० सिरि  
४ । उ० सीहा ॥ मातू० वालिणि उ० वयरसीह फो० धरणिग धाधलदेवि राजल ॥ बाणई  
बा० तेजी उ० तिहुणपाल उ० लाठि फो० मूणा सुपल प छा० सोवल कामलदेवि  
उ० लषमीधर ।

चरणचौकी पर ।

[ 1790 ] \*

- १ । ॥ ए० ॥ सं० १६९९ वर्षे फादगुन सित द्वादशी सोमवासे श्री छीप बन्दिर वास्तव्य  
वृद्धशाखोय उकेश ज्ञातीय सा० सुदुणसी जार्वा संपूराई सुत सा० सिवराज नाम्ना  
श्री कुंकुमरोल पार्श्व बिंब सपरिकरं कारितं प्रतिष्ठितं च स्वप्रतिष्ठायां । प्रति-  
२ । छितं च तपागङ्गाधिराज जटारक श्री १ए श्री हीरविजय सूरीश्वर पट्टालंकार ज०  
श्री १ए श्री विजयसेन सूरीश्वरपट्टप्रजाकर जटारक प्रभु श्री १ए श्री विजयदेव  
सूरजिः । स्वपट्टप्रतिष्ठिताचार्य श्री ५ श्री विजयसिंह सूरजिः साथा(?) स्वशिष्योपा-  
ध्याय श्री ५ श्री लावण्यगणप्रमुखपरिकरितैः ॥ शुभं नवतु ॥ श्री ॥

[ 1791 ] †

- १ । सं० १३३० वैशाख सुदि(२) शनौ पल्लीवाल ज्ञातीय उ० आसाढ़ उ० आसापद्माज्यां  
जा० जादह श्रेयोर्थ  
२ । श्री मल्लिनाथ बिंब उ० आसपालेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णजङ्ग सूरजिः ।

[ 1792 ] †

- १ । ॥ उं सं० १३४० ज्येष्ठ वदि १० शुक्ले पल्लीवाल जा० वीरपाल जा० पूर्णसिंह जा० वंश-

\* यह लेख जमीन से निकली हुई मूर्ति के चरणबौ मो पर है ।

† मल्लिनाथ महादेव के मन्दिर के पास पड़ी हुई खण्डित मूर्तियों पर ये लेख है ।



- १। जलदेवि पु० कुमरिसिंह केसिसिंह जा० उ०....आत्मश्रेयोर्थ ॥ श्री पार्श्वनाथ त्रिवं का-  
३। रितं प्रतिष्ठितं श्री कौरंटकीय ..... सूरिभिः शुभं ॥



## खंभात-गुजरात ।

श्री-आदीश्वर जगवान का मन्दिर ।

शिक्षा लेख

[ 1793 ]

- १। ॥ ए० ॥ ॐ नमः श्री सर्वज्ञाय ॥ धीराः सत्वमुशन्ति यन्निशुवने ( यन्नेति ) नेति श्रुत  
साहित्योपनिषद्भि  
२। षण्णमनसो यत् प्रतिज्ञं मन्वते सार्वज्ञं च यदा मनन्ति मुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं ज्योति-  
द्योतितवि-  
३। छपं वितनुतां जुक्तिं च मुक्तिं च वः ॥ १ ॥ श्री मद्गुर्जरचक्रवर्तिनगरप्राप्त प्रतिष्ठो  
ऽजनि प्राग्वाटाह्वय-  
४। म्य वंशविलसन्मुक्तामणिश्रृङ्गः ॥ यः संप्राप्य समुद्रतां किल दधौ राजप्रसादोल्लसद्दि-  
क्कूलकष-  
५। कीर्त्तिशुभ्रलहरीः श्रीमंतमंतर्जिनं ॥ २ ॥ अजनिरजनिजानिज्योतिरुद्योतकीर्त्तिस्त्रिज-  
गति तनुज-  
६। न्मातस्य चण्डप्रसादः ॥ नखमणिसख(शार्ङ्ग)सुन्दरः पाणिपद्मः कमकृत न कृतार्थ  
यस्य कदम्बुकदम्बः  
७। ॥ ३ ॥ पत्नी तस्या जायतात्पायताद्दी मूर्त्तेन्द्र श्रीः पुण्यपात्रं जयश्रीः ॥ जज्ञेताज्याम  
प्रिमः सूरसंज्ञः पुत्रः श्री



- ८ । मान् सोमनामा द्वितीयः ॥ ४ ॥ निर्माप्यादि जिनेन्द्रविंशमसमं शेषत्रयोविंशति श्री  
जैनप्रतिमा विराजि-
- ९ । तमसावज्यर्चितुं वेश्मनि ॥ पूज्यः श्री हरिजद्रसूरिसुगुरोः । पार्श्वात् प्रतिष्ठाप्य च  
स्वस्यात्मीय कुक्षस्य चाक्ष-
- १० । यमयं श्रेयो निधानं व्यधात् ॥ ५ ॥ असावत् सावाशाराजं तनुजसमं सोमसचिवः  
प्रियायां सीतायां शुचि च
- ११ । रितनत्यामजनयत् ॥ यशोजिर्गस्यैजिर्जगतिविशदे क्षीरजलधौ निवासैकप्रीतिं मुदस-  
न्नजर्दि-
- १२ । दुःदुःप्रतिपदं ॥ ६ ॥ श्री रैवते निर्मितसत्यपात्रः केनोपमानस्त्विह सोऽश्वराजः  
॥ कलंकशंकामुपमान-
- १३ । मेव पुष्पाख्यो यस्य यशः शशांके ॥ ७ ॥ अनुजोऽस्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा  
स्वसाकेली
- १४ । आशा राजस्याजनि जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥ तस्याऽञ्जुत्तनयो जयो प्रथमकः  
श्री मल्लदेवोऽपरश्च
- १५ । चञ्चमरीचिमण्डलमहाः श्री वस्तुपालस्ततः । तेजःपालइति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र  
तुर्यः स्फुरच्चा-
- १६ । तुर्यः समजायंतायतमतिः पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥ श्री मल्लदेव पौत्रौ लीलू सुत  
पुण्यसिंह तनुज-
- १७ । न्मा ॥ आढ्यदेव्या जातः पृथ्वीसिंहाख्ययाऽस्ति विख्यातः ॥ १० ॥ श्री वस्तुपाल  
सचिवस्य गेहिनी देहिनीव ग-
- १८ । हलह्वीः ॥ विशदतरचित्तवृत्तिः श्री ललितादेवी संज्ञास्ति ॥ ११ ॥ शीतांशुप्रतिवीर  
पीत्रर यशा विश्वेऽत्र
- १९ । पुत्रस्तयो विख्यातः प्रसरद्गुणो विजयते श्री जैत्रसिंहः कृती ॥ लक्ष्मीर्यत्करपंकज  
प्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन



- १० । सा प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरहः स्नानेन दानंजसा ॥ १२ ॥ अनुपमदेव्यां पत्न्यां श्री  
तेजःपाल मन्त्रिचित्तकस्या ।
- ११ । लावण्यसिंह नामा धाम्नां धामायमात्मजो जज्ञे ॥ १३ ॥ नाचूवन्कति नाम संति  
कतिनो नो वा जत्रिष्यन्ति के किं-
- १२ । तु कापि न कापि संधयुरुषः श्री वस्तुपालोपमः ॥ पुण्येषु प्रहर्षहर्षिणामहो सर्वा-  
जिसारोद्धुरो येनायं वि-
- १३ । जितः कलिर्विदधना तीर्थेशयात्रोत्सवं ॥ १४ ॥ लक्ष्मीधर्माङ्गयागेन स्थेयसीतेन न-  
न्वता ॥ पौषधालयमालायं (लेग्यं)
- १४ । निर्म्ममेन विनिर्म्ममे ॥ १५ ॥ श्री नागेन्द्रमूनीन्द्रगण्डतरणिर्जज्ञे महेन्द्रप्रजोः पदे  
पूर्वमपूर्ववाञ्छयनि-
- १५ । धिः श्री शांति सूरिगुरुः ॥ आनन्दामरचन्दसूरियुगलं । तस्मादचूतत्पदे पूज्य श्री  
हरिचन्द्र सूरि गुरवोऽचूवन् जु-
- १६ । वो चूषणं ॥ १६ ॥ तत्पदे विजयसेन सूरयस्ते जयन्ति जुवनैकचूषणं ये तपोज्वलन  
चूविचूतिजिस्तेजयन्ति
- १७ । निजकीर्त्तिदर्पणं ॥ १७ ॥ स्वकुलगुरुगण्डिरेषः पौषधशालामिमाममात्येन्द्रः ॥ पित्रोः  
पवित्रहृदयः पुण्यार्थ
- १८ । कदम्बामास ॥ १८ ॥ वाग्देवतावदनवारिज ( मित्र ) सामद्वैराज्यदानकलितोरुयशः  
पताकां चक्रे गुरोर्विज-
- १९ । यसेन मुनीश्वरस्य शिष्यः प्रशस्तिमुदयप्रन सूरिरेतां ॥ १९ ॥ सं० १२०१ वर्षे महं  
श्री वस्तुपालेन कारित पौषध-
- २० । शालाख्य धर्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि० रावदेव सुत श्रे० मयधर । जा० सोजाउ जा०  
धारा । व्यव० वेलाउ विक्रम श्रे० पूना
- २१ । सुत बीजावेड़ी उदयपाल । उ आसपाल । जा० आदृण उ गुणपाल ऐतैर्गोष्ठिकत्वमं-  
गीकृतं ॥ एजिर्गोष्ठिकैरस्य धर्मस्थानस्य



३२ । ....स्तम्भतीर्थे — कायस्थवंशेनाह ..... उद्वंकितः ..... सिपा ..... लिख ..... मिहच  
७० सु० .... सूत्रधार कुमारसिंहेनोत्कीर्णा ॥

शिक्षा लेख-जोंघरे के द्वार पर ।

[ 1704 ]

- १ । ॥ ए० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री विक्रम नृपात् संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री
- २ । स्तंभतीर्थनगर वास्तव्य ॥ ऊकेश ज्ञातीय ॥ आबूहरा गोत्रविज्ञूषण ॥ सौवर्णिक ॥ कलासु-
- ३ । त ॥ सौवर्णिक ॥ वाघा चार्या रजाई ॥ पुत्र ॥ सौवर्णिक वठिया ॥ चार्या सुहासिधि ॥ पुत्र । सौव-
- ४ । णिक ॥ तेजपाल चार्या ॥ तेजलदे नाम्न्या ॥ निजपति सौवर्णिक तेजपाल प्रदत्ताङ्ग-
- ५ । या ॥ प्रभूतद्रव्यव्ययेन सुभूमिगृहश्रीजिनप्रासादः कारितः ॥ कारितं च तत्र मूल-
- ६ । नायकतया स्थापनकृते श्रीविजयचिंतामणि पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्त-
- ७ । पागडाधिराज जट्टारक श्री आणंदविमल सूरि पट्टालंकार ॥ जट्टारक श्री विजयदा-
- ८ । न सूरि तत्पट्टप्रज्ञावक सुविहितसाधुजनध्येय सुगृहितनामधेय ॥ पात ॥
- ९ । साह श्री अकबरप्रदत्तजगद्गुरुविरुद्धारक जट्टारक श्री हीरविजय सूरि
- १० । तत्पट्टोदयशैलसहस्रपाद ॥ पातसाह । श्री अकबरसत्तासमक्षविजितवा-
- ११ । दिव्यदसमुद्भूतयशः कर्पूरपूरसुरजीकृतदिग्वधूवदनारविन्द जट्टारक श्री विजय-
- १२ । सेन सूरिजिः ॥ क्रीडायातसुपर्वराशिरुचिरो यावत् सुवर्णाचलो ॥ मेदिन्यां ग्र-
- १३ । ह्मण्णं च वियति ब्रह्मोडुमुख्यंलशत् ॥ तावत्यत्रगताघृसेवितपद श्री पार्श्वना-
- १४ । यप्रजो ॥ मूर्ति श्री कलितोऽयमत्र जयतु श्रीमङ्गिनेन्द्रालयः ॥ १ ॥ धः ॥ : ॥





# पोसिना-भरुअछ ।

शिला लेख

[ 1795 ] \*

- १ । प्राग्वाटवंशे श्रेष्ठ ठहड येन श्री जिन- २ । जड सूरि सङ्गपदेशेन पादपरा ग्रामे उं-  
 ३ । दिरवसहिका चैत्यं श्रीमहावीर प्रनिमा ४ । युतं कारितं । तत्पुत्रौ ब्रह्मदेव शरणदे-  
 ५ । वौ । ब्रह्मदेवेन सं० १३७५ अत्रैव श्रीने- ६ । मि मंदिर रंगमंडपे दाढ़ाधरः कारितः  
 ७ । श्रीरत्नप्रजसूरि सङ्गपदेशेन तदनुज श्रेष्ठ ८ । शरणदेव जार्या सूहवदेवि तत्पुत्राः श्रेष्ठ

ए । वीरचंद्र पासड । आंबड रावण । यैः श्री पर-

१० । मानन्द सूरिणामुपदेशेन सप्ततिशततीर्थ का-

११ । रितं ॥ सं० १३१० वर्षे । वीरचंद्र जार्या सुषमिणि

१२ । पुत्र पूना जार्या सोद्दग पुत्र लूणा जांऊण आं-

१३ । षड पुत्र बीजा खेता । रावण जार्या हीरू पुत्र बी-

१४ । डा जार्या कामल पुत्र कडुआ ॥ छि० जयता जार्या मूं-

१५ । ठा पुत्र देवपाल । कुमरपाल । तृ० अरिसिंह जाण

१६ । गडरदेवि प्रभृति कुटुम्बसमन्वितैः श्री परमा-

१७ । नन्द सूरिणामुपदेशेन सं० १३३० श्री वासुपूज्य

१८ । देवकुलिका । सं० १३४५ श्री संमेतशिषर-

१९ । तीर्थ मुख्यप्रतिष्ठा महातीर्थयात्रां विधाप्या-

२० । तमजन्म एवं पुण्यपरंपरया सफली कृतः

२१ । तदद्यापि पोसिना ग्रामे श्री संघेन पूज्यमान-

२२ । मस्ति ॥ शुभमस्तु श्री श्रमणसंघप्रसादतः ॥



\* भरुअछ से ६ मैल दूर पर 'पोसिना' ग्राम में जैन मन्दिर के शैलजी की मूर्ति के निचे पत्थर पर यह लेख है ।



# उना-काठियावाड़ ।

जैन मन्दिर-शाहवाला वाग ।

शिक्षा लेख ।

[ 1796 ] \*

- १ । उं स्वस्ति श्री सं० १६५१ वर्षे कार्तिक वदि ५ बुधे
- २ । येषां जगद्गुरुणां संवेगवैराग्यसौजाग्यादिगुणगण-
- ३ । श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पातिसाहि श्री अकब्बराजि-
- ४ । धानैः गूर्जरदेशात् दिह्लामण्डवे सबहुमानमाकार्य धर्मोपदेशा-
- ५ । कर्णनपूर्वकं पुस्तककोशसमर्पणं कावराजिधानमहासरोमल्यव-
- ६ । धनिवारणं प्रतिवर्षं षाण्मासिकामारिप्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंजयतीर्थे मुं-
- ७ । डकाजिधानकरनिवर्त्तनं जीजियाजिधानकरकर्त्तनं निजसकलदेशे दा-
- ८ । णमृतं स्वमोचनं सदैव बूंद(?)ग्रहणनिवारणं सत्यादिधर्मकृत्यानि सकल-
- ९ । लोकप्रतीतानि कृतानि प्रवर्त्तं तेषां श्री शत्रुंजये सकलदेशसंघयुतकृत-
- १० । यात्राणां जाड्रपदशुक्लैकादशीदिने जातनिर्वाणं शरीरसंस्कारस्थानासन्न-
- ११ । कलितसहकाराणां श्री हीरविजय सूरिश्चराणां प्रतिदिनं दिव्यनाथनाद-
- १२ । श्रवण दीपदर्शनादिकैर्जाग्रत्स्वजावाः स्तूतसहिताः पाडुकाः कारिताः पं०
- १३ । मेघेन चार्या चारुकी प्रमुखकुटुम्बयुतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागन्धाधिराजैः ज-
- १४ । हारक श्री विजयसेन सूरिजिः उ० श्री विमलहर्षगणि उ० श्री कल्याण-
- १५ । विजय गणि उ० श्री सोमविजय गणिजिः प्रणताजव्यजनैः पूज्यमानाश्चि-
- १६ । रं नंदंतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्मानन्दगणिना । श्री उन्नतनगरे शुभं भवतु ॥



\* 'उना' का प्राचीन नाम 'उन्नत नगर' था । यह शिलालेख मन्दिर के ७ देहरी में पश्चिम तर्फ से पहली देहरी का है ।



- ( १ ) ॥ ए० ॥ स्वस्ति श्री प्रणयाश्रयः शिवमयः श्री वर्द्धमानाह्वयस्तीर्थेशश्चरमो वञ्चूव  
जुव-
- ( २ ) ने सौजाग्यजोग्यैकजूः । नंदीश प्रथमोपि पंचमगतिः ख्यातः सुधर्माग्रणी । जङ्गे  
पंचमपंचमः शमव-
- ( ३ ) तां नियथं १ गोत्रेग्रणी ॥ १ ॥ श्री कौटिक २ वनवासिक ३ चष्टू ४ वृद्धजठ ५ सत्तपा  
६ क्रमतः । तदा
- ( ४ ) गच्छानां संज्ञाजातास्तपगव्यस्तथाऽचूत् ॥ २ ॥ प्राणचूदितिपालजालविलसत्कोटीर-  
हीरस्फुरज्यो-
- ( ५ ) तिर्जालजलाजिषेकविधिना (जा)तांबुपंकेरुहः ॥ चि(हु)पावलिहीरहीरविजयाह्वानः  
प्रधान प्र-
- ( ६ ) जुः श्रामण्येकनिकेतनतनुभृताम् कल्याणकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥ तदादेशवाक्यैः सुधा-  
सारसारै । मुदा
- ( ७ ) कव्वरः पातिसाहिः प्रबुद्धः । स्वदेशेऽखिले जीवहिंसा न्यवारीदमुंचत्करं चापिशत्रुं-  
जयाज्यैः ॥ ४ ॥
- ( ८ ) तन्मध्योदपिशैलमौजिमहिमावर्षेसहस्रत्विषि । जातः श्रीविजयादिसेनसुगुरुः प्रज्ञाल-  
वालारुणः ।
- ( ९ ) येन श्रीमदकव्वरद्विपतिः घर्षयनेकद्विजान् ॥ निर्जित्यैव जयश्रिया सह महान्-  
श्रक्ने धिवाहो
- ( १० ) नवः ॥ ५ ॥ (त)त्पट्टे (सा)रगजमूर्द्धनि देवराज (सू)र्बिचूव जगवान् वि(जया-  
ददे)वः । य(स्या)त्रसत्यवचना-
- ( ११ ) दनले तपोर्कः साक्ष्मजौ क्रमतडुस्तपसां वि(ना)शी ॥ ६ ॥ सम्यग् निशम्य च  
यदीय यशःप्रशस्तिमा-
- ( १२ ) हवतद्गुणगणस्यदिदृक्ष्यैव । सूरैर्महातपइतिप्रथितं विरुद्धं श्रीपातिसाहिरकरोत्स-  
सखेमसाहि



- ( १३ ) ॥ ७ ॥ यस्याद्याप्युपदेशपेशलरसद्रोणंजगत्सिंहजीः संवृद्धः सरसोर्धिसारविसरे  
मारीन्यावारीत्ततः ॥
- ( १४ ) [सं]व्यूढां गुणरागरंगललितैः कीर्त्तिस्त्रिलोकोन्नमश्रांतां स्थानविधानतोऽनुरंमते  
किंकिरपिंडिध्वलात् ॥
- ( १५ ) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]मुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्जोऽज्यप्रतिमः प्रबोध्य  
सूरजीरारंजतो मोचयन्
- ( १६ ) तद्वत् श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्थापयेदग्निपातनपरो  
धर्म सपक्षंगतः ॥
- ( १७ ) ॥ ८ ॥ एवं विह्व्यनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य .... । श्रीमज्जिन-
- ( १८ ) .... क्तो .... चय मूर्त्तिरिति .... मूर्त्तिः सकलरात्रौ ध्वजरूपमूच्चैः ॥ १० ॥ पूज श्री  
मालि कुलोप-
- ( १९ ) रा जरण .... यो ... नामतिनामा । ... र्मनाः ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजइन्द्रो पवि-
- ( २० ) .... श्रीमालि विमलकुलांबुज .... माली । विश्वातिशायियशसाजिनपूर्णचन्द्रः श्री  
राजवं-
- ( २१ ) ... तिस... रि . त प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाय... पूर्वस्वद्रव्यस्यसफ-  
लीकरणाय श्री विजया-
- ( २२ ) दि सूरीश्वराः श्री गूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रियस्या-  
पिप्रचूर्णामहामहसां
- ( २३ ) .... कारिता ॥ ततश्च सं० १७१३ वर्षे आषाढ शुद्धैकादशी तिथौ । जट्टारक श्री  
विजयदेवसूरी-
- ( २४ ) श्वराणां स्व .... मुषापाडुकास्तूपोयं ..... श्रीवासणात्मजेन वाई पातली जन्मना  
शोरायचन्द्र
- ( २५ ) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१३ वर्षे माघमास सितपञ्चमी तिथौ महा  
महोत्सवेन ।



- ( १६ ) सूरः श्री विजयादिदेवसुगुरोः पट्टाब्जसूर्याश्रयः सूरि श्री विजयप्रज्ञाव्यदधत श्रेष्ठा प्रतिष्ठा-
- ( १७ ) मिमां श्रीमद्वाचकरान् विनीतविजयैः शांत्याह्वयैः पाठकैर्युक्ताश्चारुयशोचराः प्रतिम-
- ( १८ ) या वाचस्पतेः सन्निराः ॥ १३ ॥ तथा साधु श्री नेमिदासेन तथा साधु वाघजीकेन त्रिनोप्रमेन का
- ( १९ ) रितः । कृतश्चायं हरजीनाम्ना शिद्धिपना । मुहूर्त्तदातातु अत्र उन्नतपुरवास्तव्य जट्ट-  
गुसांई
- ( २० ) पुत्र जट्ट रणढोड़ नामा ॥ श्रीछीपवंदरवास्तव्यसंघजातिव्याजे जीयतां श्रीदेव-  
विहारजा
- ( २१ ) गः स्तूपरूपः ॥ श्रीमत् श्रीविजयादिदेवगणभृत्पट्टोदयोष्कृतेः । सूरः श्री विजय-  
प्रज्ञस्य क-
- ( २२ ) रुणादृष्ट्या प्रकृष्टोदयः ॥ विष्टद्रूपमणीकृपादिविजयां तेवासिमेणाह्वयो । छेस्यदेव-  
विहार ....
- ( २३ ) विदिते स्तूपप्रशस्ति श्रिये ॥ १४ ॥ इति प्रशस्ति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥



## बम्बई ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—बालकेश्वर ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[ 1798 ]

सं० १४०० वर्षे श्री श्रीमास झा० पं० राणा जा० रूपादे सुत आसाकेन स्वमातृश्रेयसे  
आगमगच्छे श्री जयानन्दसूरीनामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारितं श्री सूरिजिः ।  
शुभं भवतु ॥



( २०४ )

चौविंश। पर।

[ 1799 ]

सं० १७६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ गुरौ स्तम्भतीर्थ बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध-  
शाषीय वे। मेघराज ज्ञा० वैजकुञ्जार सुत सूसगलेन स्वद्रव्येण श्री शांतिनाथ चौविंशी  
पट्ट कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे ज० श्री विजयप्रज्ञ सूरि पट्टे सविज्ञादीय ज० श्री ज्ञान-  
विमलसूरिजिः।

घरदेरासर - गामदेवी, वाचागांधी रोड।

चौविंशी पर।

[ 1800 ]

संवत् १८१५ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे मोढ ज्ञातीय ठकुर वरसिंह जार्या चांपू सुत  
ठकुर मूलू जार्या कीबाई सुत ठकुर मधुरेण जार्या संपूरी प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयार्थ  
श्री अजिनन्दननाथादि चतुर्विंशतिपट्टः श्री आगमगच्छे श्री जयचन्द्रसूरिपट्टे श्री देवतन  
गुरुपदेशेनकारितः प्रतिष्ठापितश्च ॥ श्री स्तम्भतीर्थवास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥



## सिरपुर-सागर ( सी. पी. )।

शिला लेख।

[ 1801 ]

- १। उं ॥ स्वस्ति श्री सं० १३३४ वर्षे वेशाख सुदि १ बुधदिने श्रीवृद्धगच्छे सा० प्रह्लादन  
पुत्र सा० रत्नसिंह कारितः श्री शांतिनाथ चैत्ये सा० समधा पुत्र महर्ष जार्या  
सोहिणी पुत्री कुम-
- २। रत्न श्राविकया पितामह सा० पूना श्रेयसे देवकुलिका कारिता ॥





( १०५ )

## श्री सम्मैत शिखर ।

टोंक पर के चरणों पर ।

[ 1802 ]

॥ श्री कृष्णानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[ 1803 ]

॥ श्री चंद्रानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[ 1804 ]

॥ श्री वारिषेण जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[ 1805 ]

॥ श्री वर्द्धमान जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[ 1806 ]

- ( १ ) संवत् १९३१ माघ । शु । १० । चंद्र श्री चंद्रप्र
- ( २ ) जु जिनेन्द्रस्य चरण पादुका । मन्त्रधार पूर्णिमा ।
- ( ३ ) श्री मद्भिजयगङ्गे । ज । श्री जिन शान्ति सागर सू ।
- ( ४ ) रिजिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं । श्रयसेस्तु ।
- ( ५ ) श्री संघेन कारापिता ।

[ 1807 ]

- ( १ ) संवत् १९३९ मिति माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ ।
- ( २ ) बुधवारे श्री पार्श्वनाथ जिनस्य चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण ।
- ( ३ ) श्री बृहत् खरतर गङ्गीय । जंगम । युग प्रधा
- ( ४ ) न जट्टारक । श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितः श्रीरस्तु ॥



( १०६ )

[ 1808 ]

- ( १ ) संवत् १९४३ का मि । पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन साधु संख्या पाहुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पाहुका  
( २ ) खरतर गढे मढो श्री दानसागरजी । गणिः तत् शिष्य पं । हित वल्लभ मुनिना प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तर्गत मांडस वास्तव्य.....  
( ३ ) वीर सोजाग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प  
( ४ ) रि स्थापितं ॥

१। श्री कृष्ण १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २। श्री अजित १००० साधु सुं  
३। श्री संजव १००० साधुसुं ४। श्री अन्ननंदन १००० साधुसुं ५। श्री  
सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रज ३०० साधुसुं ७। श्री सुपार्श्वनाथ ५००  
साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रज १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १०।  
श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज्य  
६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ९००० साधुसुं  
१५। श्री धर्म १०० साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १०००  
साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। श्री  
मुनिसुव्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६  
साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी  
पावापुरी ॥

[ 1809 ]

॥ सं । १९४९ माघ शुक्लवारे श्री समेत शेष्यस्य पर्वतोपरि जडय जीवस्य दर्शनार्थ  
श्रीमत् आदिनाथस्य चरण पाहुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादुरेण का० प्र०  
श्री विजयराज सूरि तपागढे ॥

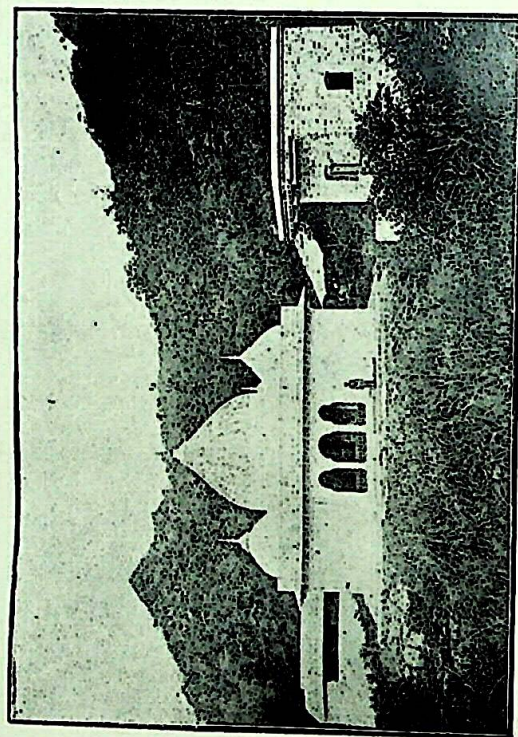
[ 1810 ]

- ( १ ) सं । १९३५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी









TIRTHA SAMMET SIKKHAR—Jalandhira.



( १०७ )

- ( १ ) पंच कल्याणक चरण न्याम मकसुदावाद वास्तव्य डुगरु साः प्रतापसिंह  
( ३ ) जाजा महताव कुमार ज्येष्ठ सुन लक्ष्मीपनस्य कनिष्ठ ज्ञान धनपत सिंह  
( ४ ) कारागितं प्रतिष्ठितं जः श्री जिनहंस सूरतिः बृहत्खरतरगच्छे ॥

[ 1811 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नेमनाथ जिन तीन कल्याणक रेवत ..  
( २ ) जवता तस्य चरण न्यामः समत शिवरे स्थापिता मकसुदावाद अजीमगंज  
( ३ ) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह जाजा महताव कुमार सुन लक्ष्मीपत कनिष्ठ ज्ञाता  
( ४ ) धनपत सिंह कारागितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी ज. श्री जिनहंस सूरतिः खरतर गच्छे  
( ५ ) बृहत् खरतर गच्छे ॥

[ 1812 ]

- ( १ ) ॥ सं १९३४ श्री फाटगुण वदि ५ श्री वार वर्धमानजी का चरण पाडुका मकसुदा  
( २ ) वाद वासी राय धनपत सिंह डुगडने स्थापित किया था सो उसको उन्नी बिजली  
( ३ ) उपद्रव सु गिरगइ उसपर सं १९६५ के फाटगुण सुदी ६ को कछ मांडवी वासी  
( ४ ) साः जगजीवन वालजी ने जीरण उभार कराइ ।

जल मंदिर ।

पाषाण की मूर्तियोंपर ।

[ 1813 ]

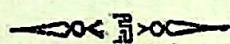
- ( १ ) ॥ संवत् १९३२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मकसुदावाद वास्तव्य साजसुखा  
गोत्रीय आसवंस झार्ती  
( ४ ) य वृद्धशाखायाम् ॥ लालचंद मुत सुगलचंदेन श्री मद्गुरुणा उपदेशात् आत्म से  
शेयार्थ च श्री समेत शैल  
( ३ ) श्री जैन विहारे श्री सहस्र फणा पार्श्व जिन बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहि-  
तामणीजिः सकल सूरिवरैः ॥ मंगल ॥



( १७५ )

[ 1814 ]

- ( १ ) ॥ सं १७११ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुगे श्री मगसुदाबाद वास्तव्य साधुसुखा गोत्रीय  
आमवस इतीया  
( २ ) बृद्धशाखायां सा सुगलचंद जार्यया केसरकया आत्म संश्रयेय्य श्री समेत गिरो  
श्री जैन विहार श्री सं-  
( ३ ) जवनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहिताग्रणीजिः । सकल सूरिजिः ॥ इति  
मंगलं ॥



## मधुवन ।

जगतसठजी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1815 ]

॥ सं १७११ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुगे सा सुगलचंदेन श्रीपार्श्व विंबं कारापितं । प्र  
सकल सूरिजिः ।

[ 1816 ]

- ( १ ) संवत् १७११ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुगे मग ..... इतीया बृद्ध शाखायां सा  
रूपचंदजी सुन लखमीचंदजी  
( २ ) सुत लालचंदजी माता मद कपूरचंदजी ..... देत स्वश्रेयेय्य श्री समेत गिरो  
श्रीजन वि  
( ३ ) हार श्री पार्श्व जिन विंबं कारापितं .....

[ 1817 ]

॥ संवत् १७११ वैशाख सुदि १३ गुगे श्री खरतर गढ आचार्यीय सा जीमजी सुत  
सा निहलचंदन पं ..... कारापितं ॥



( १७९ )

[ 1818 ]

॥ सं० १८२७ शाके १६९३ । प्रवर्तमाने वैशाख सुदि द्वादशी तिथौ । भृगुवारे  
ओसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां ॥ आदि गोत्रे । सा० कृष्णदास तन्त्रार्या गुलाबकुथर सहितेन  
श्रेयोर्थ । कायोत्सर्ग मुद्रास्थित सहस्रफलालंकृत श्री पार्श्वनाथ विं वं कारितं ॥

[ 1819 ]

॥ सं० १८२२ [ ? ] वैशाख सु० १३ गुरौ श्री गह्विखडा गोत्रीय साह कस्तुरचंद ॥

धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्ति पर ।

[ 1820 ]

॥ संवत् १८२५ माहा सुदि ३ सा । सुगलचंदेन श्री धरणेन्द्र पद्मावत्या कारापिता प्र  
तपागच्छे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

शिक्षालेख ।

[ 1821 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १८७९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गो-  
( २ ) डी पार्श्वनाथस्य द्विचूनि युक्त चैत्यं । श्री बालूचर वास्त-  
( ३ ) व्य दुर्गरु गोत्रीय । श्री प्रतापसिंघेन कारित । प्रतिष्ठा-  
( ४ ) तं च श्री खरतर गणेशाः जं । यु । ज । श्री जिन हर्ष सूरि-  
( ५ ) णामुपदेशात् । उ । श्री कृमाकल्याण गणीनां शिष्येणेति

पाषाण की मूर्तियोंपर ।

[ 1822 ]

( १ ) ॥ सं० १८७८ माघ सुदि ५ सोमे श्री गवडी पार्श्वनाथ जिन विं-



- ( १ ) बं कारितं ओसवंशे दुगड गो । प्रतापसिंहेन । प्र । वृ । ज । खरतर ग-  
 ( ३ ) हाधिराज श्री जिनचंद्र सूरि . . . स्थितैः ।

[ 1823 ]

॥ श्री गोडी पार्श्व जिन विं ॥ ( ॐ ) ॥ संवत् १८३३ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ । चंद्रे  
 जीर्णोद्धाररूपा । विजय गह्वे । जट्टारक श्री पूज्य श्री जिन शान्तिसागर सूरिभिः  
 प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

पाषाण के चरणों पर ।

[ 1824 ]

- ( १ ) संवत् १८०८ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गौडी पार्श्वनाथ चैत्ये विंशति  
 जिनेश्वराणां चरण न्यासाः श्री बालूचर नगर वास्त  
 ( २ ) व्य दुगड गौत्रीय साह श्री प्रताप सिंहेन कारिताः प्रतिष्ठिताश्च । श्री मद्रहखरतर  
 गह्वेशाः जंग-  
 ( ३ ) म युग प्रधान जट्टारकाः श्री जिन हर्ष सूरिश्वराणामुपदेशात् उपाध्याय पद शो-  
 जिता । श्री कृमाकल्याण गणीनां शि-  
 ( ४ ) व्य प्राज्ञ ज्ञानानंदेन पं । आनंदविमल पं । सुमति शेखर सहितेनेति । श्रेयार्थं ।  
 सम्यक्त वृद्धार्थं च ॥  
 ॥ श्री अजितनाथजी १ ॥ श्री संजवनाथजी ३ ॥ श्री अन्ननंदन नाथ जी ४ ॥  
 श्री सुमति नाथ जी ५ ॥ श्री पद्मप्रत जी ६ ॥ श्री सुपार्श्वनाथ जी ७ ॥ श्री  
 चंद्रप्रजजी ८ ॥ श्री सुविधिनाथ जी ९ ॥ श्री शीतल नाथ जी १० ॥ श्री श्रेयांस  
 नाथ जी ११ ॥ श्री विमल नाथ जी १२ ॥ श्री अनंत नाथ जी १३ ॥ श्री धर्म  
 नाथ जी १४ ॥ श्री शान्ति नाथ जी १५ ॥ श्री कुंथुनाथ जी १६ ॥ श्री अरनाथ  
 जी १७ ॥ श्री मल्लिनाथ जी १८ ॥ श्री मुनिसुव्रत नाथ जी १९ ॥ श्री नमिनाथ  
 जी २० ॥ श्री पार्श्वनाथ जी २१ ॥



पाषाण के चरणों पर ।

[ 1825 ]

- ( १ ) ॥ संबत् १९३१ ॥ माघे ॥ शुक्ला ए । चंद्रे । गोतम स्वामी ॥  
 ( २ ) चरण पाडुका कारापिता ॥  
 ( ३ ) मुनि गोकल चंद्रेण  
 ( ४ ) जट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिजिः । प्रतिष्ठितं ॥ श्री विजय गच्छे ॥

[ 1826 ]

- ( १ ) ॥ संबत् १९३३ मिति माघ शुक्ल ११ अजिनंदन जिन पाडुकामिदं मक्  
 ( २ ) सूदावाद वास्तव्य ओशवंशोय लुंपक गणोमानाक् डुगड गोत्रीय बाबु  
 ( ३ ) प्रतापसिंहस्य चार्या महतात्र कुमारिकस्थ वृद्ध पुत्र राय बहादुर  
 ( ४ ) लठमीपत सिंहस्य लघु ज्ञातृ रा । धनपत सिंघेन करापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिणा ॥

कानपुरवालों का मंदिर ।

शिलालेख ।

[ 1827 ]

॥ सं १९४३ का वर्षे शाके १८०८ प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां बुधे  
 श्रेष्ठी श्री सिखरूप मल्ल तादात्मज जंडारी श्री रघुनाथ प्रसाद तद्गार्या श्री बदामो बीबी  
 तथा कारितं श्री पार्श्वजिन मंदिरं महोत्सवेन स्थापना कारापिता श्री शिखर गिरि मधु-  
 वने बृहद्भिजयगच्छे सार्वभौम जट्टारक श्री जं. यु. प्र. श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर  
 सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रेयसे । ( इसके बाई ओर एक पंक्ति में ) श्री मत्तपागछाधिराज जट्टारक  
 श्री १०८ श्री विजयराज सूरि राज्ये शुभं जवतु ।

मूर्तियों पर ।

[ 1828 ]

॥ सं० १८५४ वर्षे माघ वदि ५ चंद्रे श्री मत्तखरतर पीपल्या गढे श्री जिनदेव



( १११ )

सूरीश्वर राज्ये ओतवंस वृद्ध शाखायां सा पानाचंद श्री पार्श्वजिन विंबं ..... बेन प्रति .....

[ 1829 ]

॥ सं. १८०५ शाके १७६८ वदि ५ भृगौ सीपोर वास्तव्य सा. र ( त ) न चंद तन्नार्या जीजा वाइ तत्पुत्री बेन नवल स्वश्रेयोर्थ श्री चंद्रप्रज विंबं ॥ कारापितं तपागळे जहारक श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

लाखा कालीकादासजी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1830 ]

॥ १८१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री सुपार्श्वनाथ जिन विंबं प्रतिष्ठितं खरतर गळे श्री जिनहर्ष सूरिणां पट्ट प्रजावक .....

[ 1831 ]

॥ सं. १८१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री वासुपूज्य जि विंबं प्रतिष्ठितं ज । श्री जिन महेन्द्र सूरिजिः कारितं च श्री .....

[ 1832 ]

॥ सं० १८१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री धर्मनाथ विंबं प्रतिष्ठितं खरतर गळे श्री जिन हर्ष सूरिणां पट्ट प्रजावक .....

पाषाण की पंचतीर्थी पर ।

[ 1833 ]

॥ सं० १८३१ वर्षे माघ मासे शुक्ल पदे १२ बुधे श्री पंचतीर्थीय जिन विंबं. वेलुयुतो गोत्रे लाखा कालीकादास तन्नार्या चत्री बीबो तथा कारितं मलधार पूर्णिमा श्री मद्रिजय गळे ज । श्री पूज्य श्री शांति सागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥



( ११३ )

चंद्रप्रभुजी का मंदिर

मूर्तियों पर ।

[ 1834 ]

॥ सं. १८०८ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रप्रभु जिन विंभं कारितं ओसवंसे नवलखा  
गोत्रे मोटामल पुत्र यश रूपेन प्र । बृहत् खरतर ग । श्री जिनाद्दे सूरि चरणकज चंचरीक  
श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

पाश्वनाथ जी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[ 1835 ]

॥ सं. १६९६ मिति फालगुण शुक्ल १३ . . . . .

[ 1836 ]

॥ सं. १८९९ वै । शु । १५ श्री पार्श्व विंभं प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा गोलवछा महता  
बोजानी मूलचंदेन धर्मचंदेन कारितं कास्यां बृहत् खरतर गणे

[ 1837 ]

॥ सं. १८९९ वै । शु । १५ श्री चंद्रप्रभु विंभं प्र । श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं....

[ 1838 ]

॥ सं. १८९९ । वै । शु । १५ श्री चंद्रप्रभु विंभं प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा कारितं माल-  
वस चैनसुखज कुंदन लालेन श्री . . . . .

पट्ट पर ।

[ 1839 ]

॥ सं. १८८५ मि । फालगुण सुदि १३ रवौ शिखर गिरौ श्री सिद्धचक्रमिदं प्रतिष्ठितं



( ११४ )

ज। श्री जिनहर्ष सूरिजिः श्री बृहत् खरतर गङ्गे कारितं दुः पुरणचंदेन सचार्यया स-  
पुत्रेण श्रेयोर्थं ।

[ 1840 ]

॥ संबत् १९५४ वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी चंद्रवासरे अमृत सिद्धि योगे राजनगर  
निवासि वायचाणा शा . . . जेचंदेन श्री तपागढ सूरेश्वर विजयसिंह सूरिणा . . . . .

सुज स्वामीजी का मंदिर ।

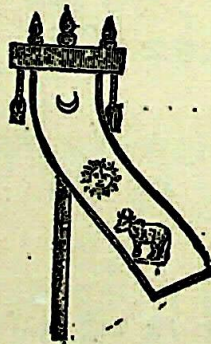
चरणों पर ।

[ 1841 ]

- ( १ ) सं. १८७५ मि । मार्गशीर्ष ए तिथौ रविवासरे  
( २ ) श्रीमच्छ्री जिनदत्त सूरिणां चरणपंकजानि  
( ३ ) वृ । ख । जं । यु । प्र । ज । जिनहर्ष । सू । प्रतिष्ठितानि ॥

[ 1842 ]

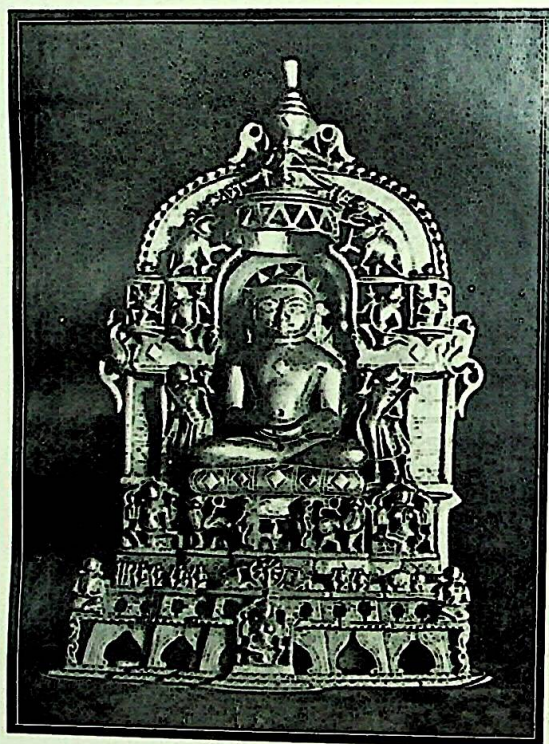
- ( १ ) ॥ सं. १८७५ । मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ए तिथौ रविवासरे  
( २ ) श्री सङ्गुणां पादो बृहत् खरतर ग  
( ३ ) हे । जं । यु । प्र । ज । श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥  
( ४ ) ॥ दादाजी श्री जितकुशल सूरिः











METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.  
Jain Swetambara Temple—Tirtha Rajgriha.  
Dated V. S. 1512 (A.D. 1455)



( ११५ )

## श्री राजगृह ।

गांव मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1843 ]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ उकेश सा० जादा चार्या जरमादे पुत्र सा० नायक  
चार्या नायक दे फदेकू पुत्र सा० अदाकेन जा० सोनाई चातु सा० जोगादि कुटुंबयुतेन श्री  
सुमति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ बढली वास्तव्यः ॥ श्री ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[ 1844 ]

सं० १९२० । म । का । कृष्ण २ बुधे दुगड प्रतापसिंह चार्या महताव कंवर श्री संती  
नाथ जिन बिंबं का० ॥

सफण मूर्ति पर ।

[ 1845 ]

संवत् १६२० आषाढ वदि २ । मित्रवाल वंशी षी ( वी ) सेरवार गोत्रीय सं० गनपति  
पु० सं० तारात पुत्र हेमराज पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे जिनजड  
सूरिजिः ॥ शुचमस्तु ॥

श्याम पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1846 ]

( १ ) ॥ संवत् १५०४ वर्षे फागण सुदि ९ महतीयाण वंशे व० देवसी पुत्र सं० जेयु  
बहनी लखाई चार्या बेणी । श्री शांति



( १ ) नाथ त्रिबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वा० शुचशील  
गणिजिः

चरण पर ।

[ 1847 ]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १७१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री चंद्रप्रज जिनवर  
चरणकमले शुजे स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य श्योसवंशे गांधी गोत्रे बुद्धाकिदास तत्पुत्र  
साह माणिक चंदेन षत्रीकुंडे कुंडघाटे जीर्णोद्धार करापितं ॥ १ ॥

वैजार् गिरि ।

चौथे मंदिर में ।

चरणों पर ।

[ 1848 ]

- ( १ ) संवत् १९३० वर्षे शाके १७०३ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे
- ( २ ) शुजे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशी गुरुवासरे . . . श्री व्यवहार
- ( ३ ) गिरि शिखरे श्री जिनचैत्यालये मूलनायक श्री
- ( ४ ) महावीर जिन चरणन्यासः प्रतिष्ठितं श्री तपागळे बृद्धवि
- ( ५ ) जय थापीतं ( झू ) साह बाहादरसंह प्रताप-
- ( ६ ) सिंह तत् पुत्र राय लठमीपत धनपतसिंग
- ( ७ ) बाहाद ( र ) जिरणोद्धार करापितं श्री रस्तु
- ( ८ ) ॥ प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १७७४ शा० १७३९ मासो
- ( ९ ) तमासे शुजे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पं-
- ( १० ) चम्यां तिथौ सोमवासरे श्री जिनचन्द्र
- ( ११ ) सूरिजी महाराज का० श्री ।



( ११७ )

[ 1849 ]

- ( १ ) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
- ( २ ) शुक्ले ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां तिथौ गुरुवासरे व्य-
- ( ३ ) वहार गिरिशिखरे श्री आद देव चरण न्या-
- ( ४ ) सः प्रतिष्ठितं बृद्धविज [ य ] गणी राय लठमिपत
- ( ५ ) सिंह धनपतसिंह जीरणोद्धार-
- ( ६ ) र करापितं श्रीरस्तु

[ 1850 ]

- ( १ ) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने
- ( २ ) मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
- ( ३ ) द्वादशम्यां गुरुवासरे श्रीव्यवहारगिरि शिखरे
- ( ४ ) श्री शांतिजिन चरणप्रतिष्ठा । प्रथम
- ( ५ ) श्री जिनहर्ष सूरिजिः बृद्ध विजयं प्रतिष्ठा
- ( ६ ) राय लठमिपत धनपत बा-
- ( ७ ) हादर जिरणोद्धार करापितं श्री
- ( ८ ) रस्तु

[ 1851 ]

- ( १ ) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने
- ( २ ) मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे
- ( ३ ) शुक्लपक्षे द्वादशम्यां गुरुवासरे
- ( ४ ) श्री व्यवहार गिरिशिखरे श्री नेमिजिन
- ( ५ ) चरणन्यास प्रतिष्ठ ( १ ) बृद्ध विजयगणि राय लठमिपति
- ( ६ ) धनपत संग जिरणोद्धार करापितं श्रीरस्तु ।



( ११८ )

[ 1852 ]

- ( १ ) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
- ( २ ) ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशम्यां तिथौ गुरुवासरे
- ( ३ ) श्री व्यवहार गिरिशिखरे
- ( ४ ) श्री पार्श्वनाथ चरणयनसः प्रतिष्ठितं वृद्धविज-
- ( ५ ) य गणि राय खडमिपत सिंह धन-
- ( ६ ) पत संग जिरणोद्धार करापीतं

ठठे मंदिर में ।

चरण पर

[ 1853 ]

- ( १ ) संवत् १९३८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
- ( २ ) द्वादशम्यां तिथि गुरुवासरे आदिनाथ जिन चरण-
- ( ३ ) न्यास प्रतिष्ठितं वृद्धविजय गणि प्रथ-
- ( ४ ) म जीरणोद्धार बूलाकिचंद तत् पुत्र माणिक
- ( ५ ) चंद जिरणोद्धार करापीतं छुति-
- ( ६ ) य जिरणोद्धार राय खडमिपति सं-
- ( ७ ) य धनपतसंघ करापितं । श्रीरस्तु

प । व्यवहारगिरी

बड़ी मूर्ति पर

[ 1854 ]

॥ संवत् १९०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने मइतियाण.....श्री पार्श्वनाथ विंब  
श्री खरतर गढे.....श्री जिनसागरसूरीणां निदेशेन श्री शुचशील गुणिजिः ॥



( ११६ )

खंडहर ।

पाषाण की मूर्तियों पर

[ 1855 ]

॥ अ० संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ए दिने महतीयाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज पुत्र सं० बीमराज पुत्र सं० जिणदासेन श्री महावीर विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गह्वे श्री जिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचनाचार्य शुजशील गणिजिः ॥

[ 1856 ]

- ( १ ) संवत् १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतीयाण वंशे वार्त्तिदिया (?) गोत्रे ठ० हरिपा  
 ( २ ) खेन चार्या लाडो पु० ठ० हरिसि । श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री  
 ( ३ ) खरतर गह्वे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाच  
 ( ४ ) नाचार्य शुजशील गणिजिः ॥

सोन जंडार ।

[ 1857 ] \*

निर्बाणलाजाय तपस्वियोग्ये, शुजे गूहेऽर्द्ध प्रतिमा प्रतिष्ठे ।  
 आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः, विमुक्तये ऽकारयदीर्घतेजः ॥

मणियार मठ ।

चरण पर

[ 1858 ] †

सं. १७३७ वर्षे मासे माह सुदी ५ तद्दिने श्रीओसवाल वंशे विराणी गोत्रे केशोदास तस्य  
 मोतुलालकस्य चार्या बीबी सताबो राजगृहे नागस्य शालिजङ्गीकस्य चरण स्थापितः ।

\* देखो—आर्किओलजिकल सर्वे रिपोर्ट्स—१९०५—०६ पृ० ६८

† " — " — " — " — पृ० १०३



( ३३० )

[ 242 ]

‘खुस्यालचंदस्य पत्नी’ के स्थान में ‘खुस्यालचंदस्य पीपाका गोत्रस्य पत्नी’ होना चाहिये । यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है ।

[ 244 ]

‘सा श्री हकु—’ के स्थान में ‘सा । श्री हकुमतराय—’ होना चाहिये ।

[ 256 ]

‘देवराज सं० बीमराज’ के स्थानमें ‘देवराज पुत्र सं० बीमराज’ होना चाहिये ।

संशोधित पाठ ।

[ 257 ]

॥ ओँ सं० १५३४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजयगज  
तदादेशे .... श्री कमलसंगमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचंद्र सूरि पाछु के प्र० का० श्रीमाल  
वं० जीषू पुत्र उ० बीतमल श्रावकेण श्री वैचार गिरो मुनि मेरुणा लि० ॥  
यह चरण गांव के मंदिरमें है ।

[ 258 ]

॥ सं० १५३४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंगमोपाध्यायैः  
धनाशालिजद्रमूर्ति ॥ प्र० का० उ० बीतमल श्रावकेण ।

[ 268 ]

“पत्नी महाकुमा-तस्या” के स्थान में “पत्नी महाकुमार्या तस्या” होना चाहिये ।





( ३२१ )

## पटना ।

शहर मंदिर ।

संशोधित पाठ ।

[ ३२३ ]

॥ संवत् १५४७ वर्षे वैशाख शुदि ३ मुन्नसंधे जट्टारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव  
राज पापडिवाल नित्य प्रणमति सर मंसासा श्री राजा सिवसिंह जी रावन्न.....।

[ ३२४ ]

संवत् १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ३ मुन्नसंधे जट्टारक श्री जिनचंद्र देवा साह जिवराज  
पापडिवाल सहर मंसासा श्री राजा सिवसंधंजी रावल.....।

दिगंबर मंदिर-धीया तमोली गली, सिटी ।

श्वेत पाषाण की मूर्ति पर ।

[ १८५७ ]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाट्गुण वदि २ श्री संडेर गढे ज० साह केदहा जार्या कस्तुरी पुत्र  
श्री देपाल ज्ञा० देवन्न दे पुत्र मोकन्न सहितेन श्री शीउन्न बिंनं का० प्र० श्री शांति सूरिजिः ॥

पटना-न्युजियम ।

संशोधित पाठ ।

[ ५५५ ]

संवत् । १७७४ । वर्षे शाके १७३९ । प्रवर्त्तमाने । शुक्ल ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां  
तिथौ । सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री ॥ शांति जिन चरणान्प्रतिष्ठितं ज । श्री  
जिनहर्ष सूरिजिः ।



( १११ )

[ 734 ]

॥ सं. १९११ व. सा. १७७५....शुचिः । शु. १० ति । श्री शानि जिन पादन्यासो प्र ।  
खरतर गढ जहारक श्री महेन्द्र सूरिजिः का । से । श्री उदेचंद चार्या माहा कुमार्थ्य श्रेण॥

## बनारस ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1860 ] \*

- ( १ ) औ संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ ( २ ) श्रीमाल वंशे [ ढोर ] गोत्रे व०  
( ३ ) सं० उदरव अजीतमल्ल चार्याया ( ४ ) पुत्र.....  
( ५ ) श्री सुमति नाथ बिंब का० ( ६ ) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...  
( ७ ) श्री जिनतिलक सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 1861 ] \*

- ( १ ) औ स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुष्यनक्षत्रे गुरौ श्रीमालवंशे ढोर  
गोत्रे सोवनपाल चार्या.....  
( २ ) .....आदिनाथ.....  
( ३ ) खरतर ग० श्री जिनहर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[ 1862 ] \*

- ( १ ) [ नर ] पाल चार्या । महुरी पुत्र व० जरतपाल....  
( २ ) सं० उदरव अजितमल्ल....

श्याम पाषाण की बोट्टी मूर्ति पर ।

[ 1863 ] \*

सं० १३७२ वैसाख वदि.....



( ११३ )

काले पाषाण की टूटी परकर के बांये तर्फ

[ 1864 ] \*

( १ ) ....ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्र वासरे । ब० द्वे. ....

( २ ) ..... । बिंबं कारितं ।

[ 1865 ] \*

( १ ) ॥ अँ ॥ सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ६ दिने श्रीमाल वंशे नांदी गोत्रे सं० नरपाल  
चार्या महू-

( २ ) री कारितं श्रीमहावीर बिंबं । श्री खरतर गढे प्रतिष्ठितं श्रीजिनसागर सूरिजिः ॥

मूलनायकजी पर ।

[ 1866 ]

सं० १९१७ शाके १७७३ मिति आषाढ कृष्ण २ श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जिन बिंबं प्रति-  
ष्ठिता कृता बृहत् खरतर जट्टारक गणेश जङ्गम यु० प्रधान जट्टारक श्री जिनमुक्ति सूरिजिः  
कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्द्रेण स्वश्रेयोर्य सोम वासरे ॥

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 1867 ]

सं० १९१७ शाके १७७३ मिति आषाढ कृष्ण २ सोमे श्रीवर्धमान जिन बिंबं प्रतिष्ठा  
कृता बृहत् खरतर जट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिजिः कारित च नाहटा  
गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्र पौत्र मनोरथचन्द्र श्रेयोर्यमिति ।

[ 1868 ]

सं० १९१७ शाके १७७३ मिति आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री ऋषभ देव जिन बिंबं प्रतिष्ठा

\* ये मूर्तियां हाल में जौनपुर से डेढ़ कोस पर गोमती के किनारे खेत से मिली हैं । बाबू शिवरत्न जी जोहरो ने लाकर  
अपने बनारस के मंदिर में रखी हैं ।



( ११४. )

कृता बृहत् खरतर जटारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिजिः कारिता च नाहटा  
गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज फूलचन्द्र श्रेयोर्थमिति ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[ 1869 ]

सं० १८६९ फा० सु० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्रसूरिणा कारिता नाहटा  
लक्ष्मीचन्द्र तत् चार्या लक्ष्मी बीबी विधत्ते ।

[ 1870 ]

सं० १८६९ फा० सु० ५ श्री सुपार्श्व बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिणा का० वा० लक्ष्मी-  
चन्द्र पुत्रो नानको नाम्ना बुद्धोत्तम श्री कुशलचन्द्र गणयुपदशतो बृहत् खरतर गठे ।

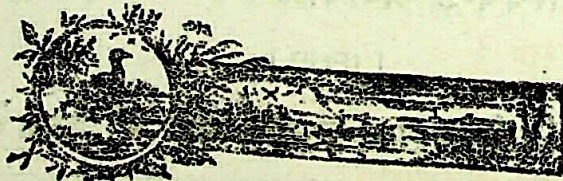
[ 1871 ]

सं० १८७० फा० सु० २ बुधे प्रतापसिंहजी चार्या महताब कुंवर कारितं श्री चन्द्रप्रज  
श्री सागरचन्द्र गणि प्रतिष्ठितं ।

सिद्धचक्र पर ।

[ 1872 ]

सं० १८७८ आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री सिद्धचक्रं प्रतिष्ठितं ज० यु० प्र० ज० श्री जिन  
मुक्ति सूरिजिः कारितं च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्देन स्वहितार्थं ।





( ११५ )

## देहली ।

खाला हजारीमल्लजो का घरदेरासर ।

देवी की मूर्ति पर ।

[ 1873 ] \*

- ( १ ) संवत् १११५ श्री                      ( २ ) पचासरीय (!) गळे  
( ३ ) श्रीमल्लवादि संताने              ( ४ ) चेष्टकेन विरोध्या कारिता ॥

चीरेखाने का मंदिर ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 1874 ]

सं० ११९९ ..... ।

[ 1875 ]

सं० ११३४ आष्वखू वदि २ सनौ जातु लीवूंदेव श्रेयोर्थ नागदेवेन प्रतिष्ठा कारिता  
प्रतिष्ठिता मल्लवादि श्री पूर्णचंद्र सूरिजिः ।

[ 1876 ]

सं० १४६१ वर्षे माघ सुदि १० नाहर वंशे सा० पेता पु० सा० तोला जार्या तिहुणश्री  
पु० हेमा धर्मार्ज्यां पितृव्य श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंब कारितं प्रति० श्री धर्मघोष गळे  
श्री मलयचंद्र सूरिजिः ॥ गिर .... ग ।

[ 1877 ]

संवत् १७०३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ ..... ।

[ 1878 ]

सं० १७७५ .... वदि ७ श्री ऋषजानन ..... ।

\* यह लेख १३ वीं विद्यादेवी की धातु की मूर्ति के पृष्ठ पर खुदा हुआ है । देवी की मूर्ति मुल्लासन में बँधी हुई सरे-  
बाहन चार हाथवाली प्राचीन है ।



( ३३६ )

चौवीशी पर ।

[ 1879 ]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाख सु० ३ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय सा० देवा जा० रामति सु० जेई  
आकेन जा० माणिकदे सु० डाहीयानाय पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं  
प्र० श्री वृहत्तपा पद्मे ज० श्री उदयसागर सूरिजिः ॥ गिर... ग ।



जोधपुर

राजवैद्य ज० श्री उदयचंद्रजी का देरासर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1880 ]

संवत् १५१६ बै० सु० ५ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मोषसी टमकू पु० जाणा हरखु पु० पुंजा  
रणसा० पाहु प० जिनदत्त युतेन श्री संजव बिं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिजिः ।



जसोल (मारवाड़) ।

पीछे पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 1881 ]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०..... श्री महावीर बिंबं..... खरतर श्री जिनचंद्र  
सूरिजिः ।



( ११७ )

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1882 ]

संवत् १४७६ वैशाख वदि १ श्री उकेशवंशे ठाजहड़ गोत्रे सा० पेता पु० आसधर पु०  
करमा जा० कूरमादे पु० जारमखेन जा० जरमादे पु० सहणा सादा यु० श्री आदिनाथ विं  
कारितं आत्मश्रेयसे प्रति० श्री पल्लोवाल गहे श्री यशोदेव सूरि ( जिः ) ।

[ 1883 ]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उकेश गहे श्री ककुदाचार्य संताने श्री उर-  
केश ज्ञातौ विंवट गोत्रे सं० दादू पु० सं० श्रीवत्स पु० सुखलित जा० ललतादे पु० साहण-  
केन जा० संसार दे युतेन पितरौ श्रेयसे श्री अजितनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक  
सूरिजिः ॥

[ 1884 ]

सं० १५१९ माघ सु० शुक्रे प्रा० व्य० मीचत जा० नासल दे पुत्र सूचाकेन जा० चामू  
मादही पु० मेरा तोलादि युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंयुनाथ विं० कारितं प्र० तपा श्री लक्ष्मी-  
सागर सूरिजिः ॥



नाकोडा ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर ।

पीले पाषाण के चरण पर ।

[ 1885 ]

संवत् १५१५ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने श्री वीरमपुरे श्री खरतर गहे श्री कीर्तिरत्न सूरिणां  
स्वर्गः ॥ तत्पात्रके संखवालेचा गोत्रे सा । काजल पुत्र सा० त्रिलोकसिंह पेतसिंह जिणदास  
गजडीदास कुसलाकेन करापितं । सं० १६३१ वर्षे मगसर सुदि १ दिने प्रतिष्ठितं ॥



( ११७ )

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1886 ]

सं० १४०५ वैशाख सुदि ३ ऊएस झातीय ठाजहड़ गोत्रे सा० गणधर जार्या बलनू पुत्र  
मोहण जयताकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथः कारितं प्रति० श्री अजयदेव सूरिजिः ।

[ 1887 ]

सं० १५१३ वर्षे माघ मासे ऊकेश वंशे सा० बढहा जा० सूडही पुत्र सा० बाहड़ जा० गजरी  
सुत डूंगर रणधीर सुरजनैः रणधीर श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री यशोदेव  
सूरिजिः ॥ ठाजहड़ गोत्रे ॥

[ 1888 ]

आँ संवत् १५३६ वर्षे श्री कीर्तिरत्न सूरि गुरुज्यो नमः सा० जेठा पुत्र रोहिनी प्रणमति ॥

—○\*○—

**बाड़मेर-मारवाड ।**

पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

[ 1889 ]

सं० १६६५ वर्षे उकेश वंशे सा० ठाकुरसी कु० प्र० क . . . . . प्रमुख श्री संघेन उ० श्री  
विद्यासागर गणि शिष्येण श्री विद्याशील गणि शिष्य वा० श्री विवेकमेरु गणि शिष्य पं०  
श्री मुनिशील गणि निरयं प्रणमति । श्री अंचल गहे ।

—:\*\*\*:—

**उदयपुर ।**

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर-सेठों की बाड़ी में ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1890 ]

॥ सं० १५०६ वर्षे मा० वदि ५ दिने श्री संडर गहे उ० सा० आसा पु० सात  
जा० पेठी पु० पितमा जा० धारू पु० जापर जा० लाडी पु० पामा स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ  
बिंबं का० प्र० श्री यशोव्रज सूरि संताने गहेशैः श्री शांति सूरिजिः ॥



( ११९ )

[ 1891 ]

॥ संवत् १६१८ वर्षे वैशाख सुदि ११ बुधे नारदपुरी वास्तव्य प्राग्वाट झातीय सा० टीका  
सुत सा० चूलाख्येन चार्या वाई पानु सुत लाधा हीता प्रभृति कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री  
धर्मनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं तपागढाधिराज नट्टारक श्री हीरविजय सूरिजिश्चिं  
नन्दतात् ॥

श्री कृष्णदेवजी का मंदिर—हाथीपोल ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 1892 ]

॥ सं० १३४२ ज्येष्ठ शु० ए गुरौ गेपुत्रौवाल(?) झातीय व्यव० पुनाकेन चार्या .. श्रेयसे  
श्री पद्मप्रज विंभं का० प्र० श्री सुमति सूरिजिः ॥

श्री कृष्णदेवजी का मंदिर—कसैरी गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1893 ]

॥ सं० १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ५ उपकेश झातीय.....श्री आदिनाथ विंभं का०.....

[ 1894 ]

॥ सं० १५३३ वर्षे वैशाख सु० ५ शुके श्रीमाल झा० व्य० मेला जा० ऊवकू सुत सुधा-  
केनपितृमातृजातु श्रेयोर्ष आत्मश्रेयसे श्री सुमति नाथ विंभं का० प्र० श्री नागेंद्र गढे श्री  
गुणदेव सूरिजिः ॥ बडेचा सपवाराही ग्रामे वास्तव्य ॥

[ 1895 ]

॥ संवत् १५५९ वर्षे आषाढ सुदि ८ दिने झूगड़ गोत्रे चार्या सिरिया पुत्र करमसो  
चार्या फुल्लो धरमाई पुत्र बीमपाल नरपाल नरपति मातृ श्रेयसे श्री शीतलनाथ विंभं का  
रितं प्र० श्री वृद्धज्ज्जे ज० श्री श्री बल्लज सूरिजिः ॥



( १३० )

[ 1896 ]

॥ सं० १५७१ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे ऊकशे वंशे वर्द्धताला गोत्रे सा० तोला जा० डीडो पु० सा० आसाकेन जा० राना दे पु० जीवा द्वितीय जा० अचला दे पुत्र गोडहा पदमादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थ श्री धर्मनाथ विंभं का० प्र० श्री खरतर गढे श्री जिनहर्ष सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥ पं० कुशल....सुप.... ।

श्री गौतमस्वामी की धातु की मूर्ति पर ।

[ 1897 ]

॥ सं० १६१९ व० का० सु० ३ गुरुवारे...सरताण...श्री गौतमस्वामि विंभं का०... ।

धातु के यंत्र पर ।

[ 1898 ]

॥ सं० १९१२ वर्षे मिती आसोज सुदि १५ शुके मेदपाट देशे उदयपुर ओशवंशे वृद्धि शाखायां गोत्र बोल्यां साहाजी श्री एकलिंग दासजी तत्पुत्र साहाजी श्री जगवान दासजी तत्पुत्र कुंवरजी श्री ..... श्री सिद्धचक्र यंत्र कारापितं जहारक श्री आनन्द सागर सूरि कारापितं बृहत्तपा गढे ।

श्री रुषजदेवेजी का मंदिर - सेठों की हवेली के पास ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1899 ]

( १ ) ॥ ओ ॥ स्वस्ति श्री रुद्रवृद्धि जयौ । मंगलाच्युदय श्री ॥ अथ संवहरेस्मिन् श्री मन्त्रपति विक्रमाकर्क समयातित संवत् १६९९ वर्षे श्री शालिवाहन राज्यात् शाके १५६४

( २ ) ॥ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले माघ मासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री रामगढ दूर्गे महाराजाधिराज महाराव श्री हठीसिंघ जी विजयराज्ये ऊपकेश वंशे वृद्धि शाखा



- ( ३ ) यां घांघ गोत्रे साह श्री माह्वण तत्तार्या सरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि जार्या दीपां लघु जार्या सूषम दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपात्र सहितेन श्री प्रासाद बिं
- ( ४ ) वं ॥ श्री ऋषजदेव बिंबं स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गळे जट्टारिक श्री महिमा सागर सूरी तत्पट्टे श्री कल्याणसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्री उदय सागर सूरिः । शुभं ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1900 ]

॥ ओ ॥ सं० १४९९ वर्षे फा० सुदि ३ दिने ओसवाल झातीय सा० जाऊण पु० सा० बुदा सुश्रावक जार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमालादि सहितेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं खरतर गळे श्री जिनजड सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1901 ]

॥ सं० १४९९ माह सुदि ६ सोमे उ० झा० गूंदोवा गोत्रे सा० लाषा जा० लाषण दे पु० मेहाकेन जा० मयणल दे पु० बित्रपाल रणपालादि सह जाई बेता जा० बेतल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गळे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिजिः ॥

[ 1902 ]

॥ संवत् १५१९ वर्षे वै० व० ४ शुक्ले प्रा० झातीय प० चांपसी जा० पोमादे सु० सांगा- केन जा० दर्ई सुत करण त्रा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । जाड़उलि ग्राम वास्तव्यः ॥

चौवोशी पर ।

[ 1903 ]

॥ सं० १५११ व० आषा० व० ७ श० उपकेश झातौ आदित्यनाग गोत्रे धाधू शा० सा०



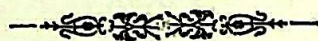
( १३१ )

काषा जाण जाब श्री पुण सुवर्णपाख जाया सोमश्री पुत्र साण लाषा केन जाण अधकू पुण  
संदरथ सूरचंद्र हरिचंद्र युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंयुनाथ बिंब कारितं उपकेश गण ककुदाचार्य  
संताने प्रतिष्ठितं श्री कवक सूरिजि ॥ श्रीः ॥

प्रतिमा पर ।

[ 1904 ]

॥ सं० १९१९ रा मिगसर सु० १० उसवाख मागा गोत्रे साण खिपमीदास जी जाया  
अनरुप दे पुत्र नाथजी अनरुप दे जी पंच पर....प्रतिष्ठितं ।



## करेडा - मेवाड ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[ 1905 ] \*

( १ ) ओ देव धम्मोयं सुमति गुरोः मध्यम शाखस्य

( २ ) वसति काण देवसूरि संवतु .....

( ३ ) जिः

[ 1906 ]

सं० १६०४ व० ज्येष्ठ व०... बा कहानी (?) श्री कुंयुनाथ व जि... दान... सरपत्र  
खत सोनी सीदकरण

[ 1907 ]

॥ संवत् १६१९ वैशाख सुदि ६ श्री आदिनाथ.....श्री विजयदान सूरि प्रण बा०  
.... पुण नाण सुंदर..... ।

\* संवत् के धंकों का स्थान टूट गया है, परन्तु लेख के अन्य अक्षरों से स्पष्ट है कि प्रतिमा बहुत प्राचीन है ।



( १३३ )

[ 1908 ]

॥ सं० १६११ व० वैशाख सुदि ११ वो श्री शीतलनाथ बिंबं गुरू श्री विजय सूरिजिः ॥

[ 1909 ]

॥ सं० १६४६ अस० मुदि ६ वाजसा श्री धर्म.....

[ 1910 ]

॥ संवत् १७१० वर्षे ज्येष्ठ सित ६ गुरौ श्री सुविधि बिंबं श्रेयोर्य का० प्र० ज० श्री विजयरज सूरिजिः आ० कनका ज० श्री विजय सेन सूरिजिः ॥

पंचतीर्थी पर ।

[ 1911 ]

॥ सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ शुके प्राग्वाट वंशे सं० कर्मट जा० माजू पु० उधरणेन चार्या सोहिणि पुत्र आदहा वोसा नीसा सहितेन श्री अंचल गहेश श्री जयकेसरि सूरि उपदेशेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य स्वामी बिंबं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

[ 1912 ]

॥ सं० १५१६ वीरम ग्रामे श्रे० बीठा सोनल पुत्र श्रे० जुडसिकेन जा० संपूटी पुत्र धन्ना बाघा चार्या जांज प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागढ नायक श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[ 1913 ]

॥ संवत् १५१९ वर्षे फागुण सुदि १ शुके श्री श्री (?) वंशे रसोदया गोत्रे श्रे० गुहा चार्या रंगाई पुत्र श्रे० देधर सुश्रावकेण जा० कुंवरि चातृ सीधा युतेन श्री अंचलगहेश्वर श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्य श्री शांति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥



( १३४ )

[ 1914 ]

॥ संवत् १५४१ वर्षे वैशाख मासे नागर झाती श्रेण केल्हा जाण मानू सुत चांगा  
माझ्याकेन सुत हरखा चांगा बाळा सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री संजवनाथ बिंब काण प्रण  
बुद्ध तपापद्मे जण श्री जिनरत्न सूरजिः ॥

[ 1915 ]

॥ संवत् १५७७ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ उपकेश झाण साण हाया पुण बिजा जाण बड-  
जल दे पुण ठाकुर रीडा ठाकुर जाण अठवा दे पुत्र कुंरपाल युतेन आत्मश्रेण पित्रोः पुण श्री  
शीतलनाथ बिंब काण प्रण श्रीण वृण वोण श्री मलयहंस सूरजिः ॥ कर्इउलि वास्तव्य ॥

रंगमंडप के बांये तर्फ आले के नीचे का शिलालेख ।

[ 1916 ]

( १ ) ॥ ओ ॥ संवत् १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्ले श्री आंचल गळे । प्राग्वाट झातीय  
महं साजण महं तेजा ..... सा जांऊणेन निज मातृ

( २ ) ..... कपूर देवी श्रेयोर्थ रवनक (?) श्री शांतिनाथ बिंब कारापित्तं ॥ संताने महं  
मंडलिक महं माळा महं देवसीह महं प्रमत्तसीह .....

सजामंरुप में दरवाजे के दाहिने स्तंभ पर ।

[ 1917 ]

॥ ओ ॥ संवत् १४६६ वर्षे चैत्र सुदि १३ सुविहित शिरोरत्न शेखर श्री रत्नशेखर सूरि  
पद्मांबुधि पूर्णचंद्र श्री पूर्णचंद्रसूरि गुरुक्रम कमलहंसाः श्री हेम हंससूरयः सपरिकरा करः...

सजामंरुप के ३ मऊले के स्तंभ पर ।

[ 1918 ]

श्री जिनसागर सूरि उदयशील गणि आझासागर गणि हेमसुंदर गणि मेरुप्रज  
मुनि श्री .....



( १३५ )

बाबन जिनायलमें पंचतीर्थीयों पर ।

[ 1919 ]

॥ सं० १२४९.....लषमिणी श्रेयोर्य पुत्र उधरणेन जात्रि आसधर श्रेयोर्य श्री पार्श्व-  
नाथ बिंबं कारितं ॥

[ 1920 ]

श्री संवत् १२६२ ज्येष्ठ सुदि १० शनौ बायट झातीय स्वसुर नायक आसल श्रेयोर्य  
.....श्री श्रेयांस बिंबं कारितं । श्री नागेन्द्र गढे श्री वर्द्धमान सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[ 1921 ]

संवत् १३२१ वर्षे फागुण सु० .... जा० घाटी पु० ऊदा जा० रुपिणि सुत आसपासेण  
माता पिता पूर्वज श्रेयोर्य चतुर्विंशति पदः कारितः श्री चैत्रगढीय श्री आमदेव सूरिजिः  
श्री शांतिनाथ ..... ।

[ 1922 ]

सं० १३५५ श्री ब्रह्माण गढे श्रीमाल झातीय रिज पूर्वज श्रेयसे सुत मालाकेन श्री आदि  
नाथ बिंबं प्र० श्री विमल सूरिजिः ।

[ 1923 ]

सं० १३५६ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[ 1924 ]

सं० १३७१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ प्राग्वाट झातीय सा० धीना जार्या देवलं पुत्र चरूजा केन  
मातृ पितृ श्रेयोर्य श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री पूर्णिमा गढे श्री सोमतिलक सूरि उपदेशेन बिंबं  
का० प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[ 1925 ]

सं० १३७३ वैशाख वदि ११ श्रे० सिरकुंथार जा० सींगार देव्या प्र० सा लू .....  
श्री महावीर कारितं ।



( १३६ )

[ 1926 ]

संवत् १३९१ मा० सु० १५ खरतर गह्वीय श्री जिन कुशल सूरि शिष्यैः श्री जिन पद्म  
सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठिता कारिता च मव० बाहि सुतेन रत्नासिंहेन पुत्र  
आढ्यादि परिश्रुतेन स्वपितृ सर्व पितृव्य पुन्यार्थ ।

[ 1927 ]

सं० १४०० व० सु० ५ प्रा० रोस्तरा पदम । साहज साकल श्रे० देवसीहेन का० प्रति०  
सिद्धान्तिक श्री माणचन्द्र सूरि ।

[ 1928 ]

सं० १४११ व० ज्येष्ठ सु० ११ बुधे.....मंडलिक जा० माढहण दे सुत धाणाश्रेयोर्थ  
व्य० षानाकेन श्री संजवनाथ बिंब का०...तपा गह्वे श्री रत्नशेखर सूरिणासुपदेशेन .....

[ 1929 ]

सं० १४३९ माह वदि ७ श्रीमाल झा० व्यव० राणासीह जा० ललती पुत्र वयरा केन  
श्री सुमतिनाथ बिंब का० श्री विजयसेन सूरि पदे....

[ 1930 ]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि ..... श्री मुनिसुव्रत बिंब का० प्र० कठोलीवाल गह्वे  
श्री संघतिखक सूरि....

[ 1931 ]

सं० १४०५ वर्षे ..... साहलेचा गोत्रे सा हांपा ..... जा० गयणल दे पुत्र सा० लीबा  
जा० वीरणी पुत्र परह्येन पितृ मातृ श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंब का० प्र० श्री पत्नीकीय गह्वे  
श्री यशोदेव सूरिजिः ।

[ 1932 ]

श्री सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीमाल वंशे बहगटा गोत्रे सा० ऊदा पुत्र सा०  
जगकेन आसा जूसा सहसादि पुत्रयुतेन पुन्यार्थ श्री नमिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री  
खरतर गह्वे श्री जिनसागर सूरिजिः ।



( २३७ )

[ 1933 ]

सं० १४९३ व० वै० सु० ५ श्री संकर गढे पीपलउडेवा गोत्रे श्रे० जा० सा० काग्हा  
जा० वीमणि पु० रतनाकेन पित्रौ निमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० श्री जशोभद्र सूरि  
संताने श्री शालि .....।

[ 1934 ]

सं० १५०३ व० ज्ये० सु० ११ शु० श्री उप० ग० ककुदाचार्य सं० विपड गो० सा० जीऊण  
पु० रामा जा० जीवदही पु० जिलाकेन पत्नीपुत्रस्वश्रे० श्री श्रेयांस बिंबं का० .....।

[ 1935 ]

सं० १५०० मा० व० १३ उकेश सं० मारंग सुत संजा जा० हेमा दाणा डुंगर नापा सं०  
रावा जा० पोबू सुत साहस जहाए जा० लक्ष्म्या श्री संजव बिंबं का० प्र० श्री उदयनंदि  
सूरिजिः ।

[ 1936 ]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे उपकेश झा० कस्बाट गोत्रे । सा० धाना जा०  
ससमादे पुत्र सा चडसीडाकेन पितर बालू निमित्तं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेशः  
कुल श्रावक .....।

[ 1937 ]

सं० १५१७ वर्षे चैत्र वदि १ शुके श्रीश्रीमाल झा० .....सु० बडूआस पुत्र पौत्र  
सहितेन श्री अजितनाथ मु० जिवितस्वामि प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री राजतिखक सूरिणां  
मुपवेशेन ।

[ 1938 ]

सं० १५२५ वर्षे मार्ग० सु० ९ आगर वासि प्राग्वाट सा० बाघा जा० गाऊ पुत्र सा०  
मालाकेन जा० आदहू पुत्र पर्वत जा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं  
का० प्र० तथा श्री सोमसुंदर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।



( १३० )

[ 1939 ]

सं० १५३ . . . . । व० वैशाख सुदि ३ शनौ श्री संडेर गछे उ० टप गोत्रे देहहा जा०  
दह्दहण दे गोरा जा० मट्टहा दे पु० आट्टहा जा० करया जा० आनूण दे पु० तोला ओ० पूर्वज  
पुन्यार्थ वासुपूज्य बिंबं का० . . . ।

[ 1940 ]

॥ संवत् १५३१ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे जकेश वंशे जाजा गोत्रे सा० धर्मा जा० धर्मा  
दे पुत्र सा० काजा सुआवकेण जा० जोजा प्रमुख परिवार सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं का०  
प्र० खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 1941 ]

संवत् १५३० वर्षे ज्येष्ठ सु . . . . . माला जा० माला दे सुत केहहा जा० सिवा सुत  
पोचकेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रज बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री जयचंद्र  
सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 1942 ]

संवत् १६३७ वर्षे वैशाख सुदि १३ रवौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री नागर झातीय  
सा० पना जार्या कीलादे सुत सा० होसा जार्या वा । हांसलदे नाम्ना श्री आदिनाथ पंच-  
तीर्थी करापितं । श्रीमत्तपा गछे जट्टारक प्रभु श्री हीर विजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं । शुभं  
भवतु ॥

[ 1943 ]

॥ संवत् १६०५ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवासरे . . . . . वास्तव्य जकेश झातीय द०  
साह यांहसा जा० प्रजा सुता जोया . . . . . सुत हेमा कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनि . . .  
तपा गछे ज० श्री हीरविजय सूरि ज० श्री विजयदेव सूरिश्वर . . . . . ।

[ 1944 ]

संवत् १००७ माघ सु० ५ गुरुदिने आचार्य श्री होमकीर्तीः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः



( १३९ )

अग्रोत्कान्तये साधु राजा जा० कीनाही तयोः पुत्राः साधु कौला चला कौला जार्या सुनुना  
तयो पुत्र कीन्हा जार्या बंदो पुत्र दासू वस्तुपाल नित्यं प्रणमति ॥

चौवीशी पर ।

[ 1945 ]

( १ ) ॐ संवत् ११४१ मार्ग सु० ७ सोमे श्री सांबदेवा धंमके (?) . . . जासख आवक  
पुत्रि

( २ ) कया श्रीमत्सिंकया श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टकः कारितः ॥

( ३ ) ( बिंबं ) शं० बि० . . . . चालू । का० प्र० तपा गहे ॥

चौवीसी पर ।

[ 1946 ]

॥ सं० १५६५ वै० शु० ८ शनौ श्री नटीपड वास्तव्य श्रीश्रीमाल ज्ञातीय सा० कान्हा  
जार्या फुतिंगदे सुता सा० मेघा जा० बारधाई सुत रूपा बीमादि सकुटुंब युतया सा० राजा  
जार्या बीमाई सुता राकू नाम्न्या श्री अनंतनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गहे श्री सोम  
खंदरसूरि संताने श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

छ्हींकार यंत्र पर ।

[ 1947 ]

॥ संवत् १६०९ वर्षे पोस मासे १० दिने श्री बृहत् खरतर गहे श्री जिनराज सूरि  
विजय राज्ये चंदा पूम्यां ओसवाल ज्ञातीय नाहटा गोत्रे सा० सहसराज पुत्र सा० सिंघ-  
राज तत्पुत्राः सा० श्री चंड संवत् १ सा० सधारण सा० श्री हंस सा० करसण हासा सधा-  
रण जार्या सहयदे सुत तत्पुत्रा सहसकरण सुमति सहोदर शुचकर प्रतिष्ठितं श्रीमंत  
श्री परानयन सुहृदुरुर्ण ॥ हितं कारापितं ॥



( ३४० )

बावन जिनालय की देहरियों के पाट पर ।

[ 1948 ]

- ( १ ) संवत् १०३९ ( व ) षे श्री संमेरक गढे श्री यशोज्ञ सूरि संताने श्री स्यामा (?)  
चार्या . . . . .
- ( २ ) . . . . प्र० ज० श्री यशोज्ञ सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ विंभं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ पूर्व-  
चंद्रोण कारितं . . . .

[ 1949 ]

- ( १ ) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गढे श्री जज्ञेश्वर संताने  
राटजरीय वंशे
- ( २ ) श्रे० जीम अर्जुन कनवट श्रे० बूका पुत्र श्रे० घयजा धांधल पासरु कदादिजिः  
कुटुंब समेतैः . . . .
- ( ३ ) य प्रतिमा कारिता । प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिजिः ॥

[ 1950 ]

- ( १ ) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गढे श्री नन्नाचार्य संताने . . .
- ( २ ) सा० जीमा पुत्र जिसदेव रतन अरथमदन मुंता महारव मातृ लाढी श्रेयोर्थ  
विंभं ( कारि )
- ( ३ ) ( ता ) । प्रतिष्ठितं । श्री सर्वदेव सूरिजिः ॥

[ 1951 ]

- ( १ ) ॥ ( संवत् १३१७ ) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री संमेरक गढे प्रतिबद्ध चैत्यालये श्री यशो-  
ज्ञ सूरि संताने श्रे० साढ देव पुत्र मह सामंत मह आसपासेन पु० धांधल सा० . .
- ( २ ) . . . . ( श्रे ) योर्थ श्री संजवनाथ विंभं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री  
शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिजिः ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥



- ( १ ) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३९ वर्षे फागुण सुदि ८ शनौ नां देवान्वये साधु पञ्चमदेव सुत संघपति साधु श्री पासदेव जार्या षेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रजल
- ( २ ) ढाहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिजः देवकुलिका सहितं श्री सुमति नाथ विंभं का० प्र० वादींद्र श्री धर्मघोष सूरि गढे श्री मुनिचंद्र सूरि शिष्यैः श्री गुणचंद्र सूरिजिः ॥ ७ ॥

[ 1953 ]

- ( १ ) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३९ फागुण सुदि ८ शनौ श्री राज गढे साधु नेमा सुत धार सत तनुज साधु नाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकड जार्या नान्ही पुत्र पाट्हा ॥
- ( २ ) जा० धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी ललतू छि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल जार्या हीरा देवी छि० हरिसिणि पुत्र महीपाल ॥
- ( ३ ) देव तृ० हिमश्री सा० कुमारसिंह तथा सा० तेजा जार्या लीलू पुत्र धरणिंग पून सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपालेन श्री षंके ॥
- ( ४ ) र गढे प्रतिवद्र श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुलिका सहितं श्री शान्तिनाथ विंभं का० प्र० वादींद्र श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रज सूरिजिः ॥

[ 1954 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ सं० १३३९ वर्षे फा० सुदि ८ शनौ श्री राज गढे सा० नेमा सुत सा० धार सत सुत सा० ढाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकड जार्या नान्ही पुत्र पाट्हा जा० ॥
- ( २ ) धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति जार्या ललतू छि० नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल पत्नी हीरादेवी छि० हरिसिणि पुत्र महीपाल
- ( ३ ) ल देव तृ० हेमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा जार्या लीलू पुत्र धरणिंग पूनसीह



( १४१ )

पुत्रादि धर्म कुटुंब समुदये पितृ सा० काकड श्रेयसे सा० पाट्टहाकेन श्री

- ( ४ ) षंडेर गढे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये देवकुलिका श्री आदिनाथश्च कारितं प्र० वादींद्र  
श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्य अमलप्रज सूरिभिः ॥

[ 1955 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १३९२ वर्षे पौष सुदि ७ रवौ श्री चित्रकूट स्थाने महाराजाधिराज पृथ्वी-  
चंद्र .....  
( २ ) श्री मालदेव पुत्र श्री वणवीर सत्कं सिलहदार महम्मद देव सुइड सीह चउंररा  
सत्कं पुत्र .....  
( ३ ) दिवं गतं तस्य सत्कं गोमट्ट कारापितं : ॥

[ 1956 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १४९१ वर्षे ॥ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ बुध-  
वारे श्रीमाल झातीय मजठिया गोत्रे सा० ठाहक सा० धाना जा० इट्टा पुत्र सं०  
हेमराज सं० थिरराज सं० लांलू सं० ठाडपाल कु .....  
( २ ) ... दे पुत्र सा० हेमराज पुत्र समुद्रपाल चार्या ..... श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंय  
कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनप्रज सूरि अन्वये । श्री जिनसर्व  
सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

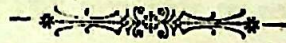
[ 1957 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ सं० १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवारे श्री लंकेश वंशे नाहट शाखायां ।  
सा० माजण पुत्र सा० व  
( २ ) एवीर पुत्र सा० जोमा । वीसज रणपाल प्रमुख पौत्रादि परिवार सहितेन श्री  
करहेटक स्थाने श्री पार्श्व  
( ३ ) नाथ जुषने श्री विमलनाथ देवस्य देवकुलिका कारापिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री खरतर  
गढे श्री जिनवर्द्धन सू-



( ४ ) रीणामनुक्रमे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टकमलमार्तंडमंडलिः श्री मज्झिमसागर सूरिजिः  
॥ शिवमस्तु ॥

( ५ ) वरसंग देवराज पुन्यार्थः ॥



## नागदा-मेवाड़ ।

श्री शांतिनाथ जी का मंदिर ।

मूलनायक की श्वेत पषाण की विशाल मूर्ति की चरण चौकी पर ।

[ 1958 ] \*

- ( १ ) संवत् १४९४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरुवारे श्री
- ( २ ) मेदपाट देशे श्री देवकुल पाटक पुरवरे नरेश्वर श्री मोकल पुत्र
- ( ३ ) श्री कुंजकर्ण चूपति विजयराज्ये श्री उसवंसे श्री नवलक्ष शाष मंडन सा० लक्ष्मी
- ( ४ ) धर सुत सा० लक्ष्मी तत्पुत्र साधु श्री रामदेव तत्पुत्राया प्रथमा मेला दे द्वितीया  
मादहण दे । मेला दे कुक्षि संचृत
- ( ५ ) सा० श्री सहणपाल । मादहण दे कुक्षितरोजहंसोपम श्री जिनधर्मकपूर्ववातसद्य  
धीनुक सा० सारंग तदंगना हीमा दे लखमा दे
- ( ६ ) प्रमुख परिवार सहितेन सा० सारंगेन निजजुजापार्जिते लक्ष्मी सफली करणार्थ  
निरुपममद्भुतं श्रीमहत् श्री शांति जिनवर बिंब सपरिकरं कारितं
- ( ७ ) प्रतिष्ठितं श्री वर्द्धमानस्वाम्यन्वये श्री मत्वरतर गढे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री  
जिनवर्द्धन सूरि त (स्त) तपट्टे श्री जिनचंद्र सूरि त (स्त) तपट्टपूर्वाचलचुल्लिका स-

\* यह लेख " भावनगर इन्तकिलखः " पृ० ११२-१३-में और " देवकुलपाटक " पृ० १६ नं० १८ में प्रकाशित हुआ है ।



( ३४४ )

हस्तकरावतारैः श्री मज्जिनसागर सूरिभिः ॥

( ७ ) सदा वन्दन्ते श्रीमद् धर्ममूर्ति उपाध्यायाः घटितं सूत्रधार मदन पुत्र धरणा सोम-  
पुराध सूत्रधारः रोमी जुंरो रुपोवीकान्यां ॥ आचन्द्रावर्क नन्द्यात् ॥ श्रीः ॥ ७ ॥

सजामंडप के बायें तर्फ स्तम्भ पर ।

[ 1959 ]

( १ ) संवत् १८७९ वर्षे वैशाख सुदि ११ सोमे साहाजी श्री जेठमल जी ताराचंद जी  
कोठारी जात श्री ..... साहजी श्री उदेचंदजी .....

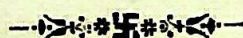
पाषाण की दूटी चौबीसी पर ।

[ 1960 ]

( १ ) ॐ सं० १४१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधवारे जंकेश वंशे नवलक्ष्मा गोत्रे साधु श्री  
रामदेव पुत्रेण माढ्हण देवि पुत्र .....

( २ ) कारकेण निजकार्या । जिनशासन प्रजाविकाया हेमा दे आत्रिकाया पुण्यार्थ श्री  
सप्ततिशतं जिनानां कारितं .....

( ३ ) तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः ।



देलवाड़ा-मेवाड़ । \*

श्री पार्श्वनाथजी का बड़ा मंदिर ।

मुखनाथकजी पर ।

[ 1961 ]

सं० १४८६ श्री पार्श्वनाथ बिंबं सा० सहणा .....

\* यह स्थान प्राचीन है । “देव कुलपाठक” नामकी पुस्तक में लेखों के साथ यहां का वर्णन है ।



( १४५ )

पुंडरिकजी के मूर्ति पर ।

[ 1962 ]

संवत् १६८९ वर्षे आषाढ बहुल ४ शनौ देलवाड़ा वास्तव्य शवर गोत्रे जकेश ज्ञातीय  
वृद्धशाखीय सा० मानाकेन जा० हीरा रामा पुत्र काया रांमा फया युतेन स्वश्रेयसे श्री  
पुंडरीक मूर्तिः कारापितं प्रतिष्ठितं संकर गहे ज० श्री मानाजी केसजी प्र० ॥

आचार्यों के मूर्ति पर ।

[ 1963 ]

.....  
..... जिनरतन सूरिगुरु मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता .....  
.....

[ 1964 ]

संवत् १४८६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ दिने नवलक्ष शाखीय सा० रामदेव जार्यया श्री मेला  
देव्या श्री जिनवर्द्धन सूरि मूर्तिः कारिता प्र० श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[ 1965 ]

संवत् १४८६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ सा० रामदेव जार्या मेला देव्या श्री जोणाचार्य गुरुमूर्तिः  
कारिता प्र० श्री खरतर गहे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

श्वेत पाषाण को कायोत्सर्ग मूर्तियों पर ।

[ 1966 ] \*

( १ ) ॥ ए० ॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख वदि ५ ..... यवरु प्रासाद गौष्ठिक प्रागाट  
ज्ञातीय व्यव० जांजा जा०

\* यह लेख धोरीबाव नामक स्थान में मिट्टी से निकली हुई विशाल मूर्ति के चरण चौकी पर है



- ( १ ) छाडि पुत्र दंपा चार्या देवल दे पुत्र ९ व्यव . . . . . कुरंपाल सिरिपति नर दे  
धीणा पंडित लषमसी आ-
- ( ३ ) तमश्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ जिनयुगल कारापितः प्रतिष्ठितः कडोलीवाल गढे पूर्णिमा  
पक्षे द्वितीय शाखा-
- ( ४ ) यां जहारक श्री जडेश्वर सूरि संताने तस्यान्वये ज० श्री रत्नप्रज सूरि तत्पद  
जहारक श्री सवाण-
- ( ५ ) द सूरिणि शिष्य लषमसीदेन आत्मश्रेयोर्थ कारापितः प्रतिष्ठितः ज० श्री सर्वा  
णद सूरि-
- ( ६ ) णामुपदेशेन ॥ मंगलाच्युदयं ॥

[ 1967 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रमादित्य संवत् १५०० वर्षे वैशाख शुदि ३ श्रीमाल-  
झातौ मांथलपुग गोत्रे सा०
- ( २ ) देहड़ संताने सा० काळा तत्पुत्र सा० मेला केला मेला पुत्र सा० सोमा स० सा-  
यरकेन पुत्र हुंफण पुत्र
- ( ३ ) तोला सोमा पुत्र महिपति हुंगर जापर सायर पुत्र बाढा पासा हुंफण पुत्र वस्त-  
पाल त . . . . .
- ( ४ ) ल रत्नपाल कुमरपाल तोला पुत्र नरपाल नरपति प्रभृति पुत्र पौत्रादि सहितेण  
एहों पर ।

[ 1968 ]

सं० १४९४ वर्षे फाट्युन वदि ५ प्राग्वाट सा० देपाल पुत्र सा० सुहडसी चार्या सुहडा दे  
पुत्र पीठजलिआ सा० करणा चार्या चनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा काळा  
प्रात् सा० हीसाकेन चार्या लाखू पुत्र आमदत्तादि कुटुंबयुतेन श्री द्वाससति जिनपट्टिका  
कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपागडनायक श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥ श्रीः ॥



( १४७ )

[ 1969 ]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ शु० ७ प्राग्वाट सा० देपाल पु० सा० सुहृडसो जा० सुहृडा दे  
सुत पीठउल्लिखा सा० करणा जार्या वनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा ही रा होसा काला  
सा० धर्माकेन जा० धर्माणि सुन महसा साखिग सहजा सोना साजणादि कुटुंबयुतेन एव  
जिनपाटिका कारिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री तपागढाधिराज श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री जय  
चंद्र सूरिजिः ॥

[ 1970 ]

सं० १५०६ फा० शुदि ए श० सा० सोमा जा० रुडी सुत सा० समधरेण ज्ञातु फाफा  
सोधर तिहुणा गोविंदादि कुटुंबयुतेन तीर्थ श्री शत्रुंजयगिरिनारावतार पट्टिका का० प्र०  
श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

## भोंयरे में ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1971 ]

१४९४ ऊकेश सा० वाढा राणी पुत्र बीसल खीमाई पुत्र धीरा पत्नी सा० राजा रत्ना  
दे पुत्री मादहण देव का० आदि विंबं प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

पट्टे पर ।

[ 1972 ]

सं० १४७५ वै० शु० ३ ऊकेश वैश सा० वाढा जार्या राणा दे पुत्र सा० बीसल पट्या  
सा० रामदेव जार्या मेला दे पुत्रा सं० खीमाई नाम्न्या पुत्र सा० धीरा च्यांपा हांसादि  
शुतथा श्री नन्दोश्वर पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः तपागढे श्री देवसुंदर सूरि शिष्य श्री सोम-  
सुंदर सूरिजिः स्थापितः तपा श्री युगादि देवप्रासादे ॥ सूत्रधार नरवद कृतः ॥



( ३४७ )

[ 1973 ]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ शु० ७ प्राग्वाट सा० आका जा० जसल दे चांपू पुत्र सा०  
देव्हा जूठा सोना बीमायैः चतुर्विंशति जिन बिंबं पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुंदर  
सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिजिः ॥

देहरी में ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1974 ]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं ज्ञानसिरि आविकया ।  
प्र । श्री जिनसागर सूरिजिः । श्रीमाल झातीय ज्ञानिया गोत्रे ।

पट्टों पर ।

[ 1975 ]

सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १४ बुधे श्री ऊकेश वंशे नवलदा शाषायां सा० राम जार्या  
नारिंग दे पुण्यार्थ श्री श्री सिद्धिशिलाकायां श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि  
पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

[ 1976 ]

( १ ) ॥ संवत् १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ॥ ऊकेशवंशश्चैंगारो जुवन पाल इत्यज्ञत ।  
जुवनं पालयत् यः स्वंनामनिन्ये (?) यथार्थतः ॥ १ ॥ तदन्वये ततो जात ...  
तक .....

( २ ) त्यः पृथु प्रतापी ननु रोष तापी । जिनांगिरक्तो गुरुपादलक्ष्मो । गुणामुरागी हृदय  
विरागी ॥ ४ ॥ युगलकं ॥ तस्यांगना ... ग कुरंगनेत्रा सीतेव .....

( ३ ) धार सहितेन सा० सहणा सुआवकेण जिनमातृ पुण्यार्थ श्री वासुपूज्य त्रिबं चतु  
र्विंशति पट्टक विंशति बिहरमानादि .....



( १४९ )

[ 1977 ]

- ( १ ) संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० रामदेव चार्या मेला  
( २ ) दे पुत्र सहणपाल चार्या नारिगं देव्या श्री . . . . जिन मूर्ति बिंबानि प्र-  
( ३ ) तिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरि पेढ श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

दरवाजों पर ।

[ 1978 ]

- ( १ ) संवत् १४९९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवासरे . . . . .  
( २ ) . . . . .

[ 1979 ]

- ( १ ) श्री ॥ सं० १४८३ नागपुरे जकेश वंशे सा० हीरा जा० धर्मिणि पुत्र्या सरस्वती  
पत्तनवासि सा० हीरा सुत सा० संग्राम सिंह चार्यया सम्यक्त्वदेशविरत्यादि गुण  
( २ ) युक्तया श्री देऊ नाम्न्या न्यायोश(र्जि)तं निजवित्त व्ययेन तपापद्दे श्री आदिदे-  
वप्रासादे श्रीपार्श्वनाथ देवकुलिका कारिता प्र० गङ्गनाथक श्रीसोमसुंदर सूरिजिः ।

[ 1980 ]

- ( १ ) सं० १४८४ वर्षे श्री अणहिल्लपुरवासि श्री श्रीमालझाति सा० समरसी पुत्रेण स्म०  
सोमाकेन संप्रति अहमदाबादपुरवासी सचार्या . . . . .  
( २ ) सुत मो० बाघादि कुटुंबयुतेन श्री तपापद्दे श्री आदिनाथ प्रासादे श्री अजित  
देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपापद्दे श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

[ 1981 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ संवत् १४८६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शुके नवलक्ष गोत्रे  
( २ ) सा० रामदेव चार्या मेला दे आविकया निजपुण्यार्थ  
( ३ ) . . . . . श्री आदिनाथ प्रासाद कारितं ॥ प्रातिष्ठितं



( १५० )

( ४ ) श्री खरतर गढे श्री जिनवर्द्धन सूरि षष्ठे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 1982 ]

( १ ) ॥ संवत् १४७६ वर्षे कार्तिक सुदि ११ सोमे ॥ ऊकेश झातीय सा० बाहड़ जार्या  
सुपुव दे पु० राना साना सलषाके(न) निज मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ प्रासा-  
दे श्री सुमतिनाथ देव प्रतिमा

( २ ) कारिता ॥ ऊकेश गढे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं । श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥  
ब ॥ श्री ॥ मल्लधारोयकैः ॥

[ 1983 ]

( १ ) सं० १४७७ फा० सु० ७ श्रीमाल झा० सा० . . . . .

( २ ) देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता तपागहनायक श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनि  
सूरिजिः ॥ श्री अणहिलपुरपत्तन वास्तव्य

[ 1984 ]

( १ ) ॥ ॐ ॥ संवत् १४७९ वर्षे माघ सुदि ५ बुधवार ऊकेश वंशे श्री नवलखा गोत्रे  
श्री रामदेव जार्या आविका मेला दे पुत्र साधु श्री सहणपाल जार्या नारिंग दे  
आविकया पुत्र सा० रणमल्ल सा० रणधीर रणज्रम सा० कर्मसी पौत्रादि सहितया  
निज पुण्यार्थ जिनानां

( २ ) . . . . .  
श्री जिनराज सूरि षष्ठे श्री जिनवर्द्धन सूरि तत्पष्ठे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पष्ठपूर्वा-  
चल श्रीयुत श्री जिनसागर सूरिजिः ॥ शुभं भवतु ॥ ब ॥ ब ॥ ब ॥ ब ॥ ब ॥

नये मंदिर में ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1985 ]

॥ सं० १४७९ वर्षे वैशाख सुदि २ श्री पार्श्वनाथ बिंब ॥ सा० ससुदय वल्लभ ॥



( १५१ )

कायोत्सर्ग मूर्तियों पर

[ 1986 ]

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ सं० १४६४ वर्षे आषाढ शु० १३ दिने गूर्जर ज्ञातीय ज-  
 ( २ ) णसाखी लावण सुत मं० जयतल सुत मं० सादा चार्या सूमल  
 ( ३ ) दे सुत मं० वरासिंह त्रातृ मं० जेसाकेन चार्या शृंगार दे पुत्र  
 ( ४ ) हरिचंद्र प्रमुख सकल कुटुंबसहितेन स्वधेयसं प्रभु  
 ( ५ ) श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरिजिः ॥

[ 1987 ]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ गुरुवारे श्रीमाल ज्ञातीय मंत्रि . . . . णं प्रा  
 सुत नंदिगेस । सुत पुत्र सा० आसा सुआवकेण श्री पार्श्वनाथ विंव स्वपुण्यार्थे कारितं  
 श्री खरतर गढे श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[ 1988 ]

॥ ॐ ॥ सं० १३८१ वैशाख वदि ५ श्रीपत्तने श्री शांतिनाथ विधि चैत्ये श्री जिनचंद्र  
 सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिजिः श्री जिनप्रबोध सूरि मूर्तिः प्रतिष्ठिता ॥ कारिता च  
 सा० कुंमरपाल रत्नैः सा० महणसिंह सा० देपाल सा० जगसिंह सा० मेहा सुआवकैः सप-  
 रिवारैः स्वधेयार्थ ॥ व ॥

[ 1989 ]

संवत् १४८१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० सहणपालेण स्वपुण्यार्थे श्री  
 जिनवर्द्धन सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरिणां मूर्तिः प्र० श्री जिनसागर सूरिजिः ॥



( १५३ )

## ऋषभदेवजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1990 ]

सं० १५१० पौष वदि १० घांघ गोत्रे सा० सारंग जा० सुहागिणि सु० सा० काव्यू सा०  
चाहड़ नामाज्यां पुण्यार्थ श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री मलधारि गढे श्री विद्यासागर  
सूरि पढे श्री गुणसुंदर सूरिजिः ॥

[ 1991 ]

॥ संवत् १५१५ वर्षे माह वदि ए शुक्ले श्री संडेर गढे ऊ० काश्यप गोत्रे सा० वेता पु०  
षीमा जा० बीमसिरि पु० चुडा जा० जरमी पु० पूजा नयमा बीडा रंगा सहितेन श्री नेमि-  
नाथ बिं० कारितं प्रति० श्री ईश्वर सूरिजिः ॥

[ 1992 ]

॥ सं० १५९३ वर्षे वैशाख सुदि पंचमी सोमे । उ० झा० काठड़ गोत्रे । दो० ऊदा जार्या  
जमा दे पु० दो० रूपा दो० देपा अमर नाथा । रंगा देवा जार्या दाडिम दे पु । पहिराज  
साढ्हा रायमल्ल युतेन सुपुण्यार्थ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री संडेर गढे श्री शांति  
सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

मूलनायकजी पर ।

[ 1993 ]

ॐ ॥ स्वस्ति सं० १४६९ वर्षे माघ . . . . ६ रवौ श्रीमाल वंशे नावर गोत्रे उ० ऊहड़  
संताने श्री पुत्र मंत्रि करम . . . . अयोर्थ लघु त्रातृ उ० देपालेन त्रातृव्य उ० जोजराज  
उ० नयणासिंह जार्या माढ्ह दे सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर  
गढे श्री जिनचंद्र सूरिजिः देवकुलपाटके ।



( १५३ )

श्याम पाषाण की पाडुका पर ।

[ 1994 ]

संवत् १४९१ वर्षे माघ वदि ५ दिने बुधे उकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव  
चार्या मला दे तत्पुत्र साधु श्री सहस्रपाखेन चार्या नारिंग दे पुत्र रणमह्यादि सहितेन  
देवकुलपाटके पूर्वाचलमिरा श्री शत्रुञ्जयावतारे मोरनाग कुटिका सहिता प्रति० श्री खरतर  
गढे श्री जिनवर्द्धन सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पढे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

पढे पर ।

[ 1995 ]

॥ ॐ ॥ संवत् १४९३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवारे सा० आंबा पुत्र सा० वीराकेन स्वमातृ  
आंबा आविका स्वपुण्यार्थ ॥ श्री चतुर्विंशति जिन पट्टकः कारितः श्री खरतर गढे प्रति-  
ष्ठितं श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ॥

## आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[ 1996 ]

संवत् १४६९ वर्षे माघ शुदि ६ दिने उकेश वंशे सा० सोषा संताने सा० सुहडा पुत्रेण  
सा० नान्हाकेन पुत्र वीरमादि परिवारयुतेन श्री जिनराज सूरि मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता  
श्री खरतर गढे श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ।

[ 1997 ]

सं० १४६९ वर्षे सा० रामदेव चार्यया मेला दे आविकया स्वमातृलेहसया श्री जिन-  
देव सूरि शिष्याणां श्री मेरुनंदनोपाध्यायानां मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री जिनवर्द्धन  
सूरिजिः ॥



( १५४ )

श्री पार्श्वनाथजी की बसी ।

पंचतीर्थों पर ।

[ 1998 ]

॥ सं० १२०१ वर्षे आषाढ सुदि १० रवौ श्री देवाजिदित गढे श्री शील सूरि संताने  
आमण पुत्रेण कनुदेवेन त्रातृ सुंजदेव श्रेयोर्थ आत्मश्रेयोर्थ च प्रतिमा कारिता ।

तपागंघ का उपासरा ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 1999 ]

सं० १२९३ । गोसा त्रातृ जैजा चार्या हेमा - ... श्रेयोर्थ प्रतिमा कारिता ॥

[ 2000 ]

सं० १४०४ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उपकेश वंशे नोसतिकि (?) शाखायां साफू-  
वाल जा० माढहण दे लाषाकेन त्रातृ पुंजा जा० मेला दे .... पितृ श्रे० शांतिनाथ बिंब  
कारितं प्र० श्री जयप्रज सूरिजिः ।

[ 2001 ]

ॐ सं० १४९४ वैशाख वदि ३ बुधे ..... बिंब कारितं श्री ..... ।

[ 2002 ]

॥ ॐ सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ शुक्रे ऊ० गूगलिया गोत्रे सा० सूरु जा० सुहका दे  
पु० धणपाल जा० लाबल दे ..... हा निमित्त श्री शीतलनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री संडेर गढे श्री यशोजड सूरि संताने प्रतिष्ठितं श्री शालिजड सूरिजिः ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[ 2003 ]

सं० १८०२ आषाढ़ सुदि १० श्री कृष्णनाथ बिंब का० हरषा लोत ..... ।



THE JANGAMWADI MATH COLLECTION  
(CC-0) Digitized by eGangotri







( १५५ )

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 2004 ]

सं० १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे खरतर गढे नाग . . . . मुनिचंद्र शिष्य जयराज  
गणि पार्श्वनाथ विं० . . . . . ।

[ 2005 ]

सं० १३९९ वर्षे माह सु० १३ श्री प्र . . . लू जा० . . . कुंथुनाथ . . . . . ।

## शिलालेख

[ 2006 ]

- ( १ ) ॥ ॥ श्रेयः श्रेणिविशुद्धसिद्धलहरीविस्तारद्वर्षप्रदः श्री मत्साधुमरालकेलिरणिजिः  
( २ ) प्रस्तूयमानक्रमः । पुण्यागण्यवरेण्यकीर्तिकमलव्यालोललीलाधरः सोयं मानससत्सरो  
( ३ ) वरसमः पार्श्वप्रभुः पातु वः ॥ १ ॥ गंजीरध्वनिसुंदरः क्षितिधरश्रेणिजिरासेवितः  
सारस्तोत्रप-  
( ४ ) विन्ननिर्ज्वरसरिद्धिष्णुसज्जीवनः । चंचज्ज्ञानवितानजासुरमणिप्रस्तारमुक्तालयः  
सोयं  
( ५ ) नीरधिव . . . जाति नियतं श्री धर्मचिंतामणिः ॥ २ ॥ रंगजांगतरंगनिर्मल्यशः कर्पूर  
पूरोद्भुरा-  
( ६ ) मोददोदसुवासितत्रिभुवनः कृतप्रमादोदयः । ज्ञास्वन्मेचककज्जलद्युतिन्नरः शेषाहि-  
( ७ ) राजांकितः श्री वामेयजिनेश्वरो विजयते श्री धर्मचिंतामणिः ॥ ३ ॥ इष्टार्थसंपादन-  
कदपवृद्धः  
( ८ ) प्रत्यूहपांशुप्रशमे पयोदः । श्री धर्मचिंतामणिपार्श्वनाथः समग्रसंघस्य ददातु जडं ॥  
४ ॥ संवत्



- ( ए ) १४९१ वर्षे कार्तिक सुदि १ सोमे राणा श्री कुंजकर्णविजयराज्ये उपकेश झातीय साह सह-
- ( १० ) णा साह सारंगेन मांडवी उत्तरे लागू कीधु । सेखहथि साजणि कीधु अंके टंका चऊद १४ जको
- ( ११ ) मांमवी लेस्यइ सु देस्यइ । चिहु जणे बइसी ए रीति कीधी । श्री धर्मचिंतामणि पूजानिमित्ति । सा०
- ( १२ ) रणमल महं रूंगर से० हावा साह साडा साह चांप बइसी विहु रीति कीधी एह बोख
- ( १३ ) लोपवा को न लहइ । टंका ५ देउलवाडानी मांडवी ऊपरि टंका ४ देउलवाडाना मापा उप
- ( १४ ) रि । टंका २ देउलवाडाना मण हंड वटा उपरि । टंका २ देउलवाडाना घारी वटां ऊपरी ।
- ( १५ ) टंकाउ १ देउलवाडाना पंटसूत्रीय ऊपरी ॥ एवं कारई टंका १४ श्री धर्मचिंतामणि पूजा
- ( १६ ) निमित्ति सा० सारंगि समस्त संघि लागु कीधउ ॥ शुभं भवतु ॥ मंगलाच्युदयं ॥ श्रीः ॥
- ( १७ ) ए ग्रासु जिको लोपइ तहेरहिं राणा श्री हमीर राणा श्री बेता राणा श्री खाषा रा० मोकल
- ( १८ ) राणा श्रीकुंजकर्णनी आणउइ । श्रीसंघनी आण । श्रीजीराउला श्रीशत्रुंजयतणा सम ॥

देवी मूर्ति पर ।

[ 2007 ] \*

॥ सं० १४९६ वर्षे मार्ग शु० १० दिने मोढ झातीय सा० वउहथ चार्या साजणि सुत सं० मानाकेन अंबिका मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री ..... रिजिः ॥

\* महात्मा श्रीलालजी नाणावाल के यहां मूर्ति है ।



( १५७ )

## खंडहर उपासरा ।

### शिलालेख

[ 2008 ]

स्यं



स्यं

ॐ

( १ )

परमात्मने नमः

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ प्रणम्य श्री सूर्यदेवाय सर्वसुखंकर प्रज्ञो । सर्ववन्धिनिधातस्य तं  
( ३ ) सत्यं प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥ मेदपाटे गिरो देसे गिरजागिरस्थानयो तां नगरो उ-  
( ४ ) त्तमा ज्ञेया देवको प्रमपट्टणौ १ तत्र राज्ञा श्रेयो ज्ञेयाः राघवो राज्य सा-  
( ५ ) नयोः षट्दर्शनसदामान्यः श्रेतांबरा अजिअयो ३ श्रीमद्रंचल ग-  
( ६ ) ठेस्था श्री उदयसागर सूरिणा । तस्य आज्ञा कारेण चारित्र स्तन-  
( ७ ) गुर प्रज्ञो ४ शिष्य लक्ष्मीरत्नस्य साधुमुद्रा सदा सुखी । राजधर्म स-  
( ८ ) नेहादि जिनमंदिर करापितं ५ कोटिवर्षचिरंजीवो बहुपुत्र-  
( ९ ) गजवाजिना अचलं मेरुऊर्णोयं राज्यं पालति राघवः ६ जे  
( १० ) अन्य राजा स्वर्ध्वः लोपतो परदत्तयो नरकं ते नरा जाति ज-  
( ११ ) स्य धर्मस्य अवृथा ७ सं० १७९७ वर्षे माघ सुदि ५ तिथौ गुरु  
( १२ ) श्री चतुराजी शिष्य कुशलरतन लक्ष्मीरतन उपासरो करा  
( १३ ) यौ श्री पुण्यार्थे । श्री राज श्री राघव देवजी वारके देखवाडा  
( १४ ) नगरे श्रीसंघ समस्तां साध अर्थे पं लिखमीरतन चेला हेमरा-  
( १५ ) ज ऊपासरो करायो बीजो को रहे जणीहे नाय  
( १६ ) मान्यारो पाप है जती आंचइया टाक्ष रहुवा पावे नहीं



( १५८ )

दरवाजे की ठतरी पर कः लेख ।

[ 2009 ]

श्री गणेश ... रतन चेला हेम ... कारापितं ॥ साह अषा साह नाराण साह ठाकुरसी  
साह हेमा साह हमीर साह बुना साह सिवा साह हर ... साह फवेल साह मेघा साह  
जोषा साह विरघा कटाच्या चतुरा जीथा सगता ... समसथ धावका ... लषाणा श्री राघ-  
वदेवजी बारको मंदिर कारा ... लक्ष्मीरतन सं० १००५ माघ सुदि १३ शुक्रे प्रतिष्ठा करावो  
... लक्ष्मीरतन ..... ॥



कलकत्ता ।

श्री आदिनाथजी का देरासर - कुमारसिंह हाल ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2010 ]

सं० १४६८ वर्षे मागसिर वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल झातीय संघ गोवल जार्या माह्दण  
दे तयोः सुतः महमाझ्याकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी बिंबं कारापितं श्री जिनहंस गणि  
श्रेयोर्य प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः उग्रईज वास्तव्यः ।

[ 2011 ]

संवत् १५१७ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा जार्या जासू  
पुत्र सं० षीमा जार्या चमकू आविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थ श्री अंचल गळे श्री जयकेसरि  
सूरिणामुपदेशेन चंद्रप्रज स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥









( १५६ )

## आबू-रोड ।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर-धर्मशाला ।

पंचतीर्थों पर ।

[ 2012 ]

सं० १५०६ वै० व० ११ शुक्रे श्री कोरंट गढे श्री नन्नाचार्य संताने । उग्रएस वंशे ।  
शंखवालेचा गोत्रे श्रे० लषमसी जा० सांसल दे पु० रामा जा० राम दे पु० तेजा नाम्ना  
स्वमातापित्रोः श्रेयसे श्री वासुपूज्य बि० का० प्र० श्री सांबदेव सूरिजिः ।

चौवीशी पर ।

[ 2013 ]

॥ सं० १५२० वर्षे माघ सुदि १३ गुरौ श्री उदयसागरगुरूपदेशेन श्रीमाल झातीय श्रे०  
मेघा जा० माणिकदे सुत श्रे० नार्इयाकेन जा० बाट्टा सु० गहिगा राघव ठाईया तथा  
द्वि० जा० नामल दे प्रमुख कुंडबयुतेन श्री संजवनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारिताः प्र० श्री  
बृहत्तपा गढे ज्ञानसागर सूरिजिः ।



## आबू-तीर्थ ।

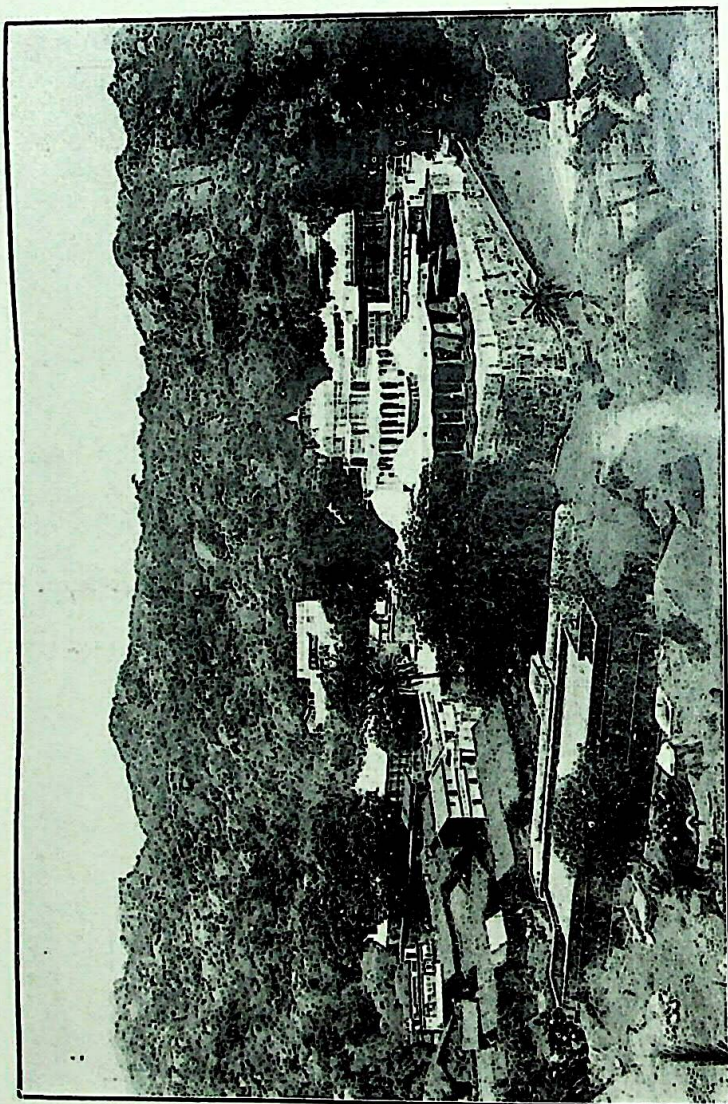
श्री आदिनाथजी का मंजिर-देसवाड़ा ।

पाषाणकी कायोत्सर्ग मूर्ति पर ।

[ 2014 ]

( १ ) संवत् १४०६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे ५ पंचम्यां तिथौ शु०





TIRTHA ABU — Dilwara Temples.



( १६० )

- ( १ ) रुदिने श्री कोरंट गढे श्री नन्नाचार्य संताने महं कउंरा
- ( ३ ) जार्या महं कुरदे पुत्र महं मदन नर पूर्णसिंह जाण पूर्णसि-
- ( ४ ) रि सुत महं डुहा मं० धांधल मूल मं० जसपाल गेदा रुदा प्रभृति स-
- ( ५ ) मस्त कुंदुबं श्रेयसे श्री युगादि देव प्रसादे महं धांधुकेन श्री जिन-
- ( ६ ) युगलद्वयं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नन्न सूरि पढे श्री कक्क सूरिजिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[ 2015 ]

सं० १५११ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ सं० रत्ना सं० पन्नाज्यां श्रीशातिनाथ विंबं का० ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2016 ]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे प्रा० व्य० लषमण जा० रुद्दी पु० जीलाकेन पित्रो  
आत्मश्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रति० ब्रह्माणीय गढे ज० श्री उदयाणंद सूरिजिः ।

चौवीशी पर ।

[ 2017 ]

सं० १४७५ प्राग्वाट व्य० कूंगर जार्या उम दे पुत्र व्य० मादहाकेन जा० मादहण दे पुत्र  
कीजा जीनादि युतेन श्री सुपार्श्व चतुर्विंशतिका पट्टः कारिताः प्रतिष्ठितस्तथा गढे श्री  
सोमसुंदर सूरिजिः ।

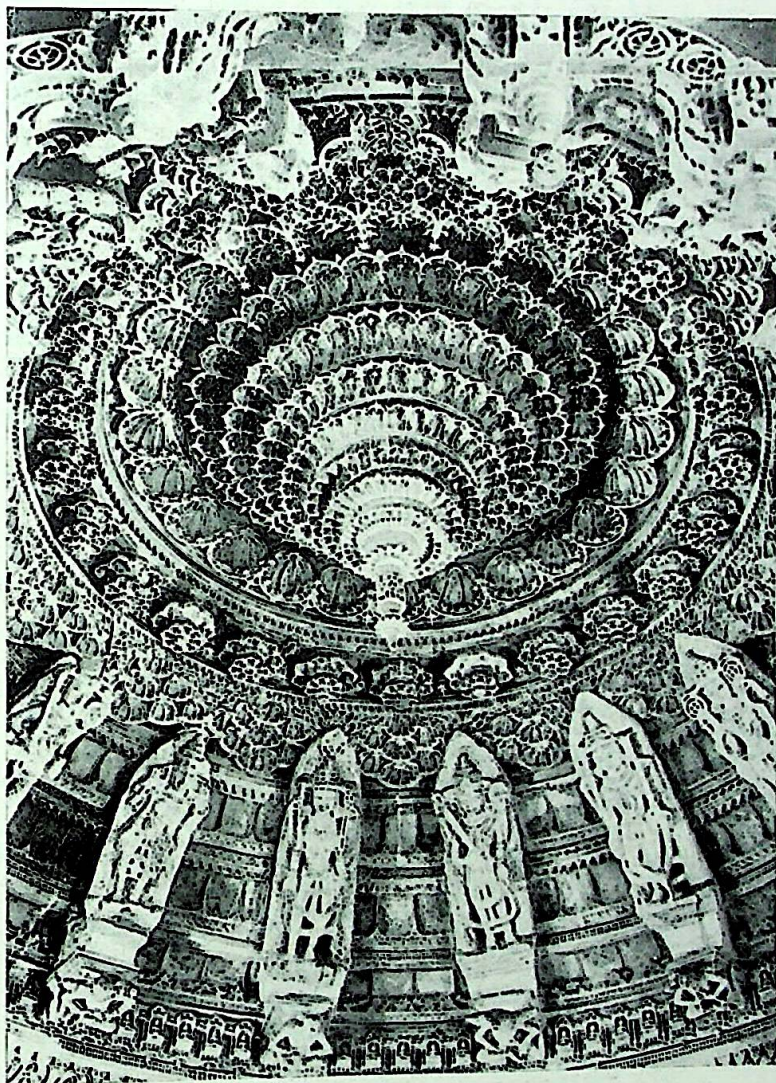
श्री शांतिनाथजी का मंदिर—अचलगढ़ ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[ 2018 ]

ॐ सं० १३०२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ए शुके . . . . .





TIRTHA ABU.  
Carving work on ceiling in Dilwara Temples.







( १६१ )

[ 2019 ]

सा० धन्ना श्रावकेण श्री आदिनाथ विं० कारितं ।

[ 2020 ]

प० मांजू श्राविकया श्री सुमतिनाथ कारितं . . . . . ।

[ 2021 ]

श्री खरतर गढे श्री पार्श्वदेवद्वितीयजुमौ पार्श्वनाथ सा० माझा जा० मांजू श्राविका  
कारितः ।

देवी की मूर्ति पर ।

[ 2022 ]

सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ शुके श्री उकेश वंशे दरडा गोत्रे सा० आसा जा० सोखु  
पुत्रेण सं० मंडलिकेन जा० हीराई सु० साजण द्वि० जा० रोहिणि प्र० जा० सा० पाट्टादि  
परिवार संयुतेन श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री अंबिका मूर्ति का० श्री जिनचंद्र सूरिनिः ।

श्री रुषजदेव जी का मंदिर—अचक्षगढ़ ।

पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्ति पर ।

[ 2023 ]

सं० १३०२ वर्षे . . . . . अमरचंद्र सूरि जयदेव सूरिनिः ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2024 ]

सं० १५३० वर्षे आ० सु० १ प्राग्वट झातीय व्य० सा . . . . . जा० रूपिणि सुत  
सोमा दे जा० बीकमादि कुटुंबयुतेन श्री मुनिसुव्रतनाथ विं० कारितं प्र० श्री तपागुहनाथ  
श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ।



( २६२ )

धातु की मूर्तियों पर ।

[ 2025 ]

सं० १५२५ फा० सु० ७ शनि रोहिण्यां श्री अर्बुदगिरौ देवड़ा श्री रावधर सांयर कूंगर-  
सिंह विजय राज्ये सा० ता जीमचैत्ये गूर्जर श्रीमाल राजमान्य मं० मंडन जार्या जोखी पुत्र  
मं० शूद्र पु० मं० गदाज्यां जार्या हासी पद्माई मं० गदा जा० आसू पुत्र श्रीरंग वाघादि  
कुटुंबयुताज्यां १०० मन प्रमाण सपरिकर प्रथमजिन बिंबं कारितं तपागहनायक श्री सोम-  
सुंदर सूरि पढ़े श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पढ़े श्री रत्नशेखर सूरि पढ़े प्रजाकर  
श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री सुधानंदन सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय  
श्री जिनसोमगणि प्रमुख । विज्ञानं सूत्रधार देवाकस्य श्री रस्तु । कृतं मेवाड़ ज्ञातीय सूत्र-  
धार मिहीपा जा० नागल सुत सूत्रधार देवा जार्या करमी सुत सू० हला गदा हांपा जाला  
हाना कलाः सहित व्यापायताः ।

[ 2026 ]

संवत् १५२६ वर्षे वैशाख वदि ४ शुके कूंगरपुर नगरे राजल श्री सोमदास वि० रा०  
तत्प्रधान प्रजावक धुरंदर सा० साजा प्रमुख श्री संघोपक्रमेन . . . . .  
श्री आदिनाथ बिंबं प्र० तपागहनायक श्री सोमसुंदर सूरि पढ़े मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र  
सूरि पढ़े श्री रत्नशेखर सूरि तत्पढ़े श्री लक्ष्मीसागर सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय  
जिनहंसगणि प्रमुख सुदरादि शिष्यै परिवार परिवृतः

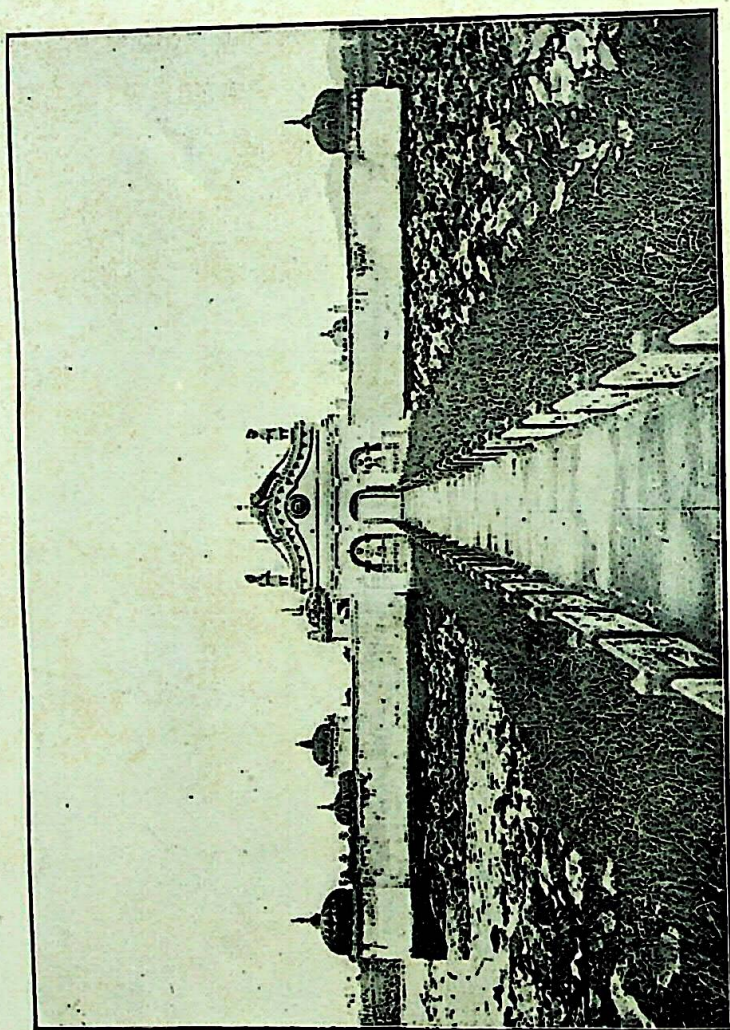
[ 2027 ]

संवत् १५६६ वर्षे फाद्युन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज  
श्री जगमालविजयराज्ये सं० साक्षिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे जड-  
प्रासादे श्री सुपार्श्व बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागह श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री  
कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिजिः ज० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परि-  
वार परिवृतैः श्रीरस्तु श्री संघस्य सूत्रधार हरदास ॥









TIRTHA PAWAPURI—JALAMANDIR.  
(Front View)



( १६३ )

[ 2028 ]

संवत् १५६६ वर्षे फाट्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज  
श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे जड-  
प्रासादे श्री आदिनाथ बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागढ श्री सोमसुंदर सूरि संताने  
श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिजिः ज० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख  
परिवार परिवृतैः श्री रस्तु श्री संघस्य । सूत्रधार हरदास ॥



श्री पावापुरी तीर्थ ।

जल मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2029 ]

सं(व)त् १९६० ज्येष्ठ सुदि १ रेनुमा(?) पु० चोराकेनात्मश्रेयोर्थ श्री महावीर बिंबं  
कारितं प्रतिष्ठितं च श्री अजयदेव सूरिजिः

मूखवेदी के दाहिने तर्फ का लेख ।

[ 2030 ]

- ( १ ) सं० १९९९ मिः आसिन सुदि १
- ( २ ) श्री मंदिरजी के बीच के फेरी में वः नी
- ( ३ ) चे के फेरी में पत्थर बैठाया नानकचं-
- ( ४ ) द जीवनदास जैन श्वेताम्बरी के तर
- ( ५ ) फ से साः कलकत्ता शुचं



( १६४ )

सोने के चरण पर ।

[ 2031 ]

सं० १९३३ डूगड़ धनपतसिंह कारापितं सर्व सूरि प्रतिष्ठित (श्री)संघस्य श्रेयसे जवतु ।

दादाजी के चरण पर ।

[ 2032 ]

१९५८ साल मिति अघन वदि १२ सोमवार निहालचंद इंद्रचंद डुगड़ तस्य परिवार  
प्रतिष्ठा कारापितं मुर्शिदाबाद ॥ श्री जिन कु(श)ल सूरि महाराज का चरण ॥ शुभं जवतु ॥

**समोसरन ।**

मंदिर का शिलालेख ।

[ 2033 ]

- ( १ ) श्री शुभ संवत् १९५३ मिति कार्तिक वदी
- ( २ ) त्रयोदशी मंगलवार श्री महावीर स्वामी जी के समोस
- ( ३ ) रनजी में मंदिर कराया श्री संघ ने श्वेताम्बरी आमनाये
- ( ४ ) वः मनोजर गोविन्द चंद सचेती बिहारवाले के
- ( ४ ) हस्ते बना । इदं प्रतिष्ठितं गंगारीखी जति

**महताब बिबि का मंदिर ।**

शिलालेख ।

[ 2034 ]

- ( १ ) संवत् १९३२ का मिति माघ शुक्ल १० तिथी
- ( २ ) चंडवारे श्री मन्महावीर स्वामी मंदिर श्री बंगदे-



( २६५ )

- ( ३ ) शे । मकसुदावादाजीमगंज कासिनी डुधेड़िया  
 ( ४ ) गोत्रे श्री नेमिचंद्र तस्य चार्या महताब कुमारि-  
 ( ५ ) णा कारापितं च श्री हर्षचंदजी तत् पुत्र बुधसीह  
 ( ६ ) विसनचंद्रेण प्रतिष्ठा कारापिता । श्री बृहद्बौपक  
 ( ७ ) गौर्जराधिपति श्री अजयराज सूरि तत्पट्टाखंठ  
 ( ८ ) त श्री अजयराज सूरिणा प्रतिष्ठितं श्री शुभं नूयात् ।  
 ( ९ ) ॥ श्लोकः ॥ जवाण्यसोपालकं त्रैशलेयं । जप्राबोधि-  
 ( १० ) संस्तारणे यानतुल्यं ॥ मुक्तिस्त्रिनाथं मयायं जिनेंद्रं  
 ( ११ ) प्रसंस्तौमि श्री वर्धमानं विभुं च ॥ ३ ॥

## गांव मंदिर ।

दक्षिण तर्फ के दिवार पर का लेख ॥

[ 2035 ]

- ( १ ) श्री गांव मंदिर जि मे दक्ष ( २ ) ए पश्चिम उत्तर दालान  
 ( ३ ) तथा चारो कोठे मे पत्थल ( ४ ) जैन श्वेताम्बर जंडार के तर  
 ( ५ ) फ से मैनेजर गोविंदचंद सुचं ( ६ ) ति विहारवालो ते बैठाशा सुज  
 ( ७ ) सं० १९६४ आसिन बदि ५

सजा संरूप के दाहिने तर्फ के आले का लेख ।

[ 2036 ]

- ( १ ) श्रीमद्विर जनेंद्र प्रणम्य श्री पात्रापुफी नगरी मधे आ श्री जित  
 ( २ ) बीब स्थानापन करोती श्वेतांबर आमनाय धारक शा० रूपचंद्र



( २६६ )

- ( ३ ) रंगीलदास देवचंद सा पाटन वाला हास मुकाम येवसा तथा मुंबई
- ( ४ ) बालाये आगो खजार तथा सजा मंरुपमां जमती सहीत आरस कराव्यो
- ( ५ ) संवत् १९६० सं० सेवक उत्तमचंद बालचंद मंत्री नगरवाला ।

सजा मंडप के बांये तर्फ के आखे का लेख ।

[ 2037 ]

- ( १ ) श्रीमद विर जिनैऊ प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जि
- ( २ ) न बीब स्थापन्न शा० रूपचंद रंगीलदास सा पाटन का
- ( ३ ) ला हास मुकाम येवसा तथा मुंबई स्वेतांबर आमना धारक वा
- ( ४ ) ला ये कराव्या ठे संवत् १९६०
- ( ५ ) मीस्त्री जार्जचंद जगजीवन सखाट पालीताणा वाला ।



## हैदराबाद - दक्षिण । \*

श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर - बेगम बजार ।

मूलनायक जी पर ।

[ 2038 ]

सं० १५५७ वर्षे ॥ महा सुदि ५ सोमे श्री पार्श्वजिन बिंब कारितं . . . . . ।

पाषाण की मूर्ति पर ।

[ 2039 ]

संवत् १५४० वैशाख सुदि ३ श्री संघे जहारक जी श्री जिन तपापति वाक जी प्रति०

---

\* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त हुये थे ।



श्री राजा जयसिंघ राजे . . . . . ।

[ 2040 ]

संवत् १५४० वर्षे वैशाख सुदि १ श्री चंद्रप्रभु बिंबं कारापितं ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[ 2041 ]

संवत् १६६० फागुण सुदि १३ साह मनोरथ सदापगामे प्र० . . . . . ।

[ 2042 ]

संवत् १७०० वर्षे मार्ग० सुदि २ शुक्रे राजनगर वास्तव्य ओसवंस झा० सा० वर्द्धमान  
तत्पुत्र सा० रायसिंघ केन स्वश्रेयोर्थ श्री पद्मावती बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा प० श्री किर्ति-  
रत्नगणिनिः ॥

[ 2043 ]

सं० १७०७ व० फा० सु० ८ सोमे श्रीमाली झा० सा० कुंठरजा जा० रतनबाई नाम्न्या  
उ० श्री विवेकहर्षजी श्री शांतिनाथ बिं० का० प्र० श्री तपा० ज० श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2044 ]

सं० १५१२ माघ वदि . . . सोमे नागर झातीय श्रे० कर्मसी जा० फहू सुत जोगी  
नाम्ना जा० जटि सुत लज्जयादि कुटुंबयुतेन श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० बृहत्तपा श्री रत्न-  
सिंह सूरिजि ॥

[ 2045 ]

सं० १५३० वर्षे वैशाख वदि १२ बुधे वडाजला गोत्रे ओस वंशे सा० बेटा जा० माव्ही  
सुत सा० धम्मर्मा जा० महू पुत्र नापा बाला हीरादि कुटुंबयुतेन आत्म श्रे० श्री शीतलनाथ  
बिंबं का० प्र० श्री संडेर गह्वे श्री यशचंद्र सूरिजिः ॥ श्री ॥



( ३६७ )

[ 2046 ]

संवत् १५६२ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ऊकेश वंश घोरवाड गोत्रे सा० वाचा जा०  
वाहिण दे पुत्र सा० रंगाकेन जा० रत्ना दे पुत्र सा० माहा घेता वेता प्रमुख परिवारयुतेन  
श्री सुमतिनाथ विं० का० प्र० श्री खरतरगढे श्री जिनहंस सूरिजिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—कारवान साहुकारी ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[ 2047 ]

संवत् १३२२ वर्षे वैशाख सुदि ११ सुगै श्री श्रीमाल झातीय जा० जयतेन निजमा-  
तामह ठ० सोढ जा० ठ० श्रियादेवी श्रेयसे श्री शांतिनाथ विं० कारितं प्र० श्री पृथीचंद्र  
सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिजिः ॥

[ 2048 ]

संवत् १४५० वर्षे फा० सुदि १ जौमे प्राग्वाट झातीय श्रे० धरणि सुत सिंघा श्रेयोचं तद्  
जातु श्रे० कान्हदेन श्री पार्श्वनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागढीचं जटारक श्री देव-  
सुंदर सूरिजिः ॥

[ 2049 ]

संवत् १४०१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ प्राग्वाट झातीय श्रे० सप्तमत जा० सामख दे  
सु० धर्माकेन जातु हीरा सिवा सहदे सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री अचिनदंन विं० का०  
प्र० मडाहड गढे श्री उदयप्रन्न सूरिजिः ॥

[ 2050 ]

सं० १६७७ व० फा० सु० ७ सोमे ओ० झा० सा० शिव सा० जा० सुजारादि पुत्र सा०  
रामाकेन जा० रतनबाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री-सुविधिनाथ विं० कारितं प्र० तपा गढे  
विवेकहर्षगणिजिः ॥



( २६९ )

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—रेसोडेन्सी बजार ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2051 ]

संवत् १४९४ मा० सु० ११ ओस वंशे काढहणसीह् लाइणि सुत कोवापाकेन श्री अंचलगठ  
श्री जयकोर्ति सूरिणामु० श्री नमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[ 2052 ]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उकेश झातौ श्रेष्ठी गोत्रे म० कमखा म० सिंवा  
जा० लखमा दे पु० साजण युतेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रज विंवं कारितं श्री ककुदाचार्य संताने  
प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 2053 ]

संवत् १५३९ वर्षे महावदि १३ शुक्रवारे सूरणा गोत्रे सा० नाथू पुत्र थिरा जार्या  
मुहडादे पुत्र सा० धेना जार्या हिमा दे पुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंवं कारितं श्री धर्मघोष  
गठे प्रतिष्ठितं जट्टारक श्री मानदेव सूरिजिः ॥

[ 2054 ]

सं० १५४१ माघ सुदि १२ प्राग्वाट झा० श्रे० जांटा जा० सूखेसिरि सु० जिणदासेन  
जा० लखी सुत हरदास सूरदासादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्य श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रति-  
ष्ठितं तपा गठे श्री ३ लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ मोर । षोयाणा वासी ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—चार कवान ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2055 ]

सं० ११९० मा० सु० ४ श्रा० वाकूकयां स्वश्रेयसे श्री महाक्कीर प्रतिमा कारिता ।



( १५० )

[ 2056 ]

सं० १४०१ व० मार्ग० सु० ५ बा० चतुर नाम्ना श्री संखेश्वरपार्श्व बिंब का० प्र० तपा  
श्री विजयदूर्ध्व सूरिजिः ॥

[ 2057 ]

सं० १६६७ वर्षे फागुण सुदि ० सोमे श्रीमाल ज्ञातोय सा० सूरज कुटुंबयुतेन श्री शान्ति०  
बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गळे जट्टारक श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

[ 2058 ]

सं० १६९० व० फा० सु० ५ गुरौ दौलतीबाद उ० झा० सा० श्रीमंत जा० षमांबाई नाम  
श्री शान्तिनाथ बिंब का० प्र० तपा गळे . . . . . ।

[ 2059 ]

सं० १६९७ फा० सु० ५ वृ० उकेसे वा० धीरा नाम्नी श्री शान्ति बिं० का० प्र० श्री  
तपा गळे विजयदेव सूरिजिः ॥

[ 2060 ]

सं० १७०१ (?) व० मा० गं० सु० द० ५ वा० वृ० प्रा० बा० कान्त नाम्ना श्री पार्श्व-  
नाथ बिं० का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

दादाजी के चरणों पर ।

[ 2061 ]

॥ संवत् १९६१ का वर्षे मिति माघ सुदि ५ गुरुबासरे श्री जै० युग प्रधान जगद्  
चूडामणि दादा साहिव १००० श्री जिनदत्त सूरि गुरुराज चरणपाडुका श्री चारकवाण  
का श्रीसंघेन कारापितं । पं० चारित्रसुखेन प्रतिष्ठापितम् श्रीसंघस्य कल्याण खेम कुशलम्  
समुपस्थिता ॥ हैदराबाद ॥



( १५१ )

[ 2062 ]

॥ सं० १९६१ वर्षे मि । माघ सु । ५ दिने । जं । युग प्र० १००८ दादा साहेब श्री जिन-  
कुशल सूरि पाडुका । च्यारकबाण ।

[ 2063 ]

श्री जिनकुशल सूरि चरणकमल पाडुकेज्यो नमः ॥ शुच संवत् १९६४ वैशाख धवस  
१० गुरुवासरे प्रतिष्ठितम् ॥



## मद्रास । \*

चंद्रप्रज्ञस्वामी का मंदिर - शूला बजार ।

मूल मंदिर का लेख ।

[ 2064 ]

- ( १ ) ॥ संवत् १९५२ रा शाके १८१७ मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथि दशम्यां  
रविवारे शूलाग्रामस्थः मालू गोत्रे सा० । कालः  
( २ ) राम रतनचंद खरतरगणोपासकेन कारापित जिनजवने चंद्रप्रज्ञु बिंबं स्थापितं खर-  
तर गछे क्षेमकीर्ति शाखायां विद्वद्ग्रामचंद्रगणि  
( ३ ) तद्विष्य पं प्र । उदयचंद्रगणिः तच्चरणांतेवासी उपाध्याय नेमिचंद्रेण प्रतिष्ठितं  
जिनजवनं स्थापितं बिंबं च पं० । श्यामलाल साकम्

मूलनायक जी पर ।

[ 2065 ]

॥ संवत् १९६० वैशाख सुदि ६ . . . कारितं श्री संघेन . . . . . ।

\* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से मिले थे ।



( १७१ )

मूर्तियों पर ।

[ 2066 ]

॥ सं० १९११ माह सुदि ७ गुरु । श्री चंद्रजिन बिंबं कारितं । श्री बृहत्खरतरगङ्गीय-  
ज्ज श्री जिनहंस सूरिजिः प्रति . . . . . ।

[ 2067 ]

॥ सं० १९११ माह ॥ सु० १७ । गु । श्री सुमतिजिन बिंबं कारितं । श्री बृहत्खरतरगङ्गीय-  
ज्ज श्री जिनहंस सूरिजिः प्रति . . . . . ।

धातु की पंचतीर्थों पर ।

[ 2068 ]

॥ सं० १५०५ वर्षे पौस सुदि १५ आ० विणवट गोत्र पा० स्तदा जा० मूदल दे पु ।  
सहसा जा० सुहड़ दे पितृमातृ पु० श्री चंद्रप्रज्ञो बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गढे पूर्णचंद्र  
सूरि पढे श्री महेंद्र सूरिजिः ॥ श्री ॥

ताम्रपट्ट पर ।

[ 2069 ]

॥ संवत् १९७० रा शके १७३५ रा ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयोदश्यायां चंद्र-  
वासरे ॥ जहारक श्री जिनफत्तेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं श्री मद्रास शूलामध्ये ॥

चंद्रप्रज्ञस्वामी का मंदिर—साहूकार पेठ ।

शिलालेख ।

[ 2070 ]

( १ ) ॐ

( २ ) ॥ नमः श्री वीतरागाय ॥

( ३ ) ॥ श्लोकः ॥ आसीत्सूरिपदप्रतिष्ठितरणैः श्री हेमसूरिप्रभुस्तत्पीठे प्रतिवादिबृन्द-



( १७३ )

- ( ४ ) जयदो विद्याकलानां निधिः ॥ श्री सूरेश्वरमूर्ध्वन्दितपदः श्री सिद्धसूरिगुरुर्ध-  
 ( ५ ) र्माजोदयत्तारकत्येतिनिपुणो वर्वर्त्ति सर्वोपरि ॥ १ ॥ प्रासादस्य कृतास्य तेन  
 ( ६ ) विष्टुषा माघस्थ शुक्ले बुधौ ज्योदश्यां श्रुतिसप्तनन्दकुमिते श्री विक्रमाब्देऽधुना ।  
 ( ७ ) सौजन्यातमृतसागरेण जगतां धर्मोपकाराय वै श्रीमज्जैनधुरंधरेण कृतिना नूनं  
 ( ८ ) प्रतिष्ठानघाः ॥ १ ॥ श्री विक्रम संवत् १९७२ माघ शुक्ल १३ बुधवारके दि-  
 ( ९ ) न श्री मदरास पत्तन साहूकार पेठमें श्री चन्द्रप्रज्ञस्वामी बिम्ब प्रतिष्ठा श्री-  
 ( १० ) मज्जैनाचार्य बृहत्स्वरतरगन्धोय जं । यु । जट्टार्क श्री जिनसिद्ध सूरिजी ।  
 ( ११ ) महाराज के करकमलों से समस्त संघ सहित जैरुक्कसजी सुखलालजी ।  
 ( १२ ) समदक्षिण ने बड़े महोत्सव से कराई । हरषचंद रूपचंदजी ने बिम्ब स्थाप-  
 ( १३ ) न किया वादरमलजी ने कलश चढ़ाया और हंसराजजी सागरमलजी  
 ( १४ ) ने ध्वजा आरोपण करी यह मंगल कार्य श्री संघको सर्वदा श्रेयकारी हो ॥  
 ( १५ ) ॥ हस्ताक्षराणि यति किशोरचन्द्रजो तद्विष्य मनसाचन्द्रस्य ॥

श्री दादाजी के बंगले में ।

[ 2071 ]

ॐ नमः दत्तसूरिजी ॐ नमः कुशलसूरिजी

मिति माह सुदि ५ संवत् १९३६ का ।

जैन मंदिर—साहूकार पेठ ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2072 ]

संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदि ५ बुधौ श्रीमाल ज्ञातीय नान्दी गोत्रे सा० प्रव्हा पुत्र  
 सा० प्रेताक्षेन पुत्र हरेराज सहित तत् पिता पुण्यार्थ श्री अजितनाथ बिंब कारितं प्रति-  
 ष्ठितं श्री स्वरतर गन्धे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥



( १७४ )

[ 2073 ]

संवत् १५१७ वर्षे पौष वदि ५ गुरु श्री श्रीमाल झतीय महं वित्रा जाण जासी सुत  
सोजा जाण हीरू आत्मश्रेयोऽर्थ जीवितस्वामी श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति-  
ष्ठितं पिप्पल गढे त्रितविया श्री धर्मसागर सूरिजिः । जीबुटग्रामे ।

[ 2074 ]

संवत् १५१८ वर्षे माघ शुक्ल १३ पाखण पुर ऊकेश झतीय साण पर्वत जाण जीविणी  
पुत्र शाण गेहाकेन जाण वारू पुत्र वस्त्रा जावड प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे पार्श्वबिंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पढे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

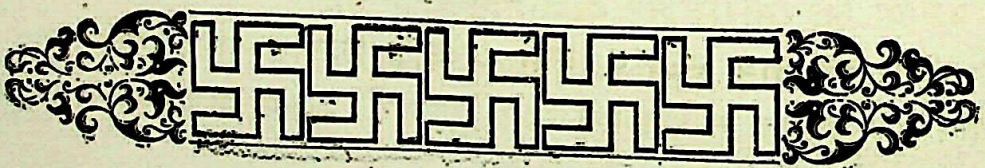
चौवीसी पर ।

[ 2075 ]

संवत् १४७७ वर्षे माघ . . . दि . . . वाइका झतीय श्रेण खीमा जाण लहिकू सुत  
आथा जाण हीसु पुत्र हापा गोपा जीरावि कुटुंबयुतेन श्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशति  
पट्टकारितः प्रतिष्ठितं तपागह्याधिराज जण श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥ श्रीशुजं जवतु ॥

[ 2076 ]

संवत् १५२१ वर्षे ज्यैष्ठ शुक्ल प्रास्वाट झतीय सं अर्जुन जाण टबकु सुत संण वस्ता जाण  
रामी सुत संण चान्दा जाण जीविणि सुत लीबा आका प्रमुख कुटुंबयुतेन ७२ चतुर्विंशति-  
पट्टात् कारयितश्च श्रेयसे श्री पद्मप्रजः चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः । श्री तपा पढे  
श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री रत्नशेखर सूरि तत् पढे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥





( १७५ )

## रायपुर-सी० पी० । \*

जैन मंदिर-सदर बजार ।

शिलालेख ।

[ 2077 ]

- ( १ ) ॥ श्री मदिष्ठदेवेभ्यो नमः ॥ श्रीमच्छ्रीवीरविक्रमादित्य राज्यात् नजवर्ण-  
( २ ) निधिइंद्रब्द ( १९५० ) शाके इंद्रिचंद्रसिद्धि नक्षत्रेश प्रमिते मासोत्तममासे द्वि-  
( ३ ) तीय आषाढ मासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ जार्गववासरे स्वाति नक्ष-  
( ४ ) त्रे साध्ययोगे बुधमार्गे एवं पंचांग शुद्धावत्र समये कर्कार्क गते रवौ शेषे-  
( ५ ) शु पूजनिरिद्धित वेलायां श्री मद्राजपुरवरे माळू गोत्रे साह तनसुखदा  
( ६ ) स(दास) तत्पुत्र साह आसकरणेनासौ श्री मच्चंद्रप्रज जिन्प्रजो प्राप्ता  
( ७ ) द कारितं स्वश्रेयोर्थ श्री बृहत्खरतर जट्टारक गह्वाधिपै जट्टारक श्री  
( ८ ) जितचंद सूरेश्वर प्रतिष्ठितश्चेति पं० सिवलाल मुनिरुपदेशात् ।

ताम्रपत्र पर ।

[ 2078 ]

- ( १ ) श्री जिनायनमः ॥ श्रीमत् वीर सं० १४११ विक्र-  
( २ ) म सं० । १९५१ शाके १८१६ प्रवर्तमाने मासोत्तम मा-  
( ३ ) से आषाढ शुक्लपक्ष तृतिया तिथौ गुरुवारे पु-  
( ४ ) ष्यनक्षत्रे मिथुनार्कगते रवौ शेषे शुभ निरिद्धि-  
( ५ ) त वेलायां श्री रतं(राज)वरे माळू गोत्रे साह धन-  
( ६ ) रूपजी तत्पुत्र साह फूलचंदजी कस्या जार्ग

\* स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त ।



( ७ ) हीरादेवी तथा श्री अजिनंदनजिनप्रज्ञो प्रासाद  
( ८ ) कारित स्वश्रेयं श्रीवृहत् खरतर गढे श्री जिनचंद सूरीश्वर  
( ९ ) जी आदेशात् श्री शिवलाल मुनि प्रतिष्ठितम् ॥ श्री शुभम् ॥

## उथमण - सिरोही ।

पञ्चासण के नीचे का लेख ।

॥ सं० १९४३ वर्षे माहा सुदि १० बुधदिने नाणकीय गच्छे उद्यमण चैत्ये धणेश्वर जाण  
धारमती पु० देवधर जेसड आढहा पाढहादि कुटुंब संयुते मातृ निमित्तं जखवट्ट करापितं ॥

## रोहेड़ा - सिरोही ।

पंचतीर्थियों पर ।

सं० ११७३ वर्षे फागुण सुदि ७ कोरंट गङ्गे . . . जीसा . . . धर्मनाथ विचित्रं कारितं  
प्रतिष्ठितं कवक सूरजिः ॥

सं० १३४१ वर्षे नाणकिय गढे : : : : : चतुर्विंशतिपट्ट कारितं प्रतिष्ठितं जट्टारक  
महेन्द्र सूरिजिः ॥



( १७७ )

[ 2082 ]

सं० १४९१ फागुण सुदि १२ गुरौ कोरंटवाल गढे उपकेश ज्ञातीय संखवालेचा गोत्रे नपसी पु० जाणाकेन श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंब कारितं प्रतिष्ठितं सांबदेव सूरिनिः ॥

[ 2083 ]

सं० १४९३ वर्षे माघ सुदि १३ उपकेश ज्ञातीय म० मांडण जा० सिरियांदे पु० काजा केन जार्या जह्नी सहितेन आत्मश्रेयसे श्री नमिनाथ विंब कारितं प्रतिष्ठितं जहारक श्री धनप्रज्ञ सूरिनिः ॥

[ 2084 ]

संवत् १५१३ वर्षे फागुण वदि २१ नागेंद्र गढे उपकेश ज्ञातीय कोठारी ... जा० लह्नी पु० मेघा जा० हीरु पु० नेरा कुंगर तोड्हा युतेन श्री आत्मपुण्यार्थे श्री वासुपूज्य विंब कारितं प्रतिष्ठितं विनयप्रज्ञ सूरिनिः ॥

[ 2085 ]

सं० १५१७ वर्षे वैशाख वदि ८ शुक्रे श्री श्रीमाल श्रेष्ठी जामा जा० साही पु० गोड्हा जा० आसि पु० पहिराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंब कारितं पूर्णिमापदे पुण्यरत्न सूरिणां प्रतिष्ठितं चाराही ग्रामे ॥

[ 2086 ]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० कोहाकेन जार्या कामल दे पु० जाड्हा हीदा युतेन धर्मनाथ विंब कारितं कन्नोलीवाल गढे पूर्णिमापदे गुणसागर सूरिनिः ॥

[ 2087 ]

सं० १५७६ आसाढ सुदि ९ रवौ उपकेशज्ञातीय नाग गोत्रे साह जोजा जा० जावल दे पु० मांडण आड्हा जेसा सहितेन मांडण जा० माणक दे पु० रंगा युतेन आत्मपुण्यार्थे संजवनाथ विंब कारितं प्रतिष्ठितं नाणांवाल गढे जहारक श्री . . . . .



( १७७ )

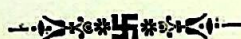
## भारज - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2088 ]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल झातीय पितृ धरकण जा० धरणा सुत  
काहु जा० कुंथि करमी सुत सहित युतेन श्री नमिनाथ बिंब कारितं बृह्मण्या गछे प्रति-  
ष्ठितं श्री विमल सूरिजिः वटपद्म वस्तव्य ॥



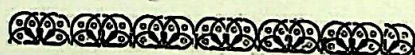
## गुडा - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2089 ]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ जसवाल बुहद सज्जन ठाकुर गोत्रे साह० पौमादे  
पु० जावड़ जावड़ गीदा सा० माणाकेन जा० मणिक दे पु० मेघराज हांसादि कुटुंबयुतेन  
स्वश्रेयोर्थ श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पद्म कारापितं । नाणावाल गछे श्री धनेश्वर सूरिजिः  
प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुंदर सूरिजिः सं . . . . ॥



## तिवरी - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

काजसग प्रतिमा पर ।

[ 2090 ]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० झा० श्रे० ऊवा जीदा जा० रूपल दे पु० . . .  
श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगढीय श्री देवजङ्ग सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंडेण ॥



( ३३६ )

## पाडीव - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2091 ]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाली झातीय राउल जा० बाला पु० देवा जा०  
लखियता सुत तेजा श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गहे अमरत्न सूरि गुरु-  
पदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥

---

## मडिया - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2092 ]

सं० १४७० वर्षे माघ सुदि २ गुरौ बाफणा गोत्रे साह बुंजा सुत देपाख जा० मेला दे  
पु० जोगराज जा० जसमादे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गहे श्री ककुदा-  
चार्याजिधान प्र० देवगुप्त सूरिजि ॥

---

## निंबज - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2093 ]

सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री नावहेड़ा गहे श्री कालिकाचार्य संताने उप-  
केश झातीय खांटेड़ा गोत्रे साह बाला जा० . . . पु० सामंत जा० हांसल दे पु० जोपाख



( ३८० )

उदा जोपाल जा० नतु दे पु० नाट्टहा सीवा उदा जा० उमा दे पु० रतना समरथ कुटुंबेन  
सह स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं श्री विजयसिंह सूरि पढे प्रतिष्ठित वीर सूरिजिः ॥

## छुड़वाल-सिरोही ।

जैन मंदिर ।

षषाण की प्रतिमा पर ।

[ 2094 ]

सं० १६४४ वर्षे फागण वदि १३ बुधे हालीवामा वास्तव्य श्री संघेन कारितं श्री शान्ति-  
नाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिः ॥



## डीसा ।

श्री आदीश्वरजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2095 ]

सं० १५४४ वर्षे का० व० २ शुके श्री जावडार गढे श्रीमाल झातीय म० धिरणल जा०  
ब्रह्मादेवि पु० मना जा० माट्टहण दे पु० सिंघा मेघा मेहा साणा जुठा सहितेन जाकि-  
तस्वामी श्री पद्मप्रभु प्रमुख चतुर्विंशति पढे का० प्र० कालिकाचार्य संताने श्री जावदेव  
सूरिजिः श्री वनरिया ग्रामे ॥

[ 2096 ]

सं० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ उपकेश झातीय गा० कनुज सो० करणा ज.  
अरघु पु० विसाल पितृव्य नयणा निमित्त श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० जित्तमाल गढे  
श्री कर्मात्तिक सूरिजिः ॥



( २०१ )

[ 2097 ]

सं० १६६३ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने श्री श्रीमाल झातीय व्य० टाहापान जा० चीबु  
निमित्त सुत लिंवा राणा जाजण सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री श्री आदिनाथ बिंब कारितं  
प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गढे ज० जाजीग सूरिजिः स्थिराद्र वास्तव्यः ॥

## श्री महावीर स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2098 ]

सं० १३१० वर्षे फागण सुदि १ शुक्ले ब्रह्माण गढे श्री जऊक सूरि गुरो श्रीमाल झातीय  
पिणनालक वास्तव्य आजा सुत देवधर श्रेयोर्थे आसधर सुत जादहणेन पितृव्य श्रेयोर्थे  
श्री महावीर बिंब कारितं प्र० श्री वयरसेणोपाध्याय आणि ॥

[ 2099 ]

सं० १३४४ वर्षे जे० व० ४ शुक्ले आसवाल झा० श्रे० वीरमस्य सुत बीजडेन निजमाहु  
वयज देवि श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्र० मल्लधारि श्री रत्नदेव सूरिजिः ॥

[ 2100 ]

सं० १४७६ वर्षे चैत्र वदि १ शनौ उपकेश झा० वडासिया गोत्रे सा० जेता जा० जइती-  
श्री सुत जीमा जा० सनपतआल श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रति० मल्लधारि गढे  
श्री विद्यासागर सूरिजिः ॥

[ 2101 ]

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ए चौमे श्री श्रीमाल झातीय सिंघा जा० मेळा दे पितृमातृ  
श्रेयसे सुत लषमणेन श्री शांतिनाथ बिंब कारितं प्र० ब्रह्माण गढे श्री वीर सूरिजिः ॥



( २०२ )

[ 2102 ]

सं० १४०४ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ श्री कोरंटकीय गढे श्री नन्नाचार्य संताने उपकेश  
ज्ञातीय मं० मलयसिंह जा० मालण देवि स० म० मदनेन पु० लुणा सहितेन जा० हेमा  
श्रेयोर्थ श्री संजवनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिजिः ॥

[ 2103 ]

सं० १५२० वर्षे वैशाख वदि ५ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सदा जा० सहजू पु० धीरा-  
केने जा० काली सहितेन पितृमातृ श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ विंभं कारितं प्र० श्री नागेंद्र गढे  
श्री गुणसमुद्र सूरिजिः प्र० सर्व सूरिजिः ॥

[ 2104 ]

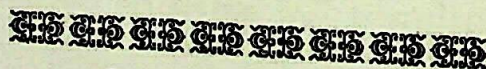
सं० १५२२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ पाट्टहाउत गोत्रे सा० शिवाराज जा० कर्मणि  
तत्पुत्र मेधा जार्या युतेन पु० सालिग मातृ श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं  
मलथारि गढे श्री गुणसुंदर सूरिजिः ॥

[ 2105 ]

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुद ३ उपकेश गढे श्री ककुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय  
बाफणा गोत्रे सा० . . . . वरु जा० जसमा वे पु० सोहडा दे पु० वस्ता आत्मश्रेयोर्थ श्री  
अजितनाथ विंभं कारितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[ 2106 ]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ वायना ज्ञातीय व० साह नारिंग सुत व० राजा-  
केन जा० रई पु० रीडा मेघा रोड़ा जा० इंडु प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यादि  
पंचतीर्थी आगम गढे श्री अमररत्न सूरिजिः गुरूपदेशेन कारितं प्र० विधिना पत्तन  
वास्तव्यः ॥





( १७३ )

## गुडली-मेवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[ 2107 ]

सं० १५४१ वर्षे वैशाख वदि ४ उपकेश झातीय सा० करमा जा० साहु पुत्र पीदा जा०  
लखमा दे पु० गोदा उजल जा० वडी पु० जेसा मेघा केमा हरमा सहितेन जिदरु निमित्त  
श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृहज्जे जट्टारक श्री धनप्रज सूरिजिः ॥

[ 2108 ]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ उपकेश झातीय मानींग जा० नंदि पु० देपा-  
केन पितृयुत्तेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गहे हुमतिलक सूरि पट्टे श्री  
उदयाणंद सूरिजिः ॥



## खारची-मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 2109 ]

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ . . . . . धर्ममाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं षंमेर गहे  
श्री शांति सूरिजिः हाविल ग्रामे ॥





( १७४ )

## खंडप-मारवाड ।

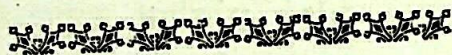
धातु की प्रतिमा पर ।

[ 2110 ]

सं० १५१७ वर्षे वैशाख सुदि ३ औसवाल ज्ञातीय साह हंसा पु० उधरण देदा वेला  
जा० वाहनु मोदरेचा गोत्रे साह लाधु जा० नामल दे पुत्रिका नानुं आत्मपुण्यार्थे श्री चंद्र  
प्रभु बिंबं कारितं श्री नाणकीय गढे धनेश्वर सूरिजिः ॥

[ 2111 ]

सं० १५१७ वर्षे . . . उपकेश ज्ञातीय ठाजेड़ गोत्रे पना जा० सुहवि दे पु० नरसिंग  
त्रिजणा सहितेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पल्लीवाल गढे श्री यशोदेव सूरि  
पढे श्रीश्री नन्न सूरिजिः ॥



## मांकलेश्वर-मारवाड ।

जैन मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[ 1187 ]

सं० १५३० वर्षे फागुण सुदी १० श्री ज्ञानकीय गढे उ० उत्तज गोत्रे सं० जाना जा०  
पदमिनी पु० साहा पीया स्था० प्रतिष्ठितं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० सिद्धसेन सूरि  
पढे श्री धनेश्वर सूरिजिः ॥



॥ श्री जैन लेख संग्रह द्वितीय खण्ड समाप्तः ॥





# आचार्यों के गच्छ और संवत् की सूची ।



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
अंचल गङ्ग ।					
१४६६	मेढुंग सूरि	१३५६	१६७१	कल्याणसागर सूरि	१४५६, १५२०, १५७८—१५८३
१४८३	जयकीर्ति सूरि	१०७१	१६७६	" "	१७८१
१४६०	" "	१२४२	१६७८	" "	१७८१
१४६४	" "	२०५१	१७०२	" "	१७४३
१५०५	जयकेशरी सूरि	१५६६	१६६७	उपाध्याय विनयसागर	१७८१
१५०६	" "	१४६३, १६११	१६६७	सोमाग्यसागर	१७८१
१५१३	" "	१४७३	१७६८	पं० लक्ष्मी रतन	२००८
१५१५	" "	१५८७	१८०५	" "	२००६
१५२३	" "	१०१६	१७६८	पं० हेमराज	२००८
१५२४	" "	११२६, १२७३, १७७६	१८०५	" "	२००६
१५२७	" "	१३१६, १६०६, २०११	१८०५	" "	२००६
१५२८	" "	१६१६	१८२१	रत्नशेखर सूरि	१४८६
१५२६	" "	१६१३	आगम गङ्ग ।		
१५३०	" "	१२८४	१४८८	जयानंद सूरि	१७६८
१५४५	सिद्धान्तसागर सूरि	११६६	१५०६	हेमराज सूरि	१००४
१५५३	" "	१४१२, १५७३	१५१७	" "	१५०५
१५५५	" "	१७७२	१५१६	" "	१७२१
१५७६	गुणनिधान सूरि	१४३६	१५१७	आनन्दप्रम सूरि	१७६६
१६२१	धर्ममूर्ति सूरि	१४५२	१५२५	देवरत्न सूरि	१८००
१६६५	मुनिशोल गणि	१८८६	१५३१	" "	१७५६
			१५३२	अमररत्न सूरि	१३२३
			१५३६	" "	२०६१



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१५४७	अमररत्न सूरि	२१०६	१५२०	" "	११२८, १२७१
१५३६	सिंघदत्त सूरि	१७३७	१५२१	" "	१३८६
१५६६	सोमरत्न सूरि	१२१६	१५२४	" "	१२७४, १४४३
१५७१	" "	१५७७	१५२८	देवगुप्त सूरि	१५७१

## उपकेश गण ।

१३(२) ५६	कक सूरि	१६२३	१५३४	" "	२०५२
१३२५	" "	१०३८	१५३५	" "	१२६२
१३८०	" "	१३५८	१५३७	" "	२१०५
१३८५	" "	१०४३	१५४४	" "	१६०३
१४५७	रामदेव सूरि	१४६०	१५४६	" "	१२६३
१४६८	देवगुप्त सूरि	१०६२	१५५८	" "	१६३४
१४७०	" "	२०६२	१५५६	" "	११०१, ११८६
१४८४	" "	१०७२	१५६६	सिद्ध सूरि	१३००
१४८६	" " ( मल्लधारोयक )	१६८२	१५६७	" "	१६५६
१४८२	सिद्ध सूरि	१०७०	१५७१	" "	१५७४
१४६१	" "	१५४६	१५७२	" "	१५७६
१४६३	सिद्ध सूरि	११८२	१५७४	" "	१४५०
१४६५	सर्व सूरि	१६४१	१५८८	" "	१४६४
१५०३	ककुदाचार्य ( कक सूरि )	१६३४	१५६२	" "	१३०५
१५०५	कक सूरि	११४८, १४७६	१५६६	" "	१३४७
१५०६	" "	११४६	१५२७(?)	सिद्ध सूरि	१३२२
१५०७	" "	१०८३, १२५०	१७८१	कर्पूरप्रियगणि	१०२४
१५०८	" "	१३३२	१६४०	सिद्धसूरि ( कमलागच्छ )	१४७८
१५०६	" "	१२५६	कठोलीवाल गण ।		
१५१२	" "	११५३, १२६१, १२६३, १३७३, १५०४	१४७१	संचितलक सूरि	१६३०
१५१७	" "	१८८३	१४६३	सर्वाणंद सूरि ( पूर्णिमापक्ष )	१६६६
			१४६३	लषमसोह ( " " )	१६६६



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१५१८	गुणसागर सूरि ( पूर्णिमापक्ष )	... २०८६	१३६१	जिनपद्म सूरि	... १६२६
१५३०	विद्यासागर सूरि	... १३६१	१४८२	जिनभद्र सूरि	... १५०३
१५३४	विजयप्रभ सूरि	... १३८२	१४६३	" "	... १२४४
			१४६६	" "	... १६००
			१५०३	" "	... १३२५
			१५०७	" "	... ११५१, १४००
			१५०६	" "	... १२५५, १३३३
			१५११	" "	... १५५०
			१५१७	" "	... १०१०
			१४६१	भव्यराज गणि	... २००४
			१५०६	जिनतिलक सूरि	... १२५७
			१५११	" "	... १८६०-६१
			१५२८	" "	... ११५८
			१५१५	जिनचंद्र सूरि	... २०२२
			१५१६	" "	... १३३५
			१५१६	" "	... १२७०
			१५२६	" "	... १३७६
			१५२६	" "	... १०६५
			१५३१	" "	... १२०६
			१५३२	" "	... १६४०
			१५३३	" "	... १८८१
			१५३४	" "	... १२८७, १२८६, १३१७
			१५३६	" "	... १०५६, १३४१
			१५१७	विवेकरत्न सूरि	... १७५५
			१५२५	कीर्तिरत्न सूरि	... १८८५
			१५२८	जिनप्रभ सूरि	... ११५८
			१५५३	जिनसमुद्र सूरि	... १६६२
१२६३	कक सूरि	... २०८०			
१३१७	सर्वदेव सूरि	... १६५०			
१३४०	... सूरि	... १७६२			
१४०६	कक सूरि	... २०१४			
१४३७	सांवदेव सूरि	... १०५७			
१४८४	कक सूरि	... २१०२			
१४६१	सांवदेव सूरि	... २०८२			
१४६६	" "	... १३३०			
१५०६	" "	... ११८३			
१५०८	" "	... १७३३			
१५०६	" "	... २०१२			
१५१७	श्री पाद...	... १४०४			
१५१८	सांवदेव सूरि	... १७२६			
१५३२	" "	... १३८०			
१५५३	नक्ष सूरि	... १६६८			
१५६७	नक्ष सूरि	... १६४२			

कोरंट गञ्ज ।

खरतर गञ्ज ।



संवत्	नाम	लेखाक	संवत्	नाम	लेखांक
१५५५	जिनसमुद्र सूरि	१२२४	१८५२	लालचंद्र गणि	१२०५, १२१६
१५५६	जिनहंस सूरि	१२६८, १४६३	१८५४	जिनदेव सूरि	१८२८
१५६२	" "	२०४६	१८६३	जिनहर्ष सूरि	१५२५
१६०६	जिनमाणिक्य सूरि	१३५१	१८६४	" "	१५२६-२८
१६२८	जिनमद्र सूरि	१४४८, १८४५	१८७१	" "	१६३८
१६५३	जिनचंद्र सूरि	११६६	१८७३	" "	१०१६
१६२७(?)	जिनसिंह सूरि	१३८८	१८७५	" "	१८४१-४२
१६६६	" "	१७१५	१८७७	" "	१०२७, १६४७-५६, १६६२-६६, १८३६-३८
"	गुणरत्न गणि	"	१८८५	" "	१८३६
"	शक्तविशाल गणि	"	१८८६	" "	१८२१, १८२४
१६६८	जिनचंद्र सूरि	१४५७	१६३८	" "	१८५०
१६६८	" "	१५८५	१८७७	उ० रत्नसुन्दर गणि	१०२७
१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१	१८७७	हारधर्म ( पाठक )	१६४७-५६, १६६२-६६
१६७५	जिनराज सूरि	१६७०	१८६३	जिन महेन्द्र सूरि	१६७१-७२
१६८६	" "	१६४७	१८६६	" "	१६४३
१६६८	" "	१६६७	१८६७	" "	१८७०
१६८६	परानयन (?)	१६४७	१६०६	" "	१६४५
१६६८	समयराज उपध्याय	१६६७	१६१०	" "	१५२६-३२, १६४६, १६६७-६८, १६७३, १८३०-३२
"	अभयसुन्दर गणि (वाचनाचार्य)	"	१६१३	" "	१६८२
"	कमललाम उपाध्याय	"	१६१४	" "	१६२२
"	लब्धकीर्ति गणि	"	१८६३	जिन सौभाग्य सूरि	१०१७, १०२०-२१
"	पं० राजहंस गणि	"	१६०५	" "	१३५२
"	पं० देवविजय गणि	"	१८६३	आनन्द बल्लभ गणि	१०१७
१६६०	जिनकीर्ति सूरि	११०७	१६३६	" "	१०२०-२१
"	जिनसिंह सूरि	"	१८६७	कुशलचंद्र गणि	१८७०
१७२७	म० राम विनय गणि	१००६	१६१८	जिन मुक्ति सूरि	१८६६-६८, १८७२
१८४६	जिनचंद्र सूरि	१८०७			



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१६२०	जिनहंस सूरि	१६६६, १७०१	१४६४	" "	१६५८
१६२१	" "	२०६६-६७	१४६५	" "	१२४५, १६७४, १६७५
१६२५	" "	१८१०	१४६६	" "	१६५७
१६३२	" "	१०१८	१४६७	" "	२०७२
१६३४	" "	१८११	१५०१	" "	१२४८
१६२०	सदालाभ गणि	१७०१	१५०३	" "	१८६५
१६३२	कनकनिधान मुनि	१०१८	१५०७	" "	११५१
१६३६	विवेककीर्ति गणि	१६५७	१५०६	" "	१३७२, १७२५
१६४२	हितचल्लभ मुनि	१८०८	१५१०	" "	१२३२
१६५०	जिनचंद्र सूरि	२०७७	१५०४	शुभशील गणि	१८४६, १८५४-५६
१६५१	" "	२०७८	१५२३	जिनहर्ष सूरि	११५७
१६५६	" "	१६३६-४०	१५२८	" "	१४३८
१६५२	उ० नेमिचंद्र	२०६४	१५६७	जिनचंद्र सूरि	१४१५
१६७०	जिन फत्तेन्द्र सूरि	२०६६	१५७२	" "	१८६६
१६७२	जिन सिद्ध सूरि	२०७०	१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१
१६७६	होराचंद यति	१००८			

## रंगविजय शाखा ।

## खरतर गण ।

## जिनवर्द्धन सूरि शाखा ।

१४६६	जिनवर्द्धन सूरि	१६६६, १६६७	१६२३ (?) जिनरंग सूरि	१००५
१४७३	" "	१२३८, १६६५	१८५६ जिनचंद्र सूरि	११७६, १२२७
१४७५	" "	१६८७	१८७४ " "	१८४८
१४६६	जिनचंद्र सूरि	११३६, १६६३	१८७७ " "	१००७, १२२६, १५६५
१४७६	" "	१२०६	१८७६ " "	१६७६-८०
१४८६	" "	१६६४-६५, १६८१	१८८८ " "	१५८६, १६२६, १६८३, १८२२, १८३४
१४६१	जिनसागर सूरि	१०७५, १३६६, १६१८, १६३२, १६७७, १६८४, १६६४	१६०२ जिन नंदिवर्द्धन सूरि	१२२८
			१६१७ " "	१६३०
			१६१३ जिन जयशेखर सूरि	१५३३, १६३७
			१६२१ जिन कल्याण सूरि	१४२५



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
चंद्र गद्य ।			उद्दिष्टेरा गद्य ।		
१०७२	सोलगल सूरि	३८६	१६१२	धर्ममूर्ति सूरि	११६४
१२३५	पूर्णभद्र सूरि	१६८८	"	भावसागर सूरि	"
१२५८	देवभद्र सूरि	१०३४	जापडाण गद्य ।		
१२७२	हरिप्रभ सूरि	१७७७	१५३४	कमलचंद्र सूरि	१२८८
१३००	यशोभद्र सूरि	१६७८	जीरापल्लीय गद्य ।		
१३१५	" "	१७७६	१४०६	रामचंद्र सूरि	१०४६
चाणांचाल गद्य ।			१५२७	उदयचंद्र सूरि	१५०६
१५२६	वज्रेश्वर सूरि	११५६	तप गद्य ।		
चित्रवाल (चैत्र) गद्य ।			१४०१	विजयहर्ष सूरि	२०५६
१३०३	जिनदेव सूरि	१६४६	१४२२	रत्नशेखर सूरि	१६२८
१३२१	आमदेव सूरि	१६२१	१४३६(?)	देवचंद्र सूरि	१७५२
१३३४	पं० सोमचंद्र	२०६०	१४५३	हेमहंस सूरि	१४८६
१३४०	अजितदेव सूरि	११३४	१४६६	" "	१६१७
१३५२	गुणचंद्र सूरि	१०४१	१४७५	" "	१२४०
१४६६	मुनितिलक सूरि	१६०१	१४९०	" "	१३२६
१५०१	" "	११४५	१४६६	" "	१४८१
१४६६	गुणाकर सूरि	१६०१	१४६८	" "	१३६७
१५१३	" "	१२६४	१५०१	" "	१४८२
१५१५	रामदेव सूरि	१०६०	१५०४	" "	११४७
१५२७	बाळचंद्र सूरि	१०६४	१५१०	" "	११५२
१५३१	नारचंद्र सूरि	१०६६	१५११	" "	१४०१
१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	११६३	१५१३	" "	१०८६, १२६६, १३७४
१५३६	" "	१४१०	१४५८	देवसुंदर सूरि	२०४८



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	सोमसुंदर सूरि	१४२१	१५१३	" "	११८४, १४०३
१४८४	" "	१६८०	१५१६	" "	१८८०, १६१२
१४८५	" "	१६७२, २०१७	१५१७	" "	१०३०, ११८५
१४८७	" "	२०७५	१५३८	" "	१६४१
१४८८	" "	१६८३	१५०३	जिनरत्न सूरि	१७५३
१४८९	" "	१०२६, १०६७, १७३१	१५३६	" "	१७७०
१४९१	" "	१०७४, ११८१	१५४१	" "	१६१४
१४९२	" "	१०७६	१५०३	जयचंद्र सूरि	१६६६, १६७३
१४९४	" "	१६६८, १६७१	१५०५	" "	१३७०
१४८८	मुनिसुंदर सूरि	१६८३	१५०८	उदयनंदि सूरि	१६३५
१५००	" "	१४६१	१५१०	रत्नसागर सूरि	१२५८
१५०१	" "	११२६	१५१७	कमलवज्र सूरि	१५८८
१४८९	रत्नसिंह सूरि	११४०	"	लक्ष्मोसागर सूरि	१०६१
१५१०	" "	१०८६	१५१८	" "	१७५६
१५११	" "	१६६६	१५१९	" "	१२६८, १८८४, २०७४
१५१२	" "	२०४४	१५२०	" "	२०२३
१५१३	" "	१७००	१५२१	" "	१२७२, १३१४, २०७६
१४९६	विजयविलक सूरि	१६६१	१५२२	" "	१११७
१५०२	रत्नशेखर सूरि	११४६	१५२३	" "	१०६२, १४३७, १६३३, १७५१
१५०४	" "	१२४६	१५२४	" "	१२०८, १५६०, १५६६
१५०६	" "	१११२, १६७०	१५२५	" "	१४८५, १५७०, १६३८
१५०७	" "	१६६५	१५२७	" "	१२७६
१५०८	" "	१०८४	१५२९	" "	१५७२, १६०२, २०२६
१५०९	" "	१०८५	१५३०	" "	११६०-६१, १२८२-८३
१५१०	" "	१५३६, १५४६	१५३४	" "	११६४, १२६१, १३१६
१५११	" "	१४०२	१५३५	" "	१५८६
१५१२	" "	१३६०, १२६२, १७५४	१५३६	" "	१४६५



संवत्	नाम	खेखांक	संवत्	नाम	खेखांक
१५४१	लक्ष्मीसागर सूरि	२०५४	१५४८	म० वाकजी	२०३६
१५४२	" "	११००	१५५२	जिनसुंदर सूरि	१२६४
१५५७	" "	१७७३	१५५५	धर्मरत्न सूरि	१७७१
१५१८	हेमविमल सूरि	१५४४	१५६३	इंद्रनादि सूरि	१६१०
१५५२	" "	१३४४, १६०४	१५७६	" "	१३५४
१५५४	" "	१४७७	१५६६	चरणसुंदर सूरि	११८३, २०२७-२८
१५५७	" "	१०२६	१५६६	नन्दकल्याण सूरि	११०३
१५६०	" "	१३२०	१५६६	जयकल्याण सूरि	२०२७-२८
१५६१	" "	१३४५	१५७५	" "	१६४३
१५६५	" "	१६४६	१५७६	सौभाग्यसागर सूरि	१३८७
१५६६	" "	११०२, ११७०	१५६५	माणंद विमल सूरि	१७३८
१५८०	" "	१७३०, १७३५	१५६६	विजयदान सूरि	११०४, १५०७
१५१८	सुरसुंदर सूरि	१४०५	१६०१	" "	११७६
१५२१	उदयवल्लभ सूरि	१४०७	१६६६	" "	१५०८, १५०६, १५४०
१५२२	सोमदेव सूरि	१११७	१६१७	" "	१५५३, १६६०
१५२५	सोमजय सूरि	२०२५	१६१६	" "	१६०७
"	सुधानंदन सूरि	"	१६२२	" "	१६०८
"	म० जिनसोम गणि	"	१५६७	सुमतिसाधु सूरि	१४७२
"	ज्ञानसागर सूरि	१०६३	१६१५	तेजरत्न सूरि	१३०७
१५२८	" "	१५६०, २०१३	१६१७	हीरविजय सूरि	१५५३
१५२६	संवेगसुंदर	१७६६	१६२४	" "	११६५, १२२५
१५३३	उदयसागर सूरि	१४४४	१६२६	" "	१७४०
१५३६	" "	१४४५	१६२७	" "	१३४८
१५५२	" "	१७६१	१६२८	" "	१२१४, १८६१
१५५३	" "	१८७६	१६३३	" "	१७८२
१५३४	पुण्यवर्द्धन सूरि	१२१०	१६३७	" "	१७६२, १६४२
१५३७	हेमरत्न सूरि	१३५३	१६३८	" "	१२१५



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१६४१	हीरविजय सूरि	१४५६	१७०५	" "	१६१३
१६४२	" "	१००२	१७०७	" "	२०४३
१६४४	" "	१६६१, १७१२, २०६४	१६५२	सोमविजय गणि	१७६६
१६५१	" "	१७६३	१६६७	" "	११०५
१६८५	" "	१६४३	१६५२	विमलहर्ष गणि	१७६६
" "	" "	१७४८	"	कल्याणविजय गणि	"
" "	" "	१५००	"	पद्मानंद गणि	"
१६३३	रवितागर गणि	१७८२	१६७७	विश्वेक हर्ष गणि	२०५०
"	शत्रुशाल	"	"	कल्याण कुशल	१७१७
"	विजयसेन सूरि	"	"	दया कुशल	"
१६४३	" "	१३०८	"	भक्ति कुशल	"
१६५२	" "	१७६६	१६८२	म० मुनि सागर गणि	१६३५
१६५६	" "	१७६४	१६८६	विजय सिंह सूरि	११०६
१६६१	" "	१७६४	१६६३	" "	१०२८
१६६७	" "	११०५	१६६६	" "	१३१०-११, १७६०
१६७०	" "	१६२८, १७४१	१७०१	" "	१५७५
१६५१	विजयदेव सूरि	१७८२	१७०३	" "	११६७
१६६७	" "	२०५७	१६६३	मतिचंद्र गणि	१०२८
१६७४	" "	१४६०	१६६४	उ० लावण्यविजय गणि	११०८
१६७७	" "	१७१७	१६६६	" "	१७६०
१६८५	" "	१३६१, १६४३	१७००	पं० कीर्तिरत्न गणि	२०४२
१६८६	" "	११०६	१७०६	विजयानंद सूरि	१०१४
१६८७	" "	११७३	"	विजयराम सूरि	"
१६६४	" "	११०८	१७१०	" "	१६१४, १६१०
१६६७	" "	२०५६	"	विजयसेन सूरि	१६१०
१६६६	" "	१७६०	१७१२	" "	१७४४
१७०१	" "	२०६०	१७१३	विजयप्रम सूरि	१७६७



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१७४४	विजयप्रभ सूरि	११७७	१४३८	पद्मशेखर सूरि	१२३५
"	मुक्तिचंद्र गणि	"	१४७४	" "	१२३६
१७६४	ज्ञानविमल सूरि	१७६६	१४८५	" "	१४६१
१८०५	पं० कुशलविजय गणि	१४६७	१४५५	सर्वाणंद सूरि	१०६०
१८०६	" " "	१४६८	१४३१	मलयचंद्र सूरि	१८७६
१८१८	" " "	१४५५	१४६५	" "	१२२०
१८०८	विजयधर्म सूरि	१११६	१४७३	पद्मसिंह सूरि	१०६४
१८४८	विजयजिनेंद्र सूरि	१२०४	१४८६	महीतिलक सूरि	११८०
१८७३	" "	१७२४	१५०१	" "	११४३
१८७६	" "	१७८७	१५०३	" "	१४६२
१८८०	" "	१७३४	१५११	" "	१५३८
१८४८	पं० पुण्यविजय गणि	१२०४	१४६५	विजयचंद्र सूरि	१०७७
१६०५	शान्तिसागर सूरि	१८२६	१४६८	" "	१२४७
१६१२	आनन्दसागर सूरि	१८६८	१५०१	" "	१०७६
१६३१	धरणेन्द्रविजय सूरि	१४६६	१५०३	" "	१५४७
१६३८	वृद्धविजय गणि	१८४८-५३	१५०४	" "	१३६६
१६४३	विजयराज सूरि	१८२७	१५०१	विजयप्रभ सूरि	११४४
१६४६	" "	१८०६	१५०५	महेन्द्र सूरि	२०६८
१६५४	पं० पद्मा विजै (?)	१७५०	१५०७	— —	१३६०
"	विजयसिंह सूरि	१८४०	१५०७	पद्माणंद सूरि	१२५१
१६६४	उ० वीर विजय	१४६६, १५०१	१५२६	" "	१३२६
कृष्णर्षि गण्ड - (तपगण्ड शाखा) ।			१५३५	" "	१०६८
			१५१३	साधुरत्न सूरि	१०८८
१५२५	कमलचंद्र सूरि	१२७५	१५२०	" "	१३७७
देवाजिदित गण्ड ।			१५१३	पद्माणक सूरि	१४७४
			१५२२	साधु — —	१०१३
१२०१	कनुदेव	१६६८	१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	१३१८
धर्मघोष गण्ड ।			१५६३	" "	१२६६
			१५३७	मानदेव सूरि	२०५३
१३३६	शुणचंद्र सूरि	१६५२			



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१५६३	श्रुतसागर सूरि	१३८४	नाणकीय (ज्ञानकीय, नाणावाल) गञ्ज ।		
१५६६	नंदिवर्द्धन सूरि	११६१	१२४३	— —	२०७६
१५७०	" "	१६२०, १६६३	१३४१	महेन्द्र सूरि	२०८१
१५७६	" "	१३०३	१३४६	" "	१७१६
१५७७	" "	१३२१	१४०५	शांति सूरि	१४८७
नमदाल गञ्ज ।			१४६३	— —	११११
१५३६	देवगुप्त सूरि	१३४०	१५०१	शांति सूरि	११४३
नागपुरीय गञ्ज ।			१५६४	" "	१५५६
— —	हेमरत्न सूरि	१६०६	१५६६	" "	१३२८
नागेन्द्र गञ्ज ।			१५७६	" "	२०८३
११६१	विजयतुंग सूरि	१७६७	१५१६	धनेश्वर सूरि	१५५२
१२६२	वर्द्धमान सूरि	१६२०	१५२७	" "	२११०
१२८१	उदयप्रभ सूरि	१७६३	१५३०	" "	(पृ० २८८) ११८७
१४०५	रतनागर सूरि	१०४८	१५३४	" "	२०८६
१४२२	रत्नप्रभ सूरि	१०५३	१५३६	" "	१३३६
१४३७	" "	११३६	१५४२	" "	१२३१
१४४६	उदयदेव सूरि	११२४	१५५७	महेन्द्र सूरि	१०३१
१४५०	देवगुप्त सूरि	१०५८	निष्ठति गञ्ज ।		
१४७४	सिंहदत्त सूरि	१०६५	१४६६	श्री सूरि	१०७८
१४८४	पद्मानंद सूरि	१०७३	निवृत्त गञ्ज ।		
१४६६	गुणसमुद्र सूरि	१३६८	१५०६(?)	महणं गणि	१००३
१५२०	" "	२१०३	पंचासरीय गञ्ज ।		
१५३३	गुणदेव सूरि	१८६४	११२५	चेल्लक	१८७३
१५५८	हेमरत्न सूरि	१६०५	पल्लीवाल गञ्ज ।		
१५७०	हेमसिंघ सूरि	१२१३	१४५८	शांति सूरि	१२९३
१५७२	— —	१३०१			
१७१५	रत्नाकर सूरि	१३१२			



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१४७६	यशोदेव सूरि	१८८२	१५३२	" "	१७२८
१४८२	" "	१६३१	१५२३	साधुसुंदर सूरि	११५६
१५१३	" "	१८८७	१५२६	" "	१२८१
१५२८	नन्न सूरि	२१११	१५४७	जयरत्न सूरि	१११६
१५३६	उद्योतन सूरि	१४६२ १५५५	१५४८	सौभाग्यरत्न सूरि	१७६०
	पार्श्वचन्द्र गह ।		१५५६	मनसिंह सूरि	१२१२
१५७७	पार्श्वचन्द्र सूरि	१५६१		पूर्णिमा गह ।	
	पिप्पल गह ।			जीमपद्धीय शास्त्र ।	
१४६१	बीरप्रभ सूरि	१६७५	१४८२	जयचंद सूरि	१५६४
१५१६	शालिभद्र सूरि	११५५	१५१५	" "	१३७६
१५१७	धर्मसागर सूरि	२०७३	१५७६	मुनिचंद्र सूरि	१३०२
१५३०	चंद्रप्रभ सूरि	१२२२		प्राया गह ।	
१५७०	तिलकप्रभ सूरि	१७२६	१३७४	शीलभद्र सूरि	१०४२
"	गुणप्रभ सूरि	"		बापदीय गह ।	
	पूर्णिमा(पद्म) गह ।		१२४२	जीवदेव सूरि	१६८६
१३८१	सोमतिलक सूरि	१६२४		बोकड़िया गह ।	
"	श्रीसूरि	"			
१४८५	सर्वानन्द सूरि	१२४१	१४५७	धर्मतिलक सूरि	१०६१
१४८६	विद्याशेखर सूरि	१३६७	१४६६	" "	१२४६
१५०१	गुणसमुद्र सूरि	१५६५	१५४६	मणिचंद्र सूरि	११६७
१५११	राजतिलक सूरि	१४८०	१५५६	" "	१४१४
१५१७	" "	१६३७	१५६२	" "	११६६
१५१६	" "	१७५७	१५८७	मलयहंस सूरि	१६१५
१५१७	पुण्यरत्न सूरि	२०८५		ब्रह्माण गह ।	
१५१६	" "	१५६७			
१५३२	" "	११६८	१३२०	वयरसेण उपाध्याय	२०६८
१५२१	गुणतिलक सूरि	१७५८	"	जभक सूरि	"



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१३५५	विमल सूरि	१६२२	मध्यम शाखा ।		
१३७५	विजयसेन सूरि	१४३४	- - देव सूरि	१६०५	
१४३७	हेमतिलक सूरि	११२३	मरुद्गुरु(मड्डारुडिय,मड्डहड़) गठ ।		
१४३६	बुद्धिसागर सूरि	११३७	१३५१	सोमतिलक सूरि	१०४६
१४६६	वीर सूरि	१३६४	१४८०	धर्मचंद्र सूरि	१०६८
१४८३	" "	२१०१	१४८१	उदयप्रम सूरि	१०६६, २०४६
१५१६	" "	१५५१	१५२७	नयचंद्र सूरि	१२७६
१४७१	उदयाणंद सूरि	२०१६	१५४१	कमलचंद्र सूरि	१३६०
१५००	विमल सूरि	१३६८	१५४५	" "	१३६२
१५१८	" "	१०११	१५५७	गुणचंद्र सूरि	११३०
१५१६	" "	१२६६	"	उ० आणंदनंद सूरि	"
१५२४	" "	२०८८	मधुकर गठ ।		
१५११	मुनिचंद्र सूरि	१२२१	१५१६	- - -	१७३६
१५१३	उदयप्रम सूरि	१०८६, १३७४	मह्वधारि(मह्ववादि) गठ ।		
१५२४	" "	१४६५	१२३४	पूर्णचंद्र सूरि	१८७५
१५१३	हेमहंस सूरि	१३७४	१३४४	रत्नदेव सूरि	२०६६
१५१६	बुद्धिसागर सूरि	११८८	१४७६	विद्यासागर सूरि	२१००
"	उदयाणंद सूरि	२१०८	१४७७	मुनिशेखर सूरि	११२५
१६६३	जाजीग सूरि	२०६७	१५१०	गुणासुंदर सूरि	१६६०
जावडार(जावड़,जावहेड़ा) गठ ।			१५१२	" "	१७७५
१५०६	वीर सूरि	२०६३	१५१५	" "	११५४
१५२४	भावदेव सूरि	२०६५	१५२२	" "	२१०४
१५३७	" "	११६५	१५२५	" "	१२३०
१५३६	" "	१३४२	१५२७	गुणशेखर सूरि	१२७८
जिन्नमांछ गठ ।			१५३२	पुण्यनिधान सूरि	१२८५
१५६३	कर्मात्तिक सूरि	२०६६			



संवत्	नाम	खेखांक	संवत्	नाम	खेखांक
१५३४	गुणविमल सूरि	१३३८	१५३८	देवसुंदर सूरि	१६२१
१५५७	गुणवर्षाण सूरि	११६८	लौपक गह ।		
१५६६	लक्ष्मीसागर सूरि	११३१	१६३२	अजयराज सूरि	२०३४
१५८१	" "	१४८४	१६५३	गंगाखी यति	२०३३
१६६६	कल्याणसागर सूरि	१८६६	वड गह ।		
"	उदयसागर सूरि	"	१५७२	चंद्रप्रभ सूरि	१३८६
मोढ गह ।			विजय गह ।		
१२२७	जिनभद्राचार्य	१६६४	१६२१	शांतिसागर सूरि	१५६६-६७
रडुल गह ।			१६२४	" "	१५११-१८, १५३५, १५४२-४३, १५५६, १५६८, १६००-०१, १६०८, १६१५, १६२३
१५७६	श्रीसूरि	१६२५	१६३१	" "	१८०६, १८२५, १८३३
रांका गह ।			१६३२	" "	१८२३
१३२०	महीचंद्र सूरि	१७८०	१६३३	" "	१७०२-०३
राज गह ।			१६४३	" "	१८२७
१३३६	अमरप्रभ सूरि	१६५३-५४	विद्याधर गह ।		
१५०६	पद्माणंद सूरि	११७४	१४११	विजयप्रभ सूरि	१११८
१५५२	पुण्यवर्द्धन सूरि	१५६१	१४१३	विनयप्रभ सूरि	२०८४
रामसेनीय गह ।			१५१८	हेमप्रभ सूरि	१६२४
१४५८	धर्मदेव सूरि	१२३६	१५२०	" "	१३१३
१५०३	मलयचंद्र सूरि	१०८०	विवंदणीक गह ।		
१५११	" "	१०८७	१५१२	सिद्ध सूरि	१६५८
रुद्रपल्लीय गह ।			१५२४	कक सूरि	१७२७
१२६०	अभयदेव सूरि	२०२६	वृहन्नग ।		
१४२१	जिनराज सूरि	१०५२	१३१६	हीरभद्र सूरि	१३२४
१५१३	सोमसुंदर सूरि	१३१५	१३३४	— — —	१८०१
१५१७	" "	१२६७			



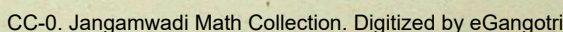
[illegible]



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
सिद्धान्तिक गण ।			१३८०	पञ्चानन्द सूरि	१४३५
१४०८	माणचंद्र सूरि	१४२७	"	जगतिलक सूरि	"
हर्षपुरीय गण ।			१३८६	धर्मप्रभ सूरि	१५०२
१४५५	गुणसुंदर सूरि	१२६५	१३६६	भावदेव सूरि	१०४७
हुंबड़ गण ।			१४०५	अभयदेव सूरि	१८८६
१४५३	सिंहदत्त सूरि	१०५६	१४०७	गुणप्रभ सूरि	१०५०
जिनमें गणों के नाम नहीं हैं ।			१४०६	सर्वानंद सूरि	१०५१
६३७	उद्योतन सूरि	१७०६	"	सर्वदेव सूरि	"
"	वच्छवल देव	"	१४२३	शालिभद्र सूरि	१०५४
११६६	श्रामदेव सूरि	१०३३	"	अभयचंद्र सूरि	१०५५
१२५३	जिनचंद्र सूरि	१७८५	१४३६	— — —	१६२६
१२६२	भावदेव सूरि	१०३५	१४६८	श्री सूरि	२०१०
१२८८	सर्वगुप्त सूरि	१०३६	१४७८	" "	१०६६
१३०२	माणिक्य सूरि	१७८३	१४७०	देव सूरि	१३६६
"	जयदेव सूरि	२०२३	१४८४	जयप्रभ सूरि	२०००
१३१०	परमानंद सूरि	१७६५	— —	जिनरतन सूरि	१६६३
१३३८	" "	"	१४६३	अमरचन्द्र सूरि	१२४३
१३२२	जयचंद्र सूरि	२०४७	"	धनप्रभ सूरि	२०८३
१३२३	उद्योतन सूरि	१०३७	१४६६	शीलरत्न सूरि	१४२३
१३३८	श्री सूरि	११२१	१४६७	मुनिप्रभ सूरि	१३३१
"	पूर्णभद्र सूरि	१७६१	१५०१	मंगलचंद्र सूरि	१३६६
१३४०	प्रद्युम्न सूरि	१३६४	१५०३	धर्मशेखर सूरि	१७६८
१३६१	विद्युधप्रभ सूरि	११२२	१५०६	सर्व सूरि	१०८२
१३७५	जिनभद्र सूरि	१७६५	१५०६	साधु सूरि	१२५४
"	रत्नप्रभ सूरि	१७६५	१५२६	श्री सूरि	११२७
१४२२	" "	१०५३	१५३३	" "	१४७०
			१५२१	सुविहित सूरि	११७५
			१५२३	कनकरत्न सूरि	१५६८



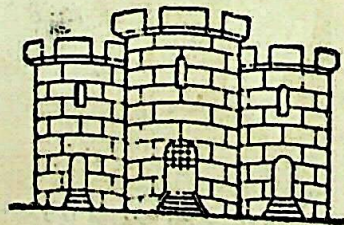
जिनमें सम्बत् नही है ।





## दिगम्बर संघ ।

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
काष्ठा संघ ।			१४५७	पद्मनंदि	१००६
१३६०	तिहुण कीर्त्ति	११३५	१४७२	"	१०६३
"	— —	१२२६	१५३४	भ० ज्ञानभूषण	११२०
१४६७	जिनचंद्र	१४८३	"	भ० भूवनकीर्त्ति	"
१५०६	मलयकीर्त्ति	१२५२	"	रत्नकीर्त्ति	१४५८
१५४६	— —	१३४३	१५४६	जिनचंद्र	१०१५
काश्ची संघ ।			१५६२	" "	१४४७
१४६७	कोत्तिदेवा	१४२७	१५५२	— —	१४२६
१५१०	विमलकोर्त्ति	१४२८	१६१६	सुमतिकीर्त्ति	१६३६
नंदि संघ ।			१६५२	चंद्रकीर्त्ति	११३२
— —	क्षेमकोर्त्ति	१७८६	१६८६	पद्मनंदि	१७६५
मूल संघ ।			जिनमें संघ के नाम नहीं हैं ।		
१४४३	— —	१४२०	१६०८	क्षेमकीर्त्ति	१४४०







# श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि की सूची ।



ज्ञाति - गोत्र

लेखांक

अग्रोत(क) [ अग्रवाल ] ।

...	...	...	१६४४
गर्ग	...	...	१४२८
मोद्वल	...	...	१४२७

गोत्र ।

असवाल [ उपकेश ] ।

...	१०१६, १०३६, १०५७-५८, १०६८, १०७२-७३, १११२, १११७, १११६, ११२३, ११२७-२८, ११४१-४२, ११४५, ११७१, ११८४, ११६४-६५, १२०६, १२३७, १२३८, १२४३-४४, १२४६, १२५४, १२५६, १२७१-७७, १२८२, १२६४, १३१६, १३२०, १३३०, १३३५, १३४४, १३८३, १३६३, १३६५, १४००, १४०७, १४१४, १४३६, १४४४, १४६१, १४७३, १४८८, १४६३, १४६५, १५०३, १५०६, १५१६, १५२२, १५३५, १५४०, १५५४, १५६८, १५७३, १५८७, १६०४, १६१३, १६३५, १६३६, १६५४-५५, १६५६-६०, १६६२, १७०६, १७४०, १७६४, १७७०-७१, १७६०, १८२८, १८४३, १८८६-६०, १८६३, १९००, १९१५, १९३५, १९४३, १९७१-७२, १९७६, १९७६, १९८२, १९६६, २००६, २०४२, २०५०-५१, २०५८-५९, २०७४, २०८३, २०६६, २०६६, २१०२, २१०७-०८
-----	---

गोत्र ।

अनाडकछोली	...	...	१५८५
अजमेरा	...	...	१५४७

ज्ञाति - गोत्र

लेखांक

अरडक सोनी	...	...	१४५१, १४५७
आईरी	...	...	१२५३
आदि	...	...	१८१८
आदित्यनाग	...	११५३, ११८२, १२६१, १२६३, १२७४, १३०५, १३४७, १३६६, १४८६, १५४७, १५७४, १६०३	
आबूहरा	...	...	१७६४
आयत्रिण्य	...	...	१४६४
आयार	...	...	१२६२
ईटोदड़ा	...	...	१०६६
उच्छित्तवाल	...	...	१२६६, १४६२
उत्तम	...	११८७(पृ० २८४), १३२८, १४८७	
कच्छा	...	...	१२४२
कटारिया	...	...	१२८७
कठउतिया	...	...	१६३४
कनोज	...	...	११०१
कयणआ	...	...	१२८८
करमदिया	...	...	१२४८
कस्याट	...	...	१६३६
काकरेचा	...	...	१५५६
कांकरिया	...	...	१५२६, १५२८
काठड़	...	...	१६६२
कालापमार	...	...	१४०४
कावड़िया	...	...	१४६७



ज्ञाति - गोत्र	लेखांक	ज्ञाति - गोत्र	लेखांक
कावू	१०३१	छाजहड़ ( छाजेड़ )	१५११, १५१३, १५३१, १८८२, १८८६-८७, २१११
काश्यप	१६६१	छाहखा	१४८१
किलासीया	१५५२	छोहरिया	१४०१
कुचेरा	१५६३	जहड़ ( जहड़ )	११५०, १२८६
केकड़िया	१२३६	जाइलवाल	११८०, १३२६, १५३८
कोठारी	१०२५, १३५५, १४४१, २०८४	जाजा	१६४०
खां(पां)टड़	११६५, १४६१, २०६३	जोजाउरा	१०६०
खामलेवा	११५६	टप	१३०४, १६३६
खोथेपरिया	१३७५	ठाकुर	२०८६
गहिलड़	१२२५, १२७८, १८१६	डवेयता	१०१३
गादहिया	१०१२, १५४६	डागलिक	१७३३
गांधी	१४१२, १४३६, १४८६, १६४५, १८४७	डागा	१५६५, १६०४
गुगलिया	२००२	डांगरेवा	११०७
गूंदोवा	१०६४, १२६४, १३८५, १६०१	तातहड़	११८६
गोठ	१३८८	ताल	१०८८
गोलवछा	१८३६	ताहि	१०६५
घांघ	१४८४, १८६६, १६६०	तेलहरा	१०६६
घोरवाड़	२०४६	थुंभ	१२७०
चउथ	१५१०	दढा ( दरडा )	११६७, २०२२, २०३१
चलउट	१२३२	दूगड़	१०१७-१८, १०२२, १०२७, १२६७, १२८०, १४६८, १६२५, १६७४, १७०१-०३, १८१०, -१२, १८२१-२२, १८२४, १८२६, १८३६, १८४४, १८६५, २०३२
चलद (?)	१०८७	दूधेड़िया	२०३४
चिपड़	१७८३	दोसी	१३३५, १५५०
चोपड़ा	१३५५, १५५७	धरकट	१२०७
चोरड़िया ( चोरवेड़िया )	१०२४, १३५५, १४५२, १४६७, १५२४, १५३०, १५७६, १५८६, १६००, १६०८, १६८५	धरावही	१२६०
चंडालिया	११६८, १२८५	धाड़ीवाल	१४२५
छकलाणी	१३४६		



ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
धामो ...	१३३६	वारडेचा ...	१६६८
नखत ...	१६७६	वांढटिआ ...	१३५३
नवलक्ष ( नवलखा )	११३६, १३५०, १८३४, १६५८, १६६०, १६६४, १६७५, १६७७, १६८१, १६८४, १६८६, १६६४	विराणी ...	१८५८
नाग ...	२०८७	बोथगा ...	१३१७, १३४१
नाहटा ...	१०१८, १०२१, १५२५, १५२७, १६४६, १८६६-६६, १८७२, १६४७, १६५७	भणसाली ...	१४१३
नाहर ...	१०४१, १०५२, १३१८, १३२१, १३६०, १३६६, १४६०, १३२३, १८७६	भंडारा ...	१३०६, १८२७
नोसतिकि(?) ...	२०००	भाद्र ...	१३३४
पटालिया ( पटोल )	१५६१	भुरी ...	१३८४
पंचाणेचा ...	१०७५	मडाहड ...	१७२६
महलावत ( पाल्हाडत )	१५२६, १५४१, १६२६-३०, २०६५, २१०४	मंडलेचा ...	१२६५
ग्राम्हेचा ...	१३४२, १३७६	मारु ...	१६६६
पुगलिया ...	११६०	मालकस ...	१५१६-१७, १५५६, १८३८
पोमालेचा ...	१३८०	मालू ( मालू )	१३२५, १३३३, १३७२, २०६४, २०७७-७८
फूलपगर ...	१३८६	मिठडिया ...	१६१६
वडालिया ...	२१००	मेडतावाल ...	११३१, १२६५
वडेर ...	१६४६	मोदरेचा ...	२११०
वढाला ( वडाडला )	१२६६, २०४५	रांका ...	१००८, १०७७, १३००
वरडिया, ( वरहडिया )	११०६, ११६२-६६, ११६२, १५३५, १५४३	राणुकाथेच(?) ...	१४०८
वलही ( वलह )	१४५०, १५७१	लालण ...	१७८१
बहुरा ...	१५४२	लिंगा ...	१४४३
बंम ( बांम )	१३३८, १६६१	लुंकड ...	१७५५
बाफ(प)णा ...	१११५, १३८६, २०६२, २१०५	लोढा ...	१०१०, ११०५, ११५१, १२२३, १२६६, १३१५, १४१७, १४४६, १४५६, १४६६, १४८२, १५२० -२१, १५७८-८४
बावेल ...	१०६४, १२३०, १२८६	लोलस ...	११४३
		वईताला ...	१८६६



ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
वच्छास	... .. ११५४	सिंघाड़िया	... .. १२११
वड	... .. १४७०	सीतोरवा	... .. १२३१
वडाहड़ा	... .. १२४०	सुचंती	११४८, ११८३, १३३२, १३७३, १४३५, १४६४, १५१८, १५३५, १५६६-६८, १६०१, १६४१-४२, २०३३, २०३५-३६
वर्द्धमान	... .. १३६६	सुराणा	१०७६, १११३, ११७४, ११६१, १२३८, १३०३, १३२६, १३५६, १४२३, १४७४, १५६६, १६२०, १६६३, २०५३
वमा	... .. १६७३	सेठ	१६४७-४८, १६५०-५१, १६५३-५५
वायचाणा	... .. १८४०	सेठिया	... .. १३५५
वासुत	... .. १०८१	सोनी	१४५४, १६२१, १७१६, १६०६
वाहना	... .. १७१२	हट्टचायि	... .. १२३७
विणवट ( विंवट )	१०६०, १८८३, २०६८	हुंडोयुरा	... .. १६०३
विद्याधर	... .. १०१२		
वि...क	... .. १३७४		
विमल	... .. १०८६		
वीरोलिया	... .. १४६२		
वेद ( मुहता )	१४७८, १५१२, १५१४-१५, १५३४		
वोहड़	... .. १३६६		
वौकरिया	... .. ११६६		
शंखवाल ( शंखवालेचा )	११६६-६७, १२६८, १५६२, १८८५, २०१२, २०८२		
शीलोद्या	... .. १२१०, १४१६		
शुभ	... .. १३३६		
श्रेष्ठि	१२५६, १२७१, १२६३, १३६२, १३६०, २०५२		
समदड़िया	... .. २०७०		
साउमुखा	... .. १८१३-१४		
साष्ट(ख)ला	... .. १०७७, १०६८		
साहलेचा	... .. १६३१		
साहू	... .. १७२५		
सिरहठ	... .. १०८२		



ज्ञाति - गोत्र			खेखांक	ज्ञाति - गोत्र			खेखांक
गोत्र ।							
भणशाली	...	...	१६८६	१२७२-७३, १२७६, १२८३, १३०८, १३१४,	...	...	...
गेपुत्रौवाल ।				१३१६, १३२२, १३२७, १३३१, १३५४, १३६१,	...	...	...
---	...	...	१८६२	१३७८ १३८१-८२, १३६१ १४०२-०३, १४११,	...	...	...
जसवाल ।				१४३७, १४६५, १४७७, १४६६, १५४६, १५६१,	...	...	...
---	...	...	१४४७	१५६६-७०, १५७२, १६०२, १६४३, १६६५,	...	...	...
दीसावाल ।				१७१३-१४, १७२३, १७३०-३२, १७३५, १७५१	...	...	...
---	...	...	१७०७ १७१६	-५४, १७५६ १७६१, १७७६-८०, १७८८, १७६३,	...	...	...
नागर ।				१७६५, १७६६, १८८०, १८८४, १८६१, १६०२,	...	...	...
---	...	१३८७, १६१४, १६४२, २०४४		१६११, १६१६, १६२४, १६२७ १६३८, १६६६,	...	...	...
गोत्र ।				१६६८-६६, १६७३, २०१६-१७, २०२४, २०४८	...	...	...
अलियाण	...	...	१३५६	-४६, २०५१, २०५४, २०६०, २०७६, २०८६,	...	...	...
पल्लीवाल ।				२०६०	...	...	...
---	...	...	१७७८, १७६१-६२	गोत्र ।			
पापड़ीवाल ।				अंबाई	...	...	१२१४
---	...	...	१०१५	कोठा०	...	...	१२५०
प्राग्वाट [ पोरवाड़ ] ।				कोड़की	...	...	१३०८
१०१४, १०२६, १०२८-३०, १०४७, १०५३-५४,	...	...		नाग	...	...	१७४३
१०६१, १०६६-६७, १०६६, १०७१, १०७६,	...	...		भंडारी	...	...	१११६
१०८४-८५, १०६१-६२, १०६७, ११००-०४,	...	...		प्राग्वाट [ लघुशाखा ] ।			
११२५-२६, ११३०, ११३६, ११४६, ११६०	...	...		---	...	...	१६१४
-६१, ११६४, ११७०, ११७२, ११८५, ११६३,	...	...		वधेरवाल ।			
११६८, १२१३, १२४१ १२५८, १२६०, १२६८,	...	...		---	...	...	१५६४
	...	...		वायड़ा [ वायट ] ।			
	...	...		---	...	...	१२१६, १३२३, १५७७,
	...	...		---	...	...	१६२०, २०७५, २१०६
	...	...		जदेउरा ।			
	...	...		---	...	...	१६३१



ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

जैलड़िया वंश [ साधुशाखा ] ।

मेवाड़ ।

--- ... १५३६

--- ... २०२५

जेणी वंश ।

मोढ ।

--- ... १४२६

--- ... १११८, १३१३, १६१०,

महत्तियाण [ मंत्रिदलीय ] ।

१६२४, १८००, २००७

--- ... १०५६, १८४६, १८५४

राटजरीय ।

गोत्र ।

--- ... १६४६

काणा ... १६६७

वीर वंश ।

काद्रड़ा ... "

--- ... १६०६

चोपड़ा ... "

जाजोषाण ... "

श्रीमाल ।

जाडड़ ... १८५५

--- १००४, १०११, १०४२, १०४४, १०४८,

जूरु ... १६६७

१०५०, १०५५, ११२४, ११३७, ११५५,

नान्हड़ा ... "

११६२, ११७५-७६, ११८१, ११८८,

पारहड़िया ... "

१२१२, १२१५, १२२१-२२, १२६२,

महधा ... "

१२६६, १२८१, १२८४, १३०२, १३१२,

माणवाण ... "

१३६४, १३६८-६६, १३६४, १३६७-६८,

मुंड ... ११५७

१४०५, १४१०, १४२१-२२, १४४२,

रोहदाय ... १६६७

१४४५, १४६६, १४७२, १४७५, १४८०,

बजागरा ... "

१४६०, १५०४-०५, १५०८, १५३३,

वार्तिदिया ... १८५६

१५५१, १५६५-६७, १५६०, १६०५,

संघेला ... "

१६२७, १६६१, १७१७-१८, १७२१,

मित्रवाल ।

१७२७-२८, १७३६-३७, १७३६, १७४६,

गोत्र ।

१७५७-६०, १७७२-७३, १७७५, १७६७,

... १८४५

-६८, १८६४, १८६२, १८६६, १८३७,

१८४६, १८८०, १८८३, १८८७, २०१०

-११, २०१३, २०४३, २०४७, २०५७,

२०७३, २०८५, २०८८, २०६१, २०६५,

२०६७-६८, २१०१, २१०३



## ज्ञाति-गोत्र

## लेखाक

## ज्ञाति-गोत्र

## लेखांक

## गोत्र ।

## श्रीमाल [खघुशाखा] ।

अंबिका	...	...	११६३
एलहर	...	...	१६७६
खा(पां)रड	...	...	१५२३, १६१८
जुनीवाल	...	...	११५८
भुंगटिया	...	...	११४७
दाडो	...	...	१४३८
डांक	...	...	१६१६, १६३८
डडडा	...	...	१३७७
ढोर	...	...	१२०६, १८६०-६१
घांघीया	...	...	१४१५
जावर	...	...	१६६३
जांवी	...	...	१८६५, २०७२
पटणी	...	...	१२०४, १५६२
पल्लवड़	...	...	१२६७, १४०६
फोफलिया	...	...	११७६, १२२८, १५६४, १६४४, १६८३, १६८६
भणशाली	...	...	१७८२
भांडिया	...	...	१५३५, १६१५, १६७४
मडडिया	...	...	१६५६
मांथलपुरा	...	...	१४८६, १६६७
मुहरल	...	...	१४८५
बहकटा ( बगहटा )	...	...	१४६३, १६३२
श्रेष्ठि	...	...	२०८५
सीघड़	...	...	१२२४, १२२७

## श्रीमाल [गूर्जर] ।

## गोत्र ।

बहरा	...	...	१४७६
------	-----	-----	------

## गोत्र ।

फूसखाणा	...	...	१५३५, १६३२
---------	-----	-----	------------

## श्रीवंश ।

...	...	...	११२६, १३०१, १७७४, १७७६
-----	-----	-----	------------------------

## गोत्र ।

राउत	...	...	१७१६
------	-----	-----	------

## हूं बड़ ।

...	...	...	१०५१, १०५६, १०७८, १०८६, ११२०, ११३५, ११४०, १३०७, १३४५, १४२४, १७२०, १७६५, १८७६
-----	-----	-----	--

## गोत्र ।

फडी	...	...	१७००
बध	...	...	१०६३
मंत्रिअर	...	...	१३०७, १६६६
रनघणा	...	...	१०६५
बजीयाणा	...	...	१६३६
ब्रररजा (?)	...	...	१०६३

गोत्र - जिनमें ज्ञाति, वंशादि का

उल्लेख नहीं है ।

काजड़	...	...	१३४८
खिरुत	...	...	११४४



( १६ )

गोत्र	लेखांक	गोत्र	लेखांक
चंडेजरिया	१३६७	वज्रजातोय	१६११
चंदवाड़	११३२	विणचट	१०६०
छाहना	१४८१	विपड़	१६३४
नइट	१३४०	वेलुयुतो	१८१३
दहदहड़ा	१०८०	बटगड़	१२५१
फाफटिया	१२४७	सापुठा	१२२०
भाईलेवा	१५५५	सामलिया	१५३७
मुठिया	१२५७	हिंगड़	११५२

## शुद्धि पत्र ।

पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१०५६	१४३६	१५३६	१५१	१६६५	१६७७	१८७७
"	१०५७	कारंट	कोरंट	२१३	१८३४	१८०८	१८८८
२०	११०३	नंदकल्याण	जयकल्याण	२२४	१८७१	१०२०	१६२०
३०	११६२	जिनचंद्र	जिनभद्र	२३५	१६२३	१३५६	१३७६
"	"	जिनभद्र	जिनचंद्र	२४४	१६६०	१४२५	१४६५
३६	११६५	द्वाराविजय	हीरविजय	२६५	२०३६	पावापुरी	पावापुरी
५४	१२८७	जिनचंद्र (१)	जिनभद्र	प्रतिष्ठा स्थान ( उद्यमण )	२०७०	२०७६	२०७६
६०	१३१७	"	"	" ( चारकबाण )	२०५२	२०६१	२०६१
८२	१४१५	जिनराज	जिनहर्ष	" ( च्यारकबाण )	२०५३	२०६२	२०६२
११६	१५१२	१८२४	१६२४	" ( दौलतीबाद )	२०४८	२०५८	२०५८















